In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

152

आयुर्वेदिक कालेजों के पाठ्यक्रमानुसार विरचित
(रसशास्त्र द्रव्यगुण विषयक)

सचित्र लघु द्रव्यगुणादर्श

लेखक—

कविराज, एम० के० शास्त्री,
बी० ए०, बी० एम० एस०, (जी०).
वैद्य वाचस्पति, आयुर्वेदाचार्य.

अध्यक्ष—
द्रव्य गुण-विभाग तथा वनौषधि उद्यान,
श्री रामनिवास आनन्दलाल पोद्दार आयुर्वेदिक-कालेज
बम्बई-१८.

—*—

प्रकाशकः—
आयुर्वेद निकेतन,
१२१, सुपारी बाग रोड, परेल,
बम्बई— १२.

द्वितीय संस्करण] वि० सं० २०१४ [मूल्य ३॥)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लघुद्रव्यगुणादर्श पर

अनेकों में से कुछ सम्मतियाँ तथा समालोचनाएँ

Kaviraj Pratap simha, Adviser on Ayurveda, to the central Health ministery, New Delhi.

"यह पुस्तक संकलित कर आपने छात्रों का बड़ा उपकार किया है। इसके सहारे विद्यार्थी शीघ्रता से द्रव्यगुण का अत्यावश्यक ज्ञान प्राप्त कर सकेंगे। पुस्तक परम उपादेय, संग्राह्य और पठनीय है।"

Dr. P. M. Mehta, Director General, Central-Research Institute for Ayurveda, Jamnagar, (Saurashtra.)

यह पुस्तक "द्रव्यगुण जैसे विषय को तैयार करने के लिए अत्यन्त उपयोगी होगी। कारण, कि लेखक का इस विषय का अभ्यास और परिपक्व अनुभव इस पुस्तक में पूर्ण रूप में प्रतिविम्बित हुआ है।"

"लघु द्रव्यगुणादर्श" प्रथम दृष्टि में ही मोह लेता है। रोगानुसार और कर्मानुसार वर्गीकरण करके और वनस्पतियों के विविध भाषाओं में नाम देकर इसे चिकित्सकों के लिए भी उपयोगी बना दिया गया है।

आयुर्वेदजगत्, बम्बई, २५।६।४८

"वर्णन शैली, वर्गीकरण की रीति, स्वतन्त्र एवं विशेषता रखने वाली है। विद्यार्थियों के लिए उत्तम एवं वैद्यों के लिए संग्राह्य है।"

"स्वास्थ्य सन्देश" पटना, अगस्त ४८.

Shri Vaidya Rajeshwer Dutta Shastri, Principal, Ayurvedic College & Director, Ayurvadic-Research. B. H. U. Varanasi, 26-7-1957

"सचित्र लघु द्रव्यगुणादर्श" नामक ग्रन्थ को पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई। इस में रसशास्त्र, द्रव्यगुण विषय का संक्षिप्त वर्णन बड़ी खूबी के साथ किया गया है। द्रव्यों का शोधन, मारण, आमयिक प्रयोग बड़ी सरलता के साथ उल्लिखित है। छात्रों को इससे बड़ा लाभ होगा।"

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदिक कालेजों के पाठ्यक्रमानुसार विरचित

(रसशास्त्र-द्रव्यगुण विषयक)

सचित्र लघु द्रव्यगुणादर्श

Vaidya ... Bhatji
National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No. 6X3 ... N57
Book No.
लेखक No. 000058

कविराज एम० के० शास्त्री

बी० ए०, बी० एम० एस०, (जी०)

वैद्यवाचस्पति, आयुर्वेदाचार्य (स्वर्ण पदक प्राप्त)

अध्यक्ष—द्रव्यगुणविभाग, श्री रा० आ० पोद्दार मेडीकल कालेज, (आयुर्वेदिक) बम्बई, १८।

परीक्षक:—स्टेट फैकल्टी आफ आयुर्वेदिक मेडीसन, बम्बई, हिन्दी विश्व-विद्यालय प्रयाग, श्रीमद्दयानन्द आयुर्वेद कालेज, पंजाब, मुम्बई हिन्दी विद्यापीठ इत्यादि इत्यादि।

आयुर्वेदिक स्पेशियलिस्ट:—श्री महादेवी आ० पोद्दार हास्पिटल निदान क्रेन्द्र, राज्य कर्मचारी बीमा योजना, बम्बई

द्वितीय संस्करण
वि० सं० २०१४ } सन् १९५७ { मूल्य ३॥)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रकाशक—
आयुर्वेद निकेतन,
१२१. सुपारी बाग रोड परेल, बम्बई–१२.
(फो० नं० 63820)

(इस पुस्तक का सर्वाधिकार लेखक द्वारा सुरक्षित)

प्राप्तिस्थान—
कविराज एम० के० शास्त्री,
पोद्दार आयुर्वेदिक कालेज, बम्बई–१८.

❀

आयुर्वेद निकेतन,
१२१, सुपारी बाग रोड, परेल, बम्बई–१२.

सूचना :—(१) १२ कापियाँ मँगाने पर डाकव्यय नहीं लिया जाएगा।
(२) ५०/ प्रतिशत पेशगी आने पर ही आर्डर भेजा जाता है।

मुद्रक—
शारदा मुद्रण
ठठेरी बाजार, वाराणसी।
फोन नं० ५६७

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

समर्पण

—:*:—

परमादरणीय, तप और त्याग की मूर्ति,

पाणिनीयव्याकरण के उद्भट् विद्वान्,

महर्षि दयानन्दकी शिष्यपरम्परा

के

अनुपम रत्न

गुरूवर्य श्री पंडित ब्रह्मदत्त जी जिज्ञासु

को

सादर-सस्नेह

समर्पित

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भूधार यन्त्रम्

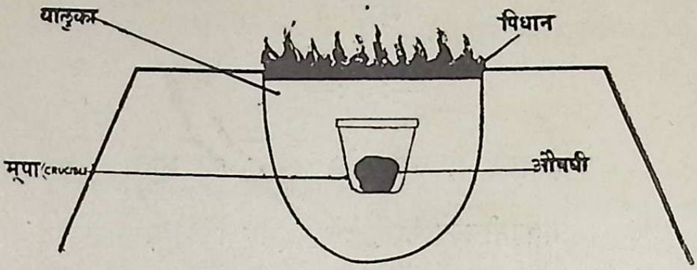

अंगार कोष्ठी.

वृन्ताक मूषा.

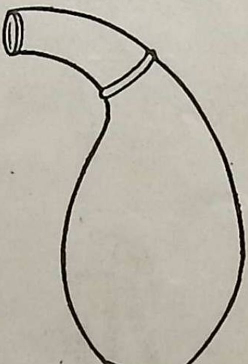

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

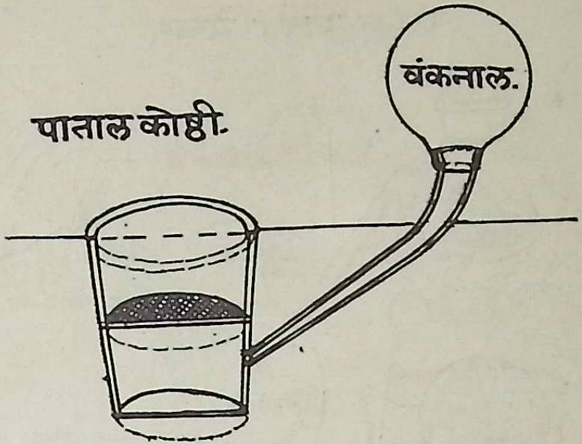

बाष्प स्यदन यन्भम्
(यनस्पति सत्व निर्माण्मर्थम्)

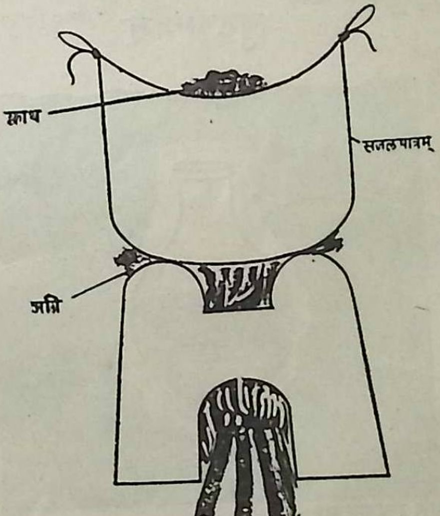

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिर्यक् पातन यन्त्रम्

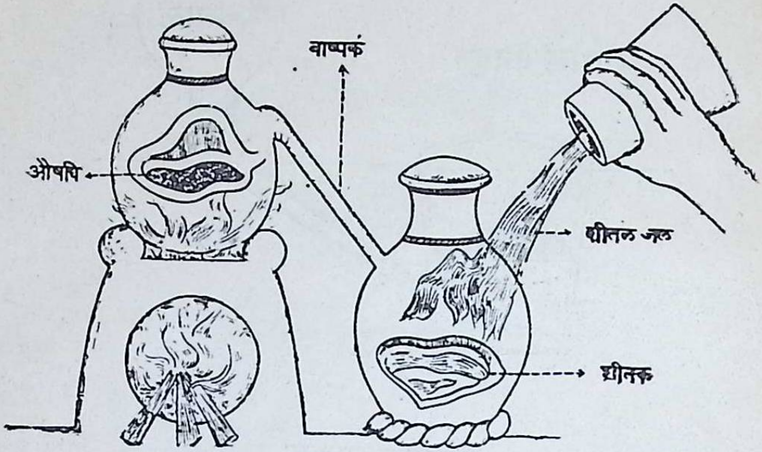

पुट यन्त्रम्

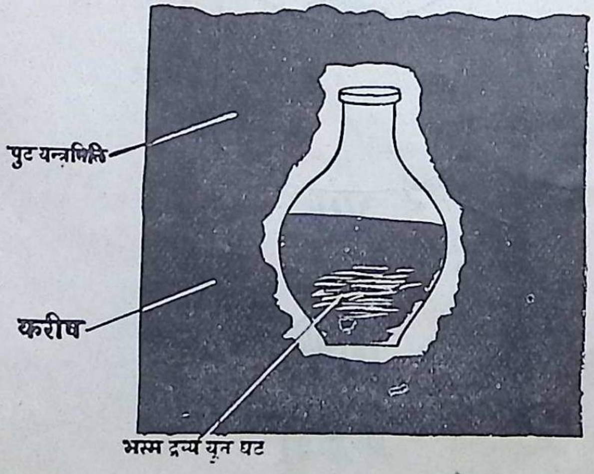

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अर्क यन्त्रम्

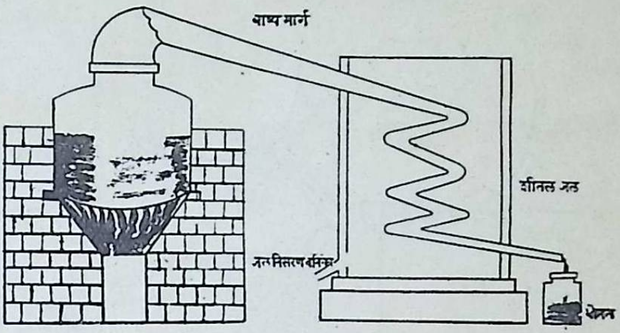

वालुका यन्त्रम् (बहिर्धूम पाचनार्थम्) वालुका यन्त्रम् (अन्तर्धूम पाचन)

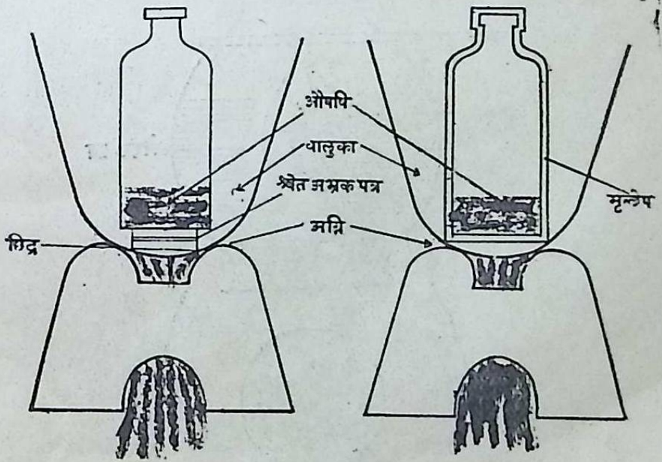

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

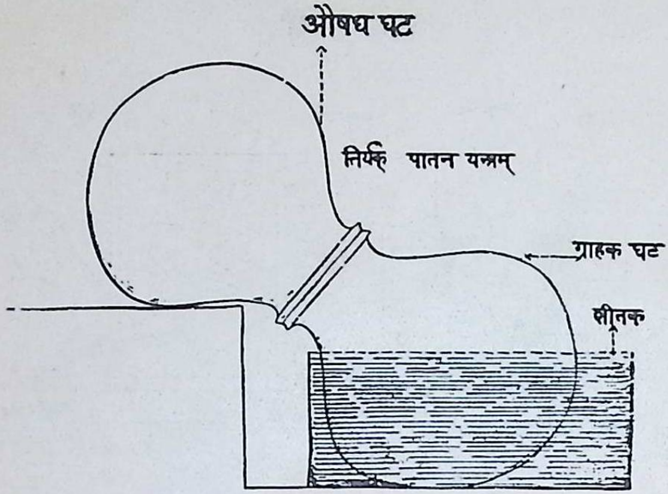

दोला यन्त्रम्

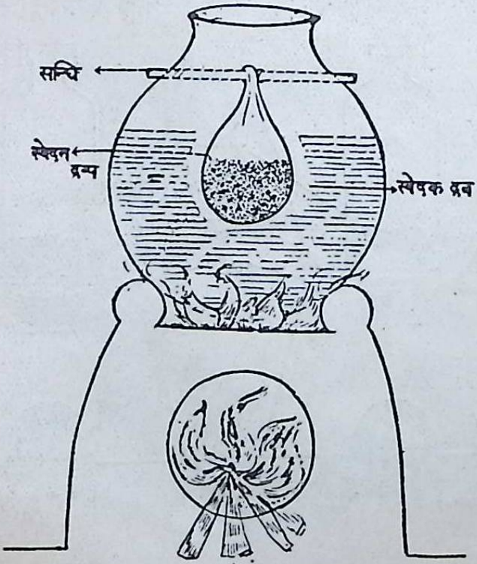

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कच्छप यन्त्रम्

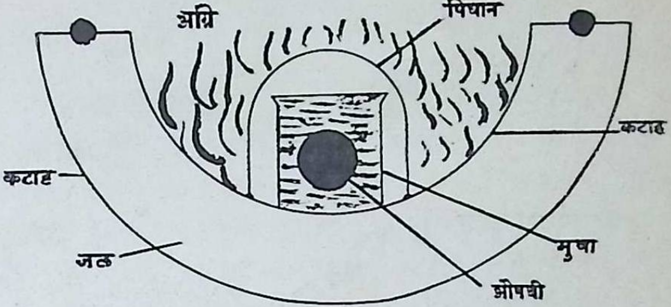

धूप यन्त्रम्

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तप्त खल यन्त्रम्

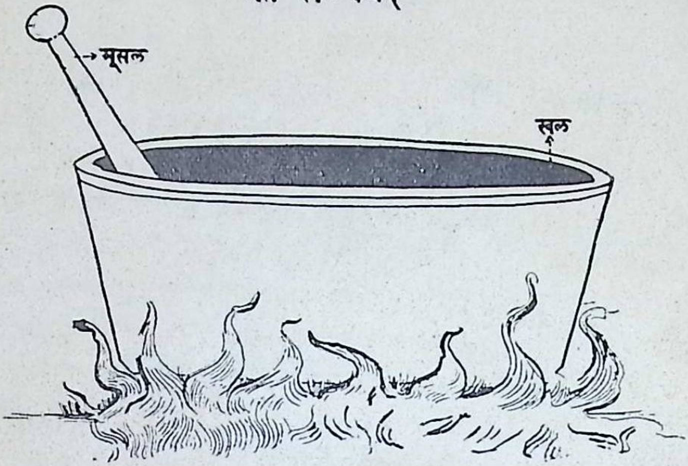

अधःपातन यन्त्रम्

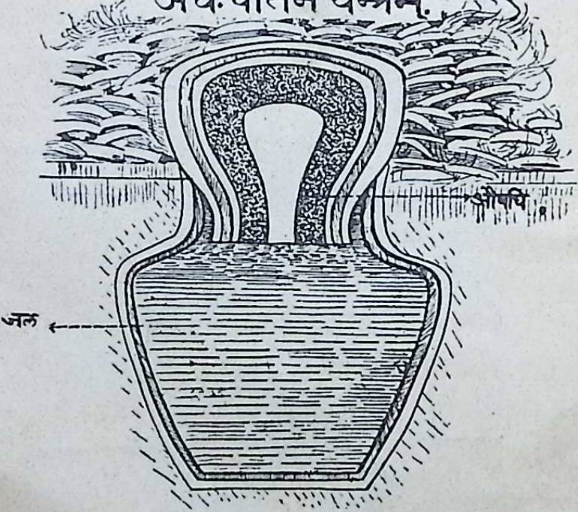

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रस्तावना

अनामविन्मोहमुपैति वैद्यो, न वेत्ति पश्यन्नपि भेषजानि ।
क्रियाक्रमो भेषजमूलमेव, तद्भेषजं चापि निघण्टु मूलम् ॥
घ० नि०

निघण्टु अर्थात् 'द्रव्यगुणशास्त्र' की महत्ता विज्ञ वैद्यों को बताने की वस्तु नहीं है। इसकी महत्ता स्वयंसिद्ध और सर्वज्ञात है। औषधियाँ चिकित्सक का शस्त्र हैं। शस्त्र रहित, अथवा विकृत और कुण्ठित शस्त्रवाला सुचतुर सुशिक्षित और साहसी योद्धा भी रणांगणमें अपयश और अपमान का भागी होता है; यही दशा द्रव्य-गुण-विज्ञान रहित वैद्यों की होती है। अतएव चिकित्सा के पादचतुष्टय में वैद्य के पश्चात् औषधि को ही प्रधानता दी गई है। "भिषग्द्रव्याण्युपस्थाता रोगी पादचतुष्टयम्।" निघण्टु-रसशास्त्र दोनों ही आयुर्वेदरूपी भवन के मूलाधार हैं।

आजकल समस्त भारतवर्षमें नूतन पाठ्यक्रमानुसार शिक्षा देनेवाले कालेज चल रहे हैं। प्राचीन पद्धति के ग्रन्थ नवीन शिक्षाप्रणाली के उपयुक्त सिद्ध नहीं हो रहे हैं। आयुर्वेद के प्रामाणिक प्राचीन ग्रन्थों के आधार पर नवीन ढंग के ग्रन्थोंका निर्माण होना परमावश्यक है। और इसकी पूर्ति के लिए व्यक्तिगत प्रयत्न भी हो रहे हैं। किन्तु सामूहिक प्रयत्न की आवश्यकता है। प्रस्तुत पुस्तक भी इसी दिशा में एक प्रयास है। यह पुस्तक, यद्यपि पाठ्य-पुस्तक का स्थान नहीं ले सकती, किन्तु तो भी छात्रों के अध्ययन के लिए निस्सन्देह अति उपयोगी है। समस्त आयुर्वैदिक विषयों पर ऐसी संक्षिप्त पुस्तकों की आवश्यकता है।

इस पुस्तक की पाण्डुलिपि मैंने देखी थी। उसमें यत्र तत्र संशोधन करने के सुझाव दिए थे। तदनुसार उचित संशोधन के उपरान्त यह पुस्तक प्रकाशित की गई है। छात्रों एवं वैद्यों दोनों के लिए उपयोगी है, इसमें सन्देह नहीं। लेखक इसी प्रकार भविष्य में भी ग्रन्थ लिखते रहेंगे, ऐसी आशा है।

डा० विगास स्ट्रीट, बम्बई २ —वैद्य यादवजी त्रिकमजी आचार्य।

१३–३–४८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आत्मीयं किंचित्

(क) प्रथम संस्करण का स्मरण

द्रव्यगुणशास्त्र बहुत गम्भोर है। जितनी ही अधिक छानबीन की जाए, उतनी ही ज्ञान की परिधि बढ़ती जाती है। ऐसे गहन विषय में मतभेद पहले भी रहा है, अब भी है और आगे भी रहेगा। अतः हमारे वर्णन से कई विद्वानों को मतभेद भी होगा ही। विज्ञ पाठकों और सहृदय समालोचकों से हमारी साग्रह विनंति है कि ऐसे स्थलों का अवश्य निर्देश करें। विचार विनिमय के अनन्तर उचित होने पर आगामी संस्करण में उनको स्थान दिया जायगा।

इस पुस्तिका के सम्बन्ध में भो दो शब्द कहना आवश्यक हैं।

प्रभाव्य देहावयवों का वर्णन इसकी अपनी विशेषता है। यह विषय यद्यपि ऐलोपैथिक जैसा लगता है, किन्तु हमने इसके वर्णन में आयुर्वेदिक दृष्टिकोण ही रक्खा है--तथा रास्ना वातशामक है। वात संस्थान ही वात का प्रधान स्थान है। अतः रास्ना का प्रभाव हमने वात-संस्थान पर दिखाया है। अन्य द्रव्यों के विषय में भी इसी सरणि का अनुसरण किया है। देहावयवों के साथ साथ कहीं कहीं प्रभाव्य धातु का भी उल्लेख किया गया है।

२. पाठ्य क्रमान्तर्गत ऐलोपैथिक द्रव्यों का वर्णन भी यथामति आयुर्वेदानुसार करने का प्रयत्न किया गया है। यथा अर्भकं (अर्गट) गर्भाशय की आकुंचन-प्रसार क्रिया को बढ़ा देती है। और समस्त क्रियाएँ—"सर्वाः वातकृता क्रिया"—वात के आधीन हैं। अतः इसे वातल बताया गया है।

आयुर्वेद जगत्के सुप्रसिद्ध विद्या-वयोवृद्ध आचार्यवर्य श्री यादवजी त्रिकमजी बम्बईके हम अत्यन्त आभारी हैं, जिन्होंने अपने बहुमूल्य और बहुव्यस्त समय में से कुछ समय निकाल कर, पाण्डुलिपी देख कर अपने अमूल्य परामर्शों द्वारा इस पुस्तक को उपयोगी बनाने में सहायता दी और प्रस्तावना लिखने का कष्ट किया। आयुर्वेदाचार्य कविराज श्री आशानन्द जी पंचरत्न M. B. B. S. प्रिंसिपल, पोद्दार आयुर्वेदिक कालेज, बम्बई, के भी हम अनुगृहीत हैं, जिन्होंने अनेक अमूल्य परामर्श देकर तथा मार्ग-प्रदर्शन करके हमारी सहायता की।

पोद्दार आयुर्वेदिक कालेज, —महेन्द्र कुमार शास्त्री।

बम्बई, १८. २०-३-४८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(ख) द्वितीय संस्करण के विषय में

लघु द्रव्यगुणादर्श, का प्रथम संस्करण सन् १६५० में ही समाप्त हो गया था। इसकी उपयोगिता तथा लोकप्रियता को देखते हुए, छात्रों तथा वैद्य बन्धुओं की निरन्तर आने वाली मांग को देखते हुए, तथा प्रकाशक महोदय के अति-आग्रह होते हुए भी इतने दिनों तक इसका द्वितीय संस्करण नहीं निकल सका,इस विलम्ब का अपराधी मैं स्वयं हूँ।

सन् १६५० में मुझे बम्बईसरकार द्वारा संचालित श्री रामविलास आनन्दीलाल पोद्दार मेडिकल कालेज (आयुर्वेदिक) तथा श्रीमती महादेवी आ० पोद्दार हास्पिटल के कार्यवाहक प्रिंसिपल तथा सुपरिटेन्डेन्ट पद का भार सम्भालना पड़ा और वह कई वर्षों तक चलता रहा। उन दोनों सरकारी संस्थाओं के अध्यक्षपदों का कार्य इतना अधिक था कि मेरे लिए किसी अन्य कार्य के लिए समय निकालना असम्भव था। अतः अनिवार्यतः विलम्ब हो गया। एतदर्थ इस ग्रन्थ के प्रेमियों (छात्रों-वैद्यों) के निकट क्षमाप्रार्थी हूँ। इन कार्यों से अवकाश मिलने पर एक प्रतिष्ठित हिन्दी प्रकाशक महानुभाव के आग्रह पर आधुनिक आयुर्वेदिक कालेजों के पाठ्य-क्रमानुसार 'द्रव्यगुणशास्त्र' पर वृहत् ग्रन्थ लिखना प्रारम्भ कर दिया। जिसका प्रकाशन भी शीघ्र ही होने जा रहा है। इसी बीच में छात्रों-वैद्यों तथा प्रकाशक महोदय का आग्रह बराबर बना रहा। जिसके फलस्वरुप यह द्वितीयसंस्करण आज पाठकों के हाथों में है।

प्रथम संस्करण में प्रतिज्ञात सभी संशोधनों को इस संस्करण में सन्निविष्ट किया गया है। और कुछ अन्य आवश्यक तथा उपयोगी परिवर्धनों का भी समावेश इसमें कर दिया गया है। जिससे पुस्तक पाठकों के लिए अधिकाधिक उपयोगी बन गई है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्वितीयसंस्करण की कुछ विशेषताएं

१. यंत्रादि के चित्र दिए जा रहे हैं।

२. विभिन्न राज्यों के आयुर्वैदिक कालेजों के पाठ्यक्रमों में निर्धारित रसायन-शास्त्र एवं द्रव्यगुण शास्त्र के प्रायः सभी द्रव्यों का वर्णन—इसमें आ गया है। क्विनैन, डिजिटैलिस सदृश नव्योषधियों का भी आर्युवेदानुसार वर्णन कर दिया गया है।

३. द्रव्यगुणशास्त्रीय औषधियों का वर्णन, अंगों—संस्थानों, पर उनके होने वाले प्रभावों के अनुसार—यथा:—पाचनसंस्थानप्रभावकः—दीपन पाचन, अनुलोमन, वामकादि—किया गया है और अन्त में विशेष सूची भी दी गई है। जिसमें छात्रों तथा चिकित्सकों को रोगानुसार और कर्मानुसार द्रव्यों का ज्ञान सरलता से हो सके।

४. रस, वीर्य, विपाकादि के ज्ञानार्थ कई चार्ट्स देकर उन्हें सरल बना दिया गया है।

५. द्रव्यों के संस्कृत नाम के साथ ही लेटिन (वानपस्तिक) मराठी, गुजराती, तथा हिन्दी नाम भी दे दिए गए है। ताकि छात्रों को तत्काल स्वभाषा में तत्तद् द्रव्य का नाम ज्ञान हो जाए।

६. विषद्रव्यों के शोधन, मात्रा, विषलक्षण, तथा उनकी चिकित्सा पर एक प्रकरण पृथक् ही दिया गया है।

७. क्रियात्मक भैषज्य निर्माणः—(Practicals) में छात्रों को पर्याप्त कठिनाई आती है। अतः एक पृथक् प्रकरण (प्रयोगविज्ञानीय) में सभी प्रकार के प्रयोगों-खल्वी रसायन, कुप्पी पक्वादि का वर्णन कर उनकी यह कठिनाई दूर कर दी गई है।

८. फैकल्टी आदि के कुछ प्रश्न पत्र भी दिए गए हैं जिससे छात्रों को विषय तैय्यार करने की विधि का बोध हो सके।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्रन्थ की प्रामाणिकता

इस 'सचित्र लघु द्रव्यगुणादर्श' में दिए गए द्रव्यों के गुणों का विशेषकर रसवीर्य विपाक प्रभाव तथा दोष शमन या कोपन का वर्णन अनेक बार पर्याप्त सावधानी के साथ निरीक्षण कर निम्न ग्रन्थों के आधार पर दिया गया है।

चरकसंहिता (अग्निवेशतन्त्र)	सुश्रुत संहिता
भावप्रकाशनिघण्टु	कैय्यदेव निघण्टु
राज निघण्टु	द्रव्यगुनसंग्रह (चक्रदत्त)
निघण्टु रत्नाकर	गद निग्रह
रसरत्नसमुच्चय	रसेन्द्र सार संग्रह
रसतरंगिणी	रसचंडांशु

आदि के आधार पर किया गया है। जिससे इस पुस्तक में वर्णित रसादि की प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध है। हाँ मतान्तर होना दूसरी बात है। फिर भी यदि कोई सज्जन आयुर्वेद-आचार्य ग्रहणीयपरिवर्तन या परिवर्धन का सुझाव देंगे तो वह कृतज्ञता पूर्वक सहर्ष स्वीकृत होगा।

आभार स्वीकृति

द्वितीय संस्करण के संशोधन के समय अनेक सहृदय आयुर्वेद-आचार्यों ने अपने बहुमूल्य सुझावों, संशोधनों द्वारा हमें सहयोग दिया तथा हमारे उत्साह को बढ़ाया। उनका मैं हृदयसे आभारी, और अनुगृहीत हूँ। उन्हें अन्तः करण से धन्यवाद देता हूँ। ये महानुभाव निम्नलिखित हैं।

१. आयुर्वेद के परमविद्वान् आचार्य तथा यशस्वीचिकित्सक राज वैद्य श्री पंडितरामगोपाल जी शर्मा आयुर्वेदाचार्य, प्रिंसिपल-पुनर्वसु आयुर्वेद विद्यालय, तथा अध्यक्ष आयुर्वेद प्रचार समिति बम्बई।

२. वैद्यवर्य श्री श्रीरामजी शर्मा आयुर्वेदाचार्य, मन्त्री मुम्बईराज्यवैद्य सभा, आयुर्वेदप्रचारसमिति, पुनर्वसु आयुर्वेदविद्यालय, अत्यन्तकर्मठ आयुर्वेदज्ञ।

३. वैद्यराज श्री पं० वेद प्रकाश जी, आयुर्वेद के अत्युच्च विद्वान्।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

४. श्रीमती भगवती बाई परमानन्द, जिनके सहयोग के बिना इसका प्रकाशन असम्भव था।

इनके अतिरिक्त यदि श्रीवास्तवबन्धुद्वय श्री हरिश्चन्द्र जी तथा श्री रमेश चन्द्रजो तथा मेरी प्रियपुत्री उषा बी० ए० ने प्रेसकापी निर्माण में समय-समय पर सहायता न दी होती तो इतना शीघ्र यह कार्य होना असम्भव था। इन्हें धन्यवाद देना तो स्वयं ही धन्यवाद लेना है। अतः इनके लिए तो शुभ कामनाएँ और आशीर्वाद ही पर्याप्त है।

पुस्तक के शीघ्र प्रकाशन का सारा श्रेय मेरे परममित्र, आयुर्वेद संसार के अग्रणीविद्वान् तथा लेखक, आयुर्वेदिकफार्मेसी, हिन्दु विश्वविद्यालय, वाराणसी के सुपरिन्टेन्डेन्ट श्री अत्रिदेवजी गुप्त को है। जिन्होंने इसके मुद्रण का अतिसुन्दर प्रबन्ध कर दिया। साथ ही साथ "शारदा मुद्रण" के अध्यक्ष बाबू श्री गणेशदासजी का सक्रिय सहयोग मिला, इन दोनों महानुभावों का हार्दिक आभारी हूँ। यह पुस्तक इन सब के सहयोग का ही परिणाम है। ग्रन्थ के विषय में पर्याप्त कहा जा चुका है। अनिवार्य प्रेस त्रुटियों के लिए क्षमा चाहता हूँ, अब स्नेही पाठकों से विदा माँगता हूँ।

वाराणसी — शुभाकांक्षी:—

श्रावण कृष्णा १४, वि० सं० २०१४, — महेन्द्रकुमार शास्त्री

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषय-सूची

समर्पण	... ...
प्रस्तावना—	श्री वैद्यराज यादवजी त्रिकमजी आचार्य
आत्मीयं किञ्चित्—	कविराज एम० के० शास्त्री।
प्रथम आदर्श— पृष्ठ–१-११	मानपरिभाषा, रसशास्त्रीय परिभाषा संज्ञाशब्द व्याख्यान, यन्त्रमूषादि परिचय।
द्वितीय आदर्श— १२–२७	पारद, गन्धक, अभ्रक, हिंगुल, हरिताल, मनःशिला, फेनाश्म, स्फुटिका, खटिका, शंख, शुक्ति, वराटिका, मृगश्रृंग, सुधा, दुग्धपाषाण, क्षारत्रय, नृसार, सोरक, लवणपंचक।
तृतीय आदर्श— २८–४२	सुवर्ण, रजत, ताम्र, नाग, वंग, लोह, मण्डूर, सुवर्णमाक्षिक, तुत्थ, सिन्दुर, मृद्दारशृंग, खर्पर, कान्त-पाषाण, कासीस, अंजन-पंचक, शिलाजतु, गैरिक, चपल, पित्तल, कांस्य, वर्त्त।
चतुर्थ आदर्श— ४३–४६	नवरत्न, वैक्रान्त, राजावर्त, शिलाबदर, (पत्थरबेर) साराश्म, (संगेयशब) नागाश्म, (जहरमोहरा) अग्निजार, अकीक।
पंचम आदर्श— ५०–६१	सुधानिधि, रसकर्पूर, रसपर्पटी, ताम्रपपटी, पंचामृत-पर्पटी, सूतशेखर, योगराजगुग्गुल, हेमगर्भपोट्टलीरस, रससिन्दूर, सुवर्णवंग, समीरपन्नग, लोकनाथरस।
षष्ट आदर्श–शोधनादि ६०–७०	वत्सनाभ, अहिफेन, विषतिन्दुक, जयपाल, धत्तूर, भंगा, गुंजा, भल्लातक, हिंगु, स्नुहीक्षीर, गुग्गुलु, वृद्धदारुकबीज। सूची (वेलाडोना) कर्पूर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सप्तम आदर्श— ७१–७७	भैषज्य कल्पना, अनुक्त-लेशोक्त परिभाषा, भैषज्य-ग्रहण, संरक्षण विधि ।
अष्टम आदर्श (७७–८८)	द्रव्य, गुण कर्म, रस, वीर्य विपाक प्रभाव ।
नवम आदर्श (८९–१६४)	औद्भिद् तथा प्राणिज द्रव्यों का वर्णन ।
महास्रोतस्प्रभावक—	दन्त्य, मुखशोधन, (स्वयं) रोचक, दीपन, पाचन, सुगन्धित, वातानुलोमक, पुरीषजनन, वमन, वमनोपग, उभयतोमार्गसंशोधन, सर, विरेचनोपग, भेदक, संस्रन, विरेचक, पाचकग्राही, स्तम्भकग्राही, उदरकृमिहर ।
यकृत्प्लीहाप्रभावक—	पित्तविरेचक वर्ग ।
रसवह संस्थान प्रभावक—	शोथ, गण्डमाला शामक, विषघ्न ।
हृदय तथा रक्तधातु— प्रभावक—	हृदयबल्य, हृदय-अवसादक, रक्तप्रसादन, रक्त-स्तम्भन, रक्त स्कन्दन ।
वृक्क तथा मूत्र संस्थान— प्रभावक—	मूत्रविरजनीय, मूत्रसंक्रमण नाशक, अश्मरी, शर्करहर, मूत्रसंग्रहणीय, मूत्रगत शर्करा नाशक ।
श्वास संस्थान प्रभावक—	कफस्रावक, कफघ्न, वेगहर, श्लेष्मपूतिहर ।
प्रजननांग प्रभावक—	प्रजास्थापन, गर्भाशय-संकोचक, वृष्य, वाजीकरण, शुक्रस्तम्भन ।
वात प्रभावक—	मेध्य, वातनाड़ीबल्य, वातशैथिल्यहर, मादक, वेदनास्थापन, वातक्षोभहर, वातशोथसंशमन, आक्षेपशमन, आक्षेपकारक ।
ज्ञानेन्द्रिय प्रभावक—	नेत्र्य, नासा प्रभावक, त्वचा प्रभावक—वर्ण्य, कुष्टघ्न, स्वेदोपग, स्वेदापनयन, व्रणरोपण, जन्तुघ्न, केश्य ।
सर्वदेह प्रभावक—	ज्वरघ्न (तापहर) विषमज्वरघ्न, दाहप्रशमन, शीतप्रशमन, रसायन वर्ग ।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथातः रसशास्त्रः प्रारभ्यते

परिभाषा विज्ञानीयः प्रथम आदर्शः

परिभाषा लक्षण:—अनुक्त, लेशोक्त अथवा संदिग्ध द्रव्यों तथा अर्थों का निश्चित अर्थ बताने वाली 'परिभाषा' कहाती है।

मान-परिभाषा—

"न मानेन विना युक्ति र्द्रव्याणां जायते क्वचित्"

अतः सर्वप्रथम मानपरिभाषा लिखी जाती है।

आयुर्वेदिकमान—				प्रचलितभारतीयमान
६ सर्षप	=	१ यव (जौ)		
६ यव	=	१ गुंजा		
२ गुंजा	=	१ निष्पाव		
३ गुंजा	=	१ वल्ल (वाल)		
२ वल्ल	=	१ माष		
२ माष	=	१ धरण	=	१½ माषा
* ४ सुवर्ण माष	=	१ शाण	=	३ माषा (१ चवन्नी भर)
२ शाण	=	१ कोल (द्रंक्षण)	=	६ माशा (१ अठन्नी भर)
२ कोल	=	१ कर्ष (तोलक)	=	१ तोला
२ कर्ष	=	१ शुक्ति	=	२ तोला
२ शुक्ति	=	१ पल	=	४ तोला
२ पल	=	१प्रसृत		
२ प्रसृत	=	१ कुडव (अर्द्धशराव)	=	१६ तोला

* उक्तमन सुश्रुत का है। चरकानुकार :—

८ गुंजा	=	१ सुवर्णमाष

३ सुवर्णमाष = १ शाण-टंक होता है। जो आधुनिक मान के समान है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२ कुडव	=	१ शराव, मानिका	=	३२ तोला
२ मानिका	=	१ प्रस्थ	=	६४ तोला
२ प्रस्थ	=	१ पात्र	=	१२८ तोला
२ पात्र	=	१ आढक	=	२५६ तोला
४ आढ़क	=	१ द्रोण (घट)	=	१०२४ तोला
१ तुला	=	१०० पल	=	५ सेर ×
४० तुला		१ भार		

रहस्यम् :—शाण से उपर आयुर्वेदीय मान चरक सुश्रुत वा कालिंग मागधमान में समान ही है, इसे वर्त्तमान प्रामाणिक भारतीय मान (Standrd Indian Weight) के साथ मिलाने के लिये कर्ष; जो तोले के समान है, को आधारमानकर "पलादूर्ध्वं सपाद वृद्धिः कर्त्तव्या"। एवमायुर्वेदीय मानेनसह प्रचलित भारतीय मानस्य सर्वथैवसामन्जस्यं जायते। उदाहरणार्थः—

आयुर्वेदीयमान		सपादवृद्धमान
१ पल	= ४ कर्ष (तोला)	= १. पल = ५ कर्ष (तोला) ऽ—
१ कुडव	= ४ पल (१६ तोला)	= १. कुडव = २०तोला ऽ। पावभर
१. शराव	= २ कुडव (३२तो०)	= १. शराव = = ४०तो० ऽ॥
२ शराव	= १ प्रस्थ (६४तोला)	= २ कुडव = १ प्रस्थ = ८० तोला
४ प्रस्थ	= १ आढक (२५६तोला)	= १ आढक = ३२०तो० = ४ सेर *

प्रामाणिक भारतीयमान

८ रत्ती = १ माषा	४० सेर = १ मन
१२ माषा = १ तोला	२० मन = १ खण्डी
८० तोला = १ सेर	

× सपाद वृद्धि से ऽ६। सेर

* बम्बई की एक पायली माप

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आयुर्वेदीयांगलमानयोः सामञ्जस्यम् ।

आयुर्वेदीयमान				आंगलमान
१ धान्यमाष			=	१ ग्रेन
२ धान्यमाष	=	१ गुंजा	=	२ ग्रेन
१ सुवर्णमाष	=	८ गुंजा	=	१ ग्राम (लगभग)
१ शाण	=	३ माषा	=	१ ड्राम * ,,
१ शुक्ति	=	२ तोला	=	१ औंस * ,,
१ शराव	=	४० तोला	=	१ पौंड

———

आंगल वा युरोपीय मान

इम्पीरियल				मेट्रिक
१ ग्रेन			=	०.६४८ ग्राम
१ ड्राम(एपोथ)	=	६० ग्रेन	=	३.८८८ ग्राम
१ औंस	=	४८० ग्रेन	=	३१.१०४ ग्राम
१ पौंड	=	१६ औंस	=	४५.३५६ ,,

———

भारतीय घरेलु मानों के साथ सामञ्जस्य

१ तोला	=	१८० ग्रेन		
१ कंछा	=	¼ छटांक	=	४ तरल ड्राम
१ छटांक	=	¼ पाव	=	२ तरल औंस (लगभग)
१ पाव	=	¼ सेर	=	१ तरल (फ्लमड्) औंस (लगभग)

---

१. * औंस वस्तुतः २ तोला ३ माषा ३ रक्तिका का होता है।

२. * शराव सपाद वृद्धि से ४० तोला होता है अन्यथा ३२ तोला, १ पौंड वस्तुतः, ३८ तोला के लगभग होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१ सेर	=	३२ तरल औंस = २ पौंड (रत्तल)
१ मन	=	८२ पौंड २ औंस २ ड्राम

अंग्रेजी घरेलुमान

१ बिन्दु (ड्रॉप)	=	१ एम (मिनिम)
१ टी स्पून फुल (एक चाय चमच)	=	१ फ्लुअड् (तरल) ड्राम
१ डेजर्ट स्पून फुल(वड़ा चमच)	=	२ ,, ,,
१ टेवल स्पून फुल	=	½ औंस
१ टी कप फुल (चाय का प्याला)	=	७ फ्लुअड् औंस
१ टम्बलर फुल (गिलासभर)	=	११ ,, ,,

रसशास्त्रीय परिभाषा

अम्लवर्ग—जम्बीर दाडिम निम्बु अम्लिका अम्लवेत नारंगी वृक्षाम्ल बीजपूरक चणकाम्ल करमर्दक चुक्रा चांगेरी ।

अम्लपंचक—अम्लवेतस जम्बीर मातुलुङ्ग निम्बु नारङ्गी ।

क्षार पंचक – मुष्कक, यव, स्वर्जिका, तिल पलाश क्षार ।

क्षाराष्टक—स्नुही पलाश अपामार्ग चिंचा अर्क तिलनाल सर्जिका यवक्षार ।

क्षारद्वयम्—स्वर्जिकाक्षार, यव क्षार ।

क्षारत्रयम्—स्वर्जिकाक्षार, यवक्षार, टंकण ।

पंचतिक्त—गुडुची, निम्बत्वक्, वासा, कंटकारी, पटोल ।

पंचमृत्तिका—इष्टिका चूर्ण, वल्मीकि मृत्तिका, गौरिक, लवण, भस्म ।

पंचामृत—गोदुग्ध दहि घी मधु शर्करा ।

पंचगव्य—गाय का दूध दहि घी मूत्र तथा गोबर ।

क्षीरत्रय—अर्क, स्नुही, वट क्षीर ।

तैलवर्ग—तिल सर्षप धत्तूर एरण्ड अतसी निम्बबीज ।

कंज्जली—पारद को गन्धकादि के साथ मिलाकर चूर्ण करना ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पिष्ठी—पारद तथा गन्धकादि को मर्दन कर दूध आदि द्रव पदार्थों के साथ उन्हें खरल करना 'पिष्टी' कहाती है।

रसपंक—द्रव द्रव्य सहित गन्धकादि के साथ पारद को खरल करना 'रसपंक' कहाता है।

द्रावक वर्ग—गुंजा, मधु, गुड़, घृत, टंकण, मधु, गुग्गुलु।

मित्र पंचक—घी, गुंजा, टंकण, मधु, गुग्गुलु।

आवापः—वंगादि धातुओं को द्रवित कर उनमें अन्य पदार्थों का प्रतिवाप मिलाना, यथा स्वर्णवंग में वंग द्रवित कर उसमें पारद डालना।

निर्वापः—धातुओं को अग्नि में तपा कर द्रव द्रव्यों में बुझाना (निषेचन) 'स्नपन' भी इसे ही कहते हैं।

शुद्धावर्त्त—जब अग्नि की ज्वाला श्वेत वर्ण की होती है तब उसे शुद्धावर्त्त कहा जाता है। यह सत्त्वनिर्गम का समय है।

बीजावर्त्त—द्राव्य धातु के वर्ण के समान यदि ज्वाला दिखाई दे तो वह 'बीजावर्त्त' है। इस समय द्रव्य पिघलने लगता है।

पर्पटी—अग्नि की सहायता से कज्जली को लोहपात्र में द्रवित कर गोबर के स्थाण्डिल पर कदली पत्र में चिपिटाकार बनाना।

ताडन—मिश्र लोहों में से एक धातु का नाश तथा दूसरी धातु की प्राप्ति के लिए वंकनाल से आध्मान करना। इस प्रकार प्राप्त धातु (लोह) को 'ताडित' कहते हैं।

घोषाकृष्टताम्र—कांस्य (घोष) को वंकनाल से ताडित करने पर जब वह वेग-रहित हो जाए तो उसे 'घोषाकृष्ट' ताम्र कहते हैं।

वकनाल—अग्निमें फूँक देनेकी नाली।

स्वाङ्गशीत—चुल्हेपर स्थित पात्र जब स्वयमेव शीतल होजाए तब 'उसे स्वाङ्गशीत' कहते हैं।

बहिः शीत—चुल्हेपरसे पात्रको उतारकर शीतल करना।

भावना—किसी धातु या वनस्पतिके चूर्णको द्रव द्रव्यसे आर्द्र कर खरल करना। यह गुण वर्धनार्थ दी जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन—विशिष्ट औषधियोंके साथ मलनाश के लिए और गुणाधानार्थ धातु आदिका पेषण या स्वेदनादि संस्कार करना।

वारितर—भस्मीभूत लोहादिको जलपर तैराना।

मृतलौह परीक्षा-रेखापूर्णता—तर्जनीतथा अंगुष्ठ की मध्यस्थ रेखाओं में अन्तः प्रविष्ट होनेकी योग्यता।

अपुनर्भव—भस्मीभूत लोह आदि को मित्रपंचकके साथ तपाने से यदि वह पुनः धातु रूपको प्राप्त न होता हो तो उसे अपुनर्भव कहते हैं।

निरुत्थ—अपुनर्भव द्वारा परीक्षित लोह आदि को चाँदीके साथ तपाएँ। यदि वह रजतके साथ न लगे तो निरुत्थ समझना चाहिए।

अमृतीकरण—भस्मीभूत धातुओं (ताम्रादि के) दोष नाशन तथा गुण-वृद्धिके लिए जो संस्कार किया जाता है उसे अमृतीकरण कहते हैं।

रस—पारदका नाम है। रसनात् सर्वधातूनाम्।

महारस—अभ्रक, वैक्रान्त, माक्षिक, विमल, शिलाजतु, तुत्थ चपल खर्पर यह आठ महारस हैं। "अभ्रवैक्रान्त माक्षीक विमलाद्रिज सस्यकम्। चपलो रसकश्चेतिं ज्ञात्वाष्टौ संग्रहेद्रसान् ॥"

उपरस—गन्धाश्म-गैरि-काशीस कांक्षी तालशिलाञ्जनम्। कंकुष्ठं चेत्युपर-साष्टौ पारद कर्मणि।" गन्धक, गेरु, कासीस, स्फुटिका, ताल, मनः-शिला, अंजन, कंकुष्ठ, ये आठ उपरस कहाते हैं।

साधारण रस—कम्पिल्लक, सोमल, नवसादर, कपर्द, अग्निजार, गिरिसिन्दूर, हिंगुल मुर्दासंग, ये आठ साधारण रस हैं। "कम्पिल्लश्च-पलो गौरीपाषाणो नवसागरः कपर्दो वाह्निजारश्च गिरिसिन्दूर हिंगुलौ। मृद्दारश्रृंगमित्यष्टौ साधारणरसाः स्मृताः। रससिद्धि कराःप्रोक्ता नागार्जुन पुरस्सरैः ॥"

नवरत्न—माणिक्य, मुक्ता प्रवाल, (मूँगा) तार्क्ष्य, पन्ना, पुष्पराज, हीरा, नील गोमेद, वैडूर्य, राजावर्त्त।

लोह या धातुएँ—१ शुद्ध लोहः—सुवर्ण रजत ताम्र अयस;
२ पूति लोहः—नाग वंग:इनमें एक प्रकार की गन्ध होती है;
३ मिश्रित लोह—पित्तल, कांस्य, वर्त्त (भरत)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सूचना—यह रसादिका वर्गीकरण प्राचीन है। नवीन वर्गीकरण निम्न प्रकार से किया गया है:—

(१) रस—पारद

(२) लोह—सुवर्ण, रजत, ताम्र, अयस्, नाग, वङ्ग, यशद

(३) मिश्रलोह—पित्तल, कांस्य, वर्त्त

अधातु—हिंगुल, गिरिसिन्दूर वैक्रान्त, अभ्रक, माक्षिक, विमल, शिलाजतु, गैरिक अयस्कान्त, (चुम्बक), कासीस, मनःशिला, ताल, तुत्थ, (सस्यक), चपल, अंजन, पंचक, स्फटिका मृद्दार शृंग, रसक (खर्पर)।

प्राणिज—शंख, प्रवाल, शुक्ति, अग्निजार

उद्भिज्ज—बोल, काम्पिल्लक

रत्न—उपर्युक्त नवरत्न

उपरत्न—सूर्यकान्त, चन्द्रकान्त, स्फटिक, तृणकान्त (कहरवा) अकीक, जहरमोहरा, पैरोजकम्, संगेयशब, वैक्रान्त, लाजवर्द।

धन्वन्तरिभाग—औषधि निर्माण में वैद्य का भाग।

यह निम्न प्रकार होता है।

सिद्धरस $\frac{1}{2}$ भाग, घृत तैल अवलेह $\frac{1}{8}$ वांभाग, लोह चूर्णादि तथा अन्य औषधियों का $\frac{1}{6}$ वांभाग।

रुद्रभाग—औषध विक्रेता (पंसारी-गान्धी) से प्राप्त औषध मूल्य का $\frac{1}{11}$ वां भाग वैद्य का होता है।

लवणत्रिकः—सैन्धव, सौवर्चल, बिड

लवण पंचकः—सैन्धव, सामुद्र, सौवर्चल बिड, रोमक।

मूत्राष्टकः—महिषी अजा (बकरी) आवि (भेड़) ऊँट, गौ, गर्दभी, अश्व, गज इनका मूत्र "मूत्राष्टक" कहाता है।

मधुरत्रिकः—मधु-घृत-गुड़

हिंगुलाकृष्टरसः—ऊर्ध्व पातनादि यन्त्रों से हिंगुल से पारद निकालना।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सत्वलक्षण:—धातु आदि को क्षार-अम्ल-द्रावक आदि पदार्थों के साथ कोष्ठक में द्रवित कर उनका सार निकालना ।

धातुसत्व:—कोष्ठी में अभ्रकादि को द्रावक वर्ग के साथ मिलाकर तपाए और उनसे जो सार निकले उसे 'धातु सत्व' कहते हैं ।

वनौषधिसत्व:—वनौषधियों का वाष्पस्वेदनादि यन्त्रों द्वारा निकाला सत्व ।

ढालन:—द्रवित द्रव्य को तरल द्रव्य में डालना । यह क्रिया प्रायेण धातुओं के सत्वपातन के समय की जाती है ।

शुल्वनाग—ताम्र तथा सीसक को दस दस वार स्वर्ण माक्षिक से मिलाकर भस्म करे तथा दश दश वार समुत्थापित करके पुनः दोनों को मिलाकर भस्म कर सात वार समुत्थित करे, इस प्रकार सिद्ध ताम्र 'शुल्वनाग' कहाता है ।

चन्द्रार्क—रजत (चांदी) १६ भाग, ताम्र १२ भाग मिलाकर द्रव्य बनाना ।

ऊनम्—यह भस्मों की वारितर परीक्षा के समान है । अपुनर्भव परीक्षा से सिद्ध लोह पर धान्यकणादि गुरु द्रव्य रखना । यदि वह तैरता रहे तो 'ऊनम् परीक्षा' सिद्ध है ।

'बीज'—इस प्रकार (ऊनमादि द्वारा) सिद्ध लोह में निर्वापण क्रिया द्वारा दूसरी धातु डालना, जिससे साध्य लोह प्रक्षिप्त लोह वर्ण का, मृदु तथा विशेष गुणों वाला हो जाता है ।

वरनाग—नाग को तीक्ष्ण लोह तथा नीलाञ्जन सहित मूषा में द्रवित कर मृदु कृष्ण द्रुतद्रावी नाग बनाना ।

अभिषेक—द्रुत लोहादि पर आठ निमेष पर्यन्त विराम लेकर सलिलादिका प्रक्षेप करना 'अभिषेक' है ।

दुग्धवर्ग—जंगमवर्ग—हस्तिनी, घोटिका, गौ, आविका (भेड़) छागी (बकरी) उष्ट्रिका (ऊटनी) महिषी गर्दभी, नारी ।

वनस्पतिवर्ग—काकोदुम्बर, स्नुही, दुग्धिका अर्क, उदुम्बर, वट, अश्वत्थ, लोध्र ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वन्हिमृत्स्ना—खटिका, सैन्धवलवण, मण्डूर, को महिषी दुग्ध में मर्दन कर श्लक्ष्ण बनाले। इसे मूषादि के सन्धि लेप में प्रयुक्त करें।

मूषा-यन्त्रादि परिचय

मूषापर्याय—क्रौञ्चिका, वन्हिमित्रा, पाचनी, करहाटिका

मूषालक्षण—मुष्णाति (नाशयति) यस्माद्दोषान् तस्मात् मूषा इति निगद्यते।

विधान—ढक्कन।

सन्धिलेप—मिट्टी, किट्ट, आदि के साथ मूषा या शराव (प्याले) घटादि की सन्धि को बन्द करना सन्धि-लेप कहाता है।

मूषोपयोगीद्रव्य—(१) मृत्तिकाः-पाण्डु वा शोणवर्ण, अस्थूल, शर्करासम अग्नि, सह इसके अभाव में वाल्मीक वा कुम्भार की मृत्तिका। (२) दग्ध तुष, (३) शण (४) हयलद्दि, (५) कोयले, लोहकिट्ट आदि।

मूषाभेद तथा प्रयोजन—

१ वज्रमूषा	सत्वपातन के लिये
२ योगमूषा	पारदभस्मादि बनाने के लिए
३ वज्रदावणिका	वज्र के सत्व पायनार्थ
४ गारमूषा	ढालन कर्म के लिए
५ महामूषा	अभ्रकादि के सत्व के पातनार्थ
६ गोस्तनी मूषा	शोधन तथा सत्वों के द्रावणार्थ
७ मल्लमूषा (प्याले)	पर्पटी निर्माणार्थ
८ महामूषा	लोह माक्षिकादिके पुटनार्थ
९ वृन्ताकमूषा	खर्परादि के सत्व पातनार्थ

सूचना—आजकल भी बाजार में उपयोगी मूषाएँ (Crucibles) मिलती हैं।

मूषाप्यानन—मूषा में द्रव्य जब पिघलने लगे तो औषधि की रक्षा के लिए थोड़ी देर मूषा को अग्नि से बाहर निकालना मूषाप्यायन कहाता है।

अँगाराधानिका—हसन्ती-सिगड़ी-अँगीठी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कोष्ठिका—आष्टी-भट्टीः—सत्वपातनार्थ तथा उनकी शुद्धि के लिए।

(अ) आंगार कोष्ठिकाः यह चतुरस्र (चौकोर) होती है। पृथ्वी के उपर बनाई जाती है। चौड़ाई-लम्बाई अर्धनृप हस्तः (१२ इंच)। ऊँचीःनृपहस्त प्रमाण १'१०" जिसमें चार अँगुल छिद्र में समकोण नलिका लगाएँ। प्रयोजनः सत्त्वपातन केलिए उपयोगी हैं।

(आ) पाताल कोष्ठिका पृथ्वी में गर्त्त बनाकर यह बनाई जाती है। ऊँचाई लम्बाई तथा चौड़ाई एक वितस्ति (१२अँगुल) मध्य में गोलछिद्र, भस्त्रा नाल तिर्यक लगाएं। मृदु द्रव्यों के निर्माणार्थ।

पुटानि

पुट लक्षण—रस उपरस लोहादिकी भस्म करने के लिए अग्नि का प्रमाण।

पुट प्रयोजन—धातु आदि में, दोष-हानि, गुणवर्धन, देहमें पाचन व आचूषण योग्य बनाना, निरुत्थत्व तथा वारितरत्व और दीपन गुण उत्पन्न करना। पुटों से भस्मों में वारितरता, रेखापूर्णता, लघुता, शीघ्र व्यापिता और दीपनता आती है।

पुट भेद, सूर्यपुट—भावनायुक्त द्रव्योंको धूपमें सुखाना।

महापुट—व्यामार्ध (४२ अंगुल, = ३ फुट, १ इंच) लम्बे चौड़े तथा गहरे चतुरस्र (चौकोर) गढ़ेमें अग्नि देना।

गजपुट—नृपहस्त सपादहस्त (३० अंगुल) प्रमाण गहरे लम्बे तथा चौड़े चतुरस्र गर्त्त में अग्नि देना।

वाराह पुट—अरत्नि (अंगूठे तथा प्रथम अंगुली के विस्तार भर) प्रमाण चतुरस्र कुण्डमें अग्नि देना।

कुक्कुटपुट—वितस्तिद्वय (२४ अंगुल=१' ४") प्रमित कुण्डमें अग्नि देना।

कपोतपुट—आठ वन्योपलोंसे अग्नि देना। यह रस साधनार्थ है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोबर पुट—गोबर या तुषोंसे क्षुद्र कुण्डमें या भूमिपर अग्नि देना।

भाण्ड पुट—मूषामें औषधि रखकर उस मूषाको तुषपूर्ण भाण्डमें अग्नि देना।

वालुकापुट—औषधि पूर्ण मूषा को उष्ण वालुका के मध्य में रखकर ताप देना।

भूधर पुट—भूमिगर्त में मूषा रखकर उसके ऊपर दो अंगुल वालुका भरकर ऊपर से अग्नि देना।

लावकपुट—औषध पूर्ण मूषाको पृथ्वी गर्तमें रखकर उसपर चारों ओर विस्तृति प्रमाण तुष या गोबर भरकर अग्नि देना। यह तालादि मृदु द्रव्योंके लिए है।

यन्त्राणि

निरुक्ति—रसोपरसादीनि मारणाय यन्त्र्यन्तेऽनेनेति यन्त्रम्। (रस धातु आदिको मारणादिके लिये जिसके द्वारा नियन्त्रणमें बाँधा जाता है उसे यन्त्र कहते हैं।)

भेद—

नाम	प्रयोजन
१ दोलायन्त्र	शोधन तथा स्वेदनके लिए
२ विद्याधर या ऊर्ध्व पातनयन्त्र	ऊर्ध्वपातनार्थ
३ अधःपातन यन्त्र	अधः पातनार्थ
४ तिर्यक्पातन	तिर्यक् पातनार्थ
५ कच्छप यन्त्र	गन्धक जारणार्थ
६ वालुका यन्त्र	कुप्पी पक्वरसायन निर्माणार्थ
७ लवण यन्त्र	,, ,,
८ वाष्पस्वेदन यन्त्र	वनौषधिसत्त्व निर्माणार्थ
९ डमरु यन्त्र	गन्धकादि शोधनार्थ
१० नाड़िका यन्त्र	अर्क, परिस्रुत जल बनानेके लिए
११ पातालयन्त्र	गन्धकादिके तैल निष्कासनार्थ
१२ स्वेदनीयन्त्रम्	स्वेदनार्थ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसशास्त्रीय द्रव्यविज्ञानीयोनामद्वितीय आदर्शः

'रसशास्त्र' नामगर्भे हेतुः—पारद का नाम रस, रसेन्द्र है। क्योंकि यह अभ्रकादि का भक्षण कर लेता है। इसके समस्त योग भी **'रस'** कहाते हैं। अतः पारद को प्रधान या मूल में रखकर, जिस शास्त्र की रचना हुई हैं वह 'रस शास्त्र' कहाता है। इसकी विशेषता तथा महत्ता पारद के साथ सम्बन्धित है। अतः पारद के महत्त्व से ही इसका महत्त्व सिद्ध हो जाता है।

पारद का महत्त्व—अल्पमात्रोपयोगित्वात्, अरुचेरप्रसंगतः।
क्षिप्रमारोग्यदायित्वात् औषधिभ्योऽधिकोरसः॥
मूर्छितो हरति रुजं बन्धनमनुभूय मुक्तिदोभवति।
अमरीकरोति हि मृतः कोऽन्यो:करुणाकर:सूतात्॥

पारद नामानि—रसो रसेन्द्रः सूतश्च पारदो मिश्रकस्तथा॥

नामनिरुक्तिः—रसनात् सर्वं धातुनां 'रस' इत्यमिधीयते।
जरारुङ् मृत्युनाशाय रस्यते वा रसो मतः॥
रसोपरसराजत्वात् 'रसेन्द्र' इति कीर्त्तितः।
देहलोहमयीं सिद्धिं सूते 'सूत' स्ततः स्मृतः॥
रोग पंकाब्धिमग्नानां पारदानाच्च 'पारदः'।
सर्वधातु गतं तेजो मिश्रितं यत्र तिष्ठति।
तस्मात् स 'मिश्रकः' प्रोक्तो नानारूप फलप्रदः॥

पारदः (*Mercury*)

अशुद्ध पारद के लक्षण—धूम्रवत्, कृष्णवर्णं, परिपाण्डु, विचित्रवर्णं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शुद्ध पारद के लक्षण—अन्तः सुनील, बाहरसे उज्ज्वल; मध्याह्न सूर्यवत् प्रकाश्यमान ।

शोधन का प्रयोजन—दोषैश्च कंचुकादिभिश्च रसराजो विनियोजितः। तदा प्रभृति सूतोऽसौ नैव सिध्यत्यसंस्कृतः ॥ अतः शोधनीयम्

पारददोष—

दोषनाम	रोगनाम	दोषनाम	रोगनाम
नाग	व्रण, जाड्य	वंग	कुष्ठ
विष	मृत्यु	चापल्य	वीजनाश
वह्नि	ताप	असह्याग्नि	मोह
मल	जाड्य	गिरिदोष	स्फोट

रसरत्नसमुच्चयानुसार—सहजदोष-विष, मल, वह्नि ।

यौगिक—नाग, वंग । भूमिजा गिरिजा तथा वारिजा की तृतीय श्रेणी है। इसमें चापल्य, गिरिदोष, और असह्याग्नि, तथा औपाधिक कंचुकी सम्मिलित हैं !

सप्तकंचुका—पर्पटी पाटनी भेदी द्रावी मलकारी तथा ।
अन्धकारी तथा ध्वांक्षी विज्ञेयाः सप्तकंचुकाः ॥

भूमिज दोष—कुष्ट । **वारिज दोष**—जाड्य । **गिरिजा दोष**—वातरोगों को उत्पन्न करते हैं ।

शोधनार्थमात्रा—शोधन दोष निरासार्थं पारद का शोधन किया जाता है। शोधनार्थं पारद का परिणाम १ पल (५ तोला) से १०० पल तक होता है। १ पल से कम पारद का शोधन अव्यवहार्य है ।

शोधन के भेद—१. सामान्य शोधन, २. विशिष्ट शोधन ।

सामान्य शोधन—१ नागदोष—घर का धुआँ (गृहधूम्र) जो पाकशाला में ऊपर छत पर लगता है (soot), हरिद्रा तथा ऊन से मर्दन किया जाता है। मर्दनानन्तर काञ्जी आदि अम्ल द्रव से पारद का प्रक्षालन करना चाहिए। २ वंगदोष—इन्द्रायण, अंकोल तथा हरिद्रा से। ३ अग्निदोष—चित्रक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

से। ४ मलदोष–आरग्वध से। ५ चपलदोष–काले धतूरे से, ६ विषदोष–त्रिफला से, ७ गिरिदोष–त्रिकटु, ८ असह्याग्नि–दोषनाशार्थ गोक्षुर से मर्दन करना चाहिए। प्रत्येक मर्दन के पश्चात् किसी अम्ल पदार्थ से धोना चाहिए।

द्वितीय प्रकार—नागवेलरस अदरकरस, क्षारत्रय (यवक्षार, सर्जिका क्षार, टंकण) से क्रमशः सात दिवसपर्यन्त मर्दन कर के कांजी से प्रक्षालन कर लें।

विशिष्टशोधन (अष्ट संस्कारीय शोधन):—

नाम संस्कार	द्रव्य	प्रयोजन
१. स्वेदन—	त्रिकटु, मूली, राई, सैन्धव द्वारा तीन दिन तक दोलायन्त्रमें स्वेदन	मल शैथिल्यकारक
२. मर्दन—	सैन्धव, गृहधूम्र, राजिका शुण्ठीसे ३ दिन तक मर्दन	बहिर्दोष निरासार्थ
३. मूर्च्छना—	त्रिफला, चित्रकमूल, गृहकुमारीसे सात दिन तक नष्टपिष्ट करना	मल, विष, अग्निदोष निरासार्थ
४. उत्थापन—	सौभाग्य, लवण, मधुके साथ पारदको पीसकर कांजी में ३ दिन स्वेदन एवं ३ वार कुर्यात्	मूर्च्छासे उत्पन्न दोष निरासार्थ
	५. पातनत्रितयम्	
अ. ऊर्ध्वपातन—	सर्जिका, यवक्षार, हींग, पाँचो लवण, (अम्लवर्गसे पीसकर ऊर्ध्वपातन यन्त्र द्वारा पातन करे	यौगिक दोष नाग, वंगके नाशार्थ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आ. अधःपातन—हरीतकी, विभीतक, राजिका सैन्धव, अपामार्ग, शिग्रु बीजोंसे नष्टपिष्ठ कर अधःपातन	,,	
इ. तिर्यक्पातन—उपर्युक्त पदार्थोंसे नष्टपिष्ट कर तिर्यक्पातन यन्त्र द्वारा पातन	,,	
६. बोधन—सैन्धव और जलसे भरी काचकुप्पीमें भर पृथ्वीगर्भ में तीन दिन तक रक्खे	वीर्य उद्बोधनार्थ	
७. नियामन—लसुन, भृङ्गराज, चिञ्च. नौसादर, मुस्तकके साथ स्वेदन	चापल्य नाशार्थ	
८. दीपन—चित्रक क्वाथ और कांजी के साथ तीन दिन तक स्वेदन करे	पारदको जारण समर्थ या ग्रासार्थी बनाना	

शोधक पदार्थों की मात्रा—उक्त सर्व संस्कारों में प्रत्येक शोधक पदार्थका चूर्ण पारदकी अपेक्षा १६ वाँ भाग लेना चाहिए।

हिंगुलोत्थ पारद—हिंगुलको निम्बुरसमें पीसकर सुखा लें। और ऊर्ध्वपातन यन्त्र द्वारा या विद्याधर यन्त्र द्वारा ऊर्ध्वपातन करलें। यह सर्व दोष रहित पारद होता है।

शोधन—इसे षोडशांश हरिद्रा चूर्ण, सैन्धव, तथा निम्बुरसमें दो दिनतक पीस-कर कांजीसे धो लें। यह अष्ट संस्कारित पारद के समान गुणदायक है।

जारणा

विधि विशेष अनुसार पारद में गन्धकादि को जलाना "जारणा" कहाती है।

द्रव्यपरिमाण—पारदकी अपेक्षा आधी गन्धकादि से लेकर ६ गुणा तक द्रव्य जारणार्थ लिये जाते हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूर्च्छना—लक्षण परिभाषा प्रकरण में लिख दिया है।

भेद—मूर्च्छना
- सगन्धमूर्च्छनाः—अन्तर्धूम रससिन्दूरादि
  - —वहिर्धूम ”
- निर्गन्ध मूर्च्छना—रसपुष्पादि

गंधक जारित पारद के गुणः—

(१) समगन्धक जीर्ण	सामान्यरोग नाशक	(२) द्विगुण	महारोगनर
(३) त्रिगुण	अतिवाजीकरण	(४) चतुर्गुण	मेधास्मृति वर्धक
(५) पंचगुण	अशेषरोगहर	(६) षड्गुण	अद्भुतगुणकारक

पारद-भस्म—(१) रक्त, रससिन्दूरादि, (२) श्वेत, रसपुष्पादि (३) पीत, सर्वाङ्ग सुन्दर रस (४) कृष्ण, (वक्ष्यमाण)

भस्मविधि—हिंगुलोत्थ पारह २ पल, शुद्ध गन्धक १ पल वट दुग्ध से मर्दन करें। मृदु अग्निपर रखकर वट दण्ड से एक दिवस पर्यन्त घर्षण करें।

गुण—संग्रहणी, अतिसार, क्षयरोगोंकी शामक, रसायन तथा वाजीकरण है।

मात्रा—$\frac{1}{2}$ से १ गुंजा पर्यन्त; अनुपान := मधु, दुग्ध, मक्खन।

मृत्पारदपरीक्षा—निर्धूम, गुरु, चाकचक्यरहित, अग्नि पर रखने से अविकृत।

रस-भक्षण तथा विधिकाल—प्रभातकालमें निरन्न ही पारदके योगों का भक्षण करना चाहिए। तथा मध्याह्नमें(दूध+चावल) भक्षण करना चाहिए।

पथ्य—आर्द्रक, घी, धनियाँ, जीरासे संस्कृत पटोल, चौलाई, तण्डुलीय, बथुआ, पुनर्नवा, भिस, गोदुग्ध, दही, गेहूँ, मूँगकी दालका सेवन करना चाहिए।

अपथ्य—क्रोध-शोकादि मानसिक विकार, मिथ्याहार विहार, अतिनिद्रा, अतिस्नान अति मैथुन, तथा तृष्णाका त्याग करें। कूष्माण्ड, कलिंगफल, कुलत्थ, कर्कोटी, कपित्थ, कलायादि ककारादि गणका तथा उड़द, मसूर, तैल, मद्य, आसव, अम्ल तथा कटुतिक्त पदार्थों का सेवन।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रस विकार में चिकित्सा—(१) शीत स्थानमें रोगीको रक्खे, शीत ही चिकित्सा करें ; (२(गिलोय, धनियाँ, खस, मुलैठी, चन्दन, पित्तपापड़ाके क्वाथमें वंशलोचन तथा सिता मिलाकर पिलाएँ; (३) काकमाची रस १ मास सक सेवन कराएँ। (४) तुलसीरस, ताम्बूल पत्र, गन्धक का लेप सर्व शरीर पर करें। (५) अमूर्छित वा अमृत रस भक्षण जन्य रोगों में शुद्ध गन्धकको नागबेलके पत्ते में रखकर सेवन करायें।

योगः—

	नाम	मात्रा	व्याधि
१.	मुग्ध रस	१ गुन्जा	फिरंग बालासितार
२.	रसपुष्प	१/२ से२.१/२ गुन्जा	रेचक, पित्तहर, फिरंगहर
३.	रसकपूर	१/६४ से १/३२ गुन्जा	कृमिघ्न, त्वक्रोगहर
४.	रससिन्दूर	१ रे २	प्रमेह ज्वरादि रसायन
५.	मकरध्वज	१ से २ गुन्जा	,,

नाम—गन्धक शुल्वारि *Sulpher* (*S*) **बलि-वसा**

भेद— { आमलासार—यह चिकित्सामें व्यवहार्थ है।
लक्षण – हरिद्रा समवर्ण, कान्तियुक्त, नवनीतके समान चिक्कण।
नलिका गन्धक—यह हीन गुण है।

अशुद्ध गन्धक—सेवनसे दोष या गन्धक शोधनका प्रयोजन–ताप, दाह, भ्रम, चित्तभ्रम तथा रक्तज रोग, उत्पन्न होतें हैं इनको दूर करनेके लिए शोधन किया जाता है।

शोधन—मिट्टीके चौड़े मुखके घटपर एक सच्छिद्र मोटा वस्त्र बाँधे। घड़ेमें गोदुग्ध भरे। इस वस्त्रके चारों ओर २ अँगुल मोटी आलबाल बनाएँ। लोहके दर्वीयन्त्र (कड़छी) में गन्धकको द्रवित कर वस्त्र मेंसे दूधमें छानदें। पुनः गरम जल से धोलें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—रसायन, कृमिघ्न, रक्तशोधक, सर, उष्ण, कटुविपाकी, दीपन, त्वचा रोग नाशक है।

मात्रा—१ से ८ गुंजा पर्यन्त; अनुपान—मधु, मलाई, दूध।

योग—१ कज्जली, मात्रा १ से २ गुंजा फिरङ्ग व्रणहर।

२ रसपर्पटी मात्रा १ से १० गुंजा, संग्रहणी, क्षयादि।

३ गन्धक रसायन १-४ रत्ती।

हिंगुल, दरद *Cinnabar* (*HGS*) सिंगरफ

भेद—१ शुकतुण्ड (त्याज्य) कृष्णाभः २ हंसपाद प्रवालाभः (ग्राह्य) (३) खनिज (४) कृत्रिम।

ग्राह्य के लक्षण—जपापुष्पवर्ण, महोज्ज्वल, गुरु।

अशुद्धके दोष—मोह, क्लम, क्षीणता, प्रमेह, अन्धता, चित्तभ्रम।

शोधन—आर्द्रक वा लकुच स्वरससे सात बार मर्दन करे।

गुण—दीपन, पाचन, बल्य, त्रिदोष, आमवात, प्रमेह, प्लीहावृद्धिहर, रसायन।

योग—१ श्री सिद्ध दरदामृत, मात्रा—१।२ गुंजा, उरुस्तम्भ, आमवात।

२ श्री सिद्ध हिंगुलेश्वर, मात्रा—१ गुंजा, ज्वरातिसार-ज्वरशामक। नाड़ी नियामक दाह ज्वर पिपासाहर अति अनुलोमन। मात्रा—अनुपानादि से रससिन्दूरवत् गुणकारक।

अभ्रकः, गगनः $KH_2AI_3(SIO_4)_3$ (*MICA.*)

१ भेद—श्वेत, —रक्त, —पीत } तीनों चिकित्सामें अनुपयोगी हैं।

—कृष्ण के भेद १ पिनाक् २ नाग ३ मण्डूक ४ वज्र।

नाम	लक्षण	दोष
१ पिनाक	अग्नि पर गरम करने से पत्रमोचन होता है।	विबन्ध, कुष्ठ

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

२ नाग	अग्निपर गरम करने से सर्प के समान फूत्कार दे,	भगन्दर, कुष्ठ
३ मण्डूक	अग्निपर गरम करने से मेंढकवत् शब्द करता है,	अश्मरि
४ वज्राभ्रक	अग्निपर गरम करने से अविकृत रहता है।	चिकित्सोपयोगी

ग्राह्याभ्रक लक्षण—गुरु, उज्ज्वल, नीलांजन वर्ण तथा सुखनिर्मोच्य मृदु, पृथुदल

अशुद्ध के दोष—हृदय और पार्श्वपीड़ा, पाण्डु, शोफ, क्षयरोग।

शोधन—अग्नि में तपाकर त्रिफला क्वाथ या गोदुग्ध में सातवार निषेचन करें।

धान्याभ्रक—अभ्रक की अपेक्षा चतुर्थांश शाली (धान्य) लेकर एक सच्छिद्र मोटे कपड़े यथा कम्बल में, शिथिल बाँध कर २४ घंटे जल में पड़ा रहने दें। ततः हाथ से मलकर अभ्रक को उस बद्ध वस्त्र से ही बाहर निकालकर स्वच्छ जल में धोकर धूप में सुखालें।

चूर्णाभ्रं शालिसंयुक्तं वस्त्र बद्धंहि काञ्जिके।
निर्यातं मर्दनात् वस्त्राद्'धान्याभ्र'मिति कथ्यते।

भस्म—२० से १०० पुटें देकर रोग निवारणार्थ। और १०० से १००० पुटें देकर रसायनार्थ अभ्रक भस्म बनाएँ।

विधि—शुद्ध अभ्रक अथवा धान्यभ्रक को कासमर्द के रस में १ भावना देकर गजपुट में अग्नि दें। इस प्रकार १० बार पुट देकर पुनः अर्कदुग्ध की भावना देकर १० पुट दें। २० पुटों में सिन्दूराभ भस्म बन जाती है।

सूचना—वटजटा, दशमूल, पुनर्नवादि अनेक द्रव्यों द्वारा भस्म बनाई जाती है। विस्तार भय से यहाँ उनका वर्णन छोड़ दिया है।

भस्म की परीक्षा—निश्चन्द्रता, सूक्ष्मता, स्पर्शकोमलता, अरुणावर्णता।

अमृतीकरण अभ्रक भस्म १० भाग, त्रिफला क्वाथ १६ भाग, घृत ८ भाग लोह पात्रमें मध्यमाग्नि पर पाक करें।

गुण—मधुररस, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, त्रिदोष शामक, रसायन, जीर्णज्वर, क्षय नाशक, मेध्यः, नेत्र्य, बल्यः। मात्रा :—१ से २ गुंजा।

योग—सुवर्ण वसन्त मालती, ज्वरार्यभ्रकादि अनेक।

अभ्रक सेवने अपथ्यः—करीर, कारवेल्लक कर्कटी, कोल, तैल, क्षार, वृन्ताक तथा अम्लपदार्थ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अभ्रक सत्त्व पातनः—वज्राभ्रक ४ भाग, टंकण १ भाग मुशलीरस से मर्दन, मूषा में रख कोष्ठी में द्रवित करने से कृष्णवर्ण सत्व प्राप्त होता है।

सत्वों की विशिष्टता—योग, रस, उपरसादि में ये गुणोत्तर होते हैं। अतः इनकी भस्में अधिक गुणकारी होती है।

सत्वशोधनः—त्रिफला क्वाथ वा वटमूल क्वाथ से मर्दन कर काञ्जी या किसी अन्य अम्लतरल से धोऐं। सत्वगुण-अभ्रक भस्म के समान गुणकारी।

हरिताल, तालक—Dioxide of Arsenic, (As_2 S_3)

भेद—१ पिंड हरिताल (त्याज्य), २ पत्र हरिताल (ग्राह्य)

पत्रतालके लक्षण तथा गुण—सुवर्णवर्ण, उज्ज्वल, स्निग्ध, तनु पत्रमय। यह त्रिदोषघ्न, त्वचारोग, वातरक्त शामक।

पिण्डतालके लक्षण तथा गुण—निष्प्रभ, पत्ररहित, लघु, स्वल्पसत्व। अल्प-गुण, रजःस्राव नाशक।

अशुद्धके दोष—दाह, कम्प, क्षोभ, कुष्ठ, तोद, वात कफज रोगहर।

शोधन—तालके पत्रोंको पृथक्-पृथक् कर कूष्माण्ड स्वरस में अथवा चूर्णोदक या त्रिफला क्वाथमें १ याम तक (तीन घण्टे) दोला यन्त्रद्वारा स्वेदन करें।

मारण (भस्म)—शुद्ध तालको पलाशमूलके घनक्वाथ से भावना दें। ततः भैंसके मूत्र में, चक्रिका बनाकर सुखालें। कपोट पुटमें अग्नि दें। इस प्रकार १२ पुटोंमें भस्म हो जाती है।

गुण—फिरंग रोग, वातरक्त, विसर्प, विषमज्वर तथा रक्तदोष, और त्वचा रोग।
मात्राः—१/४ से १/२ गुंजा।

तालभस्म परीक्षा—सजल लवणद्राव में १ रत्ती तालभस्म डालकर गरम करें। यदि पीत वर्ण का चूर्ण पात्र तल में बैठने लगे तो तालभस्म ही है, यह समझें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसमाणिक्य—शुद्ध हरतालका सूक्ष्म चूर्ण बना लें। पुनः थोड़ा चूर्ण, दो श्वेत अभ्रक के पत्रों के मध्य में रखकर जलते अंगारों के मध्य में अभ्रक पत्रों को रख दें। पत्रों को संदंश द्वारा पकड़े रहें। जब माणिक्यसमान वर्ण हो जाए तो अभ्रक पत्रों को निकाल कर स्वांग शीत होने पर रसमाणिक्य प्राप्त करें।

सूचना—शराव सम्पुट में शुद्ध ताल चूर्ण भर कर बदरीपत्र कल्क से सन्धि लेप कर अग्नि पर गरम करने से भी रसमाणिक्य बनता है। एक शरावके उदरमें दूसरे शरावकी पीठ रखनी चाहिए। ऊपरके शरावका मुख ऊपरको रहना चाहिए।

गुण—तालकवत्। मात्रा $\frac{1}{2}$ से २ गुन्जा पर्यन्त।

तालक सत्वपातन

शुद्ध ताल २ पल (१० तोला) टकंण २ पल (१० तोला) मेषी दुग्ध, कूष्माण्ड कुमारी, निम्बुरस स्नुही अर्कदुग्ध से मर्दन कर चक्रिका बना धूप में सुखाकर वालुका यन्त्र में मन्दाग्नि से ४ दिन तक पाचन करें। ऊर्ध्वलग्न श्वेत सत्त्व प्राप्त करें। मात्रा $\frac{1}{8}$ गुंजा

प्रयोग—कुष्ठ, त्वचा रोग श्वित्र श्वासादिहरः।

तालविकारे चिकित्सा—कूष्माण्डस्वरस वा जीरक सिता मिलाकर सेवन करे

मनःशिला (नैपालिका-कुनटी) Dioxide of Arsenic—($As_2 S_2$)

अशुद्धके दोष—मूत्ररोध, विबन्ध, बल तथा कान्तिनाशक।

शोधन—आर्द्रक वा अगस्त्यपत्र स्वरससे सात भावनायें दें।

गुण—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटविपाकी, स्निग्ध, श्वास क्षय, अग्निमान्द्य नाशक।

मात्रा—१।२४ से १।१६ गुंजा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फेनाश्म, गौरीपाषाण शंखविष Arseneous Acid (As_2O_3)

भेद—१ रक्त (खनिज, विरल व्यवहार) २ श्वेत (प्रायः व्यवहार) यह कृत्रिम होता है ।

शोधन—करेलेके रस वा गोदुग्धमें दो याम तक दोला यन्त्रमें स्वेदन करें ।

गुण—वात कफ रोगहर, श्वास, विषमज्वर, फिरंग, सन्धिवात शामक, यकृदु-त्तेजक, दीपक, कांतिवर्धक । श्लीपदहर, रसबन्धकृत् ।

मात्रा—१|२० से १|३० गुंजा । मात्रा बनानेके लिए सोमल १ गुन्जाको कृष्णमरिच चूर्ण १५ माषक में मिलाकर आर्द्रक रसकी भावना देकर १-१ गुन्जाकी गोली बनालें ।

सूचना—शुद्ध मल्ल तथा मल्लभस्म समान गुणकारी है । भस्म बनाना कठिन है अतः शुद्ध मल्ल का ही व्यवहार अधिक है ।

———

तुवरी—स्फुटिका, सौराष्ट्रजा Alum, $K_2\ SO_4$, $AI_2\ (\ SO_4\ )\ 3$, 24, H_20 ,

निर्मलीकरण—स्फटिकीकरण विधिसे ।

शोधन या मारण—तुवरीका चूर्ण बनाकर मृदु अग्निपर लोहपात्रमें शुष्क चूर्ण बनालें ।

गुण—तिक्तकटु कषायरस, उष्णवीर्य, कटु विपाकी, त्रिदोषहर, संग्राहक, संको-चक, नेत्ररोग, रक्तस्राव, विषम ज्वर तथा मुख और दन्तवेष्टरोग नाशक ।

मात्रा—२ से ४ गुन्जा ।

———

खटिका-कठिनी (Ahalk)

शोधन—खटिका का चूर्ण बना शुद्ध जलसे प्रक्षालन करलें । खटिका जल में अविलेय है । अतः वह नीचे रह जाएगी । और मलांश जल में मिलकर बाहर चला जायगा । इसका मारण नहीं किया जाता ।

गुण—मधुर कषाय, शीतवीर्य, शोथ, पित्त, दाह, अतिसार, कफरक्त विकार अतिस्वेद एवं रक्तस्राव नाशक है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—१ माशा से तीन माशा तक ।

गोदन्ती Gypsum, Colcium Sulphate (Ca So4 H. 20)

स्वरूप—श्लक्ष्ण, पत्रयुक्त, चन्द्रवत् श्वेत चमकदार ।

शोधन—निम्बुरस में दोला यन्त्रद्वारा आधा याम स्वेदन करें ।

मारण—शराव सम्पुट में रखकर गजपुट में भस्म करें । प्रायः एकही पुट में श्वेत भस्म बन जाती है । कुमारी स्वरस की भावना भी देते हैं ।

गुण—पित्तज्वर, जीर्णज्वर, श्वास, कास नाशक और दीपन ।

मात्रा—१ से ४ गुन्जा पर्यन्त ।

शङ्ख Conch

भेद — { वामावर्त्त, दक्षिणावर्त्त } दोनों का ही प्रयोग होता है ।

ग्राह्य—स्निग्ध, वृत्त, दीर्घकाय, सूक्ष्ममुख, गुरु, श्वेत ।

शोधन—कांजी वा निम्बुरस में मर्दन कर दोला यन्त्र में एक याम स्वेदन करें ।

मारण—खण्ड खण्ड करके घृतकुमारी स्वरस के मध्य में रखकर गजपुट में अग्नि दे । २-४ पुटों में ही श्वेत भस्म बन जाती है ।

गुण—शीतल-दीपन, बल्यग्राही, क्षारीय, अम्लपित्ति, अग्निमान्द्य, संग्रहणी, परिणामशूल मात्राः गुन्जा ।

योग—१ शंखवटी; मात्रा २ से ४ गुन्जा; अजीर्ण, उदर-शूल में ।

२ शंखद्राव, मात्रा ५ से १० बिन्दु जल में मिलाकर अग्निमान्द्य अजीर्ण, उदर-शूल, वमन विसूचिकादि में ।

निर्माण—शंखचूर्ण, टंकण, स्फुटिका, यवक्षार, नृसार, सर्जिका क्षार, पंचलवण-सब समान भाग । तिर्यक् पातन यन्त्र द्वारा पातन करें ।

सूचना—शम्बूकनाम क्षुद्रशंख का भी प्रयोग होता है । यह शूल नेत्र रोग रक्तातीसार शामक है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मुक्तामाता-शुक्ति Pearl Mother

भेद—(१) मुक्ताशुक्ति, (२) शुक्ति। दोनों ही व्यवहृत होतीं हैं।

शोधन-मारण-मात्रा—शंखवत्।

गुण—मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, श्वास,उदरशूल, मूत्रशर्करा, प्लीहावृद्धि, हृदय रोग, अन्त्ररोग, अस्थि मार्दव शामक।

सूचना—जलशुक्ति का भी इसी प्रकार प्रयोग होता है।

वराटिका, कपर्दिका Cowree

भेद—१ पीत (उत्तम); २ श्वेत (मध्यम); ३ धूसर (अधम)

ग्राह्यवराटिका—सुवर्ण वर्ण, पीठपर ग्रन्थियुक्त, दीर्घ वृन्त। भार में १½ शाण, (४½ माशा)।

शोधन-मारण-मात्रा—शंखवत्।

गुण—उष्ण, दीपक, नेत्ररोग, अग्निमान्द्य, संग्रहणी, परिमाणशूल तथा क्षय-रोग, कर्णस्राव नाशक है—

एणश्रृंग, मृगश्रृङ्ग (Hart's Horn) मृगविषाण

ग्राह्य—दीर्घ, भारबहुल, दृढ़ अनेक श्रृंगोंवाला तथा कीटोंसे अभक्षित।

मारण—करपत्र (आरी) से खण्ड खण्ड करके अंगारोंमें दग्ध कर ले। मर्दन से काला चूर्ण बन जायगा। चूर्णमें अर्कदुग्ध वा कुमारीरस की भावना दे चक्रिका बना धूपमें सुखालें। शराव सम्पुटमें बन्दकर गजपुटमें भस्म करे। तीन बारमें उत्तम श्वेत भस्म बनेगी।

सूचना—श्वेत भस्मकी अपेक्षा कृष्ण मसी अधिकगुणप्रद है। मृगश्रृंगके स्थान पर बारासिंगा (Stag's Horns) का सींग भी उपयोग में आता है। गुण प्रायः समान हैं।

गुण—हृदयरोग, हृदय शूल, पार्श्वशूल, वातिकवेदना हर।

मात्रा—२ से ४ गुंजा पर्यन्त।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

समुद्रफेनः-डिण्डिरः

शोधन—गरम जलसे धोकर निम्बुरसमें एक बार भावना देलें।

गुण—चक्षुष्य, लेखन, कर्णस्रावहर, कफ शामक कषाय, शीत, लेखन, पाचन सर दीपक।

मात्रा—२ गुंजा-प्रायः, वाह्य प्रयोग अंजनादिमें।

चूर्ण (सुधा) (Lime, Cao)

सूचना—इसका 'चूर्णोदक' के रुप में ही चिकित्सा में व्यवहार होता है।

चूर्णोदक निर्माणः—चूर्ण २ गुंजा शुद्धजल ५ तोला, दोनों को घोल कर तीन याम तक एकान्त स्थान में रहने। ततः सारक पत्र से छान लें।

गुणः—अतिसार, उदरकृमि, अम्लपित्त, ग्रहणी शूल, वमन नाशक। विशेषकर दुग्ध पाचक है।

मात्राः—२० विन्दुओं—६० बिन्दुओं तक, एक वर्ष के शिशु के लिए।

सामान्य मात्रा—१-२ तोला तक।

दुग्धपाषाण (शंखजीरक) संगेजिराहतः ($Mg_2 SiO_4$) (Silicate of magnasia) (Soap Stone)

शोधन—खटिका वत्। मारण नहीं होता। चूर्ण बनाकर प्रयोग।

गुणः—मधुर, कुछ उष्ण, मधुर विपाकी, ज्वरहर हृदयरोग, दाह, आध्मान, त्वचा रोग तथा पित्त शामक, रक्तस्राव रोधक है।

यवक्षारः (जौखार), यावशूकजः Impure Potassium Carbonate

निर्माण विधि—यावशूकोंकी भस्म बनाकर जल द्वारा क्षार विधिसे बनालें। क्षारविधि निघण्टु प्रकरणमें देखें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—पाचक, स्वेदल, मूत्रल, वात कफहर, रजःस्रावक, गुल्म, प्लीहायकृतोदर, कास, मूत्रकृच्छ्र, अम्लपित्त, उदरशूलहर कण्ठ रोगहर ।

मात्रा—४ गुंजासे १० गुंजा पर्यन्त, उष्णजलके साथ ।

———

सुवर्चिका-सर्जिका क्षारः Impure Carbonate of Soda (Na 2 Co 3)

निर्माण—क्षारमय मृत्तिका (खारी मिट्टी) तथा लोणी, यवासा आदि वनस्पतियोंकी भस्मसे क्षार विधि द्वारा बनाया जाता है ।

गुण—कटु, तीक्ष्ण, उष्ण, पाचन, वातानुलोमन, श्वास कास, गुल्म, आध्यान, उदरशूल तथा कृमिहर ।

मात्रा—४ से १० गुन्जा उष्ण जलके साथ ।

सूचना—तिलक्षार, पलाशक्षार, वासाक्षार, अपामार्गक्षार

सूचना—तिलक्षार, पलाशक्षार, वासाक्षार, अपामार्गक्षार स्नुही क्षार, अर्क क्षारादि वानस्पतिक क्षारोंका वर्णन तत्तद् वनस्पतियोंके साथ किया गया है ।

———

द्रावक, टंकणः, सौभाग्य, Borax (Na2 B_4 0_7, 10 H 20)

शोधन—निर्मलीकरण स्फटिकीकरण विधिसे उत्फुल्लन क्रिया द्वारा

गुण—कटु, उष्ण, तीक्ष्ण, सारक, कफनिष्कासक, पाचक वातकफहर, पित्तवर्धक, कास, आध्मान, अजीर्ण, बालातिसार, वमन नाशक और रजःप्रवर्त्तक ।

मात्रा—२ से ८ गुन्जा पर्यन्त ।

———

नृसारः, चूलिका लवण (NH_4 CL)

Amonium Chloride

शोधन—स्फटिकीकरण विधिसे ।

गुण—स्निग्ध, तीक्ष्ण, स्वेदल, पाचक, सारक, कफहर अजीर्ण, उदरशूल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आध्मान, प्लीहा यकृतवृद्धि, कासहर, नेत्र्य, कफच्छेदक।

मात्रा—२ से ८ गुञ्जा पर्यन्त।

सोरकः-सूर्यक्षार (KN03)

(*potassium Nitrate*)

शोधन—स्फटिकी करण विधिसे निर्मल कर एला॰ क्वाथ से तीन भावना दें।

गुण—कटु, उष्ण, तीक्ष्ण, मूत्रल, स्वेदल, पाचक, अजीर्ण, मूत्रकृच्छ्, ज्वरहर, श्वास कास वेग शामक, अश्मरी, अग्निमान्द्यहर।

मात्रा—२ से १० गुन्जा पर्यन्त।

लवण पंचक (Nacl)

प्रकार—(१) सैन्धव Rock salt; (२) सामुद्र Sea salt, Sodium chloride (३) सौवर्चल (कृष्ण) लवण; (४) रोमकम्; (५) बिड् लवण। सब लवणों में Sodium Chloride तत्त्व मुख्य है।

गुण—सर्व लवण दीपन, पाचन, भेदन, अनुलोमन, वातकफहर हैं। कृष्ण लवण विशेषकर अनुलोमक, पाचक उदर-शूलहर। गुल्म, अजीर्ण, उदरशूल, आध्मान विबन्ध नाशक है। सैन्धव शीत तथा नेत्र्य है, अन्य उष्ण हैं।

योग (१) अर्क लवण:-अर्कपत्रों तथा सैन्धवको सम भाग लेकर पत्रों के मध्य में भरकर अग्निमें भस्म करके बनाया जाता है।

गुण—भेदन, गुल्म, यकृत् प्लीहोदर नाशक—मात्रा—४ से ८ गुञ्जा तक।

२ नारिकेल लवण-नारिकेल फलमें सैन्धवं भरकर पुटपाक विधिसे नारिकेल का नेत्र तोड़कर उसका जल बाहर निकाल दिया जाता है। पुनः उसमें १० तोला सैन्धव भरा जाता है। मृत्तिका लेप कर सुखाकर भस्म करें।

गुण—अम्लपित्त तथा परिणामशूल, वमनहर। मात्रा—४ से ८ गुन्जा पर्यन्त।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

धात्वादि विज्ञानीयस्तृतीय आदर्शः

धातु शब्द निरुक्तिः—खालित्य, पालित्य, कृशता तथा वृद्धता, जर्जरताको दूरकर देहको धारण करती है; अतः इन पदार्थोंको 'धातु' कहा जाता है।

सब धातुओंका सामान्य शोधन—शोधनीय धातुके सूची-वेध्य पत्र बनाकर अग्निमें गरम कर निम्नलिखित द्रवोंमें ३-३ बार बुझाएँ (सिंचन) करें। तैल, तक्र, गोमूत्र, कांजी, कुलत्थक्वाथ। अथवा कदलीमूल रसमें ७-७ बार बुझायें।

सामान्य मारण—शुद्ध मनःशिला, शुद्ध गन्धक, शुद्धधातु सब सामान, अर्क-दुग्धमें भावना देकर मध्यमाग्नि से भस्म कर लें। इस प्रकार १२ पुटोंमें भस्म बन जाती है।

लोह (धातु) भेद

शुद्ध लोहं कनकरजतं भानुलोहाश्मसारम्। पूतिलोहं द्वितयमुदितं नागवंगाभिधानम्। मिश्रलोहं त्रितयमुदितं कांस्यपित्तलनामकम्।

सुवर्ण : हिरण्य Gold. Aurum (Au)

अशुद्धसे हानि—बल-बुद्धि-वीर्यनाश तथा अनेक रोग।

त्याज्य सुवर्ण लक्षण—कठोर, रुक्ष, छेदन करने, कष पाषाणपर घिसने तथा अग्निमें तपाने से श्वेतवर्ण, रजत, ताम्रयुक्त।

ग्राह्य—कोमल, रक्तपीताभ, स्निग्ध, ताम्र, रजत रहित, गुरु, शाणोपल (कसौटी) पर घिसनेपर कुंकुम वर्ण देनेवाला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन—एक कर्ष सुवर्ण पत्रोंपर निम्बुरसमें पीसे हुए मृत्तिका पंचकसे लेप कर कपोत पुटमें सात वार पुट दें।

मारण—शुद्ध सुवर्णपत्र १ कर्ष (१ तोला) शुद्ध पारद १ कर्ष, शुद्ध हिंगुल, गन्धक, मनःशिला, नृसार प्रत्तेक-१-१ कर्ष।

विधि—सुवर्ण पत्र तथा पारदको मिलालें। निम्बुरस या अन्य किसी अम्लद्रवमें पीसकर उष्ण जलसे प्रक्षालन करें। ऐसा करनेपर काला द्रव निकलेगा। जब तब काले वर्ण का द्रव निकलता रहे, प्रक्षालन करते रहें। पुनः शेष द्रव्य भी मिला दें और पूर्ववत् अम्लद्रवसे मर्दन कर धूप में सुखा लें। लघु पटमें अग्नि दें। निश्चन्द्र भस्म बन जायगी।

गुण – मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, मेध्य, रसायन, त्रिदोष हर, क्षयरोग तथा जीर्ण व्याधि शामक है।

मात्रा—१/२ से एक गुंजा पर्यन्त; दूध, मधु, मलाई के साथ।

योग—सुवर्ण वसन्त मालिनी, योगेन्द्र रस, वात चिन्तामणि।

———

रजतः तारः Silver (Ag)

अशुद्धसे हानि—ताप, विबन्ध, अंगसाद, वीर्यनाश।

त्याज्य—तपाने पर मलिन, पीत या रक्त, रुक्ष, लघु, कठोर, सदल।

ग्राह्य—स्निग्ध, मृदु, निर्दल, छेदन करने, तपाने तथा कसौटी पर घिसने से चन्द्रमावत् श्वेतवर्ण।

शोधन—पतले पत्रों को अग्नि में तपाकर अगस्त्य स्वरस में तीन बार वा चांगेरी स्वर में सात बार बुझाएँ।

मारण—शुद्ध रजतपत्र, गंधक, मनःशिला सब समान भाग निम्बु स्वरस वा जल से पीस कर कुक्कुट पुट में तीन बार भस्म करें। काले अंजन के समान भस्म बनती है।

गुण—अम्ल कषायरस, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, त्रिदोषहर, रसायन, परम-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मेध्य, लेखन, वयःस्थापन, सर, गर्भाशय शोधक, रसायन, प्लीहोदर, नाड़ीशूल, तथा निर्बलता निवारक हैं।

मात्रा—१।२ से १ गुंजा पर्यन्त।

सूर्यलोह-ताम्र : शुल्व : Copper (Cu)

भेद—१ नेपालताम्र : लक्षण—स्निग्ध, कोमल, गुरु, धनघातसह, जपापुष्पवर्ण यह ग्राह्य है।

२ म्लेच्छताम्र : लक्षण—कठोर, कृष्ण श्वेत, अरुण छायावाला, लघु भंगुर, कठोर। यह त्याज्य है।

अशुद्ध से हानि—रेचन, वमन, कान्तिनाश, भ्रान्ति, ताप, शोषादि।

शोधन—तनु पत्रों को चांगेरी स्वरस में सात बार बुझाएँ अथवा अष्टमांश सैन्धव युक्त गोमूत्र में दोला यन्त्र द्वारा दो याम तक स्वेदन करे।

मारण—शुद्धताम्र १ कर्ष, कज्जली १ कर्ष, दोनों को निम्बु स्वरस से पीसकर कुक्कुट पुट में पुट दें। तीन पुटों में कृष्ण भस्म बन जाती है।

अमृतीकरण—ताम्र के निम्नलिखित आठ दोषों को दूर करने के लिए अमृतकरण क्रिया जाता है :—वान्ति, भ्रान्ति, चित्तसन्ताप, शोष, उत्क्लेद; अरुचि, दाह और मोह।

विधि—ताम्र भस्म १ पल, शुद्ध गन्धक ½ पल, पंचामृत से मर्दन कर पुट दें तीन बार पुट देने से अमृतीकरण हो जाता है। अथवा निम्बुरस में तबतक पुटें देते रहें जब तक ताम्र की कषायता नष्ट न हो जाए।

गुण—मधुराम्ल तिक्त कषायरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, सर, स्निग्ध, लेखन, त्रिदोषहर, श्वास, क्षय, पाण्डु, अर्श, यकृत, प्लीहावृद्धि, अम्लपित्त, परिणाम शूलहर है।मात्रा—१।४ से गुंजा पर्यन्त।

योग—१ हृदयार्णव रस, मात्रा एक रत्ती, हृदय रोग।

२ शूलगजकेशरी रस, मात्रा २ रत्ती, उदरशूल।

भूनाग सत्वपातन—ऊर्णनाभि (मकड़ी का जाल) गुग्गुलु, टंकण, लाक्षा, मत्स्य,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिलकिट्ट -सबको भूनाग के साथ पीसकर मूषा में तपाकर ताम्रवर्ण का सत्त्व प्राप्त करें।

मारण—भूनाग सत्व १ पल (५ तोला) शु०पारद २ कर्ष शु० गन्धक १ पल तीनों को निम्बुरस से पीसकर मृदु अग्नि में पुट दे। तीन पुटों में ताम्र के समान भस्म बन जाती है।

गुण—कषाय, कुष्ठहर, विषघ्न, ताम्रवत् गुणकारक।

त्रपु, वंग : रंग : शुक्लोह (S. N.) (TIN)

भेद—१ खुर वंग—मृदु, निर्मल, द्रुतद्रावी, निःशब्द, रजत कान्ति। यह ग्राह्य है।

२ मिश्रक—द्राव में कठिन, धूसर, कठोर, अन्य धातु मिश्रित, त्याज्य।

अशुद्धसे हानि—त्वचारोग, किलास, गुल्म, क्षय, पाण्डु, भगन्दरादि।

शोधन—वंगको लोहपात्रमें द्रवित कर हरिद्राचूर्ण युक्त सिन्दुवार (सम्भालु) स्वरसमें तीन बार बुझाएँ।

मारण—शुद्ध वंगको लोह कड़ाहमें द्रवित कर, वंगकी अपेक्षा चतुर्थांश अपामार्ग चूर्णका प्रक्षेप शनैः-शनैः डालते रहें तथा लोह दण्डसे मर्दन करते रहें; नीचे तीव्राग्नि जलाते रहें। चूर्ण होनेपर एकत्र कर एक शरावसे आच्छादित कर २४ घन्टे तीव्राग्नि देवें। स्वाङ्ग शीत होने पर श्वेतवर्ण भस्म मिलेगी।

गुण—तिक्त, कषाय, लवण रस, शीतवीर्य, सर, रुक्ष, मेध्य, प्रमेह, मेदोरोग, कफजरोग, श्वेतप्रदर, निशास्वेद, श्वास कृच्छ्रता शामक तथा वाजीकरण, कृमिहर रसायन है।

मात्रा—१ से २ गुंजा पर्यन्त, मधु, दुग्ध, मक्खन।

योग—बृहत् वंगेश्वर रस, मूसल्यादि चूर्णादि।

सुवर्ण-वंग

द्रव्य—शुद्ध पारद, शुद्ध वंग, शुद्ध गन्धक, शुद्ध नृसार, सब समान भाग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विधि—वंगको लोहपात्रमें द्रवित करलें। पुनः पात्रको अग्निपरसे उतारकर द्रवित वंगमें तत्काल पारद मिलादें। पिष्टी-सी बन जायगी। इसे अम्ल द्रवसे मर्दन कर उष्ण जलसे धोते रहें, जबतक मल, (काला द्रव) निकलता रहे। ततः धूपमें सुखा कर गन्धक तथा नृसार मिला कज्जली बनालें। बालुका यन्त्र द्वारा पाक करलें।

गुणमात्रा—वीर्यक्षीणता, प्रमेह, पूयमेहादिमें; मात्रा १ से २ गुंजा।

सूचना—वानस्पतिक क्षारोंसे भस्मीकृत वंग शीतल तथा गन्धकादिसे मारित उष्ण होती है।

नाग, सीसक (Lead) (Pb)

ग्राह्य—गुरु, मृदु, बाहरसे श्याम, छेदन करनेपर अन्तः नीलोज्ज्वल, द्रुतद्रावी विपरीत लक्षणोंयुक्त त्याज्य है।

अशुद्धसे हानि—सन्धिपीड़ा, पक्षवध, उदर शूल, क्षय, भगन्दर गुल्म, अग्निमान्द्य विषघ्नादि।

शोधन— नागको द्रवित कर सिन्दुवार स्वरसमें सात बार बुझाएँ।

मारण—शुद्ध नाग, शुद्ध मनःशिला, शुद्ध गन्धक, समान भाग। वंगके समान मनःशिलासे कटाहमें नागका चूर्ण बनाकर स्वाङ्गशीत होनेपर गन्धक मिला निम्बू स्वरससे पीसकर चक्रिका बना धूपमें सुखाकर लघुपुटमें अग्नि दे। तीन पुटोंमें भस्म बन जाती है।

गुण—मधुरतिक्त, उष्ण वीर्य, सर लेखन, स्निग्ध, प्रमेह, वातव्याधि, संग्रहणी, अर्श, कफज रोग, रक्तप्रदर नाशक है।

मात्रा—१/४ से १ गुंजा पर्यन्त।

योग—अन्त्रशोषान्तक रस ½ से १ गुंजा; जीर्णज्वर, क्षय, संग्रहणी, अतीसार।

नागदोष चिकित्सा—अशुद्ध, असम्यक्मृत् नाग सेवन जन्य अवस्था में शुद्ध गन्धक का सेवन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यशदं, खर्परजम् (Jincum) (Sn)

ग्राह्य—छेदनमें उज्ज्वल, स्निग्ध, मृदु द्रुतद्रावी, गुरु। विपरीत लक्षणोंवाली त्याज्य है।

अशुद्धके दोष—कुष्ठ, गुल्म, प्रमेह, क्षयादि।

शोधन—नागवत्। मात्रा मारण—वंगवत्।

गुण—कटु, कषायरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, नेत्ररोग, प्रमेह, निशास्वेद, नेत्रस्राव, कम्पवातहर, संकोचक, तथा त्रिदोषहर है।

लोह, अयस् (Iron) (Fe)

भेद—(१) मुण्डः-मृदु, कुण्डः, कुठारः। (२) तीक्ष्णलोहः-खर, हृन्नाल, ताराव्रट्ट, वाजिर, काललोह। (३) कान्तलोहः-भ्रामक, चुम्बक, कर्षक, द्रावक, रोमकान्त, भस्मार्थ तीक्ष्ण या कान्तलोह लेने चाहिएं।

ग्राह्यकी परीक्षा—उज्ज्वल लोहफलकको धात्री-काशीस से लेप करें। यदि लेप गिरि शृंगाकार हो जाए तो उत्तम तीक्ष्णलोह समझे।

अशुद्धके दोष—हृदयरोग, कुष्ठ, दाह, शूल, क्लैव्य, अश्मरी, विबन्धादि।

शोधन—एक प्रस्थ (१ सेर) से चार प्रस्थ पर्यन्त लोहचूर्ण को अग्निमें तपाकर त्रिफला क्वाथमें अथवा कदलीमूल क्वाथमें सात बार बुझाएँ।

प्रमाण—लोह एक भाग, त्रिफला ४ भाग, जल सोलह भाग, शेष ४ भाग।

मारण :–सामान्य—शुद्ध लोहको निम्बु स्वरसकी भावना देकर चक्रिका बना धूपमें सुखा गजपुटमें भस्म करलें। पचास पुटोंमें रक्तोत्पल वर्ण भस्म बन जाएगी।

मारणः–विशिष्ट—१ भानुपाक, २ स्थालीपाक ३ पुटपाक द्वारा।

(अ) भानुपाक—शुद्ध लोहको त्रिफला क्वाथसे भावना दें और तीव्र सूर्यातपमें सुखालें। एवं सात बार करे।

प्रमाण—लोहचूर्ण १ भाग, त्रिफला १ भाग, द्विगुण जल, चतुर्थांशावशेष

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(आ) स्थालीपाक— त्रिफला क्वाथके साथ लोह चूर्णको कड़ाहमें क्वाथ शोषण होने तक तीव्राग्नि द्वारा पकाना।

प्रमाण—लोह चूर्ण १ भाग, त्रिफला ३ भाग, जल १६ भाग, अवशिष्ट अष्टमांश।

(इ) पुटपाक—त्रिफला क्वाथ वा अन्य मारण द्रव्योंसे लोहचूर्णको भावना देकर चक्रिका बना गजपुट में भस्म करें। ६०,१०० या १००० बार पुट देनेसे भस्म बन जाती है।

प्रमाण—लोहचूर्ण १ भाग, मारणद्रव्य १ भाग, जल १६ भाग, चतुर्थांशावसिष्ट।

निरुत्थी करण—गोघृत, शुद्ध गन्धक, लोह भस्म, समान भाग लेकर घृत कुमारी रससे भावना दे गजपुट में भस्म करे। एक बारमें ही भस्म निरुत्थ हो जाती है।

निरुत्थ परीक्षा—मित्रपंचकके साथ भावना देकर गजपुट में भस्म करनेसे यदि धातु स्वपूर्वरूपमें परिवर्तित नहीं होती, तो उसे निरुत्थ भस्म समझना चाहिए।

गुण—मधुर कषाय, शीतवीर्य, दीपन कटुविपाकी, लेखन, गुरु, यकृत्वृद्धि पित्तकफजरोगहर, उदर रोग, क्षय, पाण्डु, अर्श, कुष्ठ श्वास, मेदो रोग नाशक। शोष, तथा रक्त क्षीणताजन्य व्याधिहर।

मात्रा—१ से १ गुंजा पर्यन्त।

योग—प्रदरान्तक लोह, कुमार्यासव, लोहासवादि।

मण्डूर, लौह किट्ट, (Iron Rust)

सूचना—षष्ठीवर्षीय (अधम); सप्तति वर्षीय मध्यम तथा शतवर्षीय सर्वोत्तम है।

ग्राह्य मण्डूर—स्निग्ध, गुरु, दृढ़ कृष्णवर्ण, छिद्र रहित।

शोधन—विभीतकके अंगारोंमें मण्डूरको उष्ण कर गोमूत्रमें सात बार बुझादें।

मारण—त्रिफला क्वाथसे भावना देकर गजपुटमें अग्नि दें। ३० बार पुट देनेसे रक्तचन्दनके वर्णकी भस्म बन जाती है।

गुण—मधुर, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, पित्तशामक, दीपन, पाण्डु, कामला,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोफ, शोषरोग नाशक तथा रक्तवर्धक है।

मात्रा—१ से २ गुंजा।

योग—१ पुनर्नवा मण्डूर; मात्रा; २ रत्ती; पाण्डुरोग। २ मण्डूरवटक; मात्रा ४ से ८ गुंजा; परिणाम शूल।

उपधातवः (ORES)

सुवर्णमाक्षिकम्, तापीज (Copper Pyrite)

ग्राह्य—स्वर्ण वर्ण, कोण रहित, गुरु, स्निग्ध, श्यामल कान्ति।

अशुद्धके दोष—नेत्ररोग, मन्दाग्नि, कोष्ठवात, हलीमक।

शोधन—सुवर्ण माक्षिकको २१ बार तपाकर निम्बु स्वरस में बुझाएँ।

मारण—शुद्ध स्वर्णमाक्षिकको निम्बु स्वरससे पीसकर गजपुटमें १० बार अग्नि देनेसे रक्त वर्णकी भस्म बन जाती है।

गुण—मधुर तिक्त, शीतल, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर, रसायन, योगवाही, चक्षुष्य, क्षय, पाण्डु, जीर्णज्वर, शोथ, अर्श, विषमज्वर, प्रमेह, मन्दाग्नि है।

मात्रा—१/२ से २ गुंजा पर्यन्त।

सूचना—रजतमाक्षिक (Iron Pyrite) तथा विमल (Marksite) का शोधन मारण-गुणादि स्वर्णमाक्षिकवत् समझना चाहिए। यह स्वर्णमाक्षिककी अपेक्षा हीन गुण होते हैं।

तुत्थ, मयूरक Copper Sulphate ($CuSO_4$)

ग्राह्यः—गुरु, स्निग्ध, मयूर कण्ठ प्रतिम, उज्ज्वल।

निर्मलीकरण—स्फटिकीकरण द्वारा।

शोधन—रक्तचन्दन तथा मंजिष्ठा क्वाथ से सप्तवार भावना दे।

मारण—शुद्ध तुत्थ को निम्बुरस तथा दधि मस्तु (दहिका पानी) में तीन घण्टे तक मर्दन कर लघुपुटमें अग्नि दे। शीघ्र काले वर्णकी वमनादि दोष रहित भस्म बन जाती है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मात्रा—½ से ¾ रत्ती तक, वमनार्थ, २ रत्ती ।

गुणः—शुद्ध, तुत्थ, चक्षुष्य, वामक, व्रण शोधक, कृमिनाशक,लेखन, संकोच है। अतः बाह्य उपयोगमें प्रायःव्यवहृत होता है।

भस्म—मधुर, कषाय, कृमिघ्न, मेदहर, अम्लपित्त, श्वित्र, नाड़ी वलदायक है।

सिन्दूर :, भालभूषण : (Red Lead Oxide)

गुण—व्रण शोधक रोपक, त्वचारोग पामा विचर्चिकादिहर । प्रायः वाह्यप्रयोगमें काम आता है।

योग—सिन्दूरादि तैल—त्वचारोगोंमें ।

गिरिसिन्दूर—पारदका यौगिक है जो प्राकृतिक रुप में कहीं कहीं पर्वतों में उपलब्ध होता है।

महागिरिषु चाल्पीयः पाषाणान्तः स्थितोरसः ।
शुष्ककोणः स निर्दिष्टो 'गिरिसिन्दूर' संज्ञया ॥

गुण—त्रिदोष शमनं, भेदी, रसबन्धनमग्रिमं, देहलोहकरं, नेत्र्यम् ।

मृद्दार शृङ्ग Iitharge (Lead oxide)

शोधन—मृद्दार शृंग के खण्ड खण्ड करके उसमेंसे मिट्टीका अंश निकाल देना चाहिये। और निम्बुरसमें सतवार पीस लेना चाहिये।

गुण—शीतल, वातकफहर, व्रण रोपक, केश्य, संकोचक फिरंग, व्रण, त्वचारोग पामा कण्डु आदि नाशक।

सूचना—इसका अन्तः उपयोग नहीं होता ।

खर्पर :, रसकम् Calamine, Jinc Carbonatre (Inco 3)

भेद—१ सदल (दर्दुर) यह सत्व पातनार्थ व्यवहृत होता है। २ निर्दल (कारवेल्लक) यह औषधियोंमें प्रयुक्त होता है

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन—मृद्दार शृंगवत् । पीतवर्ण चूर्ण बन जाता है ।

मारण—शुद्ध पारद, शुद्ध खर्पर-समान मात्रामें मिलाकर वराहपुटमें वन्योत्पलों द्वारा अग्नि देनी चाहिए । तीन बार पुट कर देनेसे पीतवर्णकी भस्म बन जाती है ।

गुण—शीतल, कफपित्तहर, चक्षुष्य, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, जीर्णज्वर तथा प्रमेह नाशक अर्श, अतिसारहर ।

मात्रा—½ से २ गुंजा पर्यन्त ।

तुत्थ तथा खर्परका सत्वपातनः—

तुत्थ—तुत्थ २ पल, टंकण २ पल, निम्बुस्वरससे मर्दन कर अन्धमूषामें तीव्राग्नि द्वारा पाक करनेसे ताम्रवत् सत्त्व प्राप्त होता है ।

मारण-गुण-मात्रादि—ताम्रके समान ।

खर्परसत्व—खर्पर १ भाग, लाक्षा, हरिद्रा, हरीतकी, अतसी, गुड, राल, टंकण, सब खर्परके समान पीस कर गोला बना तीव्राग्निमें गरमकर यशद-समान सत्त्व प्राप्त करे ।

गुण—पाण्डु, शोथ; विषमज्वर, रजःशूल, रक्तगुल्म, मधुमेह; हिक्काशामक ।

मात्रा-मारण-यशद्वत् ।

कान्तपाषाण *Magnectic Iron Ore*

शोधन—निम्बुरसमें कान्तपाषाणको पीस लें । पुनः शिग्रुरस में दोलायन्त्र द्वारा स्वेदन करे चार याम तक ।

मारण—गोमूत्र तथा त्रिफला क्वाथमें पीसकर मृदुपुटमें सात बार पुट दें । रक्त भस्म बनती है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण—शीत पौष्टिक, रक्तवर्धक, हृदयकम्प, पाण्डु, श्वास, रक्तपित्त, जीर्णज्वर शामक, मूर्च्छा, ज्वरादिहर ।

मात्रा—२ गुञ्जा । लोहवत् गुणप्रद ।

कासीस *Iron Sulphate* (*FeSo4*)

भेद—१. चूर्ण कासीस, श्वेतपीत वर्ण का । २. पुष्पकाशीस, हरितवर्ण, स्वच्छ पुष्प काशीस औषधियोंमें व्यवहार करें ।

शोधन—भृङ्गराज स्वरससे तीन घंटे पर्यन्त दोलायन्त्र द्वारा स्वेदन करें ।

मारण—स्नुहीपत्र स्वरससे भावना देकर पुट दें । यह पुट कासीसकी अम्लता नष्ट होने तक देते जाइए । अम्लतानाश काशोस भस्मकी परीक्षा है ।

गुण—कषाय, उष्णवीर्य, श्वित्र, प्लीहावृद्धि नाशक, केश्य, नेत्र्य, रक्तवर्धक, रजः प्रवर्त्तक, वात कफ शामक, श्लेष्म कला संकोचक, बाह्य और अन्तः दोनों प्रकारसे व्यवहृत होती है ।

मात्रा—१/२ से गुन्जा पर्यन्त ।

योग—१. कासीसादि तैल, अर्श, श्वित्रमें; बाह्य प्रयोगार्थ वीसर्प गुदभ्रंशादि रोगेषु २. कासीसद्रव-शुद्ध कासीस ५ गुन्जा, स्रवितजल ५ तोला (१ प्रतिशत शक्तिका द्रव) अतिसंकोचक है, गुद्भ्रंश, वीसर्प, आदि शामक ।

अंजनानि–मेचक

भेद—१. कृष्णाञ्जन-सौवीरांजन—(PBS) (Lead Sulphide, Galena)

२. स्रोतोञ्जन—Antimony sulphide, Antimonium.

३. पुष्पांजन—(यशद पुष्प) zinc Oxide.

४. रसांजन दारुहरिद्रा सत्त्व वा पारदपीतभस्म—(Yellow Oxide of Mercury)

५. श्वेताञ्जन—(गोदन्तीवत् पदार्थ) Calcium Sulphate.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन—प्रथम दो अंजनोंका ही शोधन किया जाता है।

शोधन—त्रिफला क्वाथसे सप्ताह पर्यन्त मर्दन करें।

सौवीराञ्जनके गुण—ग्राही, शीतल, नेत्ररोग, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, रजःस्राव नाशक है।

स्रोतोञ्जन के गुण—मधुर, कषाय, लेखन, शीत, ग्राही, रक्तपित्त, वमन, हिक्का, नेत्ररोग, कफपित्त शामक है।

मात्रा—आधी से १ गुञ्जा पर्यन्त।

सूचना—तीन दिनसे अधिक अंजनोंका आन्तरिक प्रयोग न करे। विष प्रभाव तथा स्त्रियोंमें रजोनाश का भय है।

पुष्पाञ्जन—शीतल, पित्तशामक, दाह, विचर्चिका, पामादि त्वचारोग, हिक्का तथा नेत्ररोग शामक है।

रसाञ्जन—नेत्र, पद्मशात, कण्डु, पद्मकृमिनाशक।

पुष्पाञ्जन—ग्राही, शीतल, रक्तस्राव स्तम्भक, अतीसारहर, नेत्ररोगोंमें विशेष प्रयोग

अश्मलाक्षा—शिलाजतु—शैलेयम्—*Asphaltum, Bitumen*

वक्तव्य—शिलाजतु सत्वरूप है। अतः इसका मारण नहीं किया जाता। किन्तु मतान्तर में जो

"शिलया, गन्धतालभ्यां, मातुलुंग रसेन च।
पुटितो शिलाधातु म्रियतेष्टगण्डीरिण्डकैः।

वह हेय है।

परिचय—उच्च हिमालयकी शिलाओंसे उष्णकालमें सूर्यतापके प्रभावसे एक स्राव विशेष निकलता है। यही शिलाजतु है।

भेद—शिलाओंमें विद्यमान धातुओंकी मात्राके अनुसार भेद :—

(१) सौवर्ण (२) राजत (३) ताम्र (४) लोह) लोह सर्वोत्तम है।

शोधनार्थ क्वाथ मात्रा—शिलाजतु २० तोला, त्रिफला २० तोला, जल १६० तोला, शेष ४० तोला।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन—शिलाजतुके पाषाणको चूर्ण करलें ततः इसमें चतुर्गुणजल या गोमूत्र डालें। सम्यक्तया मिलाकर एकान्त स्थानमें रख मल भागको पात्रतलमें स्थिर होने दें। ततः सारकपत्र (Filter Paper) से छान लें। अथवा कार्पास तूलिका की वर्ति बनाकर उसके द्वारा जलको निथार लें। पुनः मृदु अग्निपर वाष्प द्वारा जलको उड़ा दें और मधुवत् घन कृष्णवर्णकी शिलाजतु प्राप्त करें। इसे अग्नितापी कहा जाता है। जलको सूर्यतापमें भी सुखा सकते हैं। इसे सूर्यतापी कहते हैं।

गुण—तिक्त कषाय, अनुष्णाशीत, कटुविपाकी, मूत्रल, योगवाही, रसायन, प्रमेह मधुमेह तथा जीर्ण व्याधि नाशक। शोथपाण्डु, क्षय, स्थूलता, वात-व्याधि नाशक।

शुद्ध शिलाजतु परीक्षा—(१) स्वादमें तिक्त कटु (२) अग्नि पर तपाने से लिंगाकार (३) जले प्रक्षेपणेन तन्तुप्रसवकारक।

मात्रा—२ से ४ गुञ्जा पर्यन्त। **योग**—चन्द्रप्रभा वटी आदि।

सूचना—रस शास्त्रोंमें 'कर्पूर शिलाजतु' का वर्णनभी पाया जाता है। संभवतः वह शोरक है।

गैरिकम् (Red Ochre, Heamatite) ($Al_2 O3, 2SIO_2, 2H_{20}$)

भेद—१ पाषाणगैरिक मृत्तिकाबहुल (त्याज्य) २ स्वर्णगैरिक लोह बहुल (ग्राह्य)।

शोधन—गोदुग्धसे भावना दे लें वा गोघृतमें मन्दाग्निपर भर्जन कर लें।

गुण—मधुर कषाय, शीतल, संग्राही, तापहर, वमन, हिक्का, रक्तस्राव, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, उदर्द, शीतपित्त, अतीसार, शामक, व्रणरोपण, ज्वरघ्न।

मात्रा—२ से ८ गुञ्जा पर्यन्त।

चपलः

परिचय तथा भेद—गौर, श्वेत, अरुण, कृष्णः चार प्रकार। हेमाभ (गौर)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रजताभ (श्वेत) रसबन्धन कारक है। शेष दोनों लाक्षावत् शीघ्रद्रावी निष्फल हैं।

नामकरणेहेतुः—वेग के समान शीघ्रही द्रवित होता है। अतः चपल संज्ञा।

ग्राह्य—स्फटिकच्छायः स्निग्ध गुरु, षड्रस युक्त।

गुण—यह महारस, त्रिदोषघ्न, अतिवृष्य, रसबन्धकारक, लेखन, देहलोह कारक, तिक्तोष्ण, मधुर है।

———

अथमिश्र लोहानि (Alloy-metals)

पित्तलम्, रीतिका, कपिलोह (BRASS)

परिचय—पित्तल ताम्र २ भाग, यशद १ भाग मिलाकर बनाया जाता है।

ग्राह्य पित्तल—तीव्राग्नि पर तप्तकर काञ्जी में परिसेचन करने पर जो ताम्राभ हो जाए वह उत्तम। यदि लोहाभ हो तो हेय है। प्रथम को रीतिका तथा द्वितीय (हेय) को 'काकतुण्डी' भी कहते हैं।

शोधन—हरिद्रा युक्त निर्गुण्डी रस में तीव्राग्नि संतप्त पित्तल को पञ्चधा निर्वापण करें।

मारण—शुद्ध पित्तल पत्राणि ५ पल
,, हिंगुल ५ ,,
,, हरिताल ५ ,,
घृत कुमारी रस से मर्दन कर गुजपुट में तीन बार पुट देने से कज्जलाभ भस्म प्राप्त होती है। यह वान्ति भ्रान्ति रहित होती है।

गुण—प्रायेण ताम्रवत्। रूक्षतिक्त, कृमिघ्न, पाण्डु, नेत्र्य, कुष्ठ शामक, कुछ लेखन वा, तपितहर, उष्ण,

मात्रा—½ १ गुन्जा।

———

कांस्यम्- (घोषकम्) (BRONZE, Bell Metal)

परिचय—इसके निर्माण में ताम्र ४ भाग, वंग १ भाग व्यवहृत होती है।

ग्राह्य—स्निग्ध, तीक्ष्णनादवाला, श्यामल शुभ्र, मृदु अग्नि तथा आघात सहन-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

योग्य, तपाने पर रक्त वर्ण का उत्तम। विपरीत लक्षणों वाला त्याज्य है।

शोधन—तप्तं कांस्य गवां मूत्रे (सप्तधा) निर्वापितं शुध्यति।

मारणः—कांस्य के तनुपत्र १ तोला, शुद्ध गन्धक १ तोला, अर्कक्षीर से भावना देकर आतपे शोष्य गज पुट में तीन वार भस्म करें।

गुणः—तिक्त, कषायरस, उष्ण, कटुविपाकी, लेखन रूक्ष, सर, विशद, नेत्र्य, कुष्ठ, कृमिघ्न, दीपन, त्रिदोषहर।

मात्रा—½-१ गुंजातक।

वर्त्तलोह—(भरत) पंचलोह

परिचय—कांस्य, ताम्र, पित्तल, कृष्णायस, नाग इन पाँच धातुओं से मिलाकर बनाया जाता है।

शोधन—तपाकर अश्वमूत्रमें सप्तधा निर्वापण करना।

मारण—शुद्ध वर्त लोह १ भाग, शुद्ध गन्धक १ भाग, शुद्ध हरिताल १ भाग निम्बुरस भावना गजपुट में भस्म। ३ बार में बन जाती है।

गुण—अम्ल कटुरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, रूक्ष, कफ पित्तशामक, नेत्र्य, त्वच्य, सर, कृमिघ्न। अम्ल को छोड़कर अन्य रसवाले पदार्थों को वर्त्त लोह के पात्रों में पकाने से उनमें दीपन पाचन गुण बढ़ जाता है।

मात्रा—½ १ गुन्जातक।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ रत्नोपरत्न विज्ञानीयश्चतुर्थ आदर्श

रत्नानि (Precious Stones)

रत्न शब्द निरुक्ति—रमणीयतरं यस्मात् रमन्तेऽस्मिन्नतीव वा ।

नवरत्न—हीरक, माणिक्य, मुक्ता, पुष्पराग, नील, तार्क्ष्य, वैदूर्य, गोमेद, विद्रुम ।

शुक्ररत्न, हीरकः, वज्रः, भिदुरम् (Diamond)

भेद—कार्यों के अनुसार नर, नारी, नपुंसक

वर्णानुसारः—श्वेत (ब्राह्मण), रक्त (क्षत्रिय), पीत (वैश्य), कृष्ण (शुद्र) ।

अशुद्धसे हानि—पार्श्ववेदना, कुष्ठ, ताप, भ्रमादि ।

त्याज्यके लक्षण—वर्तुल मलिन, स्वरस, स्फुटित, रेखाबहुल, काकपदयुक्त ।

ग्राह्यके लक्षण—स्निग्ध, विद्युत्वत् उज्ज्वल, रेखा-रहित, तीक्ष्ण षट्कोण अष्टास्र तथा लेखन (दूसरी धातुओंका लेखन करने वाला तथा स्वयं अलेख्य) ।

शोधन—तीव्राग्निमें हीरकको उष्ण कर शुद्ध पारदमें शतधा सेचन करें । इससे हीरक भंगुर भी हो जाता है तथा सरलतासे खरल किया जासकता है ।

मारण—शुद्ध हीरक, पारदभस्म, शुद्ध मनःशिला, शुद्ध गन्धक,सब समान भाग । गजपुटमें अग्नि दे । दूसरी पुटमें तथा तदनन्तर रसभस्म न डाले । इस प्रकार १४ पुटोंमें भस्म बन जाती है ।

गुण—परम हृद्य, रसायन, योगवाहि, प्रमेह यक्ष्मा, जीर्णज्वर, शामक, षड्रस युक्त, मेध्य । **मात्रा**—१/३२ से १/१६ गुञ्जा पर्यन्त ।

मात्रा निर्माण विधि—१ गुञ्जा हीरक भस्म ४ माषा रस-सिन्दूर, दोनोंको पीसलें । मात्रा १ गुञ्जा ।

शोणरत्नं, माणिक्य, कुरुविन्द रविरत्न (Ruby)

त्याज्य—लघु धूमाभ कर्कश, विरूप, निष्प्रभ, चिपिट, वक्र, त्याज्य है ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

ग्राह्य—रक्त कमल वर्ण, प्रभायुक्त, वृत्तायत, समांग।

शोधन—निम्बु रसमें दोला यन्त्र द्वारा एक याम स्वेदन करे।

मारण—शुद्ध माणिक्य, शुद्ध मनःशिला, शुद्ध गन्धक, सम भाग निम्बु रससे सप्ताह पर्यन्त पीसें। ततः गजपुटमें भस्म करें। आठ पुटोंमें पाण्डु वर्णकी भस्म हो जाती है।

गुण—मधुर, शीत, रसायन, दीपन, कफ, क्षयरोग, नाशक, वातपित्तहर।

मात्रा—१/४ से १ गुंजा पर्यन्त।

———

शशिरत्न, मौक्तिकम् (Pearl)

त्याज्य—दीर्घ पार्श्वकृश, रुक्ष, सव्रण श्याम, निष्प्रभ, त्रिकोण।

ग्राह्य—स्निग्ध, वृत्त, निर्व्रण चन्द्रवत् समुज्ज्वल गुरु। शालितुष तथा गोमूत्र लवण के साथ मर्दन करने पर भी जिसकी प्रभा नष्ट न हो।

शोधन—जयन्ती अथवा अगस्त्य स्वरसमें दोला यन्त्र द्वारा एक याम (३ घण्टे) तक स्वेदन करे।

मारण—शतपत्री [गुलाब] जल में पीसकर तीन बार लघु पुटमें पाक करे।

सूचना—उत्तम मुक्ताको शतपत्री स्रुतजलमें पीसकर पिष्टी बनाकर भी प्रयोग किया जाता है।

गुण—मधुर रस, शीत वीर्य, मधुर विपाकी, रसायन, पित्तशामक जीर्णज्वर दन्तास्थिमार्दव, हृदयकम्प, यक्ष्मादि रोगोंमें लाभकर। नेत्र्य मेध्य दाह शामक हृद्य।

मात्रा—१/२ से २ गुञ्जा पर्यन्त।

योग—मुक्ता पञ्चामृत, मात्रा २ रत्ती, जीर्णज्वर, राजयक्ष्माहर, २ मास तक प्रयोग करें। योगेन्द्ररसादि अनेक रस

———

गुरुरत्न, पुष्पराजः पीतमणि Topaz

ग्राह्य—स्निग्ध, सम, सुवर्णवर्ण, सुवृत्त, कर्णिकार पुष्पवत् उज्ज्वल। हेयः श्याम निष्प्रभ, कर्कश, उन्नत, आनत।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शोधन—कुलत्थ क्वाथयुक्त काञ्जीमें एक याम स्वेदन करे।
मारण—माणिक्यवत्।
गुण—शीतल वातकफ शामक, वमन, अर्श, नाशक।
मात्रा—१/४—१ गुञ्जा पर्यन्त।

शनिरत्न, नील (Sapphire)

भेद—१ जलनील २ इन्द्रनील। द्वितीय श्रेष्ठ है।
ग्राह्य—स्वच्छ, उज्ज्वल स्निग्ध गुरु, मसृण। हेयः-रक्तार्द्र, रुक्ष लघु कोमल विगतच्छायम्।
शोधन—नीली स्वरसमें दोलायन्त्र द्वारा एक याम तक स्वेदन करे।
मारण—माणिक्यवत्।
गुण—दीपन, वर्ण्य त्वचारोग, अर्श शामक, विषमज्वर शामक, श्वास तथा त्रिदोषहर है।
मात्रा—१/८=१/२ गुञ्जा तक।

बुधरत्न, तार्क्ष्यः, मरकत, हरिद्रत्न (Emerald)

ग्राह्य—सच्छाय, हरितवर्ण, मसृण, गुरु, स्पर्श में कोमल, व्यंगरहित!
शोधन—गोदुग्धमें एक याम तक दोलायन्त्रमें स्वेदन करे।
मारण-मात्रा-गुण—पुष्परागवत्। विशेष गुण: सन्निपात शामक।

केतुरत्न, वैडूर्य, विडालाक्ष (Ca'ts eye)

शोधन—त्रिफला क्वाथमें एक याम पर्यन्त स्वेदन करे।
मारण-मात्रा—माणिक्यवत्।
गुण—मधुर शीतल चक्षुष्य पित्त नाशक रक्तपित्त नाशक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

राहुरत्न, गोमेद (Agate)

ग्राह्य—गोमूत्राभ, स्निग्ध, निर्दल, गुरु, सुवर्णारक्त, दीप्तप्रभायुक्त । विपरीत लक्षणों वाला हेय है ।

निरुक्ति—गोमेदवत् आभा होने से गोमेद नाम है ।

शोधन—मारण माणिक्यवत् । गुण—त्वकदोष पाण्डुरोग क्षयहर और उष्ण ।

मात्रा—¼ १ गुञ्जा तक ।

भौमरत्न, विद्रुम, प्रवाल (Coral)

त्याज्य—पाण्डुवर्ण रुक्ष, लघु, सूक्ष्म, धूसर, मसृण ।

ग्राह्य—आरक्त, मञ्जुलच्छाय, स्निग्ध, निर्व्रण, गुरु, दृढ़, दीर्घ ।

शोधन—तण्डुलीय वा जयन्ती स्वरसमें दोलायन्त्र द्वारा एक याम तक स्वेदन करे ।

मारण—प्रवाल चूर्णको शतपत्री अर्क वा घृतकुमारी स्वरससे पीसकर गजपुटमें भस्म करलें । तीन बारमें श्वेत भस्म बन जाती है ।

पिष्टी—प्रवाल चूर्णको शतपत्री स्रुतजल में पीसले । यह कुछ रक्ताभ, चूर्ण बन जाएगा । इसे ही 'चन्द्रपुटी प्रवाल भस्म' भी कहा जाता है ।

गुण—मधुर, शीतल, क्षारीय, मधुर विपाकी, दीपन पाचन त्रिदोषहर क्षयज कास, जीर्णज्वर, रात्रीस्वेद, अस्थिमार्दव, अस्थिदोष, रक्तपित्त, बालशोषादि रोग और पित्त शामक है ।

मात्रा—१/१ से २ गुञ्जा पर्यन्त ।

रत्नानां सामान्य मारणम्—लकुचद्रावसंपिष्टैः शिलागन्धक तालकैः ।
वज्रं विनान्यरत्नानि म्रियन्तेऽष्टभिः पुटैः ॥

रत्नोंके सामान्य दोष—ग्रासश्च त्रासश्च बिन्दुश्च जलरेखा च गर्भता ।
क्षेत्रतोयभवा दोषाः रत्नेषु न लगन्ति ते ॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपरत्नानि

वैकान्त, कुवज्र, (Fluor Spar)

ग्राह्य—अष्टास्र, अष्टफलक, सितपीतारुणासित वर्णम्। षठ्कोण, गुरु मसृण। श्वेत, नील, रक्तपीत पारावतप्रभ (धूसर) कृष्ण, कर्बुर, हरित इन आठ वर्णों का होता है।

शोधन—लवण, यवक्षार, सर्जिकाक्षार सहित कुलत्थ क्वाथमें एक याम तक दोलायन्त्रमें स्वेदन करें।

मारण—वैक्रान्त, गन्धक, हिंगुल सब शुद्ध तथा समान प्रमाणमें लेकर निम्बु स्वरससे मर्दन कर गजपुट में अग्नि दे। अष्ट पुटोंमें भस्म बन जाती है।

गुण—त्रिदोषहर, योगवाही, रसायन, अग्निदीपन, जरा, ज्वर, कुष्ट, यक्ष्मा शोष प्रमेह शोफ श्वास शामक है।

मात्रा—१/२४ से १/४ गुंजा पर्यन्त।

राजावर्त्त नृपोपल (Lapis Lazule)

शोधन—गोमूत्र, सर्जिकाक्षार निम्बुरसमें एक याम तक स्वेदन करे।

ग्राह्य—शारदनभसम सुलीन, कृष्ण, गुरु, मसृण, स्वच्छ।

मारण—शुद्ध गन्धक, शुद्ध राजावर्त्त समान भाग को नवीन निम्बुरसमें पीसकर गजपुटमें अष्टधा भस्म करें।

गुण—कटुतिक्तरस, शीतवीर्य, दीपन, दीपन, बृंहण पित्तशामक, पाण्डुक्षय हिक्का और मदात्ययशामक वमनहर।

मात्रा—१/४ से १ गुंजा पर्यन्त।

सूचना—अन्य क्षुद्र रत्नों का प्रयोग नहीं होता। अतः उनका वर्णन नहीं किया गया।

शिलाबदर (पत्थरबेर) हजरलयहूद

परिचय—बदराकृति धूसर वर्णका प्रस्तर है।

शोधन—उष्ण जलमें दोलायन्त्र द्वारा १ याम तक स्वेदन करे।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मारण—मूलक स्वरमें पीसकर लघुपुटमें तीन बार अग्नि दें।

पिष्टी—मूलक रसकी भावना देकर पोसलें। यह भस्मवत् उपयोगी है।

गुण—उष्ण, स्निग्ध, मूत्रल, मूत्रकृच्छ्र, शर्करा, अश्मरि, मूत्राशयशोथ, मूत्राशयस्थ रक्तस्राव आदि नाशक है, वृक्कशूलहर, वमननाशक।

मात्रा—१½ से तीन माषा पर्यन्त। अनुपानः घी, वाताद-तैल, दुग्ध।

सूचना—अति प्रयोग यकृत्के लिए हानिकर हैं।

साराश्म-यशपशिला (संगेयशव) (Jade)

परिचय—नील रहित वा कृष्णरहित वर्ण का कठोर प्रस्तर है।

शोधन-मारण-पिष्टी—शिलाबदरवत्, शतपत्री स्रुतजले।

गुण—शीतल, रुक्ष, हृदय रसायन, मेध्य, उन्माद स्मृतिभ्रंश मूत्राशय शोथ, अन्त्रव्रण तथा मूत्रमार्ग शोथ शायक है।

मात्रा—४ से ८ गुन्जा पर्यन्त। अनुपानः श्वेत मधु वा मध।

नागाश्म-नागशिला, जहर मोहरा (Serpentine)

परिचय—यह हरित वा हरितपीत वर्णका प्रस्तर है।

शोधन—मारण-पिष्टी-शिलाबदरवत्।

गुण—त्रिदोष शामक, विशेषतः पित्तशामक, संग्राही, शीतल, अतीसार, विसूचिका मुखशोथ बालातीसार शामक, वातनाड़ी एवं मांसपेशियोंको शान्ति देता है। अनुष्णाशीत है।

मात्रा—४ गुन्जासे ८ गुन्जा तक। अनुपानः पुरुषकशर्बत।

अग्निजार (अम्बर) (Ambergris)

परिचय—कृष्ण वा श्याम वर्णवाला तीव्र गन्ध युत द्रव्य है। श्यामवर्ण पर श्वेत कण युक्त उत्तम है। कस्तूरी के स्थान पर उपयुक्त द्रव्य है।

गुण—रुक्ष, उष्ण, वाजीकरण, उत्तेजक तथा कटुरस युक्त। अनुलोमक, मेध्य,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सन्धिशोथ, उदरकृमिहर। हृदय, मस्तिष्क, यकृत् बल्य तथा वातव्याधि शामक, त्रिदोषहर।

मात्रा—२ से ४ गुञ्जा पर्यन्त। अनुपानः—वंशरोचना धान्यक चूर्ण।

सूचना—१ अतिप्रयोग आमाशयको हानिकार होता है।

२ यदब्धि द्वार संशुद्ध तस्मात् शुद्धिर्न हीष्यते। अतः शोधन नहीं।

अकीक (Agate)

परिचय—यह गोमेद जातिका प्रस्तर है।

शोधन—उष्ण जलमें वा निम्बु स्वरसमें दोलायन्त्र द्वारा १ याम तक स्वेदन करें।

पिष्टी या मारण—शतपत्री स्रुत जल (अर्क गुलाब) में पीसलें। साधारणतः पिष्टी उत्तम है। भस्मीकरणार्थ ३ लघुपुट दें।

गुण—रुक्ष, शीतल, हृदयरसायन मेध्य तथा रक्तस्रावरोधक। हृदय-दुर्बलता रक्त-पित्त, स्मृतिभ्रंश, उन्माद, रक्तप्रदर, राजयक्ष्माकी सरक्त कासमें उपयोगी है।

मात्रा—६ गुन्जा से १½ माषक पर्यन्त। अनुपानः मधु, या गुलाब जल।

सूचना—अतिप्रयोग वृक्कोंके लिए हानिकार है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोग विज्ञानीयः पंचम आदर्शः

शोधन-मारण प्रयोजनः—रसशास्त्रमें द्रव्य शोधन प्रयोजन :—

(१) द्रव्यों में उपस्थित मलों (भौमिज-वारिजादि) के नाश के लिए।
(२) द्रव्यों में द्रव्यान्तर के मिश्रण को दूर करने के लिए।
(३) द्रव्यों के दुर्गुणों को नष्ट करने के लिए।
(४) द्रव्यों में गुणाधानार्थं, विशेष गुण की उत्पत्ति के लिए।

मारण का प्रयोजन तथा परीक्षा "परिभाषा प्रकरण" में की गई है। तराद् द्रव्यों—अभ्रकादि का शोधन मारण यथा स्थान वर्णित है। पाठक वहां ही देखें। नीचे क्रियात्मक प्रयोग मात्र लिखे जाते हैं। उदाहरणार्थ एक प्रकार का एक प्रयोग लिखा गया है।

———

प्रयोग क्रमांक १.

नामः—रसपुष्प—सुधानिधि। (रसतरंगिणी)

उपकरणः—डमरुयन्त्र वा विद्याधरयन्त्र, चुल्लिका वा हसन्ती (सिगडी-अंगीठी) पिधानार्थं मृत्तिका, वस्त्र खण्ड, जल।

औषधिद्रव्यः—शुद्ध पारद ५ तोला, सैन्धव ५ तोला, शुद्ध काशीस ५ तोला।

विधि—शुद्ध पारद में प्रथम शुद्ध काशीस को थोड़ा थोड़ा मिलाकर मर्दन करता जाए। काशीस की समाप्ति पर सैन्धव लवण भी शनैः शनैः डाल कर मर्दन करे। पारद के नष्टपिष्ट हो जाने पर सूक्ष्म चूर्ण बन जाएगा। अब इसे डमरूयन्त्र में रखकर अति मन्दाग्नि पर दो याम (६ घंटे) पाचन करें। स्वांग शीत होने पर उतार कर ऊर्ध्व पात्र में लग्न चन्द्रवत् श्वेत् 'रसकपूर' प्राप्त करें।

रहस्यम्—डमरुयन्त्र के उपर के पात्र में चवन्नी प्रमाण छिद्र कर लें। इस छिद्र

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

से जलीय वाष्प उड़ जाते हैं। इस छिद्र के ऊपर पैसा रक्खें। यदि वाष्प उड़ रहे होंगे तो वे पैसे पर लग जाते हैं अन्यथा वह शुष्क रहता है। वाष्प उड़ जाने पर पिधानमृत्तिका से छिद्र को बन्द कर ऊपर शीतल जल की पट्टिका रक्खें। जिससे रसपुप्प के कण उपर के पात्रमें लग जाते हैं।

रस पुष्प परीक्षा:—स्वच्छ चमकते हुए लोह पात्र में जल विन्दु डालें। इस पर स्वल्प 'रसपुष्प' रखकर ऊपर से जल विन्दु डालें। यदि वह स्थान कृष्ण न हो तो शुद्ध 'रसपुष्प' सकझें।

गुण—मूत्रल, पित्तहर, विरेचक, कृमिघ्न, ब्रणदोषहर, हिक्का, फिरंग, विसूचिका, जलोदरनाशक।

मात्रा—$\frac{1}{2}$—२$\frac{1}{2}$ गुञ्जापर्यन्त।

रेचनार्थ—२$\frac{1}{2}$ गुञ्जा, हिक्काशमनार्थ $\frac{1}{2}$ गुञ्जा, फिरंगरोगनाशनार्थ। तथा शिशुओं को विरेचनार्थ $\frac{1}{8}$ गुञ्जा।

———

प्रयोग क्रमांक २ (क)

नामः—रस कर्पूर (नव्य प्रकार) (रस तरंगिणी)

उपकरणानिः—सुराप्रदीप, (Spirit Lamp) काचचषक, वालुकायन्त्र त्रिपादिका।

औषधद्रव्यः—शुद्धपारद १ पल, शुद्धगन्धकाम्ल २$\frac{1}{2}$ पल, सैन्धव लवण (पारदसम)

विधिः—काचचषकमें या मूषास्थ शुद्ध पारदमें शुद्ध गन्धकाम्ल मिलाकर, त्रिपादिका पर रखकर उसके नीचे सुराप्रदीपसे अग्नि दें। जलीयांश सूख जानेपर काचचषक को उतार कर शीतल होने दें। ततः तत्रस्थ पारद चूर्ण के समान सैन्धव लवण मिलाकर सतमृत्कर्पटिका वाली काचकुप्पी में भरकर वालुकायन्त्रमें चार याम तक (१२ घन्टे) मन्दाग्निसे पाक करें। स्वांगशीत होने पर काचकुप्पी कण्ठस्थ श्वेत वर्ण का 'रसकर्पूर' प्राप्त करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रहस्यः—इसमें भी रसपुष्पवत् जलीय वाष्प निकल जाने पर ही काचकुप्पी का मुख बन्द करना चाहिए।

गुणः—कृमिघ्न, त्वचारोगहर, व्रणशोधक, ग्राही, दीपन, अतिसार शामक।

मात्राः—$\frac{१}{६४}$—$\frac{१}{३२}$ गुंजा तक। अधिक मात्रा में विष है।

मात्रा निर्माण विधिः—अन्तः प्रयोगार्थ—रसकर्पूर १ गुंजा, दारुसिता चूर्ण ५ माषा मिलाकर चूर्ण बना इसमें से १ रत्ती प्रयुक्त करें।

प्रयोग क्रमांक २ (ख)

नामः—रसकर्पूर (प्राचीन प्रकार-भाव प्रकाश)

उपकरणः—रसपुष्पवत्।

औषध द्रव्यः—

शुद्ध पारद	८ तोला,	रक्तेष्टिकाचूर्ण	१ तोला
स्वर्णगैरिक	१ ,,	स्फुटिका	,, ,,
खटिका	१ ,,	सैन्धव	,, ,,
सौवर्चल	१ ,,	वल्मीकमृत्	,, ,,
कुसुम्भरंजनी	१ ,,	(वर्तन रंगने की मिट्टी)	

विधिः—पारद के अतिरिक्त शेष सर्वौषधियों का सूक्ष्म चूर्ण करलें। ततः शनैः शनैः उसे पारद के साथ मिलाते जाएँ। सूक्ष्म चूर्ण बन जाने पर डमरुयन्त्र द्वारा "रसपुष्पवत्" पाचन करलें।

गुणः—क्षुधावर्धक, पौष्टिक, उपदंश, फिरंग रोगहर।

मात्राः—रसपुष्पवत्।

सूचनाः—यदि इसमें लवंग, चन्दन, केशर मिला कर प्रयोग किया जाए, तो उत्तम है।

प्रयोग क्रमांक ३

नाम—रसपर्पटी।

उपकरणानिः—गोबर, कदलीपत्र, घृत, अंगाराधानिका, लोहदर्वी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औषधद्रव्य—शुद्ध पारद, शुद्ध गन्धक (समभाग) जयन्ती, एरण्ड, भृंगराज, आर्दकरस भावनार्थ।

विधि—प्रथम पारद गन्धक की कज्जली बनालें। पुनः शेष द्रव्यों के रस वा क्वाथ से इस कज्जली को सप्तधा भावनादे धूप में सुखालें। इस कज्जली में से थोड़ा सा चूर्ण लोह दर्वी में डालकर मृदु अग्नि-वाली अंगाराधानिका (सिगड़ी-अंगीठी) पर गरम करे। दर्वी में थोड़ा सा घृत डाललेना चाहिए। जब कज्जली द्रवित हो जाए तो उसे ताजेगोबर पर रक्खे कदली पत्र पर फैलादें और उपर से दूसरा कदली पत्र रख कर ताजा गोबर रखदें। इस प्रकार दो कदली पत्रों के मध्य में दबकर यह पर्पटाकार (पापड़वत्,) हो जाती है। अतः इसका नाम पर्पटी है।

गुण—रसपर्पटी—ग्रहणी, गुल्म, जलोदर, क्षय जीर्णज्वर, शोथ, अतिसार, अर्श, कामला पाण्डु, अम्लपित्त, आमवात नाशक है।

मात्रा—क्रमवृद्धया २ गुंजा से दश गुंजा तक।

प्रयोग क्रमांक ४

नामः—ताम्रपर्पटी (योगरत्नाकर)। उपकरणानिः—रसपर्पटीवत्।

औषधद्रव्यः—ताम्रभस्म, ३ भाग, शुद्धपारद ३ भाग, शुद्धगन्धक ६ भाग शुद्धवत्सनाभ १ भाग।

विधः—प्रथम पारद तथा गन्धक की कज्जली बनाकर शेष द्रव्य मिलादें। पुनः रसपर्पटीवत् पर्पटी बनालें।

वक्तव्यः—कज्जली में पारद के कण सर्वथा दूसरे द्रव्य में मिल जाते हैं। उसमें चमक (उज्ज्वलता) न रहे तथा रेखा ग्राह्य हो। अन्यथा कज्जली ठीक नहीं बनी ऐसा समझे।

गुणः—ग्रहणी, प्रमेह, आमवात, उदरशूल यकृत्प्लीहावृद्धि, दद्रु श्वित्र शामक।

मात्रा—१-३ गुंजा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रयोग क्रमांक ५

नाम-पंचामृत पर्पटी—(भैषज्यरत्नावलि)। उपकरणानि—रसपर्पटीवत्।

औषधद्रव्य—शुद्ध पारद १ भाग, लोह भस्म १ भाग, ताम्रभस्म १ भाग, अभ्रक भस्म १ भाग, शुद्ध गन्धक ४ भाग।

विधि—पारद गन्धक की कज्जली बना पुनः शेष द्रव्य इसमें मिलादें। रसपर्पटी विधान से पर्पटी बनालें।

वक्तव्य—मृदु-मध्य, खर त्रिविध कज्जली पाक हैं। मृदुपाक में पर्पटी भंग (टूटती) नहीं होती। मध्यमपाक में वह सरल चन्द्रिका युक्त होती है खरपाक में कृष्ण वर्ण चूर्ण सा हो जाता है। मध्यमपाक उत्तम है। खरपाक त्याज्य है।

गुण—ग्रहणी, अतिसार, पाण्डु अग्निमान्द्य अम्लपित्त, मन्दाग्नि, नाशक है।

मात्रा—१-४ रत्ती तक।

सूचना—पर्पटीकल्प में क्रमवृद्धया ६० गुंजा तक भी मात्रा दी जाती है वह विशेष अवस्था है। घृत दुग्ध, तक्रादि का प्रभूत प्रयोग कराया जाता है।

प्रयोग क्रमांक ६

नाम—सूतसेखररस (योगरत्नाकर)। उपकरणानि—खल्वयन्त्र, छालनिका।

औषधद्रव्य—

शुद्धपारद	१ तोला	शुद्धगन्धक	१ तोला
सुवर्ण भस्म	,,	शुद्ध टंकण	,,
रजत भस्म	,,	साठ	,,
कृष्णमरिच	,,	पिप्पली	,,
शुद्धधत्तूरबीज	,,	ताम्रभस्म	,,
त्वक्	,,	एलालघु	,,
तमालपत्र	,,	नागकेशर	,,
शंखभस्म	,,	बिल्वमज्जा	,,
कचूर	,,	भृंगराजस्वरस	,,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विधि—प्रथम पारद गन्धककी कज्जली बना शेष द्रव्यों को मिला भृंगराजरस की २१ दिनतक भावनादे गोलियाँ बना छाया में सुखा लें।

गुण—अम्लपित्त, हृदय प्रदेशकी दाह, भ्रम, वमन, उदरशूल, एवं पित्तप्रधान रोगों का नाशक है।

मात्रा—२ गुंजा दुग्धानुपान वा दाडिमरस।

प्रयोग क्रमांक ७

नाम—त्रिभुवन कीर्ति रस (योगरत्नाकर) खल्वीरसायन।

उपकरणानि—खल्वयन्त्र—चालनिका।

औषधद्रव्य—शुद्ध हिंगुल, शुद्ध विष, शुंठी पिप्पली, मरिच, शुद्ध टंकण, पिप्पलीमूल।

भावनार्थ—तुलसी, आर्द्रक धतूरा, निर्गुण्डी स्वरस वा क्वाथ।

विधि—खरल में सबको पीसकर उक्त चारो वनौषधियों के स्वरस अथवा क्वाथ से तीन तीन भावनादेकर छाया शुष्क गोलियां बना लें।

गुण—ज्वरहर—विशेषकर वातकफज्वर शामक है।

मात्रा—१—२ रत्ती अनुपान भेद से।

प्रयोग क्रमांक ८

नाम—योगराज गुग्गुलु (शारंगधर)

उपकरणानि—कटाह, उदुखल, खरल, घृत।

औषधद्रव्य—पंचकोल, भृष्ट हिंगु, अजमोदा, सर्षप, श्वेत कृष्ण जीरक, रेणुका, इन्द्रजौ, पाटला विडंग, गजपिप्पली, कटुकी, अतिविषा, भारंगी, वचा, मूर्वा। प्रत्येक १-१ तोला। त्रिफला ४० तोला।

भस्में—चन्द्रोदय वा रस सिन्दूर ४ तोला, सुवर्णभस्म २ तोला, रजतभस्म ४ तोला, वंगभस्म ४ तोला नागभस्म ४ तोला, तीक्ष्णलौहभस्म ४ तोला, वज्राभ्रकभस्म ४ तोला, मण्डूर भस्म ४ तोला, गुग्गलु सर्वसम।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विधिः—प्रथम गुग्गुलु को छोड़कर शेष सब काष्ठौषधियों का सूक्ष्म चूर्ण बना लें। पुनः शुद्ध गुग्गुलु यदि शुष्क हो, तो उसमें पाव भर जल डालकर द्रवित कर लें और इसमें सर्व द्रव्य मिला दें। और इसे लोहे या उत्तम पत्थर के खरल में ४ तोले घृत डाल कर चूर्ण मिश्रित गुग्गुल को कूटें। जब लक्षाघात हो जाएं तो ४-४ रत्ती की गोलियाँ बनालें यदि गुग्गुलु अशुद्ध हो तो तत्काल शुद्ध करलें। और अर्द्ध तरल गुग्गुलु में सब पदार्थ मिलाकर योग बनाएं।

सूचना—(१) गुग्गुलु शोधन निघण्टु में शोधन प्रकरण में देखें। (२) भस्मों के बिना यह योग 'योगराजगुग्गुलु' कहलाता है। भस्मों सहित 'महायोगराज'।

गुण—योगराज गुग्गुलु, रसायन, वेदना शामक वात व्याधिहर,व्रण रोपक-भगन्दर मेदोरोग अर्श, प्रमेह, कष्टार्तव, अपस्मार, पाण्डु स्थूलता, यक्ष्मादि रोग शामक एवं वायु का अनुलोमक है।

मात्रा—४ रत्ती-८ रत्ती तक।

प्रयोग क्रमांक ९

नामः—हेमगर्भ पोट्टलीरस (रसायनसार)

उपकरणानिः—खरल, मृत्पात्र, वस्त्रखण्ड, दोलायन्त्र।

द्रव्यः—सुवर्णभस्म ४ भाग, शुद्धपारद ४ भाग, शुद्ध गन्धक ८ भाग, ताम्रभस्म १ भाग, वंगभस्म १ भाग, शंखभस्म २ भाग, कपर्दभस्म २ भाग, शुद्धटंकण १ भाग, मुक्ताभस्म ४ भाग, पंचकोल (भावनार्थ)

विधिः—प्रथम पारद गन्धक की कज्जली बना कर शेष पदार्थ भी उसमें मिलाकर खरल करें और पंचकोल (पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, चित्रक, शुण्ठी) के क्वाथ की ३-३ भावनाएँ देकर शंकु के आकार की पोटली (गुटिका) बनालें। इसे सुखाकर रेशमी वस्त्र की पोटली में बाँधदे और एक मृत्पात्र में गन्धक चूर्ण भरकर उसके मध्य में यह पोटली रखकर मन्दाग्नि द्वारा १ घटिका तक पाककरें। अथवा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जब तक दोलायन्त्रस्थ गन्धक आकाशवर्ण की न हो जाए तब तक पाक करें। स्वांगशीत होनेपर पोट्टली बाहर निकालकर उसपर लगे गन्धक को चाकू से खुरचदें।

रहस्यः—पोट्टली में स्वर्णादि पदार्थ रहते हैं और पोट्टली में रखकर सब द्रव्यों का स्वेदन किया जाता है अतः इस 'हेमगर्भ पोट्टली' रस कहा जाता है।

गुणः—ग्रहणी, क्षय, अतीसार, सन्निपात ज्वर, अतिस्वेद, नाड़ी क्षीणादि नाशक।

मात्राः—१-२ गुंजा, अदरकस्वरस तथा पान के रस में के साथ।

———

प्रयोग क्रमांक १०

नामः—रससिन्दूर (कुपिस्थ रसायन)।

उपकरणानिः—वालुकायन्त्र, कोष्ठिका, लोह शलाका, ताम्रपत्र।

द्रव्य—शुद्ध पारद २ तोला शुद्ध गन्धक ५ तोला वटांकुरस्वरस भावनार्थं।

विधिः—पारदगन्धक की निश्चन्द्र कज्जली बनाकर उसमें वटांकुरस्वरस की तीन भावना देकर धूप में सुखालें। पुनः सातकपड़ मिट्टी की हुई अग्नि-सह काचकुप्पी में भरकर वालुकायन्त्र द्वारा क्रमशः मृदु मध्य तीव्राग्नि द्वारा पाक करे। जब गन्धक जीर्ण हो जाए तो काचकुप्पी के मुख को गुड़ तथा सुधा (चूर्ण) मिलाकर सन्धिलेप से बन्द करदें और पुनः तीव्राग्नि द्वारा २ याम (६ घन्टे) तक पाक करे। स्वांगशीत होने पर काचकुप्पी के गले में संलग्न अरुण वर्ण का रससिन्दूर प्राप्त करें।

रहस्य—गन्धक जीर्ण की परीक्षाः—(१) गन्धक का पीतवर्ण का धूम्र निकलना बन्द हो जाता है। (२) काचकुप्पी के मुखपर ताम्रपत्र रखें। यदि गन्धक होगी तो वह काला पड़ जाएगा अन्यथा श्वेत-कण (पारद) उपर दृष्टिगोचर होंगे।

(३) शलाका परीक्षाः—लोहशलाका शनैः-शनैः काचकुप्पी में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डालें। यदि गन्धक होगी तो वह द्रवावस्था के कारण शलाका में लग जाएगी और उस शलाका को अग्नि में रखने से गन्धक की ज्वाला, गन्ध और धुआँ निकलेगा। अन्यथा नहीं।

(४) रात्री के अन्धकार में यदि काचकुप्पी के अन्दर देखा जाए तो गन्धक होने पर कुछ भी दिखाई न देगा। गन्धक न होने पर उज्ज्वल लाल वर्ण दिखाई देगा। यह परीक्षा रात्री में ही की जाती है।

(५) अग्निका मानः—प्रथम दो याम तक मन्दाग्नि दें अन्यथा गन्धक द्रवित होकर बाहर निकल जाती है। दूसरे दो याम मध्य माग्नि दें जब तक सारा गन्धक जारित न हो जाए। मुख बन्द करने के पश्चात् ३ याम तक तीव्राग्नि दें।

इस प्रकार निर्मित रससिन्दूर 'कण्ठस्थ' या 'गलस्थ' कहाता है। दूसरा 'तलस्थ' काचकुप्पी के तल में प्राप्त होने वाला। प्रथम ही प्रयोग अधिक होता है।

तलस्थरस सिन्दूर निर्माण

विधिः—(६) पूर्ववत् कज्जली बनाकर काचकुप्पी में भरें। पृथ्वी में एक हाथ भर गहरा, चौड़ा गर्त खोदकर, उसमें चार अंगुल मोटा स्तर वालुका का बनाकर उसपर कज्जलीयुक्त काचकुप्पी रख उसके चारों ओर वालुका (कण्ठ प्रदेश) भरदें। काच-कुप्पी को मुखमुद्रा लगादें। उपर से वन्योत्पलों से गर्त्त का भरकर अग्नि दें। स्वांगशीत होने पर तलस्थ लाल वर्ण का रससिन्दूर प्राप्त करें।

(७) काचकुप्पी तोड़ने की विधिः—स्वांगशीतल काचकुप्पी की मिट्टी को चाकू से उतार कर उसके मध्य भाग में मोटा डोरा या सूतली बाँधे एक अंगुल मोटी। उसपर स्पिरिट या मिट्टी का तैल (घासलेट) डाल कर जलाएँ। जब काचकुप्पी का मध्यभाग पर्याप्त

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गरम हो जाए तो उसपर शीतल जल छोड़ दें। इससे यह मध्य से तड़क कर टूट जाएगी। (८) समगन्धक जीर्ण से षड् गुण बलिजारित तक रस सिन्दूर बनाया जाता है।

गुण:—रससिन्दूर, महारसायन, विभिन्न अनुपानों से नानारोगहर, वृष्य, वाजीकरण, बल्य, वायु नाशक, प्रमेह, वातरोग, गुल्म, प्लीहा वृद्धि, क्षयादि रोग नाशक, दोषों, तथा स्रावों का अनुलोमक, त्रिदोष शामक योगवाही है। मात्रा—½—२ रत्ती पर्यन्त।

प्रयोग क्रमांक ११

नाम—सुवर्ण राज वंगेश्वर (रसतरंगिणी-कुप्पीपक्वरसायन)

उपकरणानि—वालुकायन्त्र, कोष्ठिका, काचकुप्पी, संदेश, कटाह, हसंती।

द्रव्य—शुद्ध वंग १ भाग, शुद्धपारद १ भाग, शुद्धगन्धक १ भाग, नृसार १ भाग।

विधि—प्रथम वंग को लोह कटाह या दर्वीयन्त्र में अंगीठी (सिगड़ी) पर द्रवित करलें। द्रुतवंगयुक्त कटाह को नीचे उतारकर उसमें शुद्ध पारद को मिला दें। यह क्रिया 'आवाय या प्रतिवाप' कहाती है।

इस मिश्रण को खरल में डालकर थोड़ासा सैन्धव मिलाकर निम्बु रस से मर्दन कर जल से धोएँ। जब तक जल में कालापन आता रहे उस समय तक धोते रहें। इससे उक्त मिश्रण या पिष्टी निर्मल होती है। पुनः इसे धूप में सुखाकर चूर्ण बना लें। इस शुष्कचूर्ण में गन्धक, नृसार मिलाकर कज्जली बना लें। कज्जली को काचकुप्पी में भरकर वालुका यन्त्र में चारयाम (१२ घंटे) मृदु और मध्यमाग्नि से पाक करें। निर्धूम होजाने पर काचकुप्पी को संदंश से निकाल कर शीतल कर और कुप्पी का भेदन कर तलस्थ 'स्वर्ण वर्ण' का 'स्वर्णवंग' प्राप्त करलें।

सूचना:—इसके निर्माण में काचकुप्पी के मुख को बन्द करने की आवश्यकता नहीं होती।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) वंग सुवर्ण कणों के समान रंगरूप वाला हो जाता है। अतः इसे 'स्वर्णवंग' नाम दिया गया है।

गुण—लवण, तिक्त, अम्लरस, शीतवीर्य, प्रमेह, मेद, कफरोगहर, वृष्य, बल्य, रुक्ष, सर नेत्र और मेध्य है। मात्रा—१—२ गुञ्जा पर्यन्त।

प्रयोग क्रमांक १२

नाम—समीरपन्नग रस (सुवर्ण समीर पन्नग) (कुपिस्थ रसायन, सि०यो०स०)

उपकरण—स्वर्णवंगवत्।

द्रव्य—शुद्ध सोमल ४ भाग, शुद्ध ताल ४ भाग शुद्ध मनः शिला ४ भाग स्वर्ण पत्र १ भाग शुद्ध पारद ४ भाग शुद्ध गन्धक ४ भाग। कुमारीरसभावनार्थं।

विधि—प्रथम शुद्ध पारद में स्वर्ण पत्र एक एक करके मिला दें। पुनः गन्धक मिलाकर कज्जली करें। ततः शेष द्रव्य मिलाकर घृत कुमारी स्वरस निकाल उससे ३ भावनादे कर धूप में सुखा लें। इस शुष्क कज्जली को सात कपरौटी की हुई काचकुप्पी में भरकर वालुका यन्त्र में दो दिन तक मन्दाग्नि से पाक करें। अग्नि इतनी ही रहे कि कज्जली द्रव होकर पकती रहे, शीशी के गले में न आवे। स्वांग शीत होने पर तलस्थ कृष्णवर्ण का 'समीर पन्नग' रस प्राप्त करें।

सूचना—सुवर्ण पत्रों के स्थान पर स्वर्णभस्म, डालना उत्तम है।

गुण—वात कफज रोग—अर्दित, पक्षाघात, पार्श्वशूल, कटिस्तम्भ, सन्निपात ज्वर में तन्द्रा, स्वेदाधिक्य, शीतांगता, हृद्दौर्बल्य, तथा तमकश्वास और फिरंगोपदंशज वात रोग शामक है।

मात्रा—½—१ रत्ती पर्यन्त, मधु + अद्रक रस से।

प्रयोग क्रमांक १३

नामः—लोकनाथरस (चक्रदत्तः पोट्टली रसायन)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उपकरणानिः—मूषा, शराव, गजपुट,

द्रव्यः—शुद्धपारद १ भाग, शुद्ध गन्धक २ भाग अभ्रकभस्म १ भाग, लोहभस्म २ भाग ताम्रभस्म २ भाग, वराटिकांभस्म ३ भाग घृतकुमारी, काकमाचीरस भावनार्थ।

विधिः—प्रथम पारद गन्धक की कज्जली वनाकर और अभ्रकभस्म मिलाकर घृत कुमरी रस की भावना दे शिखराकार (शकुंवत्) पोट्ली या गोली वनालें और धूप में सुखालें। पुनः लोह तथा ताम्रभस्म को काकमाची रस या क्वाथ में पीसकर उस पोट्टली के ऊपर लेप करके उसे पुनः सुखाले। अब मूषा में वराटिका भस्म विछाएँ और इस पर पोट्टली को रखकर उपर से पुनः वराटिका भस्म से आच्छादित करदें और मूषा सम्पुट बनाकर उसे शरावों में बन्द कर गजपुट में अग्नि दें। स्वांग शीत होने पर उतार कर कृष्णवर्ण लोकनाथ रस प्राप्त करें।

गुणः—ज्वर, क्षय, अग्निमान्द्य, शोथ, यकृत् और प्लीहावृद्धि नाशक है।

मात्राः—१–३ रत्ती पयन्त। अनुपान—गोमूत्र, मधुपिप्पलीचूर्ण वा गुड़हरीतकी।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विष शोधनादि विज्ञानीयः षष्ठ आदर्शः

विषद्रव्यों का शोधन तथा मात्रा

वत्सनाभ Aconite

शोधन का प्रयोजन—अविशुद्धं विषं दाहमोहकरं हृद्गतिंरोधनम् ।
मृत्युंच विदधात्यतस्मात्तं परिशोधयेत् ॥

शोधन—विष को चणक सम खण्डशः करं मृत्तिका भाजन में गोमूत्र में भिगोएं प्रतिदिन गोमूत्र बदलते रहें। तीन दिन के पश्चात् पुनः पोट्टलों में शिथिल बाँध कर गोदुग्ध में दो याम तक दोलायन्त्र में स्वेदन करें।

मात्रा—१।१६ से १।८ गुंजा यर्यन्त। **सूचना**—तीक्ष्णता के कारण बाल वृद्ध, गर्भिणी, अति क्षीण, यक्ष्मा, हृदय- दुर्बलता, तथा पित्तविकार-युक्त रोगो में प्रयुक्त न करें।

योग—१ मृत्युंजयरस, मात्रा—१से २ रत्ती, ज्वरे, २—पंचामृत रस मात्रा—१ रत्ती, तीव्रज्वरे। ३—आनन्द भैरव मात्रा—१से २ गुंजा, ज्वरातीसारे। ४—कफकेतू रस मात्रा—१से २गुंजा, वातकफज्वरे, प्रतिश्याये।

अथोपविषाणां नामानि

विषतिन्दुकबीजंच त्वहिफेनञ्च रेचकम् ।
धत्तूर बीजं विजया गुञ्जाभल्लातकाह्वयः ॥
अर्कक्षीरं स्नुही क्षीरं लागली करवीरकम् ।
समाख्यातो गणोऽयं बुधैरुपविषाभिधः ॥

अहिफेन Opium

निर्मलीकरण—बाजार में मिश्रित अहिफेन मिलता है, अतः उसे शुद्ध जल में

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विलीन कर वस्त्र से छान कर और गोदुग्ध में मिला कर मन्दाग्नि पर पाक करें।

शोधन—आर्द्रक स्वरस में सात बार भावना देना। **मात्रा**—१।४ से १गुंजा पर्यन्त। **सूचना**—बालवृद्ध, मधुमेही, विसूचिका, शीतांगावस्था, वृक्क शोथ—कफप्रचुर कास में अहिफेन का प्रयोग न करें।

योग—(१) वेदनान्तक रस मात्रा २ रत्ती वेदनाशामक (२) निद्रोदय रस मात्रा २ रत्ती अनिद्राहर (३) अहिफेनासव ५ से १५ बिन्दु तक अतीसार शूलादौ।

विषतिन्दुक (कुपीलुः)

शोधन—कारस्कार के बीजों को पोट्टली में बाँध कर गोमूत्र में दो याम तक दोलायन्त्रमें स्वेदन करलें।

मात्रा—१।४ से १गुंजा पर्यन्त

योग—(१) अग्नितुण्डी वटी, मात्रा—१ से २ रत्ती अग्निमान्द्य (२) लक्ष्मी-विलासरस, मात्रा १ से २ रत्ती पौष्टिक (३) विषमुष्टीवटी १—२ रत्ती अग्निवर्धक (४) विषतिन्दुकतैल—अभ्यंग पक्षाघातादि

जयपालः Croton Seeds.

शोशन—त्वग् रहित जयपाल बीजों को वत्सनाभवत् गोदुग्ध में स्वेदन करे। ततः अन्तर्जिह्वा निकालकर और पीसकर नूतन घट खर्पर पर लेप करे अथवा मसीशोषकों (Blotting Papers) के मध्य में दबाकर रक्खें। इससे जयपालका तैल निकल जाता है और वह तीक्ष्णता रहित हो जाता है।

मात्रा—१।७से १।२ गुजा पर्यन्त। शीतल जल से दें।

योग—(१) इच्छाभेदी रस, मात्रा २ रत्ती विबन्धे (२) अश्वकंचकी, मात्रा २रत्ती

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विबन्धे (३) ज्वरकेसरीरस, मात्रा—२ रत्ती, सामे सविबन्ध ज्वरे। (४) जलोदरारि रस १ रत्ती जलोदर में रेचनार्थ।

धत्तूर Dhattura

शोधन—गोदुग्ध में वत्सनाभवत् गोमूत्र में रखकर पुनः गोदुग्ध में एक याम तक स्वेदन कर उष्ण जल से धोलें। इसको भी ३ दिन गोमूत्र में भिगोकर रखा जाता है। वत्सनावत्।

मात्रा—बीज १|४ से १|२ गुंजा पर्यन्त पत्र १|२ से १॥ गुंजा तक।

योग—(१) प्रलापान्तकरस, मात्रा १ रत्ती सन्निपात में (२) नारदीय महालक्ष्मी विलास : शिरः शूल में (३) कनकासव मात्रा १ तोला से २ तोला श्वास में

भंगा शोधन, Indian Hemp

शोधन—विजया के शुष्क पत्रों को जल में भिगो दे। कुछ समय पश्चात् उन्हें निष्पिडित कर धूप में सुखा ले। ततः घी में भर्जन (भून ले) कर लें। मात्रा—२ से ४ गुञ्जा पर्यन्त

गुञ्जा-रक्तिका

शोधन लाभ—गुंजा बीजं वान्तिकरं तीव्ररेचन कृत् तथा
विषूची लक्षणाकारां करोतिहि विष क्रियाम्
अतो दोष निवृत्यर्थं गुञ्जा बीजानि शोधयेत्।

शोधन—नूतन गुञ्जाओं का चूर्ण कर मोटे वस्त्र में बाँधकर दो याम तक दोला-यन्त्र में गोदुग्ध में स्वेदन करें। मात्रा—बीज १|२ से $1\frac{1}{2}$ गुञ्जा पर्यन्त

योग—गुंजाद्यं तैल, त्वचा रोग नाशक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भल्लातकं, अरुष्करम्

शोधन—नारिकेल जल में दोलायन्त्र में भल्लातक फलों को एक याम तक स्वेदन करें। ऊपर आए तैल कौ फेंक देवे। मात्रा—१ से ३ गुंजा पर्यन्त

हिंगु

शोधन—हींग को शुद्ध घी में भर्जन कर लेना चाहिये मात्रा—२ से ४ गुन्जा तक

स्नुहीक्षीर शोधन

स्नुही दुग्ध २ पल में अम्लिकापत्र रस २ तोला मिलाकर मर्दन कर धूप में सुखा लें। किन्हीं के मत में स्नुहीक्षीर तथा अर्क क्षीर स्वयमेव शुद्ध होते हैं।

गुग्गुलु-शोधन

(१) द्रव्य-त्रिफला १ सेर गुडूची ½ सेर जल १० सेर, गुग्गुलु (महिषाक्ष) १ सेर।

विधिः—प्रथम त्रिफला तथा गुडूची का यवकुट करलें पुनः उसे चार प्रहर (३ घन्टे) तक १० सेर जल में भीगा रहने दें। ततः मन्दाग्नि पर इतना गरम करें कि जल आधा रह जाय। अब लोह कटाह में यह क्वाथ डाल दें। लोह कटाहकुण्डों में वंश की लकड़ी लगाकर गुग्गुलु को एक शिथिल पोट्टली में बाँधकर उसे क्वाथ के अन्दर लटका दें। अर्थात् लोह कटाह का दोलायन्त्र बनालें। मन्दाग्नि पर पाक करें। धीरे-धीरे गुग्गुलु द्रवित होकर क्वाथ में मिल जाएगा। जब वस्त्र खण्ड में केवल मलमात्र रह जाए तो उसे फेंकदें और गुग्गुलु मिश्रित क्वाथ को कुछ समय तक एकान्त स्थान में स्थिर होने दें। पुनः निथार कर दूसरे पात्र में डाल ले। मल भाग कटाह के तल पर में रह जाएगा। यह शुद्ध गुग्गुलु है। गुग्गुलु हाथों में चिपकता है अतः हाथों को घी लगा लेना उत्तम है!

(२) त्रिफला क्वाथ के स्थान पर गोदुग्ध भी व्यवहृत होता है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तचित्रक शोधन—रक्तचित्रकमूल सुधाजल (चूर्णोदक) १ याम तक रख कर धूप में सुखाले ।

वृद्ध दारुक बीज शोधन

गोदुग्ध में एक याम तक दोलायन्त्र द्वारा स्वेदन करना ।

निम्बु बीज शोधनः—अपामार्ग क्वाथ में १ याम तक दोलायन्त्र में स्वेदन ।

विषों के विपलक्षण और चिकित्सा

वत्सनाभ विषलक्षणः

सेवन के स्वल्प समय पश्चात् मुख तथा कण्ठ में उष्णता, दाह ततः जड़ता, आमाशय में तीव्रदाह, अतिज्ञालास्राव, वमन-अतीसार, अतिस्वेद, त्वचा स्तिमित (चिपचिपी) तथा शीत नाडी क्षीण अनियमित । नेत्रस्थित तथा ताकते हुए, नेत्र तारा-प्रथम संकुचितः, पुनः विस्तृत । श्वास में कष्ट । अत्यन्त निर्बलता मूर्च्छा, कभी-कभी आक्षेप, मूर्च्छा अथवा श्वासावरोध से मृत्यु । मृत्यु पर्यन्त कुछ न कुछ चेतनता रहती है ।

चिकित्साः—(१) वमन, (२) आमाशय प्रक्षालन, (३) उत्तेजक पदार्थ निर्विषी कस्तूरी, मकरध्वज आदि तथा कटु पदार्थ, लशुन, शुंठ, तुरंजबीन लवंग जरविन्द- अग्नि जारादिका सेवना विरेचनार्थ एरण्डतैल, वमनार्थ एरण्ड के पत्रों का रस, शलगम के बीज, पुराना तिलतैल का काढ़ा दें ।

(४) लवंगचूर्ण का घर्षण, उष्णजल युक्त काचकुप्पियोंका सेक । तण्डुलीयक स्वरस में हल्दी मिलाकर, टंकणक्षार के साथ घृत पीने से लाभ होता है ।

(५) हृदय वल्य, मकरध्वज वटी, कस्तूरी भैरव, कस्तूरी वारुणी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सार, कर्पूरासवादि दें हृत्पत्री सुरासार (डिजिटेलिस) तथा एट्रोपीन $\frac{3}{?}$ ग्रेन का सेवन कराए।

अहिफेन विषलक्षणः

रोगी को प्रथम कुछ उत्तेजना, भ्रम होता है। किन्तु शीघ्रही वह मूर्च्छित तथा संज्ञारहित हो जाता है। सन्यास, नेत्रतारा अतिसंकुचित, त्वचा शीत तथा चिपचिपी, नख-मुख तथा ओष्ठ नीलाभ। नाड़ी अतिक्षीण तथा मन्द, श्वास मन्द, धीमा, अनियमित, अन्त समय में घुर्घुराहटयुक्त। मृत्यु से कुछ मिनट पूर्व नेत्र तारा विस्तृत हो जाती है। श्वासावरोध से मृत्यु।

चिकित्साः—(१) आमाशय प्रक्षालन, (२) वमन-उष्ण जल में राई तथा लवण मिलाकर वमन कराते हैं जब तक अफीम की दुर्गन्ध आती रहती है। आमाशय प्रक्षालन से पूर्व पोटेशियम परमेंग्नेट का विलयन (४-८ ग्रेन को ४-८ औंस गरम जल में मिलाकर) पिलाएँ। इसमें अहिफेन का कुछ अंश नष्ट हो जाता है।

श्वास संस्थान के आघात का भय रहता है अतः श्वास संस्थान उत्तेजक औषधियाँ, यथा बुन्दः (कॉफी) जातिफल, जातिपत्री, लवंग, तमाल- पत्रादि तथा अफसन्तीन (नागदमन) का काढ़ा और एट्रोपेन $\frac{1}{४०}$ ग्रेन, स्ट्रिकनीन $\frac{1}{६०}$ ग्रेन का व्यवहार करे तथा कृत्रिम श्वास क्रिया कराएँ। रोगी को सोने न दे, इधर उधर फिराए, शीत तथा गरम जल की पट्टियाँ उसके माथेपर रक्खें। नेत्रों में तीक्ष्णांजन, तीक्ष्णनस्य दे। उदरपर राई का लेप कराएँ ताकि रोगी का शरीर उष्ण रहे। काकाजंघा, पीत सैरेयक मूल, चक्रमर्दमूल, श्वेत कत्था चूर्ण समभाग गरम जल से सेवन कराए।

विषमुष्टिविषलक्षणः

अधिक मात्रा में सेवन से $\frac{1}{2}$—१ घण्टे में विषलक्षण उत्पन्न

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हो जाते हैं (१) बेचैनी, अंगपीड़ा प्रथम पृष्ठ में ततः हाथों और पैरों में तीव्र वेदना। ततः आक्षेप ½—१ मिनट तक। दो आक्षेपों के मध्य में अतिस्वेद तथा थकावट। धीरे २ यह अन्तर कम होता जाता है। किन्तु जबड़ों (मुख) की मांस पेशियां सबसे अन्त में, मृत्यु से कुछ समय पूर्व ही प्रभावित। प्रायः धनुर्वात (Tetanus) के समान लक्षण होते हैं। भेदक लक्षण निम्न हैं।

विषमुष्टिविष	धनुर्वात
(१) लक्षण शीघ्र तथा त्वरा से स्पष्ट हो जाते हैं।	(१) चिन्ह अस्पष्ट तथा धीरे २ बढ़ते हैं।
(२) चोट—व्रणादि का अभाव।	(२) व्रणादि का चिन्ह, इतिहास।
(३) दो आक्षेपों के मध्य में मांस पेंशिया पूर्णतः शिथिल हो जाती हैं।	(३) आक्षेपों के मध्य में भी पृष्ठ तथा हनु की मांस पेशियों में आक्षेप स्थिति।
(४) हनुग्रह अन्त में होता है (कुछ घन्टों में पूर्व ही)	(४) हनुग्रह ही प्रथम लक्षण है।
(५) रोगी शीघ्र ही मर जाता है या स्वस्थ हो जाता है।	(५) रोगी एक दो दिन में मर जाता है या ठीक हो जाता है।

चिकित्सा—वमन, कोयला चूर्ण विष का आचूषण कर लेता है वह तथा उसके पश्चात् पोटेशियम परमेंग्नेट का विलयन विषनाशार्थं। रोगी को आक्षेप शान्त्यर्थं अहिफेनादि का करावें। क्लोरोफार्म तथा कृत्रिम श्वास क्रिया भी लाभदायक है।

धत्तूर

धत्तूर विष लक्षण—मुख तथा कण्ठशोष, भ्रम, मुखआरक्त, नेत्रतारा विकसित, प्रलाप, हस्तादि की उन्मत्तवत् उद्देश्यहीन गतियाँ, मूर्च्छा,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मृत्यु। मृत्यु के निकट नाड़ीक्षीण, अतिस्वेद, शरीर शीतल, स्वल्प मात्रा में विष जानेपर शरीर उष्ण रुक्ष हो जाता है। ५-६ बीजों के सेवन से ही विष लक्षण उत्पन्न हो जाते हैं।

चिकित्सा—वमन विरेचन, उष्ण द्रव्य, शीतल जल का सेचन, चांगेरी स्वरस १—५ तोला लाभ करता है। एरण्डतेल से रेचन, घी-शर्करा-गाय का दूध, वृन्ताक स्वरस, कार्पासफल तथा बीजों का क्वाथादि औषधियां उत्तम हैं।

सूची तथा सूची सत्त्व (एट्रोपीन)

विषलक्षण—मुख-कण्ठ शोष, तारा विकसित, दृष्टिमान्द्य, स्वरनाश, प्रलाप (उन्मत्तवत्) उदर्द सदृश उत्सेध।

चिकित्सा—वमन, आमाशय प्रक्षालन, बुन्दः (कॉफी) चायादि कषाय पदार्थ, कोयला, मोर्फीन् $\frac{1}{6}$ ग्रेन, प्रारम्भिक दशा में। उष्ण पदार्थ, उष्ण जलयुक्त, काच कुप्पियों से सेक, कृत्रिम श्वास क्रिया, प्रलाप में सिरपर हिम का प्रयोग, मूत्राशय से मूत्र निकालना।

कर्पूर

कर्पूर विष लक्षण—विरल दशा में ही कर्पूर का विष प्रभाव होता है। उदर में पीड़ा, अरति, कभी कभी वमन, भ्रम, दृष्टिमान्द्य, प्रलाप अपस्मार जैसे आक्षेप के वेग। त्वचा नीलाभ, पक्षाघात, शीत और चिपचिपा स्वेद। मूत्राल्पता, मूर्च्छा, मृत्यु।

चिकित्सा—वमन, आमाशय प्रक्षालन, लवण विरेचन, उष्ण तथा शीत सेक, राजिकादि का लेप तथा उत्तेजक द्रव्य कस्तूरी आदि। विषमुष्टि वटी अथवा विष मुष्टि सत्त्व (स्ट्रीकनीन)। तैल तथा मद्यों का प्रयोग वर्जित है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विजया (भांग)

विजया विष चिन्ह—प्रारम्भमें उत्तेजना, नाड़ी तीव्र,रोगी बहुत बोलता है, नेत्र रक्त, मुख लाल, गायन, कामोत्तेजना, इतस्ततः धावन, क्षुधातिशय, एक दो घण्टे पश्चात् निद्रा तथा मूर्च्छा; इससे मृत्यु प्रायः नहीं होती। यद्यपि कभी कभी कई दिन तक इसका प्रभाव रहता है। यदि उपचार न किया जाए तो श्वास कष्ट होकर विरलावस्था में मृत्यु हो जाती है।

चिकित्सा—वमन, विरेचन, शीतल जल से सिंचन, गोघृत, उष्णजल, तक्र, निम्बु दूध, अम्ल पदार्थ तथा शर्करा का उपयोग करना चाहिए।

गुञ्जा—विष खाने से वमन, विरेचन, शिरः शूल। यदि रक्त में पहुँच जाये तो मृत्यु भी कर देती है। अन्यथा नहीं। शोधन में पद्य देखें।

चिकित्सा—ताजा दूध, तुरंजबीन, मख्खन आदि पदार्थों का सेवन करें।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथातो द्रव्यगुण शास्त्रः प्रारभ्यते

तत्र परिभाषा विज्ञानीयो नाम सप्तम आदर्शः

भैषज्य कल्पना

स्वरसः—आर्द्रद्रव्य का यन्त्र, प्रस्तर, हस्त द्वारा निष्कासित रस "स्वरस" कहाता है। स्वरसके अभावमें शुष्क चूर्णको रात्रि पर्यन्त जलमें भिगोकर प्रातः काल मलकर छान लें। स्वरसकी मात्रा आधासे एक पल पर्यन्त है।

प्रक्षेप—घी, शर्करा, मधु, गुड़, १ कोल (स्वरसकी अपेक्षा आधा)।

सूचना—पुटपाक विधिसे भी स्वरस निकाला जाता है।

कल्क—प्रस्तरपर पीसा हुआ शुष्क चूर्ण व सजल चूर्ण "कल्क" कहाता है। जिसकी मात्रा १ तोला है।

प्रक्षेप—घी, मधु, तैल द्विगुण, सिता शर्करा गुड़ समान, द्रव चतुर्गुण।

चूर्ण—शुष्क द्रव्यको प्रस्तर वा लौह खरलादिमें पीसकर वस्त्र द्वारा छान ले। यही "चूर्ण" है। चूर्णकी मात्रा २ शाण (६ माशा) है।

प्रक्षेप—गुड़ समान शर्करा, घी, मधु द्विगुण, द्रव ४ गुण।

क्वाथ (शृत)—क्वाथ द्रव्यमें जल मिलाकर अग्निपर पाक करना।

द्रव्य तथा जलका अनुपात—

वीर्यानुसार—	१ मृदुवीर्य	चतुर्गुण	चतुर्थांशावशिष्ट
	२ मध्यवीर्य	अष्टगुण	,,
	३ तीक्ष्णवीर्य	षोडशांश	अष्टमांश

द्रव्यप्रमाणनुसार—१ पल (५ तो) तक षोडशांश अष्टमांशावशिष्ट।

२. कुडव (२० तोला) तक अष्टगुण, चतुर्थांश अवशिष्ट

३. कुडव से ऊपर चतुर्गुण ,, ,,

साधारणतया द्रव्य पञ्चांग में अष्टगुण जल डालकर चतुर्थांश अवशिष्ट रक्खा जाता है। क्वाथ मात्रा—१ पल (५ तोला) है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रक्षेप—जीरक, गुग्गुल, क्षार लवण, शिलाजतु, हिंगु त्रिकुट चूर्ण २-२ माशा। कल्क, घी, तैल, गुड़ गोमूत्र एक कर्ष, डालना चाहिये।

दोषानुसार—	वात	पित्त	कफ
सिता शर्करा मधु	चतुर्थांश	अष्टमांश	षोडषांश
	षोडशांश	,,	चतुर्थांश

क्वाथ सदृश अन्य औषध कल्पनाएँ

(अ) प्रमथ्या—दीपन पाचन योग का नाम 'प्रमथ्या' है।
विधि—द्रव्य १ पल जल ८ पल चतुर्थांशावशेष

(आ) मांसरस—जितने जल में मांस सम्यक्तया बन जाए उतना जल लेना चाहिये। अथवा निम्नलिखित प्रमाण अनुसार

१. घन मांसरस निर्माण करना हो तो मांस ८ पल, जल १ प्रस्थ डालकर क्वाथ विधि से बनावें।

२. मध्यम मांसरस निर्माण करना हो तो मांस ६ पल, जल १ प्रस्थ डालकर क्वाथ विधि से बनावें।

३. तनु मांसरस निर्माण करना हो हो मांस ४ पल, जल १ प्रस्थ डालकर क्वाच विधिसे बनावें।

भेद—कृतमांसरस : लवण, घी तथा पिप्पल्यादि युक्त; अकृत मांसरस : स्नेह तथा मसालोंके बिना।

(इ) उष्णोदक—शुद्ध पात्रमें जल को इतना उबाले कि आधा, चतुर्थांश वा अष्टमांश शेष रहे।

(ई) सिद्धपानीय—द्रव्य १ कर्ष जल १ प्रस्थ, शेष आधा।

(उ) यवागू प्रमाण—स्वस्थावस्थामें जितना रोगी खाता है उसकी अपेक्षा चतुर्थांश अन्नसे बनाई जाती है।

भेद—१ क्वाथ साध्य, २ कल्क साध्य। जलादि का प्रमाण निम्नलिखित है :

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

क्वाथ साध्य

क्वाथ साध्य भेद—मण्ड	पेया	विलेपी
लक्षण—सिक्थकैःरहितो	सिक्थ समन्विता	विरलद्रवा
जलप्रमाण—१४ गुणा	६ गुणा	४ गुणा
कल्कसाध्यः—तीक्ष्णवीर्य	मध्यवीर्य	मृदुवीर्य
द्रव्यप्रमाण—१ कर्ष	२ कर्ष (तोला)	३ कर्ष
जलप्रमाण—१४ गुणा,	६ गुणा,	४ गुणा,

(ऊ) लाक्षारस—लाक्षा १ भाग, जल ६ भाग शेष चतुर्थांश। दोलायन्त्रमें पाक कर २१ बार छान लें।

(ए) यूषः—दालों में जल डालकर पाक करना "यूष" कहाता है। द्रव्य कल्कसाध्य यवागूवत्। जल १ प्रस्थ, आधा वा चतुर्थांश अवशिष्टरक्खे। कृत और अकृत यूष, मांसरसवत् दो भेद हैं।

(ऐ) वाट्य—(यव) मण्ड—सुकण्डित या भृष्ट यवको १४ गुणा जल डाल कर पकाना।

(ओ) लाजमण्ड—लाजाओं (धानों) को १४ गुणा जल में पाक करना। शीतकषाय—शीतः सलिलाप्लुतस्तु निशापर्युषितः — द्रव्य १भाग, जल ६, भाग।

(अ) मन्थ— सत्तुओं को शीतल जल वा घीमें मसल मन्थन करने का नाम 'मन्थ' है। २ द्रव्य १ भाग (१पल) जल ४ भाग (४ पल) विधि तथा मात्रा मृत्पात्रे मन्थयेत्...द्विपलं पिबेत्।

(आ) तक्र—दही दो भाग, जल १ भाग मन्थन कर पीना।

(इ) घोल—दधि को बिना जल मन्थन करना;

(ई) तण्डुलोदक—तन्डुल [शालि] १भाग, जल ८भाग, विधि—३-६ घंटे भिगोकर छान ले।

(उ) पानक—अंम्ल वा अनम्ल फल [चिंचादि] १ भाग जल १६ भाग विधि—तन्डुलोदकवत्।

[ऊ] शार्कर—फाण्ट, शीत, क्वाथ या अर्क १ भाग, शर्करा २ भाग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विधि—क्वाथ विधिसे पाक कर मधुवत् गाढ़ा करें।

[ए] अर्क—अर्धक्षुण्ण द्रव्य १ भाग, जल १० भाग, विधि-नाड़िका यन्त्र द्वारा अर्क निकाले।

फाण्ट—क्षिप्त्वोष्णतोये मृदितम्। द्रव्य १ भाग, जल ४ भाग विधि-उबलते हुए उष्ण जलमें द्रव्य डालकर १-२ घण्टे शीतल होने दें। मात्रा: एक पलसे दो पल तक। प्रक्षेप क्वाथवत्।

रसक्रिया—क्वाथादीनां पुनः पाकाद्घनत्वं रसक्रिया। मात्रा १ कर्ष; सिद्ध परीक्षा:—मुद्रा, अप्सु मज्जनं। सरणं न च।

स्नेहपाक—औषध एक भाग, स्नेह ४ भाग, जल १६ भाग। सिद्ध परीक्षा नाङ्गुलि ग्राहिता, कल्के न स्नेहोऽग्नौ शब्दता।

पाकभेदप्रयोजनः—१ मृदु, नस्यार्थं, २ मध्य, पानार्थं नस्यार्थं ३ खर, अभ्यङ्ग।

क्षारः—द्रव्य रक्षा १ भाग, जल ६ भाग विधि:—जल आलोडित कर एकान्तमें निथरने दे। ततः २१ बार छानें। मात्रा ४ रत्तीसे १॥ माशा तक।

अनुक्त परिभाषा

अनुक्त वस्तु ग्राह्य—काल प्रभात, अंग जटा।

अति स्थूल जटाकी	त्वचा	सूक्ष्ममूल	समग्र।
न्यग्रोधादिकी	त्वचा	बीजक खदिरादिका सार	
तालीसादिके	पत्र	त्रिफलादिके	फल
धातक्यादिके	पुष्प	स्नुही अर्कादिका	क्षीर
गुडूची आदिकी	शाखा	हिंगु आदिका	निर्यास
प्रमाणानुक्ते	समान भाग, पात्र		मिट्टीका पात्र
द्रव (तरल) द्रव्य	जल	तैल	तिल तेल
लवण	सैन्धव	सर्षप विशिष्ट	श्वेत सर्षप

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

घी दूध दही मूत्रपुरीष	गायके	चूर्ण स्नेह आसवोंमें श्वेत चन्दन
कषाय, लेपोंमें	रक्तचन्दन	

जिस द्रव्य का जो भी अंग बीर्यवान् हो वही ग्रहण करना चाहिए।

———

लेशोक्त परिभाषा

महा स्नेह—घी, तैल, वसा मज्जा। यमक—कोइ दो स्नेह।

त्रिवृत्—कोई तीन स्नेह।

क्षीराष्टक—माहिंषं, आजं, कारभं, स्त्रैणां, आविकं, ऐभं, ऐकशफम्।

मूत्राष्टक—मूत्रैर्गोजाविमहिषी गजाश्वोष्ट्रखरोद्भवैः।

पंचगव्य—दूध, दहि, घी, मूत्र तथा गोमय

अन्य—इसी प्रकार पंचमाहिषं, पंचाजं भी समझे।

मधुरत्रय—गुड़, शर्करा मधु।

त्रिफला (फलत्रिक)—हरीतकी, आमलकी, विभीतक।

त्रिकुट—(त्र्यूषण)—मारीच, पिप्पली, शुण्ठी।

चतुरुषण—त्रिकटु में पिप्पली मूल मिलाने बनता है।

पंचकोल—पिप्पली पिप्पलीमूल चव्य चित्रक नागरैः।

षड्डूषणम्—पंचकोल में मरिच मिलाने से बनता है।

त्रिमद—विडङ्ग मुस्तक चित्रक। चतुर्जातक—त्वग्, एला-पत्र-नागकेसर।

त्रिजातक (त्रिसुगंधि)—दालचीनी, तमाल पत्र, इलायची।

चतुर्बीज—मेथी चन्द्रशूर कालाजाजी यवानिका

लघुपंचमूल—शालपर्णी पृश्निपर्णी गोक्षुरु कंटकारीद्वय

वृहत् पंचमूल—विल्व स्योनाक गम्भारी पाटला अग्निमन्थ।

दशमूल—दोनों से मिलकर बनता है।

वल्ली पचमूल—विदारी सारिवा हरिद्रा गुडूची अजशृंगी।

कंटक पंचमूल—करमर्द गोक्षुरु सैरेयक शतावरी गृध्रनखी (हिंस्रा)

त्रिगंधक—गन्धक हरिताल मनःशिला।

क्षारत्रयम्—यवक्षार सर्जिकाक्षार टंकणक्षार

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पंचलवण—सैन्धव सामुद्र विड़ सौवर्चल सांभर लवण

पंचक्षीरी या वल्कल वृक्ष—वट उदुम्बर अश्वत्थ प्लक्ष पारीष

पंचपल्लव—आम्र जामुन कपित्थ वीजपूरक बिल्व ।

अष्टवर्ग—जीवक ऋषभक मेदा महामेदा ऋद्धि वृद्धि काकोली क्षीर-काकोली ।

जीवनीयगण—अष्टवर्गमें मुद्गपर्णी माषपर्णी जीवन्ती और मधुयष्टि मिलाने से बनता है ।

तृण पंचमूलः—कुश, काश, शर, दूर्वा, ईक्षुमूल ।

मध्यम पंचमूलः—बला-पुनर्नवा, एरण्ड-मुग्दपर्णी-माषपर्णी (वाग्भट्ट)

जीवन पंचमूलः—शतावरी, महाशतावरी, जीवन्ती, जीवक, ऋषभक ।

पञ्चशूरणः—अत्यम्लपर्णी, काण्डीरः मालाकन्द ग्राम्य तथा वन्य शूरण,

त्रिकंटकः – बृहती, कण्टकारी, धन्वयास ।

पञ्च पल्लवः—आम्र, जम्बू, कपित्थ, विल्व, वीजपूरक ।

आद्यपुष्पः—चन्दन, केशर ह्रीवेर ।

स्वल्प त्रिफलाः—गम्भारी–खजूर, परुषकम् ।

मधुर त्रिफलाः— ,, ,, द्राक्षा ।

सुगन्धि त्रिफलाः—जातिफल, लवंग, पूगफल ।

कटुचतुजातकः—एला, त्वक् तमालपत्र, मरिच ।

पंचतिक्तः—गुडूची, निम्बत्वक्, वासा, कटंकारी, पटोलपत्र ।

पंच सुगन्धिः—कपूर, कंकोल, लवंग, जातिफल, पूग ।

सर्वगन्ध—चतुर्जातक, कपूर, कंकोल, अगुरु, शिलारस, लवंग ।

सर्वौषधिगणः—कुष्ठ-मांसी-हरिद्रा-वचा-शैलेयं, चन्दन, मुरा, कर्चूर-मुस्तक ।

भैषज्य ग्रहण-संरक्षण विधि

ग्रहण—स्निग्ध, नर्म, काली, लाल या पीली मिट्टीवाली उत्तम भूमिमें उत्पन्न सम्पूर्ण रसवीर्ययुक्त तथा वर्षा, वात, अग्निताप और कीटाणु आदिसे

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

न खाई हुई और जिनमें रस, गन्ध, वर्ण, स्पर्श, प्रभाव पूर्णतया आगए हों, ऐसी वनस्पतियाँ ग्रहण करनी चाहिए।

ग्रहण काल :—चरकानुसार—१. मूल-ग्रीष्म शिशिर, २. त्वचा, कन्द, दूध शरद्, ३. सार काष्ठ हेमन्त, ४. शाखा, पत्र वर्षा वसन्त ५. पुष्प, फल-ऋतु अनुसार।

(२) **सुश्रुतानुसार**—सौम्यगुणयुक्त औषधियाँ सौम्यऋतुओंमें, आग्नेयगुण युक्त औषधियाँ, अग्नेय ऋतुओं में सौम्याग्नेयत्वाज्जगतः। उस ऋतुमें उस उस गुण की अधिकता होती है।

ग्रहणे विशेषता—घी मधु विडङ्ग पिप्पली गुड़ धान्य पुराण तथा अन्य सब नवीन (१ वर्षावधि नवीन, संवत्सरातीतपुराण) लेने चाहिए।

त्याज्य द्रव्य—व्याधित कृमिभक्षित अकालज पाकातीत अदेशज कर्कश जीर्ण हीनवीर्य द्रव्य त्याज्य हैं।

कालानुसार गुणहानि—संवत्सरातीतव नस्पति औषधि हीन गुण होती है, चूर्ण दो मासमें, घी तैल ४ मासमें गुटिका अवलेह एक वर्षोपरान्त हीनवीर्य हो जाते हैं; आसव रस तथा भस्में पुराण उत्तम होती है।

द्रव्यादिर्यविज्ञानीयोष्टम आदर्श

द्रव्य लक्षण—यत्राश्रिताः कर्मगुणाः कारणं समवायी यत्। जिसके आश्रयसे कर्म और गुण अपना कार्य करते हैं तथा जो कर्म गुण और द्रव्योंका समवायी (नित्य सम्बन्धी कारण) है वही द्रव्य है।

भेद—१ उत्पत्ति अनुसारः पार्थिव, आप्य, तैजस, वायवीय, तामस्।

२ प्रभाव भेदसेः—शमन कोपन स्वस्थहित। ३ चिकित्सानुसारः संशोधन (वामक, विरेचन) संशमन। ४. घटना एवं स्वरूपभेदेनः—

(क) चेतनं (सेन्द्रियं) जंगम (वहिश्चेतनम्), । स्थावर (अन्तः चेतनम्)।

(ख) अचेतनम् (निरिन्द्रिय) पार्थिवम्। ५. व्यवहार (प्रयोग) भेदेन—(क) औषध द्रव्यम्ः वीर्यप्रधानम्ः, मृदु मध्य तीक्ष्ण।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(ख) आहार द्रव्यम्: रसप्रधानम्।

रसभेदेन—षडधा षड्रसत्वात्। मधुर वर्ग अम्लवर्गादि।

कर्मभेदेन—बृहंण विरेचकाकिभेदेन बहुधा भिद्यते।

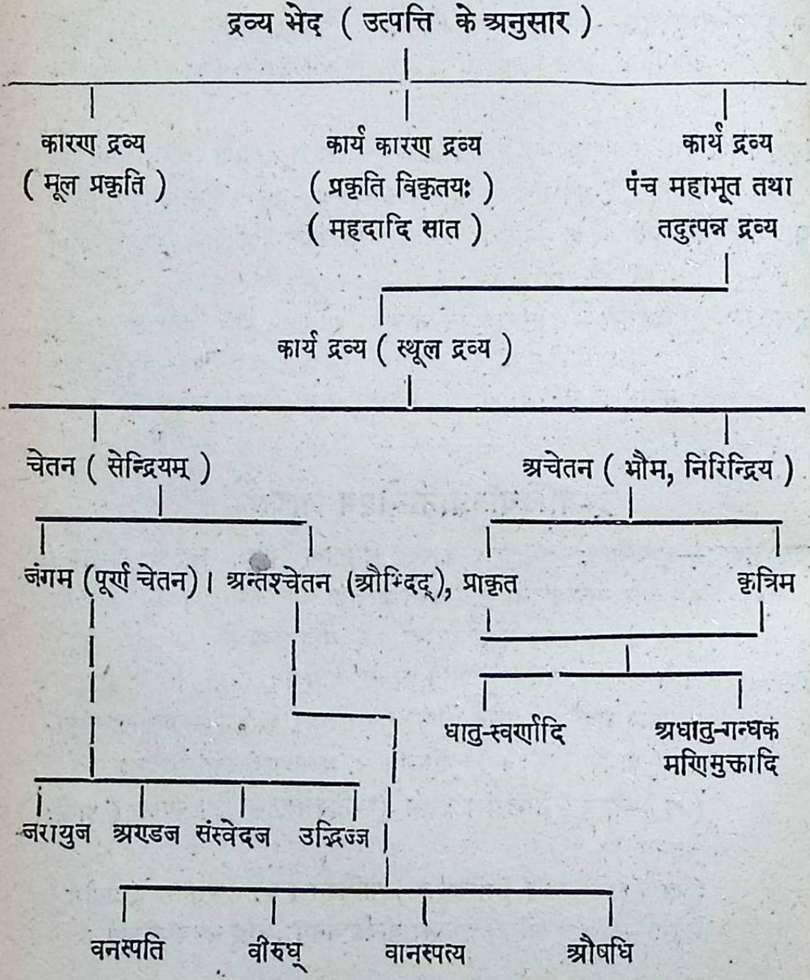

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रभाव तथा प्रयोग भेद से

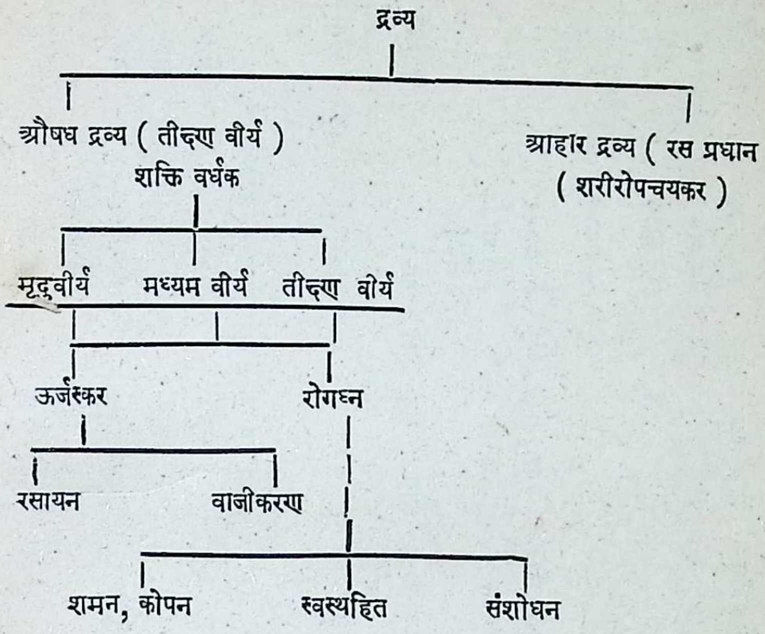

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्यों के गुण-कर्म-रस तथा दोषों के साथ सम्बन्ध

द्रव्य	गुण	कर्म	रस	दोष	प्रभावज कर्म
पार्थिवद्रव्य	स्थूलः, सारः, सान्द्र, मन्द, स्थिर, गुरु, कठिन गन्ध बहुलम्	स्थैर्य, बल, गौरव संघात-करम्	मधुर, ईषत् कषाय-रस	वातशामक कफवर्धक पित्तशामक	रेचक अधोगति स्वभाव तथा गुरु होने से बृहंण उपचयकारक होने से
आप्यद्रव्य	सान्द्र, मन्द, सर, गुरु, शीत, स्निग्ध, पिच्छिल, रस बहुल	स्नेहन, ल्हादन, क्लेदन, बन्धन विष्यन्दकर	प्रायशः मधुर ईषत् लवण कषायः	पित्तशायक वात शामक कफवर्धक	,, ,, ,,
तैजसद्रव्य	सूक्ष्म, तीक्ष्ण, लघु, उष्ण, रुक्ष, विशद, खर रुपबहुलम्	दहन, पचन, दारण, तपन, प्रकाशन, प्रभा, वर्ण कारक,	प्रायशः कटु ईषत् लवण अम्ल	वातकफ शामक पित्तवर्धक	दीपनः गुण साम्यता वामक, ऊर्ध्वगतित्वत् तथा लघुत्वात् लेखन
वायवीयद्रव्य	सूक्ष्म, लघु, शीत, रुक्ष, विशद, खर, स्पर्श बहुल	वैशद्य, लाघव, ग्लपन, विरुक्षण विचारणकरम्	प्रायशः कषाय ईषत् तिक्त	पित्तकफ नाशक वातकारक	,, सांग्राहिक, शोषक लेखन होनेसे
आकाशीयद्रव्य	सूक्ष्म, व्यवायी, विविक्त, मृदु, विशद, श्लक्ष्ण, अव्यक्तरस, शब्द बहुलम्	मार्दव, सौषिर्य लाघवकरम्	अव्यक्तरस	वातवर्धक कफशामक	संशमन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

गुणों के कार्य संगठनादि

सं०	गुण	पर्याय	भौ०स्वरूप	भौ० संगठन	दोष प्रभाव	मुख्य कर्म	अन्य कर्म	उदाहरण
१	गुरू	Heaviness	भारीपन	पृथ्वी + जल	कफकर-वातहर	बृंहण	गौरव, उपलेप, बल, तृप्ति, गुरूपाक	माष, मुशली
२	लघु	Lightness	हल्कापन	वायु + नभ + अग्नि	वातकर-कफघ्न	लंघन	उत्साह, स्फूर्ति, मलक्षय, अतृप्ति, दौर्बल्य, कृशता, व्रणरोपण, लघुपाक	मुद्ग, लाजा
३	शीत	Cold	ठंडक	जल	वातश्लेष्मकर पितघ्न	स्तम्भन	मूर्च्छा, तृषा, दाह, स्वेद-नाशन	चन्दन
४	उष्ण	Heat	गर्मी	अग्नि	वातश्लेष्महर पित्तकर	स्वेदन	मूर्च्छा, तृषा, दाह, स्वेद-नाशन, रसादि प्रवर्तक	चित्रक
५	स्निग्ध	Soothing	चिकनाहट	जल	वातहर, कफकर	क्लेदन	स्नेहमार्दवकर, बल्य, वृष्य, वाजीकर	घृत
६	रूक्ष	Dryness	रूखापन	पृथ्वी + वायु + अग्नि	वातकर, कफहर	शोषण	रौक्ष्य-काठिन्यकर, बलवर्ण-नाश, अवृष्य, स्तम्भन, खर	यव
७	मन्द	Dullness	सुस्ती	पृथ्वी + जल	कफकर, पित्तहर	शमन	यात्राकर, चिरकारी, शिथिल, अल्प कार्यकर	अमृता
८	तीक्ष्ण	Sharpness	तेजी	अग्नि	कफकर, पित्तकर	शोधन	दाहपाकस्रावकर, लेखन	जयपाल

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust
Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

९	स्थिर	Immobility	गतिहीनता	पृथ्वी	कफकर	धारण	स्तम्भन, चिरस्थायी	जातीफल
१०	सर	Mobility	गतिशीलता	जल	कफहर	प्रेरण	वात, मलप्रवर्त्तक	आरग्वध
११	मृदु	Softness	मुलायमियत	जल + आकाश	कफकर	श्लथन	दाह, पाक, स्रावनाशक	एरण्डतेल
१२	कठिन	Hardness	कड़ापन	पृथ्वी	वातकर	दृठीकरण	,,	प्रवाल
१३	विशद	Clarity	स्वच्छता	पृथ्वी, वायु, तेज + नभ	,,	क्षालन	क्लेदशोषण, व्रणरोपण	क्षार
१४	पिच्छिल	Slimness	लुआब	जल	कफकर	लेपन	जीवन, बल्य, सन्धान, तन्तुल, गुरूपाक	ईसबगोल
१५	श्लक्ष्ण	Smoothness	चिकनापन	अग्नि	पित्तकर	रोपण		दुग्धपाषाण
१६	खर	Rougnness	रूखापन	वायु	वातकर	लेखन		करञ्जफल
१७	सूक्ष्म	Minuteness	छोटापन	अग्नि + वायु + नभ	,,	विवरण		मद्य
१८	स्थूल	Bulkiness	मोटापन	पृथ्वी	कफकर	संवरण	स्थौल्यकर, स्रोतोरोधक, गुरूपाक	पिष्टक, दधि
१९	सान्द्र	Solidity	गाढ़ापन	,,	,,	प्रसादन	स्थौल्यकर	मलाई, मक्खन
२०	द्रव	Fludity	पतलापन	जल	,,	विलोडन	क्लेदकर, प्रसारी	जल, दुग्ध

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुणाः

लक्षण—समवायी तु निश्चेष्टः कारणं गुणः। द्रव्य में नित्य सम्बन्ध से रहने वाला, स्वयं निष्क्रिय किन्तु गुणों की उत्पत्ति तथा क्रिया में कारणभूत गुण कहाता है।

गुणों के भेद

(५)	(२०)	(६)	(१०)
सार्थाः	गुर्वादयो	बुद्धिः प्रयत्नान्ताः	परादयः।

गुणाः प्रोक्ताः (च० सू० १—) कुल ४१।

गुण-भेद

- आधिभौतिक
  - सामान्य गुण
    - चिकित्सोपयोगी
      - परादि (१० गुण) (व्यावहारिक गुण)
      - गुर्वादिगुण (२०) (शारीरिक वा कर्मण्य गुण)
  - विशिष्ट गुण (शब्द, स्पर्श, रुप रस गन्ध) (५) (ख वायु तेज जल भूमि महाभूतों के क्रमशः)
- आध्यात्मिक (इच्छा द्वेष प्रयत्नादि)

पर अपर — गुरु मन्द हिम स्निग्ध श्लक्ष्ण सान्द्र मृदु स्थिराः।
युक्ति संख्या — गुणाः ससूक्ष्म विशदाः विंशति सविपर्ययाः।
संयोग विभाग — गुरु लघु मृदु कठिन

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पृथक्त्व	परिणाम	मन्द	तीक्ष्ण	स्थिर	सूक्ष्म
संस्कार	अभ्यास	हिम	उष्ण	स्थूल	सूक्ष्म
		स्निग्ध	रुक्ष	विशद	पिच्छिल
		खर	श्लक्ष्ण	सान्द्र	द्रव

रसाः

परिभाषा—रसना ग्राह्य अर्थ रस है। जिह्वा द्वारा ज्ञात होने वाला।

उत्पत्ति—१ सामान्यः–द्रव्यमापः क्षितिस्तथा निवृत्तौ, विशेषे च प्रत्ययाः खादयस्त्रयः।

२ विशिष्टः क्ष्माम्भो,ऽग्निक्ष्मा, म्बुतेज, खवायु, अग्न्यनिल, गोऽनिलैः क्रमात् मधुरादि रसोद्भवः।

रस संख्या—स्वाद्वम्ललवण तिक्तोष्णकषायकाः।

रस तथा दोष—तत्राद्याः मारुतं घ्नन्ति त्रयस्तिक्तादयःकफम्।
कषाय तिक्त मधुराः पित्तमन्येतु कुर्वते।

दोष	शामक	प्रकोपक
वात	मधुराम्ल लवण,	कटु तिक्त कषाय
पित्त	मधुर तिक्त कषाय	कटुअम्ल लवण
कफ	कटु तिक्त कषाय	लवण अम्ल-लवण

रसों का वर्गीकरण—१ गुणानुसार—(अ) सौम्य, मधुर तिक्त कषाय-शीतवीर्य शामक, मूर्च्छाहर। (आग्नेय) कटु अम्ल लवण उष्णवीर्य, पित्तवर्धक मूर्च्छाकारक विदाही (आ) मधुर अम्ल लवण, स्निग्ध गुरु। कटुतिक्त कषाय, रुक्ष लघु।

कर्मानुसारः—अग्नि वायु प्रधान ऊर्ध्वगामी (वामक)। जल पृथिवी प्रधान अधोगामी (रेचक)।

रस उपलब्धिकाल—रसो निपाते द्रव्याणाम्। जिह्वा त्वचा श्लेष्मिक

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कला आदिके सम्पर्कमें आते ही रस अपना कार्य करने लगता है। यह प्रत्यक्ष ज्ञेय है। यही इसका उपलब्धिकाल है।

वीर्यम् लक्षण—वीर्यं तु येन क्रियते क्रिया। वीर्यम् तु वैद्यके ही रसविपाक प्रभावव्यतिरिक्ते प्रभूतकार्यकारिणी गुणे 'वीर्यम्' इति संज्ञा। द्रव्यकी वह विशेष शक्ति, जो रस विपाक तथा प्रभावसे पृथक् रह कर द्रव्यका प्रभाव शरीरपर कराती है उसे 'वीर्य' कहा जाता है।

वीर्यभेद—द्विविधः (१) (उष्ण शीत गुणोत्कर्षात्) शीतवीर्य—ह्लादनं जीवनं स्तम्भं प्रसादं रक्त पित्तयोः। (२) उष्णवीर्य—भ्रम तृड़ स्वेद दाहाशुपाकिता। शमंच वातकफयोः।

अष्ट विधः—(१) मृदु (२) गुरु (३) स्निग्ध (४) उष्ण (५) तीक्ष्ण (६) लघु (७) रुक्ष (८) शीत।

वीर्य उपलब्धिकाल—वीर्यं यावदधिवासात् निपाताच्चोपलभ्यते। यह प्रत्यक्ष तथा अनुमान ज्ञेय है। कर्मलक्षण वीर्य धातुओंके सम्पर्कमें आनेपर, और उनमें कुछ सयय तक अधिवास करने पर क्रिया शील होता है।

द्विविध वीर्योंके कर्म

	कर्म	अपवाद
उष्णवीर्य (कटु अम्ललवण)	भ्रम, तृषा-ग्लानि स्वेद, दाह-पाक वातकफ शमन पित्त वर्धक	आमलकं सैन्धवं नोष्णं पित्त शामक
शीतवीर्य (मधुर तिक्त कषाय)	आल्हादान, जीवन स्तम्भन रक्त प्रसादन पित्त शामक वातकफ वर्धक	बृहत्पंचमूल, आनूप माँस उष्ण, तिक्त अर्क गुडूची, अगुरु कषाय हरीतकी उष्ण

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

अष्टविधवीर्यों की क्रियादि प्रदर्शक सारणि

वीर्य—प्रधानभूत—रस		दोषसम्वन्ध	कर्म
शीत। पृथ्वी+जल।	मधुर तिक्त कषाय	पित्तशामक वातकफवर्धक	प्रल्हादन, विष्यन्दन, क्लेदन, जीवन, स्तम्भन, बल्य वृष्य गुरु प्रसादन स्थिरताकारक
उष्ण—अग्नि	अम्ल, लवण कटु	कफवातशामक। पित्तकारक।	दहन, पचन, मूर्च्छन, स्वेदन, वामक, विरेचक, भ्रमतृष्णा, ग्लानि, लघु, अवृष्य
स्निग्ध—जल+भू	मधुराम्ल लवण	वातहर कफकर	स्नेहन, बृंहण, संतर्पण, वाजीकरण, वयः स्थापन
रुक्ष—वायु	अम्ल, तिक्त कषाय	कफहर वातकर	संग्रहण, विरुक्षण, पीडन, शोषण रोपण
गुरु—पृथ्वी+जल	मधुर, अम्ल लवण	वातहर, कफकर	उपलेपन, बृंहण, संश्लेषण, वाजीकरण
लघु—अग्नि+आकाश+वायु	कटु, तिक्त कषाय	कफहर वातकारक	विरुक्षणादि लेखन क्लेदन, शोषण,
मृदु—जल+ख	मधुर-अम्ल लवण	पित्तहर कफकारक	रक्तमांसप्रसादन, सुस्पर्शन, मार्दवताकर
तीक्ष्ण—अग्नि	कटु-अम्ल लवण	वातकफहर	संग्रहण, आचूषण, अवदारण, स्रावण

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विपाक लक्षण—जाठरेणाग्निनायोगाद् यदुदेतिरसान्तरम् ।
रसानां परिणामान्ते स 'विपाक' इति स्मृतः ।

आहारौषध द्रव्योंके पाचकाग्नि द्वारा पाकसे उत्पन्न रसका पुनःधात्वग्निसे (Chemical interaction between drugs and cells) परिपाक होना 'विपाक' कहाता है ।

भेदः—१ अवस्था पाकः औदर्याग्नि द्वारा २ निष्ठापाकः-धात्वग्नि द्वारा द्रव्यगुण शास्त्रे तु निष्ठापाक एव प्रधान :—१ सुश्रुतानुसारः द्विविधः—

१ मधुर विपाक (गुरु) पृथिवी जलाधिक्य ।

२ कटु विपाक (लघु) खवायुतेजाधिक्त ।

चरकानुसारः त्रिविध :—१. मधुरः मधुरस का

२. अम्लः अम्लका ३. कटु : कटुतिक्त कषाय का ।

कर्म—१ मधुर—वात पित्त नाशक कफवर्धक वात मूत्र मल निष्कासक ।

२ अम्ल—शुक्रनाशक पित्तल, सृष्टविण्मूत्रः

३ कटु—कफघ्न, वातल मलमूत्र संग्राहक ।

उपलब्धि काल—विपाकः कर्म निष्ठया । परिणाम लक्षणोविपाकः द्रव्यों द्वारा शरीरमें होने वाला प्रभाव विपाक कहाता है । यथा दुग्ध मधुर विपाकी है; क्योंकि यह पोषक है । पोषकत्व गुणके कारण दूधको मधुर विपाकी कहा जाता है । यह अनुमान ज्ञेय है ।

———

विपाकभेद

निष्ठापाक	अवस्थापाक
(विशिष्टता)	(विशिष्टता)
(१) चरम परिणाम	(१) आवस्थिक परिणाम

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(२) धातुरुप दोषों की, धातुओंकी उत्पत्ति	(२) दोषों तथा मलों की उत्पत्ति
(३) अनुमानगम्य	(३) कुछ अंशो में प्रत्यक्षगम्य
(४) धात्वग्नि तथा महाभूताग्नियों द्वारा निष्पन्न	(४) औदर्याग्नि द्वारा सम्पन्न

निष्ठापाक के भेद तथा कार्य

विपाक नाम	भूतोत्कर्ष	रस	गुण	कार्य दोष	धातु	मल
मधुर (गुरु)	पृथिवीजल	मधुर-लवण अम्ल, चरकेतु मधुर लवण	स्निग्ध। गुरु शीत। पिच्छिल।	कफ वर्धक, वातपित्त हर	शुक्रल, धातुपो षक	मल मूत्र प्रवर्त्तक
कटु (लघु)	तेज+वायु+ आकाश	कटु-तिक्त कषाय	लघुरुक्ष रुक्ष तीक्ष्ण। विशद	कफहर। वातकर	शुक्रनाश कृशताकर	मलमूत्र प्रवर्तक
अम्ल	अग्नि+जल	अम्लरस	स्निग्ध लघु	वातहर पित्तकर	,,	सृष्ठ विण मूत्र मल

प्रभाव लक्षणः—रसवीर्य विपाकानां सामान्यं यत्र लक्ष्यते।
विशेषः कर्मणांचैव प्रभावस्तस्य स स्मृतः।

एतत्तु—प्रकृति समसमवायत्वात् (समान प्रत्ययारब्ध) विकृति विषम समवायत्वात् (विचित्र प्रत्ययारब्ध) द्रव्याणाम्।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसों की उत्पत्ति, दोषसम्बन्ध गुण कर्मादि प्रदर्शक चार्ट ।

रस तथा उनका स्वालक्षण्य	उत्पादक महाभूत	उत्पादक ऋतु	दोषसम्बन्ध	अपवाद	गुण	कर्म	अतिसेवन के दोष
१. मधुर (मुखालप, पिपीलिका आदि प्रिय)	पृथिवी + जल	हेमन्त	वात पित्तशामक कफकारक	मधु, मिश्री, जांगलमांस पुराणशाली, यव, गोधूम कफकारक नहीं	स्निग्ध, शीत गुरु	बृंहण, जीवन आयुष्य, बल्य, सृष्टविण्मूत्र मारुत	स्थौल्य, अरुचि, कास श्वास-गलगण्ड, गण्डमाला, श्लीपद, प्रमेह, कृमि आदि कफज रोग
२. अम्ल (दन्तहर्षकारक-मुखशोधक)	पृथ्वी+अग्नि (जल+अग्नि सुश्रुत)	वर्षा	वात शामक कफ पित्त कारक	दाडिम तथा आमलकी पित्तकारक नहीं	स्निग्ध, गुरु, उष्ण, रुक्ष	रोचन, दीपन, पाचन, अनुलोमन, अवृष्य सृष्टवृण्मूत्रमारुत	रक्तविकार, दाहपाक, शोथ, कण्डु, पाण्डु, दृष्टिगान्ध्य, भ्रम, रक्तपित्तादि
३. लवण (मुख-कण्ठ कपोल दाहक, क्लेदक)	जल+अग्नि (च०) पृथ्विी+अग्नि (सु०)	शरद्	,,	सैन्धव शीतल नेत्र्य	,,	क्लेदन, दीपन, पाचन छेदन, भेदन, शुक्रघ्न सृष्टविण्मूत्र मारुत	क्लैव्य, शीघ्रजरा, रक्तपित्त, अम्लपित्त, वीसर्प, वातरक्त विचर्चिकादि
४. कटु (रसना उद्वेजक विदाहतोद कारक	वायु + अग्नि	वर्षा	कफहर, वातपित्त कारक	वातवर्धक और शुक्रनाशक होते हुये शुण्डी, रसोन तथा पिप्पली अपवाद हैं	मुखशोधक, दीपन, पाचन, ग्राही, लेखन कृमिघ्न	रुक्ष, उष्ण, लघु बद्ध विण्मूत्रमारुत	मूर्च्छा, भ्रम-दाह-दौर्बल्य, तृष्णा, कृशता, कम्पग्लानि आदि पैत्तिक रोग
५. तिक्त स्वयं अप्रिय, मुख वैशद्य, कण्ठ शोधक	वायु+आकाश	शिशिर	कफ पित्तशामक वातकर	वेत्राग्र, गुडूची एवं पटोल वातशामक हैं।	रुक्ष, शीत, लघु, विशद	दीपन-पाचन रोचन, कृमि, ज्वर विषनाशक बद्धविण्मूत्रमारुत	धातुशोष, दौर्बल्य, भ्रम, मुखशोष, वात व्याधियाँ
६. कषाय (मुखवैशद्य, तथा जड़ता कारक)	वायु + पृथ्वी	वसन्त	,,	शीत, स्तम्भन होते हुए भी पथ्य हरीतकी अनुलोमन है	रुक्ष, शीत लघु, रेचक विशद, विष्टम्भि	स्तम्भन, शोषण, रोपण सन्धानीय अवृष्य बद्धविण्मूत्र मारुतः	मुखशोष, हृच्छूल, आध्मान, विबन्ध, मलों की अप्रवृत्ति, वातरोग

रस और अनुरसः—

तत्र व्यक्तो रसः। अव्यक्तोऽनुरसः किञ्चिदन्ते व्यक्तोऽपि चेष्यते। (अ० हृ० सू०)

तुलनाः—

रस—व्यक्त, शुष्कावस्था में स्थायी, आदि में उपलब्ध अनुरस—अव्यक्त वा ईषद् व्यक्त, शुष्कावस्था में अस्थायी अन्त में उपलब्ध ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

औद्भिद्-प्राणिज द्रव्यविज्ञानीयो नवम आदर्शः

सूचना—इस प्रकरण में कर्मानुसार (Accordiug to physiological actions द्रव्यों के वर्ग बनाकर उनके गुणकर्म का वर्णन किया है। यथा दन्त्य, स्वर्य, दीपन, पाचनादि। इससे जहाँ छात्रों को द्रव्यों के गुण स्मरण में सुविधा होगी वहाँ चिकित्सकों को समानगुण द्रव्यों के चयन में भी सुविधा रहेगी। वर्णन क्रम निम्न प्रकार है। (१) महास्रोतस् प्रभावक। (२) यकृत् प्रभावक। (३) रसवह संस्थान प्रभावक। (शोथगण्डमाला शामक) (४) हृदय तथा रक्त धातु प्रभावक, (५) मूत्र संस्थान प्रभावक। (६) श्वास संस्थान प्रभावक, (७) प्रजनन संस्थान प्रभावक। (८) वातनाड़ी संस्थान प्रभावक। (९) ज्ञानेन्द्रिय प्रभावक, (१०) त्वचा प्रभावक (११) सर्व देह प्रभावक—(ताप, दाह, शीत प्रशमन, धातु वर्धक, बल्य, रसायन)।

महास्रोतस् प्रभावक

(Affecting Alimentary Canal)

दन्त्य—(दन्त शोधक, दन्त, दन्त वेष्ट दार्ढ्य कारक)।

इरिमेद Acacia Modesta, Wall

नाम—इरिमेद अरिमेद विट्खदिर (हि) फुलाही दुर्गन्ध खैर (म०गु०) गन्धीला खैर, हरमो वावल, व्य० अङ्ग त्वक; प्रभा० अव०—मुख श्लेष्मकला **रसादि**—कषाय कटु उष्णवीर्य कटुविपाकी, दोष-श्लेष्म शामक, गुण-दन्त्य तीक्ष्ण, रुक्ष, ग्राही, कफहर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोग—मुखशोथ, दन्तरोग, दन्तवेष्टरक्तस्राव, रक्तातिसार, उदरकृमि त्वचारोग नाशक

तेजोवती–तुम्बुरु Zanathoxylum Alatum, Roxb.

नाम—तुम्बुरु वनजः सौरभः–हि० तेजबल नैपालीधनिया (गु० म०) चिरफल तुम्बुरु, **व्य० अंग**—बीज, त्वक; **प्रभा० अव०** दन्तौष्ठमुख, **रसदोष**—कटुतिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफघ्न पित्तल, **गुण**—तीक्ष्ण रुक्ष रुचिकर विदाही दीपन उत्तेजक, **रोग**—मुख, दन्त, दन्तवेष्ट गलरोग शिरोगुरुता शामक है उदरशूलादि शामक। बीज अनेक दन्तमन्जनोंमें प्रयुक्त होते हैं।

बकुलम् Mimusops Elengi, Linn

नाम. सं०—मधुगन्ध, चिरपुष्प हि० मौलसिरी, गु० बोलसरी म० बकुल **व्य० अ०**—पंचागं, **प्र० अ०** दन्त अन्त्र, **दोष**—कफपित्तहर, **रसादि**—कटुकषाय, अनुष्ण, कटु विपाकी। **गुणः**—दन्त्य, ग्राही; संकोचक, स्तम्भन **रोगः**—दन्तरोग, दन्तवेष्टशैथिल्य, रक्त श्वेतप्रदररक्तार्श अतिसारादिहर। **योग**—बकुलाद्यं तैलम्।

मुखशोधन

(दुर्गन्धिहर)

ताम्बूलम् Piper Betel, Linn

नाम—ताम्बूल, नागवल्ली हि० पान, गु० नागवेल, म० नागवेल, **व्य० अंग**—पत्र; **प्रभा० अव०** लालाग्रन्थि, प्रजननांग, कण्ठ, **रसादि**—तिक्तकटु कषाय उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफहर पित्तल, **गुण**—रुचिकारक विषद सर पाचन उत्तेजक दीपन, **रोग**—मुखदुर्गन्धि अरुचि श्रमनाशक कास शोथ तथा पीनस शीघ्र शुक्र क्षरणकर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पूग (Arecha Catechu, Linn)

नाम—पूग, क्रमुकं, गुवाक (हि०) सुपारी, (गु) सोपारी, (म) पोफल वृक्ष, सुपारी (फल) व्य० अंग –फल; प्रभा० अ० महास्रोतस् (श्लैष्मिक कला स्रावहर) ।

रसदोष—कषायरस मधुरानुरस शीतवीर्य कटुविपाकी पित्तश्लेष्महर, स्वेदनानन्तर त्रिदोष शामक ।

गुण रोग—स्राव शोषक, संग्राही गुरु, रुक्ष, प्रमेह, श्वेतप्रदर, अतीसार लालास्राव नाशक तथा पौष्टिक, वीर्य वर्धक मुख कण्ठरोग, रक्तपित्त शामक ।

योग—सुपारीपाक, (पूग खण्ड) रक्तपित्त प्रदरादौ ।

महाभरी वचा (Alpinia Galanga Swatz)

नाम—सुगन्धा उग्रगन्धा महाभरी, वचा मलयवचा हि–बड़ा कुलिञ्जन, म०, कोष्ठ कुलिञ्जन गु०, कुलिञ्जन व्य० अङ्ग—मूल; प्रभा० अव० स्वर, मुख, **रसदोष**—कटुतिक्त रस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफघ्न, पित्तल । **गुण**—स्वर्य सर रुचिकर दीपन स्वरभेद कण्ठशोथ प्रतिश्याय कफकासशामक, मुख कण्ठ शोथघ्न लालास्रावक अनुलोमन ।

मरिचम् (Plper Nigrum, Linn)

नाम—मरिचं वेल्लजं उषणम् । हि—काली मिर्चा, गोलमिर्च, गु० कालीमरीं, म०, मिरी । व्य० अंग—फल, प्रभा० अव० महास्रोतस् । **रसदोष**—कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी; आर्द्रः मधुरविपाकी नातिउष्ण । वातकफघ्न पित्तल **गुण**—दीपन तीक्ष्ण स्वर्य अग्निमान्द्य कृमिहर स्वेदल, उत्तेजक अनुलोमक । स्रोतशोधक । **रोगः**—प्रतिश्याय, स्वरभेद, कास शामक कफस्रावक, आर्त्तवजनक ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोचक

ये जिह्वा को प्रभावित कर अधिक लालास्राव कराते हैं। जिससे भोजनमें रुचि होती है। तथा तृप्ति (भोजन की अनिच्छा) नष्ट होती है। दीपन, पाचन भी यह कार्य करते हैं।

अम्लिका (Tamarindins-Indica, Linn)

नाम—(स) चिञ्चा, तिन्तडीक (हि) इमली, (गु) आमली, (म) चिंच, व्य० अ-पंचागक्षार। प्र० अ० अन्त्र, आमाशय, दोष-त्रिदोषहर (अपक्व फल पित्तल) रसादि-मधुर अम्लरस, उष्णवीर्य मधुर विपाकी, अपक्व फल अम्ल, कटुविपाकी, कफरक्त दूषक, गुण-हृद्य, रोचक, दीपन पाचन, सर, क्षार मूत्रल अनुलोमन, बीजः—शुक्रल, ग्राही, विवन्ध अरुचि वमन प्रमेह मूत्रकृच्छ्रहर।

करमर्दक (Carica-Carandas Linn)

नाम—(सं०, कृष्णफल, क्षीरफेना, हि० करौंदा, करौंदी, गु०, करमदां, करमदी व्य० अं—फल-मूलत्वक। प्र० अ० आमाशयान्त्र, दोष—अपक्व फलः—वातशामक, पित्तकफकर, पक्व, त्रिदोषहर, मूलत्वक्-वातकफहर रसादि—अपक्व अम्ल, उष्ण, कटुविपाकी, पक्व—मधुराम्ल, शीतवीर्य मधुराविपाकी। गुण-रोगः-रोचक, दीपन सर, अपक्व-ग्राही, रक्तपित्तकर वमन-अतिसार विबन्धाध्मानहरम्।

चांगेरी Oxalis Corniculata, Linn

नाम—चांगेरी, क्षुद्राम्लिका, चतुःपत्री, दन्तशठा हि—खट्टी तिपतिया म०, आमरुल गु०, खट्टी लुणी, अमलरुसक, अंबुटी।

व्य० अंग—पंचाग; प्रमा० अव०—पाचन संस्थान, रसदोषादि—अम्ल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कषायरस उष्णवीर्य कटुविपाकी यकृदुत्तेजक पित्त रेचक, रोग—गुदभ्रंश अतिसार संग्रहणी अर्शनाशक, पित्त रक्त प्रकोपक है। चुक्रा के गुण भी यही हैं।

श्वेत चित्रक PLUMBAGO ROSEA, LINN

नाम—चित्रक व्याल ऊषण अग्निनामा। सर्वभाषा-चित्रक, चीता। व्य० अंग—मूल मूलत्वक्, प्रभा० अव० पाचन संस्थान, रसादि—कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर पित्तल। गुण—उष्ण रुक्ष अग्निदीपक ग्राही लघुः रुचिकर; तीक्ष्ण; तृप्तिघ्न, **रोग**—अर्श संग्रहणी शोथ आमातिसार अग्निमान्द्य यकृत्प्लीहा वृद्धिहर है। **योग**—चित्रकादि चूर्ण ६ मा० से १ तो०

जम्बीर CITRUS LIMONUM, LINN

नाम—जम्बीर दन्तशठ हि० जम्बीरीनींबु, गु०, दोडिंगा, गोदडिया लींबु म०, इडलिम्बु। व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० मुख आमाशय। **रसादि**—अम्लरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वात कफहर दीपन वृष्य अचक्षुष्य सर विबन्ध कफोत्क्लेशक, वमन आमदोष तथा अजीर्ण नाशक है।

निम्बु जातीय सभीअम्ल फलों के गुण इसी के समान है।

नाम—मधुकुक्कुटिका (मधुर) निम्बुकम् हि० मिठा नींवु गु० मीठा लींबू म० साकर लींबु। व्य० अंग—फल; प्रभा० अव० सर्व देह वृक्क। **रसादि**—मधुररस शीतवीर्य मधुर विपाकी श्लेष्मल वातपित्तहर स्निग्ध रक्तप्रसादन गुरु शीतल मूत्रल मुखशोधक तृष्णा ताप दाह शामक मूत्रकृच्छ्रहर है।

सूचनाः—निम्बु जातीय सभी द्रव्यों तथा अम्लवेतस् के यही गुण धर्म जानें।

दाड़िमः PUNICA GRANATUM, LINN

नाम-दाड़िमः लोहितपुष्पकः शुकवल्लभ, रक्तबीजः, हि०,अनार, गु०,दाड़म म० डालिम्ब, **भेद**—मधुर, मधुराम्ल और अम्ल तीन प्रकार। व्य० अंग—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फल, फलत्वक्; प्रभा० अव० पाचनसंस्थान । रसदोषादि—१, मधुरः मधुररस शीतवीर्य, मधुरविपाकी त्रिदोषहर २. अम्लः अम्लरस उष्णवीर्य कटुविपाकी पित्तवातवर्धक आमवात और कफहर है। ३ मधुराम्ल वातहर पित्तकफावरोधी। सबमें प्रायः कषाय अनुरस होता है। गुण-रस—संग्राही, रुचिकर, पाचक, अतिसार, तृष्णा, दाह ज्वरनाशक, मुखशोषहर, हृद्य, रक्तास्थापन, फलत्वचाः उदरकृमिनाशक, ग्राही, रक्तातीसारहर, पुष्पस्वरसः नासारक्तस्रावरोधक ।

योग—दाडिमाष्टकमोदकः, पाचन दीपन रुचिकर ।

परुषकम् Grewia Asiatica, Linn

नाम—परुषकं मृदुफलं, अल्पास्थिः । सर्वभाषा—फालसा, फालसां

व्य० अंग—त्वक् फल तथा स्वरस; प्रभा० अव० जिह्वा यकृत् ।

रस दोष—त्वक् आमफल : अम्लरस उष्णवीर्य, कटुविपाकी पित्तलम् । पक्व फल : मधुराम्लरस शीतवीर्य मधुरविपाकी पित्तहर । अवस्थानुसार त्रिदोषहहरम् । गुणरोग—पक्व : बृंहण शीतल, दाहशामक रोचक सर पित्तरोग कामला रक्तपित्त, ज्वर में वमन दाह तृष्णा शामक है। परुषक पानक या शार्कर बनाकर प्रयोग करे ।

वृक्षाम्ल Garcinia indica, Chies.

नाम—सं०, रक्तपूरक। हि० कोकम। म०, गु०, कोकम। गु०, आमसोल । व्य० अं० फल –मूल, तैल, प्र०, अ०, पाचनसंस्थान ।

दोष—अपक्वफल-वातहर, पित्तवर्धक, पक्व, वातपीत्तहर, रसादि अपक्व–अम्लरस, उष्णवीर्य, पक्व मधुराम्ल, शीतवीर्य, कटुविपाकी । गुण—अग्निदीपन, पाचन, रोचक, रुक्ष, ग्राही यकृत् उत्तेजक । तैल रक्तस्तम्भन, शीत, रक्तपित्त तथा विपादिका शमन है । रोग—अर्श, अतिसार संग्रहणी, प्रवाहिका, कृमिहर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अग्निदीपन

(तिक्त वर्ग)

अतिविषा Aconitum Hytrophyllum, Wall

नाम—अतिविषा, घुणवल्लभा भंगुरा। म०, अतिविष। ब०, अताईच हि०, अतीस। गु०, अतिविख नी कलीं। व्य० अंग—कन्द; प्र० अव०, पाचक संस्थान। **रसादि**—तिक्त उष्णवीर्य कटुविपाकी। **दोष**—त्रिदोषहर विशेषता कफ पित्त शामक।

गुण—दीपन तापहर ग्राही आमपाचन **रोग**—ज्वर, वमन अतिसार, कासनाशक विषमज्वर उदरकृमिहर। (वच्चों के कास, ज्वर श्वास अतिसार में)

योग—बालचातुर्भद्रावलेह; मात्रा ४ रत्ती **सूचना**—प्रतिविषा के भी यही गुण हैं विशेषतः शोथशामक। **नाम**—हि० म० गु०, वखमा, वख्मो, ACONITUM-PALMATUM.

ईश्वरी ARISTOLOCHIA INDICA, Linn

नाम सं०—अर्कमूला नाकुली। हिं०, सापसन, ईसरमूल, गु० सापसन नोलबेल, म० सापसन्द। व्य० अं० पंचाग, मूल। प्र० अ० आमाशयान्त्र-गर्भाशय। **दोष**—कफपित्तहर। **रसादि**—कटुतिक्तकषाय, उष्णवीर्थ कटुविपाकी। **गुण**—दीपन कृमिघ्न, स्वेदल, वातल शोथ विषहर गर्भाशय उत्तेजक। **रोग**—विषम ज्वर, कष्टार्तव, प्रसूतिका ज्वर उदरकृमिहर।

कपोतपदी Jatropha Calumba, Miers

नामः--हिं० कलम्बा, म० कलमकाचरी, गु० कलम्बो, व्य० अ० मूल (५-१५ रत्ती) प्र० अ० यकृत्-आमाशय, दोष—कफपित्तहर, रसादि, तिक्त उष्ण, कटुविपाकी, **गुणः**—दीपन, पित्तसारक, ज्वरघ्न, रक्तशोधक। **रोगः**—अग्निमान्द्य, रोगोत्तर दौर्बल्य, आध्मान, यकृत् शोथ, पाण्डु, कामला, ग्रहणी हर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सुगन्धित तथा अग्निदीपन, पाचन कटुवर्ग

ये वातानुलोमक भी होते हैं।

एला ELETTARIA CARDAMOMUM, MATON

नाम—(१) त्रुटि सूक्ष्मला, द्राविड़ी, (२) स्थूला, बहुला त्रिपुटा। हि०, छोटी इलायची, गु०, एलची कागदी, म०, वेलदोड़ा। व्य० अंग—बीज; प्रभा० अ०, फुफ्फुस वृक्क। रसादि—त्रुटि—मधुर कटुरस शीतवीर्य कटुविपाकी। स्थूला—कटुतिक्त रस उष्णवीर्य। दोष—त्रुटि (छोटी) त्रिदोषहर बड़ी एला वातकफ शामक पित्तवर्धक। गुण—दीपन, पाचन,, मूत्रल, रुचिकर कफ निष्कासक अनुलोमक छर्दि निग्रहण। रोग—वमन, कास, श्वास, मूत्रकृच्छ्र वस्ति तथा मुखरोग आध्मान हर हृद्दौर्बल्यहर।

चव्य PIPER CHABA, HUNTER

नान—चव्य चविका ऊषण हि०, चवा म०, गु०, चवक। व्य० अंग—मूल वा काण्ड; प्रभा० अव०—पाचन संस्थान। रसादि—कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य—कटु-विपाकी। दोष—कफ शामक किंचित् वातपित्त प्रकोपक (आर्द्र-पित्तशामक)। गुण—लघु रुचिकर दीपनपाचन कफच्छेदन अनुलोमन। रोग—उदरशूल, अजीर्ण कफज कास अर्श नाशक गुल्म, यकृत्प्लीहा वृद्धि हर उदरशूल नाशक।

रक्त चित्रक (Plumbago-zeylanica, Linn)

नाम—(सं०) अग्नि, तीक्ष्ण, (हि०) चीता, (गु) चित्रो, (म०) चित्रक (भेद) श्वेत, नील, रक्त कृष्ण ये चार भेद हैं। व्य० अं—मूल, त्वक्। प्र० अ०` अन्त्र आमाशय। दोष—वातकफहर, रसादि—कटु उष्णवीर्य कटुविपाकी, गुण—दीपन, अनुलोमन, तीक्ष्ण लेखन शोथहर गर्भाशय शोधक रोग—अग्निमान्द्य, ग्रहणी, अर्श प्रतिश्याय, पीनस, कष्टार्त्तव मकल्लशूलहर। योग—चित्रकादि गुटिका, चित्रकहरीतकी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जीरकम् Carum Balbocostium, Koch.

नाम—जीरक त्रितय (१) अजाजी शुक्लजीरक, (२) कृष्णजीरः सुगन्धिः (३) कालाजाजी; उपकुंचिका, बृहज्जीरकम् , हिं०, काला जीरा, गु०, शाहजीरु म०, शहाजीरे । व्य०, अंग—बीज, प्र० अव० पाचकसंस्थान, गर्भाशय। रसादि–कटुरस उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफ नाशक पित्तल । गुण—दीपन, लघु, संग्राही, रुक्ष, गर्भाशयशोधक, रोचन, शोथहर लेखन, रोग—अजीर्ण, अग्निमान्द्य, वमन, उदराध्मान, गुल्म अतिसार नाशक उदरकृमि प्रसूति विकार हर । योग–जीरकाद्यरिष्ट ।

तक्र

नाम–हिं०, छाछ, गु०म०, ताक । प्र० अ०–पाचन संस्थान । दोष–त्रिदोष हर । रसादि–मधुराम्ल कषाय, उष्णवीर्य कटुविपाकी । गुण—लघु, रुक्ष, हृद्य, दीपन, मूत्रल, स्रोतशोधक, उदरकृमिहर, अवृष्य । रोग–शोथ, अतिसार, संग्रहणी, अर्श पाण्डु विषम ज्वरादिहर । योग–तक्रारिष्ट ।

तमालपत्रम् Cinnamomum Tamala, Frnees.

नाम–तमालपत्र तामसं रोमशं, हि०, तेजपत्र, म०, गु०, तमालपत्र । व्य० अंग–पत्र; प्र० अव०, पाचन संस्थान । रसादि–कटुमधुरस, उष्णवीर्य मधुर विपाकी वातकफहर पित्तल । गुण–उष्ण तीक्ष्ण दीपन वातानुलोमन । रोग–वातकफके रोग, अर्श अरुचि पीनस अग्निमान्द्य ।

पिप्पली Piper Longum, Linn.

नाम–पिप्पली, कणा, मागधी, हि०, पीपली, गु०,लीडीपीपर, म०,पिपली । व्य० अंग–फल; प्र० अव०–पाचक संस्थान । रसदोष—कटुरसः अनुष्ण मधुरविपाकी, वातश्लेष्म शामक; आर्द्र पिप्पलीः-कफकारक और पित्तशामक; शुष्कः-वातकफहर ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण रोग—लेखन दीपन पाचन, उदररोग, जीर्णज्वर, अग्निमान्द्य, मेद कास अरुचि प्रवाहिका वातकफ नाशक वृष्य-स्वर्य है। योग—१ सितोपलादिचूर्णः कासे, २ गुड़पिप्पलीः जीर्णज्वरे ।

पिप्पली मूल

नाम–कणामूल, ग्रन्थिक, ऊषणम्। व्य० अंग—मूल; प्र०अव०–महास्रोतस्। **रसदोषः**—कटुरस उष्णवीर्य, कटुविपाकी वातकफघ्न पित्तला, **गुण रोग**—दीपन, पाचन अनुलोमन, मेदःहर, भेदन, उदररोग आध्मान शूल प्लीहावृद्धि, गुल्म-आम दोष नाशक ।

गजपिप्पली

नाम—गजपिप्पली वशिरः कोलवल्ली। व्य० अंग—फल, प्र० अव०–आमाशयान्त्र। **रसादि**—मधुर कटु तिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी वातकफहर। **गुण**—दीपन, पाचन, अनुमोलन, रुक्ष, मलशोषक। **रोग**—अतिसार प्रवाहिका कण्ठरोग कफजकास श्वास, अग्निमान्द्य नाशक ।

राजिका BRASSICA. JUNCEA, H.G. & T.

नाम—गु०, हि०, राई, म०, मोहरी। व्य० अंग—बीज। प्र० अ०—आमाशय, त्वचा, रसवह संस्थान। दोष—वातकफशमन, पित्तल।

रसादि—कटु उष्णवीर्य, कटु विपाकी। **गुण**—अग्निदीपन, तीक्ष्ण, रोचक, स्वेदल, वामक व्रणशोथ पाचक, शोथहर रजः स्रावक। **रोग**—अग्निमान्द्य, उदरकृमि, विष, उदरशूल, वातवेदनाएं, श्वसनकादिकी शोथ शामक तथा अवृष्य, रक्त और पित्तदूषक, विदाही।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सर्षप BRASSICA. ALBA, Linn

सूचना--हिं०, सरसों, गु०, सरसव, म०, शिरसीं, के गुण भी राजिका के समान हैं। किन्तु उसकी अपेक्षा यह कमतीक्ष्ण और अधिक वर्ण्य, त्वच्य है। अनुलोमन दीपन।

यवानी Carum Capticum, B. & E.

नाम—यवानी अजगन्धा दीप्यका; अजमोदा खराश्वा, हिं०, अजवायन, गु०, अजमो, म०, ओवा। व्य० अंग–फल बीज; प्र० अव०, महास्रोतस्। **रसदोष**–कटुतिक्तरस उष्णवीर्य कटुविपाकी वातकफहर पित्तलम्। **गुण-रोग**—पाचन रुचिकर तीक्ष्ण विदाही उत्तेजक-अवृष्य उदरशूल अजीर्ण आनाह गुल्म उदरकृमि प्लीहावृद्धिहर।

अजमोद—हिं०, अजमोद, गु०, वोड़ी अजमो, म०, अजमोदा-रानधणें, विशेषकर वमन, छर्दि, हिक्का और अस्थिशूलहर है शेष गुण यही हैं।

त्वक् Cinnamomum Zeylanicum, Breyn.

नाम–त्वक्, दारुसिता, गुड़त्वक्, चोचं, वरांगम्, हिं०, दालचीनी, गु०, म०, तज। व्य० अंग--त्वचा, तैल। प्र० अव०, अन्त्र, आमाशय। **रसदोष**—तिक्त मधुर कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर पित्तल। **गुण-रोग**—संग्राही, वातानुलोमक, दीपन, तीक्ष्ण, कृमिघ्न, वमन, अग्निमान्द्य, आध्मान, आक्षेप, उत्क्लेश, मूत्रकृच्छ्र नाशक; आमवात, पीनसहर; तैल:- उपर्युक्त गुणवाला, रजःस्रावी और दन्तशूल शामक।

धान्यकम् Corriandrum Sativum, Linn.

नाम—धान्यकं, कुस्तुम्बुरु; वितुन्नकम्, हिं०, धनिया, गु०, धणा, म०, धणे। व्य० अंग—फल; प्र० अव०, पाचन संस्थान। **रसदोष**—कटुमधुर तिक्तकषायरस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी त्रिदोषापहः। **गुण**—दीपन पाचन मूत्रल

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संग्राही, (आर्द्र:-विशेषतः शीतल, पित्तशामक, शुष्कः-उष्ण) अवृष्य। रोग—ज्वर में दाह, तृष्णा, आमदोषपाचनार्थ, वमन, अतिसार आमाजीर्ण नाशक।

पाचक वर्ग

एरण्डकर्कटी Carica Papaya, Linn.

नाम—हिं०, पपीता, एरन्ड-खबूंजा। गु०, पपई, म०, पपाया। व्य० अं०—दुग्ध (१-२ तो०) फल, बीज (४-५ रत्ती), पत्र। प्र०अ०—आमशय, यकृत, हृदय। दोष—पक्वफल-त्रिदोषशामक, अपक्व-पित्तकफवर्धक। गुण—मूत्रल, हृद्य, अनुलोमन, पाचक, ग्राही, कृमिघ्न। रोग—हृदयनिर्बलता, अजीर्ण, अग्निमान्द्य, उदरकृमि-अम्लपित्त, मांसाजीर्णहर। दुग्ध-विशेषपाचक बीज-गर्भस्रावक अतिउष्ण।

मूलकम् Raphanus-Sativus, Linn.

नाम—हिं०, मूली, गु०; म०, मुला। व्य० अं०—पंचांग, कन्द। प्र० अ०, अन्त्र, रसवह संस्थान। दोष—वालमूलक-त्रिदोषहर, वृहत् त्रिदोष कारक किन्तु भृष्टमूलक त्रिदोषहर। रसादि—कटु तिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, गुण—अग्निदीपक-पाचक, मूत्रल, कंठ्य, लघु, शोथघ्न, विष्टम्भि है। बीज-रजःस्रावक। रोग—अजीर्ण, अरुचि, रजःकृच्छ्रता, अश्मरी, यकृत् प्लीहा वृद्धिहर। योग—शुष्कमूलक तैल (शोथहर)।

लताकस्तूरिका Hibiscus-Abelmoscus. Linn.

नाम—मुश्कदाना, गु० मुश्कदाणा, मीश्कदाणा, म०, कस्तुर भेंड। व्य० अं०—बीज, त्वचा १-३ माषा। प्र० अ०, पाचन संस्थान। दोष-त्रिदोषहर,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसादि—मधुर कटुतिक्त, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण–वृष्य, अनुलोमन, चक्षुष्य, कफच्छेदक। रोगः–मुखदुर्गन्धि, कफज रोग, नेत्ररोग, आध्मान, ध्वजभंगहर।

शतपुष्पा Foenicum Vulgare, Gaertn.

नाम–शतपुष्पा-मधुरा, मिसिः, छत्रा। हिं०, सौंफ, गु०, वरियारी, म०, बड़ीशेप यह तिक्त तथा मधुर दो प्रकार की है। शतपुष्पा मृदुरेचक व पित्त शामक है। मिश्रेया, (हिं०, सोया, गु०, सुवा, म०, शेपु,) तिक्त उष्ण तथा गर्भाशय शोधक। अनेक वैद्याचार्य मिश्रेयाको मधुर तथा शतपुष्पाको तिक्त समझते हैं और गुणों में भी इसी प्रकार विपरीतता करते हैं। व्य० अंग–फल; प्र० अव०–पाचन संस्थान। रसदोष—मधुर, कटुतिक्तअनुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी गर्भाशय शोधक। यदि मधुर हो तो शीतवीर्य मधुर विपाकी वातपित्त शामक। तिक्त-पित्तल। गुण रोग—मधुरः–सर शीतल तृष्णा वमन अतिसार नाशक, छर्दिहर, आर्तव, स्तन्यजनन। मिश्रेय या तिक्तः–तीक्ष्ण पित्तल संग्राही दीपन अतीसार अग्निमान्द्य वमन योनिशूलहर है।

वातानुलोमक वर्ग

(शूलप्रशमन)

पलाण्डु: Allium Sepa, Linn.

नाम–पलाण्डुः, मुखदूषकः, यवनेष्ठः। हिं०,प्याज, गु० कान्दो, डुगली,म०, कान्दा। व्य० अंग—कन्द; प्र० अव० वात, पाचन संस्थान। रस दोष—लवणातिरिक्त सब रस (मुख्यतया कटुरस) अनुष्ण, मधुरविपाकी, वातहर कफकारक, किंचित् पित्तल। गुण दोष—वृष्य, अग्निवर्धक, गुरु, धातुपौष्टिक, स्निग्ध; वात रोग, वातरक्त, वातकफजार्श विसूचिका रजः कृच्छ्रता, आध्मानहर, स्रोतः शोधक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसोनः Allium Sativum, Linn.

नाम—सं०, रसोन , लशुनः, उग्रगन्धः, महौषधः । हिं०, लहसन, गु०, लसण, म०, लसूण । व्य० अंग—कन्द । प्र० अव०—वातसंस्थान, सर्वशरीर । रस दोष-अम्ल रहित शेष पंचरस, कटु प्रधान, उष्णवीर्य, कटुविपाकी वातकफ शामक पित्ताविरोधी । गुण रोग—रसायन, बल्य, उत्तेजक, सर, पाचक, अनुलोमक, रजःस्रावक, वायुरोग, उदराध्मान, विसूचिका, अजीर्ण, अग्निमान्द्य नाशक । **योग**—रसोनाष्टकवटी ।

———

हिंगु: Ferula Foetida, Boiss.

नाम—हिंगुः, जतुकं, सहस्रवेधि, रामठम् । हिं०, हींग, म०, हिङ्ग्, गु०, हिंग, बघारणी । व्य० अंग—निर्यास । प्र० अव०-महास्रोतस् । रसदोष—कटुरस उष्णवीर्य कटुविपाकी, वातकफहर पित्तल । गुण—अनुलोमन, सर, अग्निदीपन, कफच्छेदक, रजःस्रावक, शूलप्रशमन, जंतुघ्न, वेदनास्थापन, उदरशूल, आध्मान, विष्टम्भ, उदरकृमि, गुल्मनाशक है । **योग**—हिंग्वष्टक चूर्ण, हिंग्वादि चूर्ण, हिंगुवारुणी सार ।

———

नाडीहिंगु, हिंगुपत्री Gardinia Gummifera, Linn.

नाम—हिंगुपत्री, पृथ्वीका, पिण्डा, वेणुपत्री । हिं०, डीकामाली, म०, डीके-माली गु०, मालण-डीकामारी । व्य० अंग-निर्यास, प्र० अव०, महास्रोतस् अन्त्र । रसदोष—कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य कटुविपाकी, वातकफघ्न । गुण रोग-तीक्ष्ण, अनुलोमन, आमपाचन, सर, विबन्ध, अरुचि, अर्श, आध्मान, गुल्म, प्लीहावृद्धि, अजीर्ण शामक है । हिंगु के स्थान पर प्रयोग किया जा सकता है ।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पुरीषजनन

तण्डुलीयक सकंटक—Amarantus Spinosus, Linn

,, अकंटक— Do. Polygamus. Willd.

नाम—हि०, चौलाई, गु०, तांदलजोभाजी, कांटालोडाभी, म०, काटेमांठ। व्य० अं०—पंचांग पत्र, प्र० अ०, अन्त्र। दोषः—पित्तकफशामक, रसादिः—मधुर (क्षारीय) शीतवीर्य मधुरविपाकी। गुण–रोचक, मूत्रल, सर, रुक्ष, लघु, पुरीषजनन। रोगः–विष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, भ्रम, दाह, विबन्धहर।

लोणिका वृहत् Portulacea Oleracea, Linn.

नाम–हि०, नोनिया शाक, लूणी शाक, गु०, लुणी, मोटी भीनी, म०,घोल, मोटीघोल,न्हानी घोल। व्य० अं०--पंचाग। प्र० अ०--अन्त्र। दोष–वातवर्धक, नातिपित्तल, कफघ्न। रसादिः—मधुर, लवण, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण– सर, गुरु, रुक्ष, स्तम्भक, मूत्रल। रोगः–रक्तार्श, प्रवाहिका, वृक्क, मूत्राशय शोथहर।

माष: Phaseolus Trilobus, Ait.

नाम—हि०, उड़द, गु०, अडद, म०, उड़ीद। व्य० अं०—बीज, प्र०अ०, सर्वशरीर, अन्त्र, दोष—वातशमन, पित्तकफवर्धक। रसादिः—मधुर रस, उष्णवीर्य, मधुर विपाकी। गुण—रोचक स्निग्ध, बल्य, रसायन, बृंहण, शुक्रल, विदाही, गुरु तथा प्रभूत मलोत्पादक। रोग—अर्दित, आदि वातव्याधियां, कृशता, क्षीणताहर, सन्तर्पण, अर्श शामक।

वमनोपग-वामक वर्ग

हिज्जलम् Barringtonia Racemosa, Roxb.

नाम—हि०, समुद्रफल, गु०, समुन्दर फल। व्य० अं०—फल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्र० अ०, आमाशय । दोष—वातशामक, कफपित्तशोधक । रसादि—मधुरकटु, उष्णवीर्य, कटुविपाकी । गुण—वामक, रेचक, कफस्रावक, अनुलोमन । रोग—कास, श्वास, में वमनार्थ (विशेषकर बच्चों में) कष्टार्त्तव, मात्रा—साधारण –५-१० रत्ती, वमनार्थ ३-६ माषा ।

———

अरिष्टक–Sapindus-Trifoliata, Linn.

नाम—सं०, फेनिल, रक्तबीज, गर्भपातन, हि०, रीठा, अरीठा, गु०, अरीठां, म०, रिठा । व्य० अं०फल । प्र० अ०, आमाशय । दोष–त्रिदोषहर, **रसादि**—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी । गुण–तीक्ष्ण; वामक, कृमिघ्न, गर्भस्रावक । रोग—अर्धावभेदक, कफज शिरःशुल गुल्म, मूर्च्छा, कष्टार्त्तवहरम ।

———

अंकोल Alangium Lamarckii, Thw.

नाम—सं० दीर्घपुष्प, रेची, ताम्रफल, हि०, अंकोल, ढेरा, गु०, अंकोल्य ; म०, आंकोड, वाघ आंकड़ा । व्य० अं०—पंचाग, प्र० अ०, आमाशय, यकृत । दोष—कफपित्तहर । **रसादि**–कटुतिक्त कषाय । **पक्वफल**—मधुर, शीत, वातपित्तहर । अपक्व—उष्णवीर्य, कटुविपाकी । गुण–रेचक-वामक स्वेदल, शोथ-विषहर । रोग—आखुविष, वीसर्प, वातरक्त, उपदंश अर्श, जलोदर, अनाह-शूलशामक । मात्रा—स्वेदार्थ २-५ रत्ती मूलचूर्ण, वमनार्थ ३ माषा मूलचूर्ण ।

———

मदन फल Randia Dumetorum, Lamk.

नाम—मदनः राठः पिण्डीतकः विष्रपुष्पकः हिं०, मैनफल, गु०, मींढोल, मींढल म० गेलफल । व्य० अंग–फल । प्र० अव०,आमाशय । रसदोष–मधुर कटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी त्रिदोषहर । गुण रोग–वामक वातानुलोमन लेखन, शोथहर रुक्ष, पक्वाशयामाशयशोधक, विष, त्वचारोग गुल्म शोथ श्वासादिमें ।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वमन शामक (छर्दिनिग्रहणीय वर्ग)

(Anti-Emetics.)

अब्धिनारिकेल Lopoischychell Arum, Labill.

नाम — हिं०, दरियाई नारियल। गु० फेरी नारियेल। म०, दर्याचा नारल्। व्य० अं०-फल, (४-८) रत्ती। प्र० अ०, पाचक संस्थान, हृदय। दोष-रसादि-मधुरतिक्त, अनुष्ण, मधुर विपाकी। गुण—स्निग्ध, दीपन, विषघ्न, हृद्य, रक्त प्रसादन, शर्कराहर। रोग—वमन, अतिसार, विसूचिका, बालाजीर्ण, हृदौर्बल्य। योग—जवाहरमोहरावटी, हृदय रसायन।

पुदिनम्: Mentha Piperata, Linn.

नाम—पुदिनम्, वान्तिहारी, रोचनी, शोकशोभना, पूतिहा। हिं०, पोदिना, गु०, फुदिनों। पिपरमेंन्ट, म०, पुदिना। व्य० अं०—सत्त्व,पंचांग; प्र० अव०, महास्रोतस्। रसदोष—मधुरकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी,वातकफहर, पित्तल। गुण-रोग—दीपन, पाचन अनुलोमन कृमिघ्न संग्राही, चेतनास्थापन, कोथप्रशमन, अतिसार, अग्निमान्द्य, विसूचिका, उदरकृमि, उदराध्मान नाशक है।

ह्रीवेर: Pavonia Odorata.

नाम—ह्रीबेर, बाल, उदीच्य, अम्बुनाम। हिं०, सुगन्धबाला। गु०, वालो। म०, काला वाला। व्य० अंग—मूल; प्र०अव०—वृक्क, आमाशय। रसदोष-मधुर तिक्तरस, शीतवीर्य कटुविपाकी, पित्तकफघ्न। गुण रोग—मूत्रल, तापहर, रक्तशोधन दीपन, पाचन, अनुलोमन, ज्वरातिसार, वमन, तृष्णा, दाह, वीसर्प, रक्तपित्त शामक है।

उभयतो भाग संशोधन वर्ग

(वामक-विरेचक)

कटुतुम्बी Loganaria Vulgaris, S.

नाम—कटुतुम्बी, तिक्तालाबू, हिं०, कड़वी तुम्बी,गु०, कड़वी तुम्बड़ी, म०,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कडुभोपला । व्य० अंग—फल, पंचांग । प्रभा० अव०, अन्त्र आमाशय । रसादि—तिक्त शीतवीर्य, कटुविपाकी वात पित्त शामक । गुण—वामक, रेचक; पत्रः—मधुर पित्तहर मूत्र शोधक । रोग—विबन्ध, ज्वर, विष, श्वास कास, मूत्रकृच्छ्रहर ।

देवदाली Luffa Echinata, Roxb.

नाम—देवदाली, जीमूत, कर्कोटी, हिं०, घघरबेल, बंदाल, देवदाली, गु०, कुकड़बेल, म०, देवडांगरी । व्य० अंग—फल । प्रभा० अव०, आमाशय-अन्त्र । रसदोष—तिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, त्रिदोषघ्न (अवस्थानुसार) । गुण-वामक, रेचक, कृमिघ्न, तीक्ष्ण, स्रोतःशोधक । रोग-गुल्म, उदरशूल,अर्श, पाण्डु, कामला, ज्वरहर । वक्तव्य-सित पीत रक्तपुष्प भेदास्त्रिधा, गुणैः समाना ।

धामार्गव Luffa Aegyptiaca. Mill.

नाम-सं० राजकोषातकी, महाजालनी, हिं०, घियाँ तोरई, गु०, गलकां, म०, घोसालें । व्य० अं०-फल, पंचांग । प्र० अ०, आमाशय अन्त्र । दोष-पित्तकफहर, वातल । रसादि-तिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी । गुण-तीक्ष्ण, वामक-विरेचक, (उभयतोभागहर) रोग-विष, पाण्डु, उदररोग, यकृत्प्लीहावृद्धिहर । सूचना—१. मधुर भेद-शाकोपयोगी, शीतवीर्य, सर है । २. कोशातकी (कृतवेधना) गु०, तुरयां, म०, दोड़कें, तीनों उक्त गुण वाली ही हैं ।

बिम्बी Cephalandra-Indica, Hand.

नाम-सं०, तुण्डिकेरी, रक्तफला, हिं०, कन्दूरी, तिरकोल, गु०, घीलोड़ी (टिंडोरा घोला) म०, तोड़ले कडु । व्य० अं०-पंचांग, पत्र-फल । प्र० अ०, यकृत् अन्त्र । दोष-पित्तकफहर, वातल । रसादि-तिक्त, कषायरस, शीतवीर्य कटु

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विपाकी। गुण–लेखन, संग्राही, वामक, यकृदुत्तेजक, मूत्रगत शर्कराहर। रोग–मूत्रकृच्छ्र, हस्तपाददाह, ज्वर, पाण्डु, बहुमूत्र, इक्षुमेह नाशक, पक्व फल-स्तन्यजनन।

आमदोष पाचक वर्ग

नागकेसरम् Mesua Ferea, Linn.

नाम–नागकेसरम्, चाम्पेयः, नागकिञ्जल्कः, हिं०, नागकेसर, गु०, पीलु नागकेसर, म०, नागचांफा। व्य० अं०–पुष्पसूत्र। प्र० अव०, पाचन, संस्थान। **रसदोष**—तिक्त, कषायरस, उष्णवीर्य कटुविपाकी, पित्तकफहर। **गुण**—आमपाचक, संग्राही, रक्तस्रावरोधक, अनुलोमन, तृष्णानिग्रहण, **रोग**—अर्श (रक्तार्श), वमन, विष, रक्त या श्वेतप्रदर, ज्वर, अतिसार नाशक है। **योग**—पुष्यानुगचूर्ण-प्रदर, प्रमेहहर, नागकेसरादिवटी-रक्तार्शहर।

पाठा Cisampelos Pariera, Linn.

नाम–पाठा, अम्बष्ठा, पापचेलिका (लघु वृहत् भेदात् द्विधा) हिं०, जलजमनी, पाढ़, म०, पहाड़वेल, गु०, कालीपाठ, करंढियु, पहाड़मूल। व्य० अंग–पंचांग, प्र० अव०, महास्रोतस् (अन्त्र)। **रसदोष**–तिक्तरस, उष्णवीर्य कटुविपाकी, त्रिदोषशामक। **गुण रोग**—आमपाचन, संग्राही, रक्तशोधक, तीक्ष्ण, लघु ज्वर, अतिसार, मूत्रकृच्छ्र, दाह, गुल्महर।

मुस्तकम् Cyprus Rotundus, Linn.

नाम–मुस्तकम्, वारिदम्। **भेद**–भद्रमुस्तकं, नागरमुस्तकम्, कैवर्त्तमुस्तकं, हिं०, नागरमोथा, गु०, भद्रमोथ, म०, नागरमोथा, लवाला। व्य० अंग–कन्द। प्र०, अ०–महास्रोतस्, रसधातु। **रसदोष**–तिक्तकटु कषायरस, शीतवीर्य कटुविपाकी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफपित्तहर। गुण रोग—दीपन, आमपाचन, संग्राही, शीतल, ज्वरातिसार, वमन, तृष्णा, रक्तपित्तशामक।

स्नेहन-सर-विरेचनोपग वर्ग

अतसी Linum Usitatissimum, Linn.

नाम—सं०, उमा, नीलपुष्पी, क्षुमा, हिं०, अलसी, गु०, अलशीं, म०, जवस। व्य० अं०—बीज, तैल। प्र० अ०, अन्त्र, फुप्फुस। दोष—वातशामक, पित्तवर्धक। रसादि—मधुरतिक्त, उष्णवीर्य, मधुर, विपाकी। गुण—स्निग्ध, गुरु, शोथहर, सर, अचक्षुष्य। रोग—व्रणशोथ, विबन्ध, प्रवाहिका, शुष्ककास, वातरोगहर। सूचना—सेकी हुई (भृष्ट) अतसी ग्राही है।

ईषद्गोलम् Plantago Ovata, Fosk.

नाम—ईषद्गोलम्, अश्वकर्णबीज, स्निग्धजीरक, गु०, ओथमीजीरुं, ऊंटीयुंजीरुं, उथमीजीरुं, हिं०, ईसबगोल, म०, ईसबगुल। व्य० अंग—बीज। प्रभा० अव०, अन्त्र। रसदोष—मधुररस, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, पित्तहर। गुण रोग—पिच्छिल, सर, स्निग्ध, शोथहर, प्रवाहिका, अन्त्रक्षत, सर, दाह तथा अतिसार शामक है। प्रयोग—चूर्ण; मात्रा ६ माशा से १ तोला तक।

काकोदुम्बर Ficus Hispida, Linn.

नाम—सं० मलपू(यू), जघनेफला, फल्गू, हिं०, कठूमर, कठगूलर, जंगली अंजीर, गु०, ढेड़ उंबरो, म०, बोखाड़ा, भुई उंबर। व्य० अं०—पंचांग, फल। प्र० अ०, त्वचा अन्त्र। दोष—कफपित्त शामक। रसादि—तिक्तकषाय, शीतवीर्य, कटुविपाकी (पक्वफल मधुरविपाकी है)। गुण—त्वचा, श्वित्रघ्न, व्रणशोधन, शोथहर। क्षीर-अपक्वफल—स्तम्भन, ग्राही, पक्व—सर, बृंहण, वृष्य

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्तन्यजनन । रोग—श्वित्र, अर्श, विबन्ध, पाण्डु, कामला । सूचना—अंजीर (Ficus-Crica, Linn.) फल्गु फल इससे भिन्न है। वह वृष्य, पौष्टिक, सर तथा अनुलोमन है।

मलंगबीज Ajuga-Bracteosa, Wall.

नाम—हिं० तुख्ममलंगा । व्य० अं०–बीज । प्र० अ०, अन्त्र-आमाशय। दोष—पित्तशामक । रसादि—मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी । गुण—स्निग्ध, पिच्छिल, हृद्य, संग्राही, दाहशामक। रोग—पाण्डु-कामला, अतिसार, प्रवाहिका, रक्तार्श, रक्तातिसार, पैत्तिकवमन हर ।

वास्तूक Chenopodium Album, Linn.

नाम—सं०, शाकराट्, यवशाक, क्षारपत्र, हिं०, बथुआ, गु०, टांको, म०, चाकवत्। व्य० अं०—पंचांग। प्र० अ०—अन्त्र-यकृत् । दोष—त्रिदोषहर । रसादि—मधुर, उष्णवीर्य, कटुविपाकी । गुण--मेध्य, दीपन, अनु-लोमन, सर, स्रोतशोधक । रोग—विषमज्वर, यकृत्प्लीहावृद्धि, रक्तपित्त, सर्वांग शोथ, उदरकृमि, विबन्ध, अतिसार, संग्रहणीहर ।

भेदक वर्ग

(रेचक, संस्रन Purgatives)

आरग्वध Cassia Fistula, Linn.

नामः—हिं०, अमलतास, म०, बाहवा, गु०, गरमालो सं०, आरग्वध, कृत-माल, शम्पाक, स्वर्णांग । व्य० अङ्ग–फलमज्जा, पुष्पपत्र। प्रभा० अव०–अन्त्र ।

रसादि—तिक्त, मधुर, शीतवीर्य, मधुर-विपाकी। दोष—त्रिदोषहर विशेषतः पित्तकफ नाशक । गुण—भेदन, गुरु, मार्दवकर, कोष्ठशुद्धिकरंपरम्। शोथ वेदनाहर । मज्जा—मधुर-विपाकी, स्निग्ध, दीपन, रेचक, वातपित्त शामक, पुष्प--

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कषाय, तिक्तमधुर, शीतल ग्राही, वातल। रोग—विबन्ध, विष्टम्भ,उदरशूल, ज्वर, उदावर्त्त, कुष्ठ, यकृत्वृद्धि, गुल्म, उदररोग नाशक, उत्तम मृदुरेचक हैं।

मात्रा—मज्जा:—३ से ६ माशा।

एरण्ड: Ricinus Communis, Linn.

नाम—एरण्ड, पञ्चांगुलम्, गन्धर्वहस्तक [श्वेत] रुबूक, हिं०, रेन्डी, अरण्डी, गु०, एरंडियो, म०, एरण्डी। व्य० अंग—पत्र, त्वक्मूल, तैल, प्र० अव०—अन्त्र, वात संस्थान। रसादि—मधुर, तिक्तरस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी, बीज तैल:-कषाय मधुररस, मधुरविपाकी। दोष—वात पित्तशामक। गुण—मूल: वृष्य, उष्ण, गुरु, कृमिघ्न। तैल:-रेचक, उष्ण, आमवातनाशक, त्वच्य,स्रोतशोधक, वात शामक। रोग—वातव्याधियाँ, आमवात, शोथ, वस्तिशूल, गुल्म, उदावर्त्त, प्लीह यकृत् वृद्धि, विबन्ध नाशक। योग—१. एरण्डपाक:—वीर्यक्षीणता, वातरोगों में; २. एरण्ड तैल:—रेचनार्थ: २से ४ तोला तक।

कृष्णबीज Ipomea Hederacea, Jacqu.

नाम—सं०, श्यामबीज, हिं०, कालादाना, गु०, म०, कालादाणा। व्य० अंग—बीज १-३ माशा। प्र० अ०, अन्त्र। दोष:-पित्तकफ शामक। रसादि—मधुर, कटु उष्णवीर्य, मधुरविपाकी। गुण:—रेचन, पित्तस्रावक, रक्तशोधक कृमिहर। रोग—आध्मान, आनाह, उदावर्त्त, विबन्ध, ज्वर, शिरशूल, रज:कृच्छ्रताहर।

त्रिवृत् Ipomea Turpethum, R. Br.

नाम—हिं०, निशोथ, गु०, नसोतर, म०, निशोत्तर, सं० त्रिवृत्, विभण्डी, अरुणा, श्यामा, पालिन्दी, व्य० अं०—मूल; प्रभा० अव०—अन्त्र, भेद-श्वेत, कृष्ण। रसदोष—कटु, तिक्त, मधुर,कषाय,उष्णवीर्य, कटुविपाकी,वातला,कफपित्तहर

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुण रोग—विरेचक, अनुलोमन, विबन्ध, उदररोग, यकृत्प्लीह वृद्धिहर, त्रिवृत् सुखविरेचनानाम् । योग—नाराच चूर्ण, मात्रा–४ माशा से १ तोला ।

मूर्वाः Sensevieria Zeylanica, Willd.

नामः—सं०, तेजनी, स्रुवा, मधुरसा, हिं०, मुर्वा, म०, घणसपात । व्य० अं०—पंचाग, मूल । प्र० अव०, अन्त्र । दोषः–त्रिदोष शामक, रसादि–मधुर, तिक्तरस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी । गुणः—सर, मूत्रल, रसायन, ज्वरघ्न, कफ स्रावक । रोगः—ज्वर, कास, श्वास, वमन, दाह, तृषा, प्रमेहहर ।

विभीतकः Terminalia Belerica, Roxb.

नाम–सर्वभाषा--बहेड़ा, वेहेडा, सं०, विभीतकः, अक्षः, कर्षफलम् । व्य० अंग–फल । प्र० अव०, सर्वशरीर, अन्त्र, स्वर, केश । रसादि—कषायरस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर, विशेषतः कफघ्न । गुण–भेदन, स्वर्य, केश्य, चक्षुष्य, लघु, रुक्ष,रसायन । रोग—कास, स्वरभेद, नेत्रशोथ, शामक,केशवर्धक, विबन्ध मांस मेदरोगहर ।

सुवर्णपत्री Cassia Obovata, Linn.

नाम—स्वर्णपत्री, महाजालनिका, विभाण्डी, चर्मरंगा, हिं०, सनाय, गु०, मींढी आंवल, म०,सोनामुखी । (तद्भेदो मार्कण्डी,मार्कण्डीका, भूमिचरी, म०, भुई तरवड़; गु०, सोनामक्की इतिनाम) । व्य०अंग—पत्र, फल । प्र० अव०, अन्त्रयकृत् । रसदोष—तिक्त कषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्तहर, वातानुलोमन । गुणरोग--रेचन, अनुलोमक, उदराध्मान,उदर-शूल,गुल्म, उदर, रोग, विष, कृमि, कंडू नाशक । बीज तथा पत्र-मधुमेह नाशक हैं । योग :—षट्सकार चूर्ण-रेचनार्थ ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हरीतकी Terminalia Chebula, Retz.

नाम–हरीतकी, विजया, अभया, अमृता, हिं०, हैड, हरडें, हर, गु० हरडे, म०, हरीतकी। भेद–विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती, चेतकी, विजया सर्वप्रधान। व्य० अंग–फल। प्रभा० अव०,अन्त्र, सर्वशरीर। गुण प्रयोगादि–कषायरस प्रधान, अन्य मधुर अम्ल तिक्त कटु, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषशामक। वि० गुण–रुक्ष, दीपन, बृंहण, अनुलोमन, रेचन, चक्षुष्य, आयुष्य रसायन, लघु, यकृदुत्तेजक। रोग—प्रमेह, अर्श, उदररोग, ग्रहणी, विबन्ध, विषमज्वर, छर्दि, हिक्का, अतिसार, कामलादि नाशक। योग—त्रिफला; मात्रा:–४ माशा से १ तोला तक, अभयारिष्ट, अभयादि मोदक।

विरेचक वर्ग

(तीव्ररेचक–Cathartics.)

ऐन्द्री Citrullus Collocynthis, Schrad.

नाम—ऐन्द्रवारुणी, गवाक्षी, मृगादनी, हिं० इन्द्रायण, गु० म०, इन्द्रावण। व्य०अंग–मूल, फल। प्रभा०अव०,अन्त्र। रसादि–कटु तिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष–पित्त कफ नाशक। गुण—रेचन (जल बहुल रेचन) रुक्ष, लघु, रक्तशोधक। रोग—कामला, प्लीहोदर, कफपित्तहर, मात्रा–मूल चूर्ण:–४ रत्ती; मज्जा:–१ रत्ती से ४ रत्ती तक। योग–नारायणचूर्ण जलोदरे रेचनार्थ।

कंकुष्ठ Garcinia Hanburii, Desk.

नाम—कंकुष्ठ। व्य० अंग—सार (निर्यास)। प्रभा० अव०, अन्त्र। रसादि—तिक्त कटुरस, उष्णवीर्य कटुविपाकी। गुण—विरेचक, वर्ण्य, मूत्रल, आर्त्तवजनन, पित्तरेचक। रोग—उदरकृमि, कुष्ठ, गुल्म, उदावर्त्त, आध्मानादिहर, ज्वर, पाण्डु शामक। मात्रा—१/२ से २ रत्ती।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जयपाल Croton Tiglium, Linn.

नाम—जयपालः दन्तीबीजम् मुकुलम्। हि०, जमालघोटा। गु०, नेपालो म०, जमालघोटा। व्य० अङ्ग—बीज। प्रभा०-अव०, अन्त्र। **रसादि**—उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्तहर तीव्ररेचक, वामक है। **रोग**—विबन्ध, उदरशूल, आध्मान, उदावर्त्त, जलोदर, उदरकृमि नाशक है। **योग**—इच्छाभेदी रस, ज्वरकेसरी आदि। **वक्तव्य**—बाजारमें मिलनेवाला जयपाल दन्तीका बीज नहीं अपितु एक अन्य वृक्षका बीज है। शुद्धबीजचूर्णकी मात्रा :-१ से २ रत्ती तक है। अनुपान शीतल जल, शर्वत। जयपाल बीज तैलकी मात्रा १ बिन्दु है। यह तीव्र रेचक है।

दन्ती द्वयम् Jatropha curcus, Linn

नाम—दन्ती, वृहद्दन्ती, द्रवन्ती, प्रत्यक्पर्णी, लघुदन्ती। हि०, पहाड़ी जमालघोटा। गु०, मोगलाई एरण्ड, रतनजोत। म०, मोगली एरण्ड, थोरदन्ती। व्य० अंग—मूलत्वक्, फल। प्रभा० अव०-अन्त्र। **रसदोष**—कटु मधुररस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, पित्तकफ नाशक। **गुण**—तीव्र रेचक, दीपन, उदररोग, अर्श, गुल्म, अग्निमान्द्य, आमवात, जलोदर, उदरकृमिनिष्कासक, पाण्डु, कामला नाशक। **वक्तव्य**—लघु वृहत् भेद से दो दन्ती हैं। लघुदन्ती फल के गुण यह हैं :-मधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। मूत्रल शोथ कफ पित्त नाशक। वृहद्दन्ती का मूल प्रयुक्त होता है। **योग**—दन्त्यरिष्टः अर्श विबन्ध उदर रोग में।

सेहुंड : Euphorbia Neriifolia, Linn

नाम—सेहुंडः स्नुही, वज्रः, सुधा। व्य० अंग०-क्षीर, पत्र। प्र० अव०-अन्त्र। **रसदोष**—कटु तिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफवात हर। क्षीरः-कटु उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्तहर, स्निग्ध, लघु है। अनेक भेद हैं। गुण सबके

८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

समान ही हैं। गुणरोग—क्षीरः तीक्ष्णविरेचन, पत्रः-व्रणपाचक, गुल्म कुष्ठ उदररोग विष आध्मान उदरशूल शामक।

पाचक-ग्राही

मल के द्रवभाग का पाक कर मल को बांध कर लाने वाले द्रव्य।

शुन्ठी Zingiber Officinails.

नाम—सं०, शुण्ठी, विश्वा, नागरम्, शृंगवेरं, महौषधम्। गु०, सुंठ, शुण्ठी। व्य० अंग—कन्द। प्रभा० अव०—महास्रोतस्। रसदोष—कटुरस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी, वातकफहर, अपित्तल। गुण—पाचन, लघु, स्वर्य, शोषकसंग्राही (तोयांश-शोषणात्) वृष्य, स्निग्ध वमन पीनस। अजीर्ण, मुख, कण्ठशोथ, उदराध्मान, शोफ, आमवात विबन्ध अतिसार उदरशूल शामक। वक्तव्य— आर्द्र कन्द की संज्ञा आर्द्रक, शृंगवेर, हिं० अदरक, गु०, आदु है। यह भेदक, गुरु, दीपन पाचन, कण्ठ शोधक है। योगः-शुण्ठी पाक, समशर्कर चूर्ण।

बोलम् Balsmodendron Myrrha.

नाम-हिं०, मुरमुकी, बोल, म०; गु०, हिराबोल, बोल, सं०, हीराबोल, गन्धरस, रक्त बोल। व्य० अंग—निर्यास। प्र० अ०—गर्भाशय। रसदोष—कषाय कटुतिक्त, उष्ण, कटुपाकी, वातकफनाशक। गुणरोग-ग्राही, रक्तस्तम्भक, गर्भाशयरसायन, रक्तपित्त, कष्टार्त्तव, संग्रहणी, अतिसार, अतिस्वेद शामक है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

स्तम्भक-ग्राही

विना पाचन के ही द्रवभाग का शोषण कर मलबद्धता कारक

आवर्त्तन (की) Helicteres Isora, linn.

नाम—सं०, आवर्त्तफला, हिं०, मरोड़फली, गु०, मरड़ासिंग, म०, मुरुड़ शेंग। व्य० अङ्ग—फल। प्र० अ०—अन्त्र, धातु-रक्त। दोष—त्रिदोषहर। रसादिः—कषाय, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुणः—संग्राही, अनुलोमन, रक्तस्तम्भन। रोगः—अतिसार, प्रवाहिका, ज्वरातीसार, रक्तस्राव, उदरकृमिहर।

कदम्ब Anthrocephalus-Cadamba, Miq

नाम—सं०, नीप, वृत्तपुष्प, हिं०, कदम, गु०, गंडोरियो, कदम्ब, म०, कलंब। व्य० अङ्ग—पंचांग, त्वचा। प्र० अ०—अन्त्रामाशय त्वचा। दोष—पित्तकफशामक। रसादि—कषायाम्लमधुर, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—ग्राही, गुरु, ज्वरघ्न, वर्ण्य-स्रावशोषक। रोग—प्रदरादि योनिरोग, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, दाह, अतीसारहर।

कपित्थ : Feronia-Elephantum, Corr.

नाम—सं०, दधित्थः, सुरभिच्छद, हिं०, कैथ, गु०, कोंठ, कोंठबड़ी, म०, कंवठ। व्य० अङ्ग-फल। प्र० अ०-आमाशयान्त्र। दोष—त्रिदोषहर, विशेषतः पित्तवातशामक। रसादि—मधुर-अम्लकषाय, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—रोचक, संग्राही, वृष्य, व्रणरोपक। अपक्वफल-वातवर्धक, अस्वर्य और कफघ्न है। रोग—अरुचि, रक्तपित्त, अतिसार, प्रवाहिकहर।

कुटज-बीज—: इन्द्रयव Hollarrhena Antidysatrica, Wall.

नाम—कुटज, वत्सक, कलिङ्ग, गिरिमल्लिका, हिं०, कुड़ा, कुरैय्या, गु०, कडो,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

म०, कुडा । व्य० अङ्ग–त्वक्, फल । प्रभा० अव०--अन्त्र । रसादि–तिक्त कटु, कषाय, (फल) तिक्त,शीतवीर्य,कटु विपाकी । दोष--त्रिदोषहर, विशेषतः पित्तकफ-हर । गुण—पाचन, दीपन, रुक्ष, ग्राही उपशोषण । फलोंका नाम—इन्द्रयव, कलिंग, तथा भद्रयव है । यह दो प्रकार के होते हैं:–मधुर तथा तिक्त । औषधि में तिक्त प्रयुक्त होते हैं । वृक्षभेद—श्वेत-कृष्ण, मधुर-तिक्त । गुण–तिक्तरस, समशीतोष्ण, कटु विपाकी, त्रिदोषहर, दीपन-पाचन । रोग–अतिसार, प्रवाहिका, अर्श, आमज्वर, कफ, पित्त, रक्त शामक । योग—कुटजारिष्ठ, कुटजावलेह, अतीसार, प्रवाहिका, जीर्णज्वरादि में ।

धातकी : Woodfordia Floribunda, Salisb.

नाम–धातकी, वह्निज्वाला, धातुपुष्पी, ताम्रपुष्पी । हि०, धाय के फूल । गु०, धावड़ी । म०, धायटी-धावस । व्य० अंग०–पुष्प । प्रभा० अव०—अन्त्र । रसदोष—कटु कषायरस, शोतवीर्य, कटुविपाकी । पुष्प—शीतल, पित्तहर । गुण रोग–संग्राही, मादक, अतीसार, प्रवाहिका, वीसर्प नाशक, स्तम्भन, दाह शामक, मूत्रविरजनीयं, व्रण, प्रमेह-प्रदरादि शामक ।

बब्बूलः Acassia-Arabica. Willd.

नाम—सं०, किंकिरात, पीतपुष्प, सूक्ष्मच्छद । हि०, बाबूल, कीकर, गु०, बावला, म०, बाभूल । व्य० अं०, पंचांग, निर्यास । प्र० अ०, त्वचा-अन्त्र । दोष–कफवात शामक । रसादि—कषाय, शीतवीर्य, कटुविपाकी, बीज–मधुरविपाकी । गुण--ग्राही, संकोचक, वरार्य, गुरु, रुक्ष, रक्तस्तम्भक, दाह प्रशमन, अपक्वफल-मूत्रल, बीजः–वीर्यस्तम्भक तथा वर्धक है । रोग—प्रमेह, (अपक्वफल) मूत्रकृच्छ्र, रक्तातिसार, प्रवाहिका, प्रदरादि हर । योग—बब्बूलारिष्ट-प्रमेहातिसारादौ ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मधूक Bassia Latifolia. Roxb.

नाम—सं०, मधुपुष्प, मधुस्रव। हि०, महुआ, गु०, महूड़ों, म०, मोहड़ा। व्य० अं०—पंचांग-पुष्प। प्र० अ०—अन्त्र। दोष—वातपित्त शामक। रसादि—मधुर, कषाय, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, फल-उष्णवीर्य, छाल-तिक्तकषायरस। गुण-संग्राही, मादक, अहृद्य, शुक्रल। रोग-अतिसार,संग्रहणी, रक्त विकार, अन्त्र शैथिल्य। योग—मधूकारिष्ट (संग्रहणी में)।

मयूर शिखा Celosia Cristata. Linn.

नाम—सं०, मधुच्छदा। हि०, मोर शिखा, गु०, लांपड़ी, म०, कुरडु। व्य० अं०-पंचांग। प्र० अ०-अन्त्र, धातुरक्त। दोष-पित्तकफहर। रसादि-कषायाम्ल, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—ग्राही, कृमिघ्न, रक्तस्रावस्तम्भक। रोग—अतिसार, उरःक्षत, रक्तार्श, प्रवाहिकाहर, व्रणरोपण।

माचिका Tamarix Gallica, Linn.

नाम—माचिका, अम्बष्ठा, मयूरविदला, हिं०, माई, पड़वस, गु०, झाऊ, प्रास, म०, झाऊ। व्य० अंग-फल, पंचांग। प्रभा० अव०-अन्त्र, रक्तधातु। रसदोष—कषायाम्लरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्तशामक। गुण-रोग— संग्राही, संकोचक, रक्तस्तम्भक, केश्य पक्वातीसार, रक्तपित्त, दन्तवेष्टशैथिल्य, श्वेतप्रदर, रक्तार्श, गुदभ्रंशशामक है।

मायाफलम् Ourcus Infectoria.

नाम—हिंदी, माजू, ग०, मायाँ, जब। म०, मायफल। गुणादि सर्वं माचिकावज्ज्ञेयम्।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

माषपर्णी Teramnus Labialis, Spreng.

नाम—माषपर्णी, महासहा, सूर्यपर्णी, हिं०, मषवन, गु०, जंगलीउड़द, म०, रानउड़ीद। व्य० अंग—पंचांग। प्रभा० अव०—सर्वशरीर। रसदोष—मधुर कषायरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वातपित्तहर, कफकारक, गुणरोग—बल्य, वृष्य, संग्राही, पौष्टिक, वातपैत्तिकज्वर; अतिसार, संग्रहणी शामक, शोथ, रक्तपित्त, दाहनाशक।

मुद्गपर्णी Phaseolus Trilobus, Ait.

नाम—मुद्गपर्णी, शूर्पपर्णी, सहा। हिं०, मुगवन, गु०, अडबाऊ मग, म०, रानमुग। व्य० अङ्ग—पंचांग। प्रभा० अव०—अन्त्र। रसदोष—मधुरकषायानुरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। गुण रोग—संग्राही, रुक्ष, वृष्य, लघु, ग्रहणी, अतिसार, ज्वर, दाह और शोथहर है। यह दशमूलका अङ्ग है।

उदरकृमिहर वर्ग

अजगन्धा : Siseli-Indicum, W. & A.

नाम-सं०, कीटमारीयवानी, चौहारः। हिं०, छुहारी अजवायन, किरमाणी अजवायन, गु०, कीरमाणी अजमो, म०, दीवेची, किरमाणि ओवा। व्य० अं०-बीज (३-४ माशा)। प्र० अ०-पाचन संस्थान। दोष-वातकफनाशक। रसादि—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—दीपन, तीक्ष्ण, रुक्ष, अनुलोमन, कृमिघ्न। रोग—अग्निमान्द्य, उदराध्मान, शूल, वमन, उदरकृमिहर। योग—अजगन्धावटी (कृमिहरी) रसादर्शे। सूचना—इसे कई वैद्य 'सेन्टीनीन' के क्षुप से मिला देते हैं वह अशुद्ध है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

काम्पिल्लक Mallotus Philippinensis, Muell.

नाम—काम्पिल्लक, रक्ताङ्ग, रेचन, हिं०, कमीला, कंबीला, गु०, कपीलों, म०, कपिला। व्य० अं०, फलपराग। प्रभा० अव०—अन्त्र। रसादि—कटु रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष—कफनाशक, पित्तरेचक। गुण—कृमिघ्न, रेचक, व्रणशोधक, रोपक। रोग—उदरकृमि, गुल्म, विबन्ध, कफोदर नाशक एवं व्रणशोधक रोपक है।

कीटमारी Aristolochia Bracteata, Retz.

नाम—सं०, धूम्रपत्रा। हि०, कीड़ामारी, गु०, किडामारी म०, गंधण। व्य० अङ्ग—पंचांग। प्र० अ०, अन्त्र। दोष—वातकफहर। रसादि—तिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—दीपन, संस्रन, कृमि, विषहर। रोग—अग्निमान्द्य, उदरकृमि, विषमज्वर, कष्टार्त्तवहर।

दमनक Artemisia Maritama, Linn.

नाम—सं०, नागदमनक। हिं०, दौना, दवणा, अपसन्तीन, गु०, नागडमण, नागदौना, म०, दवणा। व्य० अं०-पंचांग। प्र० अ०-अन्त्र, यकृत दोष—पित्तकफशामक, वातल। रसादि—तिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—अग्निदीपन, अनुलोमन, सर, आर्त्तवजनन, यकृद्रेचक, मूत्रल। रोग—ज्वर, विषमज्वर, कामला, पाण्डु, उदर कृमि, कष्टार्त्तव, यकृत्शोथहर, पित्तरेचक।

पलाशः Butea Frondosa. Koening ex Roxb.

नाम – पलाश, किंशुक, ब्रह्मवृक्षः, वातहर। हि०, ढाक, पुप्प, टेसू। गु०, (वृक्ष) खाखरो, पुष्प-केसूड़ा। म०, पलश। व्य० अंग—निर्यास, बीज, तैल, क्षार, पुष्प। प्र० अव०, महास्रोतस्। रसदोष—कषायतिक्त कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, त्रिदोषहर। पुष्पः-शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वातल,प्रवाल-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वातहर। गुण—सर, स्निग्ध, संग्राही, कृमिघ्न; अनुलोमन, पुष्प–शोथशामक; बीज, त्वच्य, उदरकृमिघ्न; निर्यास–संग्राही, स्वेदावरोधक; मूलः–कफपित्तशामक; कुष्ठघ्न क्षारः गुल्म उदर, रोगहर। रोग—अर्श, संग्रहणी, उदरकृमि, गुल्म, उदररोग, त्वक् रोग नाशक।

———

पारिभद्रः Erythina-Indcia, Lam.

नामः सं०—कंटकीपलाष, रक्तपुष्प। हिं०, फरहद, गु०, पनरवो, पान्डेरवो, म० पंगारा। व्य० अं०। पंचाग, प्र० अ०, अन्त्र। दोषः—वातकफशमन। रसादि–कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुणः–दीपन, भेदन शोथहर, अनुमोलन, आक्षेपशमन। रोग—उदरकृमि, कर्णरोग, ज्वर तथा कुपीलु विष शामक है।

———

मधुर-कर्कटी, राजकर्कटी Cucurbita Maxima, D & Lam.

नाम—राजकर्कटी, कर्कारुः, गुड़योगफला (काशीफलम्), म० लालभोपला। व्य० अंग—बीज। प्र० अव०—अन्त्र, कृमि।

रसदोष—फल-मधुररस शीतवीर्य, मधुरविपाकी, पित्तहर। बीजः–उष्णवीर्य, कटुविपाकी, उदरकृमिघ्न। गुण-रोग—ग्राही, विष्टम्भकारक, गुरु, रक्तपित्तशामक, बीजः—उदरकृमिहर हैं। बीज मात्रा १-३ माषा।

———

विडंग Embelica Ribes, Burn.

नाम—विडंगः, कृमिघ्नः, चित्रतण्डुलः, वातारिः। हिं० वायविडंग, म० गु० वावडींग, व्य०अंग—बीज। प्रभा०अव०, अन्त्र। रसदोष—कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफघ्न। गुण–लघु, उदरकृमिघ्न, दीपन, अनुमोलन, शोथघ्न। रोग—उदराध्मान, अग्निमान्द्य, विबन्ध, वातविष्टम्भ, उदरकृमि, प्रमेह, मेदोवृद्धि, शिरोरोग नाशक है। योग—विडंगारिष्ट १ तोला।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शान्तनम् Artemisia Cina.

नाम—शान्तनम्, सेण्टोनियम, ब्रध्नहरम्, कृमिघ्नी। यह दमनक जाति के क्षुपका सत्व है। चौहारः, कीटमारी यवानो नहीं है। व्य० अंग—सत्व; प्रभा०-अव० अन्त्र। रसदोष—किञ्चित्तिक्त; उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफहा, वातवर्धक। गुणरोग—ब्रध्नकृमिहर, उदरके ब्रध्नकृमि (Round worm) को यह बाहर निकाल देता है। योग—सत्वः-मात्रा १।२ से गुञ्जा तक।

यकृत्प्लीहा प्रभावक

ये द्रव्य यकृत्प्लीहा के कार्य को उत्तेजन देते हैं और उनमें से दोषों को बाहर निकालते हैं।

अर्क Calatropa Procera, R. Br.

नाम—अर्कः सूर्याह्व, अलर्क-मन्दारः, विकीर्णकः, हिं०, आक, आकड़ा, गु० आकड़ो, म०, रुई। व्य० अंग—पत्र, पुष्प, क्षीर, मूल। प्रभा० अव०—अन्त्र-प्लीहा-यकृत्। रसादि—तिक्तकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष—वात कफनाशक। गुण—तीक्ष्ण, सर, कृमिहर। मूलत्वचाः-स्वेदल, वामक, श्वास शामक, यकृदुत्तेजक, वेदनास्थापन। रक्तार्कपुष्पः—कफनाशक, कासहर। श्वेतार्कपुष्प :—दीपन, पाचन, श्वासकास, शामक। क्षीर :—रेचक, सर, गर्भपातक, कृमिहर। रोग—गुल्म, जलोदर, प्लीहावृद्धि, कास, न्यूमोनिया, विबन्ध नाशक, विशूचिका, फिरंगोपदंशहर। योग—अर्क लवणः—उदराध्मानादि में। मात्रा ४ रत्ती से १ माषा। भेद—(१) अर्क (रक्तपुष्प) (२) अलर्क (श्वेतपुष्प)।

अमरवल्ली (आकाशवल्ली) Cuscuta-Reflexa, Roxb.

नाम—हिं०, गु०, अमरवेल, आकाशवेल, म०, अमरवल्ली। व्य० अंग०—पंचाग। प्र० अ०, यकृत्, धातु-रक्त। दोष—वातकफहर। रसादि—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

तिक्तकषाय, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—पित्तसारक, यकृदुत्तेजक, रक्तशोधक, शोथवेदनाहर। रोग—जीर्ण विबन्ध, शोथ, अर्श, वीसर्प, उपदंश, त्वचारोग, उदरकृमिहर।

———

कालमेघ Andropogan Paniculata, Nees.

नाम—कालमेघ, शंखिनी, यवतिक्ता, चोरपुष्पा, हिं०, कालमेघ, गु०, लीलु करियातुँ, म०, पालेकिराईत, ओलेकिराईत। व्य० अंग—पंचांग। प्रभा० अव०—यकृत्, सर्वदेह। रसादि—तिक्तकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, त्रिदोषहर। गुण—मृदुरेचक, रक्तशोधक, पाचक, स्निग्ध, गुरु, स्वेदल, दीपन, यकृदुत्तेजक। रोग—जीर्णज्वर, विषमज्वर, जलोदर, प्लीहायकृत्वृद्धिहर, उदरकृमि, गुल्म, विबन्धहर।

———

कटुकी Picrrorhiza Karooa, Benth.

नाम—कटुकी, कट्वी, चक्रांगी, रोहिणी। हिं०, कुटकी, गु०, कडू, म०, बालकडू। व्य० अंग—मूल, । प्रभा०-अव०, यकृत्, अन्त्र। रसादि—तिक्त कटुरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। दोष— कफपित्त नाशक। गुण—यकृत् उत्तेजक, भेदन, रुक्ष, शीतल, पित्तरेचक, ज्वरघ्न। रोग—ज्वर, रक्तपित्त, दाह, पाण्डु, कामलानाशक, उदर-कृमिहर। योग— बालचातुर्भद्र चूर्ण ज्वरातिसार, वमन, कासशामक। सूचना—कृष्णकटुकी दूसराभेद है यह उत्तम पित्तरेचक तथा विषमज्वरघ्न है नाम—सं०, कृष्ण कटुकी। हि०, काली कुटकी। म०, गु०, कडू। Hellebore Nigrum, linn.

———

करीर Capparis-Aphylla, Roth.

नाम—सं०, अपत्र, मरुभूरुह, क्रकर। हि०, कैरा, ढेरा, गु०, कैर केरडां, म०, झासड़ी, केर। व्य०अं० फल, मूलत्वक्, १–२ माषा। प्र-अ० आमाशयान्त्र, जिह्वा, दोष—वातकफशमन। रसादि—कटु तिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोचन, दीपनपाचन, भेदन, शोथहर,। रोग—अर्श, आमवात, शूल, आनाह उदावर्त, विबन्धहर।

———

कारवेल्लकम् Momordica-Chirantia, Linn.

नाम—सं०, सुषवी, कठिल्ल। हिं०, करेला,। गु०, कारेला, म०। कारलें, व्य०अं०—पंचांग। प्र० अ०-पाचन संस्थान, यकृत्। दोष—कफपित्तहर, अवातल। **रसादि**-तिक्तकटु, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। **गुण**—दीपन, भेदन, मेद, मूत्रशर्करा हर, रक्तशोधक, पित्तसारक, यकृदुत्तेजक। **रोग**—अग्निमान्द्य, अर्श उदरकृमि, पान्डु, प्रमेह, विबन्ध, मधुमेह, रजोरोधहर, ज्वरों में पथ्य। **सूचना**—कर्कोटकी, वन्ध्या ककोटकी, गु०, कंटोलें म०, रान कंटोलें, हिं०, ककौड़ा। दोनो ही कार्वेल्लकवत् गुणकारी है किन्तु वे शीतवीर्य (चरक में) है।

———

काकमाची Solanum Nigrum, Linn.

नाम—काकमाची, वायसी, नदीकान्ता, गुड़फल। हिं० मकोय, गु० पीलुडी, म०, कामोणी, त्रिदोषघ्न। व्य० अं०-पंचांग। **प्रभा० अव०**-त्वचा, अन्त्र, यकृदुत्तेजक। **रसादि**-तिक्त कटुरस, किञ्चिदुष्ण, कटुविपाकी, त्रिदोषघ्न। **गुण**-स्वेदल, भेदन, मूत्रल, शोथ और वेदना शामक, लघु, स्वर्य, रक्तप्रसादन, हिक्का निग्रहण। **रोग**—शोथ, ज्वर, अर्श, त्वचारोग, वृक्कशोथ, जलोदर हृदयरोगनाशक। वातरक्त, आमवात, यकृत्शोथ, कामला, पाण्डुहर पित्तरेचक।

———

दारु हरिद्रा Berberis Asiatica, Roxb.

नाम-दारुहरिद्रा, पीता, कटंकटेरी, हिं० दारुहल्दी, म०, दारुहलद, गु०, दारुहलदर। व्य० अंग०—काष्ठ, घनसत्व। **प्रभा० अव०**-त्वचा, यकृत्। **रसदोष**—तिक्तकटु रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्तहर। **गुणरोग**—सर, यकृदुत्तेजक, पित्तरेचक, चक्षुष्य, रक्तशोधक, स्वेदल, ग्राही, रक्तस्तम्भक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विषमज्वरहर, रक्तार्श, रक्तपित्त, हिक्का, विष, वमन और नेत्ररोग नाशक है। घन सत्व का नाम 'रसाञ्जन' है। यह चक्षुष्य तथा उक्तगुणयुक्त है।

पारिजातः Nyctanthes-Arbor-Tristis, Linn.

नाम—स०, शेफालिका, रागपुष्पी। हिं०, हारसिंगार, गु०, हारशणगार, म०, पारिजात। व्य० अंग—पंचांग। प्र० अ०—यकृत, त्वचा। दोषः—वातकफहर, पित्तशोधक। रसादि—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुणः—लेखन, स्वेदन, मूत्रल, अनुलोमन, केश्य, त्वच्य। रोग—आमवात, गृध्रसी, अर्श, उदरकृमि, प्रदरादिहर।

पिच्छिला Cydonia-Vulgaris, Pers.

नाम—हिं०, बिहीदाना, गु०, वेदाणा, म०, मुगलाई वेदाणा। व्य०-अंग—बीज। प्र० अ०—अन्त्र, यकृत् धातु, रक्त,। दोष—वातपित्तशामक। रसादि—मधुररस, शीतलवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—रक्तप्रसादन, ग्राही, पिच्छिल, मूत्रल, यकृत्बल्य, कफनिष्कासक। रोग—पाण्डु, कामला, प्रवाहिका, अतीसार, मूलकृच्छ्र, शुष्ककास, दाह, तृषाहर।

भृंगराज Eclipta Alba, Hasek.

नाम—भृंगराज, मार्कव, केशरञ्जनः। हिं०, भांगरा, गु०, भांगरो, म०, माका। व्य० अंग—पंचांग;। प्रभा० अव०—केश, त्वचा, यकृत्। रसदोष—तिक्तकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफघ्न। गुणरोग—केश्य, त्वच्य, यकृत् शोधन, रसायन, उष्ण, संग्राही, रुक्ष, पाण्डु, संग्रहणी, त्वचारोग नाशक तथा केशवर्धक, अग्निमान्द्य, यकृत्प्लीहा वृद्धिहर। योग—भृंगराज तैल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मामज्जकः Enicostemma-Littorals, Blume.

नाम—हिं०, छोटाचिरायता, गु०, मामेजवो, म०, तान वड़ी चेभाड़। व्य० अं०—पंचांग। प्र०अ०-यकृत्, अन्त्र। दोष—कफपित्तहरण। रसादि—तिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—दीपन, रेचन, मूत्रल, कृमिघ्न, यकृत् उत्तेजक, रक्तशोधक, ज्वरहर। रोग—जीर्णज्वर, विषमज्वर, अग्निमान्द्य, रोगोत्तर दौर्बल्य, पाण्डु, कामला, यकृत्विकारहर तथा मधुमेह शामक।

सप्तकपिः Casaeria-Graveolens, Dalm.

नाम—सं०, सप्तचक्रा, चिल्लक, रक्तमूल। हिं०, चिल्लर, सप्तरंगी, म०, सप्तरंगी, मोडा-आगेरु। व्य० अं०—मूल। प्र० अ०—यकृत्। दोष—वातकफ शामक, पित्तरेचक। रसादि—तिक्तकषाय, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—अनुलोमन, स्वेदापनयन, शोथ-वेदना स्थापन, यकृदुत्तेजक, पित्तरेचक। रोग—उदररोग, यकृत्शोथ, प्रमेह, मधुमेह, पाण्डु, कामला, यकृद्वृद्धिहर।

सप्तला Acacia-Concinna, DC.

नाम—सं०, फेनिला, चर्मकषा। हिं०, म०, गु०, शिकाकाई, शिकेखाई, चिखेखाई। व्य० अं०—फल। प्र० अं०, यकृत्, केश। दोष – कफपित्तशामक, किञ्चित्वातकर। रसादि—तिक्तरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—सर, स्रोतशोधक, शोथहर, अनुलोमन। रोग—आनाह, उदावर्त्त, उदरकृमि, रक्तविकार शामक, वामक, विरेचक, केश्य।

प्लीहावृद्धि नाशक

रोहीतकः Tecoma Undulata, G. Don.

नाम—रोहीतक, दाड़िमपुष्पक, प्लीहघाती, हिं०, रोहीड़ा, गु०, रगतरोहीड़ो, म०, रक्तरोहीड़ा। व्य० अंग—त्वचा। प्रभा० अव०—प्लीहा

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

यकृत् । रसदोष—तिक्त कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफवातहर, पित्तरेचक । गुण-रोग—सर, रक्तशोधक, शोथहर, उभयमार्गशोधक, गुल्म, उदररोग, कामला, पाण्डुनाशक, उदावर्त्त, उदरकृमिहर । योग—१. रोहीतकारिष्ट । २. रोहीतक लोह ।

शरपुंखा Tephrosia Purpurea, Pers.

नाम—शरपुंखा, प्लीहशत्रुः, श्वेतपुंखा, हिं०, सरफोंका, गु०, शरपंखो, म०, उन्हाली, बं०, बननील । व्य० अव०, पंचाग, क्षार । प्र० अव०, यकृत् प्लीहा । रसदोष—तिक्तकषायकटुरस; उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर, (त्रिदोष शामक) । गुण-रोग—सर, मूत्रल, शोथहर, कफनिष्कासक, कृमिहर, उदररोगनाशक, कासहर, लघु, यकृत्प्लीहवृद्धि, गुल्म, ज्वर और कास नाशक है ।

सुरंजनम् Colchicum Autumnale.

नाम—सुरंजनम्, सुरंजा, काल्चिकम् । सर्वभाषा—सुरञ्जान । भेद (१) मधुर (२) तिक्त । व्य० अंग०—काण्ड (कन्द) । प्रभा० अव०, सर्व शरीर-यकृत् । रसदोष—मधुर वा तिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर । गुणरोग—रुक्ष, वेदनाहर, दीपन, पित्तसारक, बड़ी मात्रा में वामक-रेचक, वातरक्त नाशक, रक्तार्श, प्रमेहहर । मधुरः-वृष्य है । योग—१ तरलसारः मात्रा २ से ५ बिन्दु तक । २. सुरासार : मात्रा ५ से १५ बिन्दु तक ।

हपुषा Juniperus Cummunis, Linn.

नाम—हपुषा, प्लीहहन्त्री, ध्वांक्षनाशिनी, अश्वत्थफला । सर्वभाषा—हाऊबेर । व्य० अंग०—फल । प्र० अव०, प्लीहायकृत् । रसदोष—तिक्त कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी त्रिदोषहर, विशेपतः वातकफहर । गुणरोग—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दीपन, गुरु, संग्राही, शोथघ्न, अनुलोमन, लेखन, अर्श, गुल्म, ग्रहणी तथा यकृत्प्लीहा वृद्धिनाशक है।

अर्शोघ्न

ये विशेषतः वातानुलोमन कर, तथा यकृत् को प्रभावित कर अर्श का शमन करते हैं।

सूरणम् Amorphophallus Companulatus, Roxb.

नाम—सूरणः, शूरणः अर्शोघ्नः, वातारिः। हिं०, जिमीकन्द, ओल, गु०, म०, सूरण। व्य अंग०—कन्द। प्र० अव०, अन्त्र-यकृत्। **रसदोष**—कटु-कषायरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफघ्न, कुछ पित्तल। **गुण-रोग**—दीपन, पाचन, अनुलोमन, लघु, सर, अर्श गुल्म, कफरोग, स्थौल्य नाशक है। वन्यं शूरणं अर्शसां विशेषेण हितः। यकृदुत्तेजक है।

महानिम्बः Melia-Azadirach, Linn

नाम—सं० रम्यकः, द्रेकः। हिं०, बकायन, गु०, बकान्य, आजाद दरख्तो म०, बकाणा निम्ब। व्य० अं०—बीज १-२, पत्र ४-८ रत्ती। प्र० अ०—यकृत् **दोष**—कफपित्तहर, वातवर्धक। **रसादि**—तिक्तकषाय, अनुष्ण, कटुविपाकी। **गुणः**—रक्तशोधक, रुक्ष, कृमिघ्न, विषघ्न, भ्रमहर। **रोगः**—अर्श, उदरकृमि (Round worm पृथुव्रघ्न कृमि) विषमज्वर, यकृत् शोथहर। **सूचना**—७-८ बीज या अधिक मादक हैं।

पित्तरेचक-वर्ग

अम्लपर्णी Rheum-Emodi, well

नाम—सं०, पीतमुली, हिं०, रेवन्दचीनी, उशारेरेवन्द, गु०, रेवन्द-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चीनीनो शीरो, म०, रेवन्द उशारा, रेवन्द चीनी। व्य० अं०—मूल, सत्व। प्र० अ०—अन्त्र, आमाशय, (१-२ भाषा)।
दोष—पित्तकफहर। रसादि—तिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण:—रेचन, अनुलोमन, मूत्रल, आर्तवजनन, (दीपन स्वल्प मात्रामें १-४ रत्ती- मात्रामें) रोग:—विबन्ध, कामला, ज्वर, पाण्डु, वातरक्त, शोथहर, यकृत्प्रभावक, पित्तरेचक, किञ्चित् वेदनाकर है अतः शुण्ठीमिलाकर प्रयोग करे।

काशनी Conchorium-Intybus, Linn

नामः—सर्वभाषा, कासनी, काशनी,। व्य०अं० पत्र, मूल, बीज। प्र० अ० यकृत्। दोषः—कफपित्तहर। रसादि—तिक्त, शीतवीर्य, (मूल-उष्ण) कटुविपाकी। गुण—शोथघ्न, दाह, तृषाप्रशमन, यकृत्, हृदयबल्य, पित्तसारक, रक्तशोधक, मूल-आर्त्तवजनक। रोग—यकृत्शोथ, ज्वर, रक्तविकार, पाण्डु, कामला, हृदयद्रव, शीतपित्त, पैत्तिकशिरः शूलहर।

कुमारी Aloe Vera.

नाम—कुमारी, गृहकन्या, घृतकुमारिका, हिं०, ग्वारपाठा, घीकुंवार, गु०, कुंवारपाठु कडवी कुंवार, म०, कोरफड़। व्य० अंग—मज्जा। प्रभा० अव०—प्लीहायकृत्, अन्त्र। रसादि—तिक्त मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। गुण-भेदन, रसायन, बृंहण, स्वल्प मात्रा में दीपन, अनुलोमन, गर्भाशयशोधक, रोग-कामला, पाण्डु, जीर्णज्वर, ग्रन्थि, यकृत्प्लीहवृद्धि, विबन्ध, रक्तपित्त, कफज्वर, कष्टार्त्तव; गुल्मदिहर। योग—१. कुमार्यासव २. रजःप्रवर्त्तनीवटी। वक्तव्य—कुमारीघनसत्व या रसक्रिया द्वारा एक काला पदार्थ प्राप्त किया जाता है। इसे 'एलीयक, कृष्णाबोल, एलुआ' कहते हैं। यह तिक्तकटुरस, समशीतोष्ण, भेदक, रजः-कृच्छ्ता, गुल्म, आध्मान, वातकफ, यकृत्प्लीह, वृद्धिहर तथा पित्तरेचक हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गिरिपर्पट Podophyllum Emodi, wall.

नाम—सं०, वनवृन्ताक, हिं०, वनककडी, गु० वेणीवेल, म०, पाप्रा। व्य० अं०—मूल, २-५ रत्ती, सत्व ¼-⅛ रत्ती। प्र० अ०—यकृत्-अन्त्र, दोष—कफपित्तहर। **रसादि**—तिक्तकटु, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। **गुण**—पित्त-स्रावक, यकृदुत्तेजक, रक्तशोधक, अग्निदीपक। **रोग**—जीर्णविवन्ध, अग्निमान्द्य, पित्ताशयशोथशूल, उदरशूलादिहर।

गोरोचना Ox Gall

नाम—गोरोचना, मंगल्या, रोचना। यह गोपित्त है। तिक्तरस, शीतवीर्य कटुविपाकी, त्रिदोषहर, ग्रह,उन्माद, गर्भस्राव, क्षत, रक्तपित्त नाशक तथा शिशुओं के रोगों (अतीसार, वमन, मसूरिकादि में) उत्तम हैं। यह सारक,वर्ण्य पित्तरेचक, यकृदुत्तेजक, रक्तस्राव, गर्भस्रावहर है।

त्रायमाणा Delphinium Zalil, A, E. H.

नाम—हिं०, म०, गु०, त्रायमाण, त्रामण। सं० त्रायमाणा, गिरिसानुजा, कृतत्राणी, वार्षिकी। व्य० अं०—पंचांग। प्रभा० अव० सर्वशरीर, यकृत्। रस दोष—तिक्त, शीतवीर्य, कटुविपाकी, पित्तकफहर। गुण रोग—सर, तापहर, स्वेदल, पित्तरेचक, यकृदुत्तेजक, अग्निमान्द्य, रक्तपित्त गुल्म, यकृत् प्लीहावृद्धि, जीर्णज्वर, अर्श शामक है।

रसवह संस्थान प्रभावक

ये द्रव्य शोथ-Inflamation, शोष, Dropsy. तथा गण्डमाला; अपची शामक होते हैं।

अग्निमन्थ Premna Integrifolia, Linn.

नाम—अग्निमन्थ, गणिकारिका, श्रीपर्णी, तर्क्वारी। हिं०, अरणी, गनियारी।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गु०, अरणी। म०, नरवेल, ऐरण। व्य० अंग—काष्ठ-मूल पंचांग। प्रभा० अव०–त्वचा, सर्वदेह। रसादि–मधुरकषाय, कटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, कटु विपाकी, वातकफनाशक। गुण०–दीपन, पाचन, स्वेदल, रसायन, सर, शोथ वेदनाहर। रोग—शोथ-पाण्डुज्वर, अग्निमान्द्य, और विबन्ध, अर्श, शोथहरम् योग—दशमूलक्वाथ; मात्रा २ से ४ तोला।

———

अरण्यजीरक Vernonia Anthelmintica Willd.

नाम—अरण्यजीरक। हिं०, कालीजीरी, गु०, कडवी जीरी, म० कडुजिरें। (कटुजीरक, कालीजीरी इतिलोके) व्य० अंग—बीज। प्र० अव—त्वचा। रसदोष-बीज–तिक्त कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, त्रिदोषहर। गुण–रक्त शोधक त्वचारोगनाशक, कृमिघ्न, शोथशामक, यकृदुत्तेजक। रोग—गंडमाला ग्रन्थि शोथ शामक, रक्तदुष्टिहर तथा उदरकृमिहर है।

———

गम्भारी Gmelina Arborea, Roxb.

नाम—गम्भारी, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, हिं। गम्भारी, गु०, शीवण, सवन, म०, शिवण। व्य० अंग–फल, त्वक, मूल। प्रभा० अव०–सर्व शरीर, महास्रोतस्। रसादि—मधुर तिक्त कषाय, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष—त्रिदोषहर, पक्वफल-मधुरपाकी। गुण—मूल-त्वक् दीपन, भेदन, मेध्य, रसायन, अनुलोमन, पुष्प–मधुरतिक्त कषाय, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, संग्राही, वातल, पित्तघ्न, रक्तपित्त, प्रदरनाशक। फल : बृंहण, शुक्रल, मूत्रल, मेध्य। रोग—वातरोग, तृष्णा, दाह, रक्तपित्त, क्षय, ज्वर, अर्श, भ्रम, शोष, आमदोष तथा विबन्ध नाशक है।

———

निर्विषा (षी) Delphinium-Denudatum, wall.

नाम–हिं०, निर्विषी, जद्वार, गु०, जद्वार,। व्य अंग०–कन्द (४-८–गुञ्ज)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रत्ती), प्र० अ०, रसवह संस्थान, आमाशय। दोष—त्रिदोषहर। रसादि—तिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष—अनुलोमक, स्रोतशोधक, लेखन, पित्तसारक, वातनाड़ी बलदायक, रुक्ष, शोथशामक। रोग—वमन, विरेचन, रजः कृच्छ्रता, कामला, पाण्डु, वातनाड़ी शैथिल्य, शोथ तथा विषनाशक।

पाटला

Steriospermum Suaveolens, D C.

नाम—सं०, पाटला, मोघा, ताम्रपुष्पी, घण्टा। हिं०, पाढ़ल। गु०, पाटल। म०, पाडल। व्य०अं०—मूल, त्वक, पुष्प। प्रभा० अव० महास्रोतस्। रस-दोष— तिक्त कषायरस, समशीतोष्ण, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। गुणरोग—बल्य, मूत्रल, अनुलोमन, ग्राही। पुष्पफल—शीतल, मूत्रल पित्तशामक, वमन शोथ, हिक्का, तृषाहर, फलपुष्प, पित्तातीसार, हिक्का तथा रक्तपित्त शामक।

पृश्निपर्णी Urarea Picta, Desv.

नाम-पृश्निपर्णी, गुहा, पृथक्पर्णी। हिं०, म०, पिठवन, गु०, पीलोसमेरेवो, पीटवन। व्य० अंग—पंचांग, प्रभा० अव० वातसंस्थान। रसदोष-मधुर तिक्त रस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। गुण रोग—दीपन, संग्राही, वृष्य, सर, वातघ्न, अतीसार, वमन,ज्वर, वातरोग रक्तदोष, शोथ शामक है।

बिल्व Aegle Marmelos

नाम-सं०, बिल्वः शैलूषः सदाफलः श्रीफलः, हिं०, बेल, गु०, बीली, म०, बेल। व्य० अंग—फल, मज्जा, मूलत्वक, पत्र। प्र० अव—वात रसदोष—मधुर तिक्त कटु कषायरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वात, श्लेष्महर; मूलः—त्रिदोषघ्न; आमफल ग्राही, पक्व फलः पित्तहर, सर।

गुणरोग—ग्राही, दीपन, बल्य, छर्दिहर, वेदनास्थापन (आमफल)

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

संग्राही, अतीसार, प्रवाहिकाहर। पक्व फल—: मृदुरेचक पित्तशामकगुरु और विष्टम्भकारक है। मूलः-शोथ, वेदनाहर, वातानुलोमन है।

योग—बिल्वादिचूर्ण, प्रवाहिका, अतिसार में।

शालपर्णी Desmodium Gangesticum Dc. D.

नाम—सं०, शालपर्णी, त्रिपर्णी, गुहा, विदारीगन्धा, हिं०, सरिवन। गु०, सालवण, पांदडियो, समेरवो। म०, पीठवण। व्य० अंग—पंचांग। प्रभा० अव०—सर्वशरीर। रसदोष—तिक्त मधुररस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। गुणरोग—बृंहण, रसायन, ज्वर, प्रतिश्याय, क्षयजकास, अतिसार, शोथशामक, व्रणरोपक, अंगमर्दहर है। योग—दशमूल क्वाथादि।

श्योनाक Oroxylum Indicum. Vent

नाम-श्योनाकः, टुण्टुकः, दीर्घवृन्तः, अरलुः, हिं०, अरलु, टेन्टु, सोनापाठा। गु०, अरडुसो, मरमंख। म०, टेन्टू,। व्य० अंग-त्वचा; । प्रभा० अव०—सर्वशरीर। रसदोष—तिक्तकषाय रस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, त्रिदोषहर।

गुणरोग—वस्तिरोगहर, ग्राहि, स्वेदल, आमपाचन, वेदनास्थापन, मूत्रल, सन्निपात ज्वर, सन्धि शोथ, ज्वरातीसार, कास, आमवातघ्न।

गण्डमाला-अपची शामक

कांचनार Bauhinia Purpurea, Linn.

नाम—काञ्चनार, गण्डारिः, शोणपुष्पक, हिं०, लालकांचनार। गु०, चम्पाकली। म०, कोरल, काञ्चन। व्य० अंग—त्वचा; पुष्प। प्रभा० अव०—रक्त, रसधातु, अन्त्र। रसादि—कषायरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। दोष—कफपित्तजित्। गुण—ग्राही, रक्तशोधक, रुक्ष, भेदहर, कुष्ठघ्न। रोग—गण्ड-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

माला, रक्तपित्त, रक्तप्रदर, गुदभ्रंश नाशक, रक्तस्रावहर। योग—काञ्चनार गुग्गुलु; मात्रा ४ रत्ती से १ माषा।

माणकम् Alocassia Indica, Schott.

नाम—सं०, मानकन्द, कासालू। म०, कासे आलू। हिं०, मानकन्द, महापत्रः। व्य० अं०—कन्द। प्र० अं०—रसवहसंस्थान, रक्तधातु। दोष—त्रिदोष शामक (वातपित्त)। रसादि—मधुरकटुकषाय, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—ग्राही, स्तम्भक, रुक्ष, शोथहर, विष्टम्भकारक, रक्तशोधक। रोग—गण्डमाला, अपची, रक्तपित्त, जलोदर, अर्श शामक, व्रणरोपण।

विषघ्न द्रव्य

सूचना—रसवह संस्थान के साथ विषसंवहन का सम्बन्ध होने से इन्हें यहाँ लिखा गया है।

कासमर्द Cassia Occidentalis, Linn.

नाम—हिं०, कसौंदी, गु०, काली कसौदरी, म०, काला कासविन्दा। प्र० अं०—पंचांग। व्य० अं०—अन्त्र, पुफ्फुस। दोष—त्रिदोषहर। रसादि—मधुरतिक्तरस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—त्वच्य, कंठ्य, पाचक, विषघ्न, पित्तरेचक, कफघ्न। रोग—विष, आमदोष, दद्रु, प्रमेह, हिक्का, श्वास कासहर, भुने (भृष्ट) बीज ग्राही हैं।

पातालगरुडी Cocculus Villosus, Dc.

नाम—सं०, छिलहिण्ट, महामूला। हिं०, म०, वासणवेल, छिरहटा, गु०, वेवड़ी, वधीनोवेल। व्य० अं०—पंचांग, मूल। प्र० अं०—अन्त्र, धातुरक्त। दोष—त्रिदोषहर; विशेषतः वातकफ। रसादि—तिक्त, शीतवीर्य, मधुर-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विपाकी। गुण—रेचक, अनुलोमन, वृष्य, रक्तशोधक, विषघ्न। रोग—आमवात, त्वचा और रक्तरोग, अपची, गण्डमालाहर।

शिरीष Albizzia Lebbeck, Benth.

नाम—शिरीष, कपीतन, शुकतरुः मृदुपुष्पः, हिं०, सिरस, गु०, सरसड़ो, म०, सिरस, शिरस। व्य० अंग—त्वचा, बीज। प्र० अव० – त्वचा। भेद—कृष्ण-श्वेत। **रसदोष**—मधुरतिक्त कषाय, अनुष्ण, कटुविपाकी, त्रिदोषहर। **गुण-रोग**—विषघ्न, त्वचारोग, दद्रु, पामा नाशक, शोथशामक; बीज :—ग्राही स्तम्भक, वीर्यनिर्बलता में। **योग**—दशांगलेप : बाह्य प्रयोगार्थ।

हृदय तथा रक्तधातु प्रभावक

हृदय बलदायक

अर्जुन Terminalia Arjuna. W & A

नाम—अर्जुनः, पार्थः, ककुभः, हिं०, काहू, अर्जुन, गु०, कड़ायो, अर्जुन साजड़, म०, अर्जुन सादड़ा। व्य० अंग—त्वक्। प्रभा० अव०—हृदय श्लेष्मिक कला। **रसादि**—कषायरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। दोष—पित्तकफ-शामक, वातकोपक, वातलम्। **गुण**—हृदय रसायन, ग्राही, रक्तस्तम्भक, मेदहर। **रोग**—हृदयनिर्बलता, रक्तातीसार, रक्तप्रदर, मूत्रकृच्छ्र, भग्न, रक्तस्राव, प्रमेह नाशक। **योग**—अर्जुनारिष्ट, मात्रा १ से २ तोला, भोजनोत्तर।

कर्पूर Cinnamomum Camphora, Nees.

नाम—कर्पूर, घनसार, हिमाह्व, चन्द्राह्व। **सर्वभाषा**—कपूर। व्य० अंग०—सार। प्र० अव—वात संस्थान। रस—मधुरतिक्त, कटुरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। दोष—वातकफ, पित्तहर। **गुण**—सुगन्धित, शुक्रस्तम्भक, स्वेदल,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्तेजक, वेदना तथा स्थानीयसंज्ञाहर, कृमिघ्न, अनुलोमन, नेत्र्य, हृद्य। रोग—विसूचिका, अजीर्ण-जन्य उदरशूल, मुखदुर्गन्धि, आध्मान, दाह नाशक, चक्षुष्य, तथा लेखन। हृदय निर्बलता तथा शीतांगवस्था में उत्तम। योग—१. कर्पूरासव, मात्रा १० से २० विन्दु तक। २. कर्पूर रस, १-२ गुंजा, अति सारहर।

———

केतकी Pandanus-Odoratissimus, Linn.

नाम—सं०; सूचीपुष्प, क्रकच्छदः, हिं०, केउड़ा, केवड़ा, गु०, केवड़ो म०, केतक, केवड़ा। व्य० अंग—पुष्प, मूल। प्र० अव—हृदय, त्वचा। दोष—कफपित्तशामक। रसादि—मधुरतिक्त, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—वर्ण्य, सौमनस्यजनन, हृद्य, रक्तशोधक। रोग—दुर्गन्धित, स्वेद, शिरःशूल, मानसिक अवसाद, हृदय शैथिल्य, वातिकवेदनाहर, वाजीकरण।

———

कुंकुम Crocus Sativus, Linn.

नाम—कुंकुम, काश्मीरं, घुसृणं, वाल्हीकम्। हिं० गु०, केशर, केसर। म०, केशर, कुंकुम। व्य० अंग—पुष्पगर्भसूत्र;। प्रभा० अव०—वातसंस्थान, यकृदुत्तेजक। रसादि—कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष—त्रिदोषहर, विशेषकर वातकफहर। गुण—उष्ण, उत्तेजक, दीपन, स्निग्ध, वर्ण्य, संग्राहक, रक्तस्तम्भक बल्य। रोग—शिरोरोग, हिक्का, व्यङ्ग विषघ्न, वातकफकास, कृमिहर, कष्टार्त्तव ,शैथिल्यहर।

———

बुन्दः Coffea-Arabica, Linn,

नाम—हिं०, कहवा, काफी, गु० म०, बुन्द दाणा। व्य० अंग—फल-रज, वीज, पत्र, (१-२½ गुंजा)। प्र० अ०—वातनाडी मण्डल, हृदय। दोष—कफपित्त शामक। रसादि—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्तेजक, स्वेदल, मूत्रल, हृद्य। रोग—हृदय तथा वातनाडी दौर्बल्य, ज्वर, वातिक वेदनाएं, शीतांगता, अवसादहर।

कोलकन्दः (वनपलाण्डुः) Scilla-Indica, Baker.

नाम—हिं०, जंगलीप्याज, गु०, पाणकान्दा। व्य० अं०—कन्द। प्र० अ०—हृदय तथा फुफ्फुस। दोष—कफहर, अपित्तल। रसादि—तिक्तकटु, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—कफस्रावक, छेदक, हृदयबल्य, मूत्रल। रोग--जीर्णकासश्वास, पीनस, शोथ, हृदयदौर्बल्यहर। मात्रा--चूर्ण १-२ गुंजा, पानकर (शर्बत) ३०-६० बूंदें।

शतपत्री Rosa Damascena, Mill.

नाम—शतपत्री, कर्णिका, चारुकेसरा, (गुलाब) तरुणी, सर्वभाषा—गुलाब। व्य० अंग—पुष्प, पत्र। प्रभा० अव०—अन्त्र, हृदय। रसदोष—मधुरकषायतिक्तरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। गुण—सर स्निग्ध, वर्ण्य, शीतल, हृद्य, वल्य; स्निग्ध। रोग--विबन्ध, रक्तपित्त, ज्वर में दाह, मुखपाक, रक्तविकार नाशक, क्षय, स्वरभेद, मदात्ययहर।

सितिम्बिका Pyrus-Malus, Linn.

नाम—हिं०, सेव, म०,गु०, सफरचन्द। व्य० अं०-(Apple. एप्पल्) व्य० अं०—फल। प्र० अ०—हृदय, अन्त्र। दोषः—वातपित्तघ्न, कफकर। रसादिः-मधुर, मधुराम्ल, अम्ल भेद। (२) कषायानुरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी (अम्ल-उष्ण)। गुण धर्मः-बृंहण, हृदौर्बल्य, मेध्य, संग्राही, शुक्रल, रोचक। हृदय, आमाशय, अतिसार, वमनहर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

हृदय-अवसादक

करवीर Nerium-Odorum, Soland.

नाम–सं, अश्वमारकः, हिं०, कनेर, गु०, कणेर, म०, कण्हेर। व्य० अं०—मूलत्वक्, (½–१ रत्ती)। प्र० अ०—हृदय। दोष–वातकफहर,। **रसादिः**–तिक्तकषायकटु, उष्णवीर्य, कटुविपाकी,। **गुणः**—ज्वरघ्न, हृदयावसादक, वामक, रेचक, व्रणरोपक। **रोगः**–विषमज्वर, हृदयरोग, (हृदय विश्रामार्थ) शोथहर, त्वचारोग, तथा व्रणरोपण। **योगः**—करवीरादितैल, त्वचारोगहर, व्रणरोपण, (यह उपविष है)।

—–—

हृत्पत्री Digitalis Purpurea, Linn.

नाम–सं० तिलपुष्पी, हृत्पत्री, डिजिटेलिस, शृगालविन्ना। हिं०, रामसिट्टा। व्य० अं०—पत्र तथा सत्त्व। **प्रभा० अव०—हृदय। रसदोष**—तिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी वातकफहर, पित्तल। **गुण-प्रयोग**—मूत्रल, हृद्य, हृदयकी संकोच शक्तिको बढ़ाता है जिससे रक्तप्रक्षेपण सबल होजाता है। साथ ही हृदय के विकास का समय अधिक बढ़ाता है। जिससे रक्त पूर्णतया हृदय में आ-जाता है। वह गति संख्या भी कम करता है। इससे हृदय की मांस पेशियों को विश्राम मिलता है। **रोग**–हृदयविस्तृति, हृदयनिर्बलता, आर्द्रशोथ और जलो-दर में उत्तम है। **योग**--१–पत्र चूर्ण : मात्रा–१/४ से १ गुञ्जा भृशम्, २ से ५ गुञ्जा एकधैव। २–सुरासार : मात्रा ५ से १५ बिन्दु भृशम्। २० से ६० बिन्दु एकधैव।

——

रक्त प्रसादन

कुमारीलता Smilax Glabra, Roxb.

नाम—हिं०, उशबा, देशी सारसा, म०, घोटवेल। व्य० अं०--पंचांग। प्र० अं०—वृक्क, धातुरक्त। **दोष**--त्रिदोष, शामक। **रसादि**--तिक्तरस,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—मूत्रल, त्वच्य, स्वेदल, रक्तशोधन। रोग—वातरक्त, उपदंश, कुष्ठ, प्रमेह, ज्वर, रक्तविकृतिहर।

खदिर Acacia Catechu, W&A.

नाम—खदिर, गायत्री, रक्तसार, कंटकी, बालपत्रः। हिं०, म०, खैर, गु०, खैर, खेरियो। व्य० अं०—सार, काष्ठ। प्रभा० अ०—अन्त्र, धातु-रक्त। रसादि—तिक्त कषाय, शीतवीर्य, कटुविपाकी। दोष—पित्तश्लेष्महर। गुण—रक्तशोधक, ग्राही, विशद, वर्ण्य दन्त्य, कृमिघ्न, कुष्ठघ्न। रोग—त्वचारोग, रक्तदुष्टि, कुष्ठ, मुखरोग, शोथ, अतीसार, वीसर्प, स्थौल्यहर। योग—खदिरारिष्ट।

जलब्राह्मी Herpestris Monniera, H. B &. S

नामः—हिं०, जलनीम, बिरमी, गु०, म०, बाम, वेवड़ी। व्य०अं० पंचांग,। प्र०अ०—त्वचा, धातु-रक्त। दोषः—कफवातशमन। रसादिः—तिक्त, उष्णवीर्य, कुटविपाकी,। गुणः—सर, त्वच्य, रक्तशोधक, मेध्य, दीपन। रोगः—कुष्ठादि त्वचारोग, वातनाड़ी निर्बलता, जीर्ण विवन्ध, ज्वर, आमदोष, अग्निमान्द्य है।

द्वीपान्तर वचा Smilax China

नाम—सर्वभाषा—चोपचीनी, चोवचीनी। व्य० अं०—मूल, प्र० अ० मूत्रमार्ग, रक्तधातु वात। रसदोष—तिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वात कफहर। गुणरोग—मलमूत्रशोधक, दीपन, पौष्टिक, रक्तप्रसादन, स्रोत शोधक, आर्तवजनन, वृष्य, फिरंगरोग, वातरोग, विबन्ध, आमवात, अपस्मार, जीर्णज्वर, उदराध्मान नाशक है।

मंजिष्ठा Rubia Cordifolia, Linn

नाम—मंजिष्ठा, समङ्गा, विकसा, मण्डूकपर्णी, रक्तयष्टिका हिं०, गु०,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मंजीठ, मजीठ, म०, मंजिष्ठ। व्य० अंग—काष्ठ;। प्रभा० अव०—अन्त्र, धातु रक्त। रसदोष—मधुरतिक्तकषाय, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्त शामक।

गुणरोग—विष-शोथहर, गर्भाशयउत्तेजक, वर्ण्य, रक्तशोधक, त्वच्य, त्वचारोग, रक्तातीसार, वीसर्प, प्रमेह, कष्टार्त्तव, यकृत्शोथ, जीर्णज्वरहर। योग—मंजिष्ठादि क्वाथ, महामंजिष्ठादि क्वाथ।

मुण्डीतिका Saphaeranthes Indicus, Linn.

नाम—मुण्डी, श्रावणी, कदम्बपुष्पिका (लघुवृहत् भेदेनद्विधा), हिं०, म०, गोरखमुण्डी। गु०, बोडीयो कल्हार, गोरखमुण्डी। व्य० अंग—पंचांग। प्र० अव०—त्वचा, धातुः—रक्त। रसदोष—मधुरकटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, कटु-विपाकी, वातकफ शामक। गुण—मूत्रल, रक्तशोधन, सर, मेध्य, वेदनास्थापन, यकृदुत्तेजक, गण्डमाला, रक्तदुष्टि, वीसर्प, रक्तपित, मूत्रकृच्छ्र श्लीपद, प्लीहा-वृद्धि, कामलाहरी।

अनन्ता-सारिवा, Hemidesmus Indicus, R. Br.

नाम—सारिवा, श्यामा, शारदी, अनन्ता (श्वेत कृष्ण भेदेन द्विधा) हिं० अनन्तमूल। गु० उपलसरी, कागडियो कुंढेर। म० उपलसरी। व्य० अंग०—मूल। प्र० अव०—रक्त, त्वचा। रसदोष—मधुरतिक्त रस, शीतवीर्य, मधुर विपाकी, त्रिदोषहर। गुण—रक्तशोधन, रसायन, मूत्रल, स्वेदल, संग्राही, दाह शामक, रक्तपित्त, रक्तदुष्टि, त्वचारोग, आमवात, ज्वर, अतिसार, उपदंश, वात-रक्त, कुष्ठ, प्रदरशामक है। अनन्ता उत्तम है। योग—सारिवाद्यासव, सारिवा-द्यरिष्ट। श्यामा—सं० Ichnocarpus Frutescens, R. Br. हिं० कालीसर। म० गु० श्यामालता।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तस्तम्भन

असन Terminalia Tomentosa, W. & A.

नाम—असन, बीजक, बन्धूकपुष्प। हिं०, असन, एन, गु०, एन, म०, सदादा, ऐन,। **व्य० अंग**—सार (निर्यास)। **प्रभा० अव०**—अन्त्र, रक्त-धातु (बीजकका रक्तवर्ण निर्यास कमरकस (kino) कहाता है।) **रसादि**—कटुकषाय, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। **दोष**—कफपित्तनाशक, वातल। **गुण**—रक्तस्तम्भक, संग्राही, त्वच्य, केश्य, कुष्ठघ्न; शोथहर। **रोग**—सार–रक्तातिसार, रक्तपित्त, वीसर्प श्वित्र-प्रमेह स्थौल्यहर। **पुष्पः**– तिक्त, पाचक मधुरविपाकी तथा वातल होते हैं। गलदोष तथा रक्तमण्डल नाशक। **मात्रा** (निर्यास)—४ से १ माशा तक।

अस्थिसंहार Vitis-Quadrangularis, wall.

नाम—सं०, वज्रवल्ली, अस्थिशृंखला, हिं०, हाडजोड़, म०, गु०, हाड-साकेल, वेधारी। **व्य० अं०**-पंचांग। **प्र० अ०**—अन्त्र, धातु—रक्त, अस्थि। **दोष**—वातकफहर, पित्तल। **रसादि**—मधुर अम्लकटु, उष्णवीर्य, कटु (अम्ल) विपाकी। **गुण**—भग्नसन्धानकारक, रक्तशोधक, रक्तस्तम्भक, सर, रुक्ष, वृष्य। **रोग**—अस्थिभग्न, रक्तस्राव, मन्दाग्नि, उदरकृमि, वातरक्त, उपदंशादिहर। **योग**—अस्थिसंहार तैल।

कुसुम्भ Carthamus-Tinctorius, Linn.

नाम-हिं०, कुसुम्भ, गु०, कुसुंबो, करडकुसुम्ब, म० करडई। **व्य०अंग०**-बीज, तैल। **प्र० अ०**-अन्त्र, रक्तधातु। **दोष**—पित्तकफहर, वातल। **रसादि**-कटु, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। **गुण**—रक्तस्तम्भक, कृमिघ्न, वेदनाहर। **रोग**—आमवात, रक्तार्श, उदरकृमि, यकृत्विकारहर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पर्णबीज Bryophyllum Calycinum, Salisb.

नाम—हिं०, पाथरचूर, पत्थरचट्टा, जखमेहयात, गु०, खाटखटुम्बो, म०, घायमारी। व्य० अं०—पत्र। प्र० अ०—वृक्क, धातुरक्त। दोष—वातपित्त-शामक। रसादि—कषायाम्लरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—मूत्रल, व्रण-शोधक रोपक, शोथहर, रक्तस्कन्दन। रोग—मूत्राघात, वस्तिशोथ, वृक्कशोथ, रक्तार्श, उरःक्षत, प्रवाहिका, व्रणादि शामक।

रक्तबोल Calamus-Draco, willd.

नाम—हिं, हीरादखिन, खूनखराबा। व्य० अंग०—निर्यास। १-२ माषा प्र० अव—अन्त्र, रक्त धातु। दोष—पित्तकफशामक। रसादि—कटु कषाय, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—अतिसंग्राही, रक्तस्रावरोधक। रोग—रक्तार्श प्रवाहिका, अतिसार, उरः क्षत, रक्तप्रदरादि शामक तथा व्रणरोपण।

लज्जालु Mimosa Pudica, Linn.

नाम—सं०, नमस्कारी, शमीपत्रा, रक्तपादी, हि०, लाजवन्ती, गु०, लजा-मणी, रिसामणी, लाजरी, म०, लाजालु, लाजरी। व्य० अंग—पंचांग, बीज। प्र० अ०—अन्त्र, रक्तधातु, प्रजननांग। दोष—कफपित्त शामक। रसादि—तिक्तकषायरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—रक्तस्तम्भक, रक्तशोधक, ग्राही, शुक्रस्तम्भन। रोग—अतिसार, शोथ, गण्डमाला, शीघ्रपातहर, बीजः—पिच्छिल, वृष्य होते हैं।

लाक्षा Cucus Lac.

नाम—लाक्षा, पलंकषा, जतुः, वृक्षामयः। रसदोष—कषायरस, अनुष्ण, कटुविपाकी, कफपित्तजित्। गुण-रोग—ग्राही, रक्तस्तम्भक, वर्ण्य, स्निग्ध, लघु

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उरःक्षत, आन्तरिक रक्तस्राव, हिक्का, रक्तपित्त, क्षयजकास-जीर्ण ज्वर, त्वचारोग-हर। योग—लाक्षादि तैल।

वृक्क तथा मूत्रसंस्थान प्रभावक

मूत्र विरजनीय वर्ग

इक्षु Saccharum officinarum, Linn.

नाम–सं०, दीर्घच्छद, असिपत्र, मधुतृण। हिं०, ईंख, ऊख। गु०, शेरडी म०, ऊस, ऊष। व्य० अं०—मूल, रस, घनक्रिया, गुड़, शर्करादि। प्र० अ०—सर्वशरीर, मूत्रोत्पादक अंग। दोष—वातपित्तशमन, कफकर। रसादि–मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। व्युषितरस—अम्ल कषाय, कटुविपाकी, विदाही है। गुण—मूत्रल, वृष्य, बृंहण (धातुवर्धक) सारक, कृमिकर, दाहप्रशमन। रोग—मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, तृषा, दाह, विबन्ध उरःक्षत, शोष, बलक्षयादिहर।

कर्कटी Cucumis Utilissimus, Roxb.

नाम—सं० एर्वारुक, हिं०, ककड़ी, तर, गु०, काकड़ी, म०, काकड़ी। व्य० अं०—फल, बीज। प्र० अ०–वृक्क, मूत्रसंस्थान। दोष—वातकफवर्धक, पित्तशामक। रसादि—मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—गुरु, संग्राही, मूत्रल, दाहप्रशमन। रोग-मूत्रकृच्छ्र, अश्मरी, वस्तिशोथ, रक्तपित्तहर। सूचना—(१) इसका तिक्तभेद भी है। वह प्रयुक्त नहीं होता (२) त्रपुसं (खीरा) कालिंदः—(तबूंभ-Water-Melon) दशांगुलम्—(खबूंभ-.Melon) जाति के फलों तथा बीजों के भी यही गुण धर्म हैं। अधिक मात्रा में सेवन से विष्टम्भ करते हैं।

कुश Desmotachya Bippinnata, Stapt.

नाम—सं०, दर्भः, सूच्यग्र, यज्ञभूषणः। हिं०, कुस, मूंज दाभ। गु०, दरभ,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

डाभड़ो, म०, डाभड़ो-दूर्वा। व्य० अंग—मूल। प्र० अ०, वृक्क-मूत्रसंस्थान। दोष—कफपित्तहर। रसादि—मधुरकषाय, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—मूत्रल, स्निग्ध, वस्तिरोगहर, दाहप्रशनन। रोग—मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, दाह, अश्मरी तृषाहर। योग—पञ्चतृणमूल-कुश (दर्भ), काश, शर, दूर्वा, ईक्षुमूल, यह पंचतृणमूल, मूत्रल तथा उक्तगुणयुक्त है।

काश Saccharum-Spontaneum, Linn.

नाम—सं०, काण्डेक्षुः इषीका, हिं, कांस, गु०, कांसड़ो। व्य० अंग—मूल प्र० अव०—वृक्क। दोष—वातपित्तशामक। रसादि—मधुरतिक्त, शीतवीर्य, मधुरविपाक। गुण—मूत्रल, बल्य, रक्तप्रसादन। शेष—कुशवत्। सूचना—शर (मुञ्ज) S. Mumja, Roxb के भी गुण प्रायशः यही है।

दूर्वा Cynodon Dactylon, Pers.

नाम—दूर्वा, शाद्वलं, श्वेत नील दो भेद हैं। हिं०, दूब, गु०, ध्रो, घरो, म०, दुरु, हरियाली,। व्य० अं०—मूल, पंचांग। प्रभा० अव०—वृक्क। रसदोष—मधुरकषायतिक्तरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, कफपित्तहर। गुण-रोग—मूत्रल, शीतल, जीवनीय, वीसर्प, रक्तपित्त, दाह, तृष्णाशामक गर्भस्रावहर। योग—दूर्वादिघृतः, उरः क्षत रक्तपित्तमें।

पुनर्नवा Boerrhavia Diffusa, Linn.

नाम—पुनर्नवा, श्वेतमूला-वर्षाभूः (श्वेत पुनर्नवा)। रक्त पुनर्नवा, क्षुद्रवर्षाभूः, कठल्लिका। हिं०, सांट, लालविसखपरा, गु०, रानी साटोड़ी, म०, घेंटुली, खापरा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वेत पुनर्नवा Trianthema Potendra, Linn,

नाम—हिं०, विसखपरा, गु०, सफेद साटोडी, वखखपरा, म०, वसु। व्य० अं०—मूल, पंचांग। प्र० अव०—वृक्क। रसदोष—श्वेत—तिक्तकषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी वात कफहर। रक्तः-तिक्तरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, पित्तकहफर, वातल। गुण रोग—सर, स्वेदोपग, दीपन, शोथहर, मूत्रल, अनुवासनोपग, कासहर, रक्तप्रदर, पाण्डुरोग, उदररोग, आर्द्रशोथ, वृक्क, तथा हृदयविकृतिजन्य शोथशामक है। श्वेतपुनर्नवामूलरस नक्तान्ध्य नाशक है। योग-पुनर्नवामण्डूर, पुनर्नवारिष्ट, पुनर्नवाष्टक क्वाथ्य।

कोकिलाक्ष Hygrophila Spinosa, T. A.

नाम—कोकिलाक्ष, ईक्षुरक, काण्डुडेक्षु। हिं०, तालमखाना, गु०, एखरो, तालमखाना, म०, कोलसुन्दा, बीजः—तालमखाना। व्य० अंग—बीज पत्र। अव०—वृक्क, प्रजननांग। रसादि—मधुरतिक्तरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, प्रभा०, पत्र, तिक्त। दोष—वातपित्तहर। गुण—बीज, वृष्य, शुक्रशोधन, ग्राही, पिच्छिल, गुरु, शीतल, पत्रः—मूत्रल, शोथहर। रोग—वातशोथ, आमवात, पित्तातिसार, मूत्रकृच्छ्र, वीर्यक्षीणताहर, अश्मरीहर। योग—गोक्षुरादिचूर्ण, वृष्य, वाजीकरण।

मूत्र संक्रमण शामक वर्ग

कंकोल Piper Cubeba, Linn.

नाग—कंकोल, कोल, कटुकाफलम्,। हिं०, कबाबचीनी, गु०, चणकबाब, शीतलचीनी, म०, कंकोल। व्य०अंग-फल, तैल। प्र० अव०—वृक्क, प्रजननांग। रसादि—कटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफघ्न। गुण-उष्ण, तीक्ष्ण, मूत्रकृमिहर, दीपन, लघु,। रोग—पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र, मुखरोग, कफवात, तथा आमरोग नाशक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सिल्हक Liquidamber-Orientale, Mill.

नाम—सं०, तुरुष्क, शिलारस, कपितैल,। हिं०, म०, शिलारस, गु०, शेलारस। व्य० अं०—स्राव। प्र० अ०— त्वचा, फुफ्फुस। **रसदि**—तिक्तकटु मधुररस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। पूतिहर, सुगन्धित, उत्तेजक, जन्तुघ्न। **गुण**— कफच्छेदक, मूत्रल, आर्तवजनन,। व्रणशोधन-रोपण। **रोग**—कण्डु आदि त्वग्रोग, शोथ, मूत्रकृच्छ्र, जीर्णकास, श्वास, पूयमेह हर। **दोषः**—वातकफहर। मात्रा—१—२ माषा। **योग**—पंचगुण तैल।

अश्मरी-शर्कराहर वर्ग

पाषाणभेद Saxifraga Ligulata, Engle.

नाम—अश्मभेद, पाषाणभेद। सर्वभाषा—पाखाणभेद, पं० पठानगंडी। व्य० अं०—मूल, पत्र। प्र० अ०—वृक्क। **रसदोष**—तिक्तकषाय रस शीतवीर्य मधुर-विपाकी, मतान्तरे कटुविपाकी, त्रिदोषहर। **गुण**—मूत्रल, भेदन, अनुलोमन, शोथशामक, व्रणपाचक, मूत्रकृच्छ्र, अश्मरि, योनिरोग, मूत्राघात, अतिसार और वस्तिशोथ शामक है।

वरुण Crataeva Religiosa, H.&.F.

नाम—सं० वरुण, कुमारक, त्रिपर्णः बिल्वपत्रः, हिं०, वरना, वायवरना। गु० वायवरणो,कागडाकेरी। म० वायवर्णा, हाड़वर्णा। व्य० अं०—त्वचा, पुष्प, फल। प्र० भा०—वृक्क। **रसदोष**—कषाय तिक्त कटु, मधुर रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वात कफघ्न, पित्तल,। **गुणदोष**—रक्तशोधक, मूत्रल, भेदन, दीपन, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्रं, गुल्म, वातरक्तशामक, अवृष्य है। पुष्पः—ग्राही, फलः—सर रक्तशोधक,मधुररस, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। त्वचाः—अन्तर्विद्रधिपाचक। **योग**—वरुणादि क्वाथ, वरुणादि गुड़, राजयक्ष्मणि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शैलेयम् Parmelia-Perforata, Ach.

नाम--सं०, शिलापुष्प, हिं०, छैलछबीला, गु०, गवीलो, छैलछबिला। म०, दगडफूल। व्य० अं०--पंचांग। प्र० अ० हृदय-वृक्क। दोषः-कफपित्त-शामक। रसादिः-तिक्तरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण-रक्तप्रसादन, लघु, हृद्य, मूत्रल, दाह, तृषाशामक, अश्मरीभेदन। रोगः-वमन, हृल्लास, शिरः शूल, आमविकार, ज्वर, दाह, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्रहरम्।

मूत्रसंग्रहणीय वर्ग

उदुम्बर Ficus Glomerata, Roxb.

नाम—उदुम्बर, यज्ञाङ्ग, जन्तुफल, हिं०, गुलर, गु०, उंबरो, म०, उंबर, उमरडो। व्य० अंग—त्वक्, फल पंचांग। प्र० अव०—कला वृक्क। रसदि—मधुर कषाय, (पक्व फल मधुर) शीतवीर्य, कटुविपाकी। दोष—पित्त कफनाशक, वातलम्। गुण--त्वक् ग्राही, संकोचक, कृमिहर, व्रणशोधक, रोपक, रक्तस्राव रोधक। पक्व फल : मधुर, शीतल, गुरु, श्लेष्मल, पित्त रक्त शामक। अपक्व फल--रक्तस्तम्भक, ग्राही, मूत्रसंग्रहणीय। रोग--योनि रोग, प्रदरादि, वमन, तृष्णा, व्रण, प्रमेह, मधुमेह, रक्तपित्त, बहुमूत्र नाशक। योग--उदुम्बरसार, व्रण शोधन रोपणार्थं।

विशेष—पञ्चक्षीरी वृक्षों अश्वत्थ, वट, प्लक्षादि, के यही गुण हैं। अश्वत्थत्वचाक्वाथ वमनहर, दाहशामक विशेष हैं।

कपीतन Thespesia Populnea, Soland.

नाम—सं०, पारिशः, गर्दभाण्डः, हिं०, पारसपीपल, गु०, पारसपीपलो, म०, भींडी, भेंडी। व्य० अं०—पंचांग। प्र० अ०--त्वचा, वृक्क। दोष—वातपित्त शामक। रसादि--मधुराम्लकषाय, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—त्वच्य, स्निग्ध, दुर्जर। रोग—त्वचा रोग, रक्तविकृत्ति, शोथहर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जम्बु Eugenia-Jambolana, Lam.

नाम—सं० महाफला, फलेन्द्र। हिं०, जामुन। गु० जांबू। म० जाम्भूल। व्य० अं०—फल, बीज, त्वक्, पत्र। प्र० अव०—अन्त्र, यकृत्, वृक्क। दोष—कफपित्तशमन, वातवर्धन। रसादि—कषाय मधुराम्ल, शीतवीर्य, कटु विपाकी। गुण—रोचक, दाहहर, रुक्ष, संग्राही, विष्टम्भि। रोग—अतिसार, संग्रहणी, रक्तपित्त, बहुमूत्र, मधुमेहहर।

बीजकम् (पीतशाल:) Pterocarpus Marsupium, Roxb.

नाम—हिं० विजयसार,। गु० वीवलो, वीयां। म० बिवला। व्य० अंग—पंचांग, विशेषतः निर्यास। प्र० अ०,—अन्त्र-वृक्क। दोषः—त्रिदोषहर,। रसादिः—कषायतिक्त, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण:—केश्य, त्वच्य, संग्राही, रक्तस्तम्भक। रोगः—प्रमेह; अतीसार, श्वित्र-कुष्ठ, रक्तस्रावहर। सूचना :—यह असन से भिन्न द्रव्य है।

मेषशृंगी Gymnema Sylvestris, R. Br.

नाम —सं०, मधुनाशनी। हिं०, मेढ़ासिंगी, गुडमार, गु०,उत्तरण, चमार-दुधेली, म०, कावली, वोकडी। व्य० अं०—पंचांग, पत्र। प्र० अ०—आमाशय, यकृत्, वृक्क। दोष—पित्तकफहर। रसादि—तिक्त कषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—वामक, कृमिहर, मूत्रगत शर्कराशामक। रोग—प्रमेह, मधुमेह, कुष्ठ, कृमि, दाहहर, कास श्वासे वमनार्थ। फल—उष्णवीर्य, प्रमेहहर।

श्वाससंस्थान प्रभावक वर्ग

कफ-स्रावक

कुरन्टक, पीत सैरयक Barleria Prionitis, Iinn.

नाम—सं०, झिण्टी, आर्तगल, सैरेयक। हिं०, झिण्टी, म०, कोरान्टी,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गु०, काँटा अशेलियो। व्य० अं०—पंचांग। प्र० अ०—फुफ्फुस। दोष—पित्तकफशामक। रसादि—मधुरतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—केश्य ग्राही, रक्तशोधक, दन्त्य, कफघ्न। रोग—वातरक्त, त्वचारोग, कास, श्वास, ज्वर, दाह, उपदंशहर। सूचना—पुष्पों के वर्ण के अनुसार श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण भेद हैं। गुणों में प्रायः समान है।

गोजिह्वा Onosma Bracteatum, Wall.

नाम—गोजिह्वा, गोजी, खरपर्णिनी, हिं०, गाजबान, म० गु०, गावजबान। व्य० अं०—त्वक्। प्रभा० अव०—फुफ्फुस। रसादि—कषाय-मधुरतिक्त कटु-रस, शीतवीर्य, मधुर विपाकी। दोष—कफपित्तहर, वातवर्धक। गुण—शीतल, कफस्रावक, ग्राही, हृद्य, बल्य, दाहशमन। रोग—पित्तरोग (रक्तपित्तादि) कफज कास, प्रतिश्याय, अरुचि, ज्वर नाशक है। वात कफ ज्वरादि में फुफ्फुसों की शोथ को शान्त करती है। योग—गोजिह्वादि क्वाथ्य।

जूफा Hyssopus Officinalis, Linn.

व्य० अंग—पंचांग, पुष्प। प्र० अं०—फुफ्फुस। दोष—वातकफहर। रसादि—तिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—आक्षेप प्रशमन, अनुलोमन, लेखन, कफस्रावक, पित्तरेचक, स्रोतशोधक। रोग—कफज, कासश्वास, प्रतिश्याय, श्वसनक, ज्वर, यकृत्शोथ, उदरकृमि, कामला-पाण्डुहर।

दुरालभा-यवासाच Fagonia Arabica, Linn.

नाम—सं०—दुरालभा, धन्वयासः दुःस्पर्शा, मरुद्भवः। हिं०, धमांसा, गु०, घमांसो, म०, धमांसा। व्य० अं०—पंचांग तथा शर्करा; । प्र० अव०—अन्त्र, फुफ्फुस। रसदोष—कषायतिक्तमधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, पित्तवात कफ शामक। गुणरोग—सर; शीतल, कफस्रावक, मूत्रल, शामक, स्निग्ध, तृष्णा,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

निग्रहण, ज्वर में तृष्णा, जिह्वाशोषनाशक; रक्तपित्त, रक्तप्रसादन, वमन, भ्रम, कास नाशक है। **शर्करा**—धन्वयास या यवाशर्करा (तुरंजवीन, Manna) शीतल श्लेष्महर तथा सर है। **वक्तव्य**—दुरालभागुणैस्तुल्यो बुधैरुक्तो यवासकः। **यवासानाम**—हिं०, जवासा, गु०, जवासो, म०, जवासा।

तवक्षीर Curcuma Angustifolia, Roxb.

नाम—हिं०, तेखुर, अरारुट, गु०, तवखीर म०, तवकीर। व्य० अं०-कन्द, सत्व (१-२ तोला)। प्र० अ०—पाचन संस्थान। **दोष**—वातपित्त शमन। **रसादि**—मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। **गुण**—स्निग्ध, लघु, ग्राही, अनुलोमन, हृद्य, दाहप्रशमन, कफस्रावक। **रोग**—प्रवाहिका, संग्रहणी, रक्तपित्त, हृदयरोग, मूत्रकृच्छ्र, दाह, कासश्वासहरम्।

तालीस पत्रम् Abies Webbiana, Lindle.

नाम—तालीसपत्र, पत्राढ्यम्, धात्रीपत्रमम्। **सर्वभाषा**—तालीसपत्र, तालीशपत्र। व्य० अंग—पत्र। प्रभा० अव०— फुफ्फुस। **रसादि**—तिक्त मधुर कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वात कफहर,। **गुण**—कफस्रावक, स्वर्य, दीपन, कासवेगहर, अनुलोमन। **रोग**–श्वास, कास, गुल्म-यक्ष्मा, अरुचि, अग्निमान्द्य, ज्वरहर। **योग**—तालीसादि चूर्ण; मात्रा २ से ८ माशा तक।

मधुयष्टि Glycyrrhiza Glabra, Linn.

नाम—सं० मधुयष्टी, यष्टीमधु, क्लीतनक, मधुकम्। हिं०, मुलैठी। म०, गु०, जेठीमध, जेष्ठीमध। व्य०अंग--मूल-काष्ठ; सत्व। प्र० अव०–फुफ्फुस, अन्त्र-कण्ठ। **रसदोष**—मधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वातपित्तहर, कफकर। **गुण-रोग**—चक्षुष्य, स्निग्ध, सर, स्वर्य, कफस्रावक, शुक्रल, कास, तृष्णा, प्रतिश्याय,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गलशोथ, शीतपित्त,रक्तपित्तहर। शोणितास्थापक, व्रणशोधकरोपक। योगः–मधुर विरेचक चूर्ण। मात्रा :—३-६ माषा।

———

राजबदरम् Zizyphus Vulgaris, Lamk.

नाम—सं० राजबदरम्, कर्कन्धु, उन्नाव इति लोके, सर्वभाषा-उन्नाब। व्य० अं०—फल। प्रभा० अव०—फुप्फुस। **रसादि**—कषाय, मधुराम्लरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। **दोष**—**आमफलः**–पित्तकफहर; **पक्वः**–पित्तवातहर। **गुण**—स्निग्ध, कफस्रावक, शीतल, दीपन, लघु, सर, पिच्छिल, दाहहर। **रोग**—वातिक कास, श्वास, तृष्णा, गलशोष, दाह, क्षत-रक्तपित्तहर।

———

वनपुष्पकम् Viola odorata, Linn.

नाम—वनपुष्पकम्, कामपुष्पकम्। हिं०, म०, गु०, बनफशाह, बनकशाह। व्य० अं०—पत्र तथा पंचांग। प्रभा० अव०—कण्ठ, नासा, फुप्फुस। **रसदोष**–मधुरकषायरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वातपित्तशामक, कफहर। **गुण**–रक्तप्रसादन, कफनिष्कासक, शोथशामक, सर, स्वर्य, स्वेदन, **रोग**–कास, स्वरभेद, गलशोथ, प्रतिश्याय, फुफ्फुस शोथ, यकृत की पैत्तिक शोथ, कामलादि में। **मात्रा**–क्वाथ २ से ५ तोला तक।

———

वासा Adhatoda Vassica, Nees

नाम—सं०, वासक, भिषक्माता, सिंहिका, आटरुषक। हिं०, अडूसा, वसूटी, गु०, अरडुसो (सी) म०, अडुलसा। व्य० अंग—पंचांग। प्रभा० अव०–फुप्फुस। **रसदोष**—तिक्त,कषायरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्त-हर, वातकारक। **गुणरोग**–स्वर्य, कफच्छेदक, रक्तस्तम्भन, रक्तपित्त, कास, श्वास, ज्वर, क्षय, रक्तस्राव, उरःक्षत, स्वरभेद नाशक है; **पुष्प**–कटुतिक्त, शीत-कास, श्वास, रक्तस्राव शामक। **योग**–वासावलेह, श्वास कासयोः।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्लेष्मातक Cordya Myxa, Roxb.

नाम—श्लेष्मातकः, कर्बुदारः, शैलूषः, पिच्छिलः। हिं०, लसूडा, लिसोड़ा, गु०, वडगूंदा, गुंद्रा, म०, भोंकर। व्य० अंग—त्वक्, फल,। प्रभा० अव०—फुफ्फुस। रसदोष—मधुर कषाय रस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, त्वचा-फल-मधुर-विपाकी, सर, पित्तशामक। गुण-रोग—पिच्छिल, ग्राही, कफस्रावक, स्निग्ध, वातिककास, श्वास, प्रवाहिका, रक्तपित्त, दाह, पित्तरोग नाशक। त्वचा—केश्य, कृमिघ्न है।

———

कफघ्न-कफच्छेदक वर्ग

बृहत् कंटकारी Solanum Xanthocarpum, S & W.

नाम—कण्टकारी, बृहती, सिंही, क्षुद्रभण्टाकी, हिं० बड़ीकटेली। गु० उभीभोयरिंगंणी म० भुई रिंगणी। व्य० अं०—पंचांग। प्रभा० अव०, त्वचा, फुफ्फुस। रसादि—तिक्तकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष—वातकफहर, पित्तवर्धक। गुण—उष्ण, स्वेदल, कफहर, ग्राहि, रक्तशोधन। रोग—श्वास कास, ज्वर, वातरोग, अग्निमान्द्य, ज्वर, मुख वैरस्यनाशक।

———

क्षुद्रा कंटकारी S. Indicum, Linn

नाम—क्षुद्रा, व्याघ्री, निदिग्धिका, हिं०, छोटी कटेली, भटकटैया। गु०, बैठीभोंयरिंगणी, म० डोरलें (लीं)। व्य० अंग—पंचांग। प्रभा, अव, रसादि बृहतीवत्। गुण—सर, कफनिष्कासक, वातकफहर, भेदन, वेदनास्थापन। रोग—श्वास, कास, प्रतिश्याय, वात कफ ज्वर, पार्श्व पीड़ा, पीनसनाशक। योग—१. कंटकार्यावलेह; श्वास कासमें; २. दशमूल क्वाथ ३. व्याघ्री हरीतकी, पीनस—जीर्ण प्रतिश्याय में।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कुष्ठ Sausuria Lapa, Clarke.

नाम—कुष्ठ, रोगाह्वयं, उत्पलम्, परिभाव्यम्। हिं०, कूठ। गु०कठ, उपलेट। म० कुष्ठ। व्य० अं०-मूल; । प्र० अ०-फुफ्फुस, वातसंस्थान। रसादि—तिक्त-कटुमधुररस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी, दोष—वातकफ नाशक। गुण—रक्त-दोषहर, उष्ण, पाचक, कफच्छेदक, शोथशामक, लघु, वातानुलोमक, शुक्रशोधक। रोग—वातकफ के फुफ्फुसीय रोग, श्वास, कास, वातकफ ज्वर, आमवात, फु० शोथ, पार्श्वशूल, कष्टार्त्तवहर; त्वचारोग, वीसर्प नाशक है।

———

पुष्करमूलम् Inula Racemosa, S.&H.

नाम—पुष्करमूल, पद्मपत्र, काश्मीरम्। हिं०, पोहकरमूल, गु०-म० पुष्करमूल पोकरमूल। व्य० अंग—मूल। प्र० अ०—फुफ्फुस। रसदोष—तिक्त-कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफ शामक। गुण-दोष—शोथशामक, शूलहर, कफद्रावक, स्वेदल, अनुलोमन, हिक्का, श्वास कास, पार्श्वशूलदिहरम्।

———

भारंगी Clerodendron Siphonanthes, R. Br.

नाम—भार्ङ्गी, फञ्जी, ब्राह्मणयष्टिका, हिं० भारंगी, बामनहाटी, गु०, भारंग-मूल, म०, भारंग। व्य० अंग—काष्ठ, मूल। प्र० अव०—फुफ्फुस। रसदोष—कषाय तिक्तकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफघ्न। गुणरोग—आमपाचन शोथशामक, कफहर, रुक्ष, लघु, शोथहर, प्रतिश्याय, पीनस, वातकफज्वर शामक है। योग—भार्ग्यादिगुडः—राजयक्ष्मा में, तथा कासहर, पौष्टिक।

———

लवंग Myrtus Coryophylata, T. & W.

नाम—सं० लवंग, देवकुसुमं, श्रीप्रसूनकम्। हिं०, म०, लवंग, लौंग। गु०, लवींग। व्य० अंग—पुष्प, तैल। प्रभा० अव०—महास्रोतस्। रस-दोष—कटुतिक्त रस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, वात कफहर, अपित्तल। गुणरोग—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रोचक, कृमिघ्न, शुक्रस्तम्भक, पाचन, अनुलोमन, कृमिहर, वमन, अतिसार, उदरशूल, आध्मान, कास, हिक्काहर, तथा दन्तशूल, पीनस, प्रतिश्याय, श्लेष्मपूतिहर, । योग--लवंगादि वटीः—कासे, देवकुसुमादि वटी—फिरंगे । लवंग तैलः—अनुलोमक, कृमिघ्न, दन्तशूल शामक ।

———

वंशलोचना

नाम--वंशरोचना, शुभा, तुगाक्षीरी । प्रभा० अव०—फुफ्फुस । रसदोष—मधुर कषाय रस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वातपित्तहर । गुणदोष--बृंहण, बल्य, हृद्य, कासनाशक, रक्तपित्त, दाह, तृष्णा, पित्तजवमन, ज्वर, क्षयजकास, श्वास नाशक । तोग--(१) सितोपलादि, (२) तालीसादि चूर्ण, (३) च्यवनप्राशादि ।

———

शटी Curcuma Zedoarina, Rosc.

नाम—शटी, कर्चूर, द्राविड़ी, गन्धशटी । हिं०, कचुर, नरकचूर । गु०, षट्कचूरो, कचूरो । म०, कचोरा । व्य० अंग--कन्द । प्रभा० अव०--महास्रोतस्, फुफ्फुस । रसदोष—तिक्तकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर (त्रिदोषघ्न) । गुण—ग्राही, दीपन, कफच्छेदक, स्वर्य, शोथहर, अनुलोमन । रोग—कफजकास, मुखरोग, अर्श, अजीर्ण, गुल्म, वमन, हिक्का, प्रतिश्याय, फुफ्फुसशोथ (न्यूमोनियादौ) शामक । योग—शट्यादि क्वाथ, (चरके) । भेदः--(१) शटी उपर वर्णित । (२) गन्धशटी—सर्वभाषा--कपूर काचरी, गुणों में समान ।

———

शृंगी Pistacia-Integrima, Stewart.

नाम--शृंगी, कर्कटशृंगी, कुलीरविषाणिका । हिं०, गु०, काकड़ासिंगी । म०, काकड़ाशिंगी । व्य० अंग०--कृमिज कोष । प्रभा० अव०—फुफ्फुस ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रसदोष—तिक्तकषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर। गुण रोग—ग्राही, शोथहर, वातानुलोमन, कफच्छेदक, फुफ्फुस-शोथशामक, पाचन, वमन, फुफ्फुसशोथ, कास, श्वास, हिक्का, अतीसार, क्षयजकासहर। योग—शृंग्यादि चूर्ण, कास श्वास न्यूमोनियादौ।

कास श्वास वेगहर वर्ग

सोम Ephedra vulgaris, Hook.

नाम—सोमलता, सोमवल्ली, यज्ञनेता, द्विजप्रिया, हिं०, ठूठगंठा, गु०, म० सोमलता। व्य० अंग—पंचांग। प्रभा० अन्न—मस्तिष्क, हृदय। रस—तिक्त कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, त्रिदोषघ्न। गुण—श्वासवेगहर, रक्तभारवर्धक, मूत्रल, यकृदुत्तेजक, रक्तस्तम्भक। रोग—श्वासवेग, रक्तभारन्यूनता, आध्मान, रक्तस्राव शामक।

श्लेष्मपूतिहर वर्ग

तैलपर्णी Eucalyptus-Globulus, Labill.

नाम—सं०-तैलपत्र, हिं०, युकेलिप्टस्, म०, तैलडमर, गु०, नीलगरी, व्य० अं०—तैल, ५-१५ बूंद, पत्र। प्र० अ०—त्वचा, फुफ्फुस। दोष—कफवातहर। रसादि—कटुतिक्तकषाय, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—उत्तेजक, स्रोतशोधक, कफस्रावक, कृमिघ्न, कफपूतिहर, स्वेदल, मूत्रल। रोग—जीर्णकास, श्वास, कफ निकालने के लिए, श्लेष्मपूति, कफज प्रतिश्याय, गलशोथ, हृद्दौर्बल्य तथा जन्तुघ्न, सन्धिवातादि शामक।

लोबान Styrax Benjoin

नाम—सर्वभाषा- लोबान, ऊद। व्य० अ०—स्राव। प्र० अव—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फुफ्फुस, त्वचा। दोष—कफ वातशामक, पित्तवर्धक। रसादि—मधुर, कटुअनुरस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—कृमिघ्न, पूतिहर, वेदना, व्रणशामक, मूत्रल, कफच्छेदक, स्वेदल, शोथहर। रोग—श्वास, कास, अर्दितादि वातरोग, पूयमेह, वस्तिशोथ, जीर्णप्रतिश्याय, गर्भाशय, शोथहर तथा मूत्रमार्ग शोधक है। मात्रा—२-८ रत्ती, सत्व १ रत्ती।

सरल Pinus-Longifolia, Roxb.

नाम—(वृक्ष), सं०, नमेरु, सुरभिदारुक, हि०, चीड़, गु०, तेलियो देवदार, म०, सरल। स्राव श्रीवास, सरलस्राव, हि०, गन्ध बिरौजा। व्य० अङ्ग—काष्ठ, तैल, स्राव। प्र० अव—त्वचा, फुफ्फुस, वृक्क। दोष—वातकफहर, रसादि—कटुतिक्त मधुर, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—मूत्रल, मूत्रमार्ग शोधक, जन्तुघ्न, श्लेष्मपूतिहर, कफच्छेदक; त्वच्य, शोथहर, व्रण रोपक शोधक। रोग—शोथ, पूयमेह, कण्डु आदि, त्वचा रोग, जीर्ण कास, श्वास, आमवातादि हर। मात्रा—तैल ३-१० बूंद, स्राव ६-१२ गुंजा।

प्रजनन संस्थान प्रभावक

नारीप्रजननांग प्रभावक

प्रजास्थापन

कमलम् Nelumbium Speciosum, willd

नामः—सर्वभाषाः—कमल अनेक भेद हैं; मुख्य तीनः श्वेत, रक्त, नील। व्य०-अंग—पंचांग, विशेषतया पुष्प, फल। प्रभा० अव० तापकेन्द्र, गर्भाशय। रसादि—मधुर कषाय, तिक्तरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। दोष—कफपित्तहर, वातवर्धक। गुण—बीजः—शीतल; पौष्टिक, गर्भस्थापक, पुष्प मूत्रल, दाहहर, हृदय। रोग—ज्वर, दाह, तृष्णा, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, वमन, वीसर्प, पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र नाशकः पित्त व्याधियों में उत्तम। सूचना (१) कुमुद (पोयणी) तथा कमल की सभी

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जातियों के गुण उपर्युक्त ही हैं। (२) मंखान्नः- (मखाणू-मखाने) भी कमलवत् गुण वाला तथा गर्भस्थापक, बल्य है।

कसेरुकम् Scirpus Grossus, Linn

नाम – सं०, कशेरुक। म०, कचरा। हिं०, कसेरु। व्य० अंग–कन्द। प्र० अ०–गर्भाशय, अन्त्र। दोष—पित्तशामन, वातकफवर्धक। रसादि–मधुर, कषाय, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—शुक्रल, संग्राही, प्रजास्थापन, दाह, छर्दिशमन, गुरु, विष्टम्भि, स्तन्य जनन। रोग–तृष्णा, दाह, वमन, अतिसार, गर्भस्राव, रक्तपितहर।

जीवन्ती (Leptadenia Reticulata.)

नाम—जीवन्ती, मधुस्रवा, पयस्विनी, शाकश्रेष्ठा। हिं०, डोडीशाक, जीवन्ती। म०, खान दोडकी। गु०, डोडी शाक। व्य० अंग--पंचांग। विशेषतः मूल। प्रभा० अव०--सर्वदेह, गर्भाशय। रसादि—मधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। गुण—स्निग्ध, रसायन, ग्राही, लघु, बल्य, चक्षुष्य, रसायन, कफ, वीर्यवर्धक, रक्तपित्त, दाह, क्षत, क्षयनाशक, प्रजास्थापन, गर्भस्राव हर।

पद्मकाष्ठ Prunus Puddum, Roxb.

नाम–सं०, पद्मक, पद्मकाष्ठ, पद्मगन्धि। हि०, पद्माख। म०, गु०, पद्मकाष्ठ। व्य० अंग–काष्ठ। प्र० अ०–गर्भाशय। रसदोष–तिक्त कषायरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, पित्तकफहर। गुण-रोग–लघु, स्निग्ध, ग्राही, स्तम्भक, गर्भस्थापक, पित्तरोग, वीसर्प, दाह, विस्फोट, ज्वर, वमन, रक्तपित्तहर, गर्भस्रावनिवारक तथा गर्भस्थापक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रियंगु Prunus-Mahaleb.

नाम-प्रियंगु, महिलाह्वया, कान्ता, फलिनी, गन्धप्रियंगु। हि०, प्रियंगु। गु०, गहुला। म०, धउंला। व्य० अंग-बीज। प्र० अव०-गर्भाशय, अन्त्र। रसदोष-तिक्त कषायरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, त्रिदोषहर, विशेषत: वातिपत्त। गुणरोग-शीतल, संग्राही, रक्तस्तम्भक, स्वेद-स्रावहर, रक्तातीसार, रक्तप्रदर स्वेद दौर्गन्ध्य, रक्तपित्त, ज्वरमें दाह, तृष्णा, रक्तपित्त वमन हर हैं।

गर्भाशय रसायन

अशोक Saraca Indica, Linn.

नाम-अशोक, ताम्रपल्लव, शोणपुष्प:, वञ्जुल:। **सर्वभाषा**-अशोक, व्य० अंग-त्वक्;। प्रभा० अव०-गर्भाशय, अन्त्र। **रसादि**-कषाय-तिक्त, शीतवीर्य, कटुविपाकी। **दोष**—पित्तकफ शामक। **गुण**—वर्ण्य, ग्राही, रक्तशोधक, गर्भाशय रसायन, रक्तस्तम्भक, विषघ्न। **रोग**—रक्तातीसार, रक्तप्रदर नाशक, भग्नसन्धानकारक, अपची, दाह, शोथ, गर्भस्रावनाशक-योनीशैथिल्य, अनियमित आर्तवहर। **योग**—अशोकारिष्ट, अशोकघृत।

कदली Musa-Sapientum.

नाम—सं०, रम्भा, मोचा, अंबुसार। हिं०, केला, म०, कला, गु०, केला। व्य० अंग—फल, पुष्प, मूल। प्र० अ०—मूत्र तथा प्रजननांग। **दोष**—वातपित्त शामक, कफवर्धक। **रसादि:**—मधुरकषाय, शीतवीर्य, मधुर विपाकी। **गुण**—पौष्टिक, हृद्य, गुरु, मूत्रल, दाहप्रशमन, संग्राही। **रोग**—श्वेतप्रदर, सोमरोग, प्रमेह, रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्रहर। **योग**—कदल्यादिघृत, प्रमेह, सोमरोगहर, गर्भस्थापक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

जपा Hibiscus-Rosa-Sinensis, Linn.

नाम—जपा, त्रिसन्ध्या, हेमपुष्प, ओन्ड्रपुष्प। हिं०, गुडहल, जासुस, गु०, जासुस, म०, जास्वन्द। **व्य० अंग**—मूलत्वक्, पुष्प; । **प्रभा० अव०**—गर्भाशय, कला। **रसदोष**—तिक्तरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, पित्तकफशामक, **गुण**—ग्राही, रक्तस्तम्भक, प्रजास्थापन, (पुष्पःकेश्य) विष, श्वेत प्रदर, रक्तप्रदर नाशक हैं।

लोध्र Symplecos Crataegoides, Ham.

नाम—सर्वभाषाः—लोध, लोदर। **भेद**—(१) सावर लोध्र। (२) पट्टिकालोध्र। **व्य० अंग**—त्वचा। **प्रभा० अव०**—अन्त्र, चक्षु, गर्भाशय। **रसदोष**—कषायरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्त शामक। **गुणरोग**—संग्राही, रक्तस्तम्भक, चक्षुष्य, रक्तपित्त, रक्तार्श, प्रमेह, रक्तपित्त, अतीसार, शोथशामक, तथा नेत्ररोगहर है, गर्भाशयपौष्टिक और प्रदरघ्न है। **योग**-लोध्रासव।

गर्भाशय संकोचक वर्ग

रजः स्रावक.

अर्भक Claviceps Purpurea.

नाम-सं०, मशी, अर्भकं, अर्गटं, अन्नामयः, ताम्बः। गु०, गेरवो, म०, ताम्बः। **व्य० अंग०**-कृमिकोष। **प्रभा० अव०**-गर्भाशय। **रसदोष**-किञ्चत्तिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफघ्न, वातल। **गुण**-गर्भाशय रसायन, उत्तेजक, रक्तस्रावरोधक। **प्रयोग**-यह गर्भाशयगत वात को पुष्ट करके गर्भ की माँस पेशियों की संकोचविकास गति को नियमित करता तथा बढ़ाता है और गर्भाशय की मांसपेशियों को संकुचित करता है। इससे प्रसवानन्तर रक्तस्राव बन्द होता है तथा प्रसव की क्रिया भी शीघ्र होती है। मांसपेशियों की गति से प्रसव वेदना

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

बढ़ती है और बच्चा शीघ्र बाहर आता है। अतः गर्भाशय का मुख विकसित हो हो जाने पर विलम्ब प्रसूति में इसका प्रयोग किया जाता है। योग—तरलसार; मात्रा १० से २० बिन्दु।

उपकुञ्चिका Nigela-Sativa, Linn.

नाम—सं०, कल्वञ्जिका, स्थूलजीरक। हिं०, कलौंजी, मुंगरेला, म०, गु०, कलौंजी। व्य० अंग—बीज। प्र० अ०-गर्भाशय, पाचन संस्थापन। **दोष**—वातकफहर, पित्तकर। **रसादि**—कटु तिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। **गुण**—दीपनपाचन, अनुमोलन, स्वेदल, आर्त्तवजनन, कृमिघ्न, शूलहर, गर्भाशयसंकोचक। **रोग**—अग्निमान्द्य, उदरशूल, आध्मान, कृमि, कष्टार्त्तव (रजः कृच्छ्रता) कटिशूलादिहर।

कलिहारी Gloriosa-Superba, Linn.

नाम—सं०, लांगली, अग्निशिखा। हिं०, कलिहारी, गु०, दूधियाबचनाग, खड्यानाग, म०, खड्यानाग, कललावी। व्य०अ०—कन्द। प्र० अ०—गर्भाशय। **दोष**—वातकफशामक, पित्तवर्धक। **रसादि**—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। **गुण**—वामक, रेचक, तिक्तरसायन, कटुपौष्टिक, गर्भस्रावक, अपरापातक। **रोग**—अर्श, गण्डमाला, विलम्बप्रसूतिहर। **मात्रा**— ½–१ गुंजा तक, अग्निदीपन, ३-४ रत्ती गर्भनिष्कासक। **सूचना**—यह उपविष है, सावधानी से बर्तें।

कर्पासी Gossypium Herbaceum, Linn.

नाम—सं०, भारद्वाजी, तुण्डीकेरी, समुद्रान्ता। हिं०, कपास। गु०, वण, हिरवणी, रुईनुंझाड। म०, कापूस। व्य०अं०—पंचांग, बीज (३-६ माशा)। प्र०अ०—प्रजननांग। **दोष**—मूलः—त्वक्—वातकफशामक, पित्तल। बीज—वातपित्तशमन, कफकर। **रसादि**—मूलः—मधुर कषाय, किञ्चिदुष्ण। बीज—मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। **गुण**—मूलः- आर्त्तव प्रवर्तक, गर्भाशय संकोचक। पत्र—मूत्रल,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कर्णस्रावहर, बीज—स्तन्य, शुक्रजनन। रोग—रजःकृच्छ्रता, कटिशूल, कष्टप्रसूतिहर। बीज—दुग्धक्षीणता, कृशता, शुक्रदौर्बल्यहर, पुष्प—कामलाहर।

पिशाच कार्पासी Abroma Augusta, Linn.

नाम—पिशाचकार्पासी, ओलटकम्वल, पीवरी। हिं०, उलटकम्बल। म०, गु०, ओलोट कंबोल। व्य० अं०—मूल, त्वक्। प्र० अ०—गर्भाशय। रसदोष—किञ्चित् तिक्त कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफघ्न। गुणरोग—गर्भाशय संकोचक, बल्य, तथा शोधक, रजःकृच्छ्रता, रजोरोध नाशक, वेदना स्थापन, प्रसवोत्तर रक्त स्रावरोधक। योग—चूर्णः—मात्रा ३ माशा, क्वाथ या फांट ४-५ तोला।

हरमलः Pegnum Harmala, Linn.

नाम—हिं०, म०, हरमल। गु०, ईसपन्द, सं०, कटभी। व्य० अं०—पंचांग, बीज। प्र० अ०—गर्भाशय। दोषः—वातकफशामक। रसादिः—कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुणः—वातानुलोमन, वेदनास्थापन, रक्तशोधक, आर्तवजनन, स्रोतशोधक। रोगः—कष्टार्त्तव, कटिशूल, उदरशूलाध्मान, गृध्रसी आदि वातव्याधि शामक।

चन्द्रशूर Lepidium-Sativum, Linn.

नाम—सं० पशुमेहन कारिका, चन्द्रिका। हिं०, चनसूर, हालिम, हालों,। गु०, अशेलियो। म०, अहालीव। व्य० अं०—बीज १-३ माशा। प्र० अव०—गर्भाशय, अन्त्र। दोष—वातकफहर,। रसादिः—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुणः—सुगन्धित, अनुलोमन, दीपन, पाचन, ग्राही, आर्त्तवजनन शूलप्रशमन। रोगः —उदराध्मान, शूल, कटिशूल, योनिशूल, कष्टार्त्तव, हिक्का, कासश्वासहर। योगः—चतुर्बीज-(मेथिका, चन्द्रशूर, कालाजाजी, यवानिका) यह अनुलोमन, शूलप्रशमन, कटिशूल, कष्टार्त्तवहर है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मेथिकाः–Trigonella-Foenum-Graecum, Linn.

नाम—सर्वभाषा—मेथी । व्य० अंग०—बीज, पत्र, । प्र० अ०—गर्भाशय, अन्त्र। दोषः—वातकफहर, पित्तकर। रसादिः—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी । गुणः—दीपन-पाचन, अनुलोमन, कृमिघ्न, शूलप्रशमन, रजःस्रावक, अवृष्य । रोगः—उदराध्मान, शूल, गुल्म, अतिसार, कष्टार्त्तव, कटिशूल, उदरकृमि तथा जीर्ण-अहिफेन विषहर है ।

पुरुष प्रजननांग प्रभावक

शुक्रोत्पादक--वृष्यवर्ग

उटंगण Acanthodium-Hirtim,

नाम—सं० उताङ्गन । हिं०, म०, उटिंगण, गु०, ओटींगण, खडकतिरा । व्य० अं०—बीज । प्र० अव०--शुक्रप्रजननांग । दोषः—वातपित्त शामक, कफवर्धक । रसादिः—मधुरतिक्तरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी । गुणः—स्निग्ध, पिच्छिल, शुक्रप्रजनन, वाजीकरण, मूत्रल । रोगः—शुक्रक्षीणता, नपुंसकता मूत्रकृच्छ्रताहर ।

कपिकच्छु Muouna Pruriens, Back.

नाम—सं०, कपिकच्छु, आत्मगुप्ता, मर्कटी, शूकशिम्बी, हिं० । कौंच, केंवांच, गु०, कौचा, कवच, म०, खाजकुहिली । व्य० अं०—बीज । प्र० अ०—प्रजनन अवयव । रसादि—मधुरतिक्तरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी । दोष—वातपित्तशामक, कफवर्धक । गुण—वृंहण, वृष्य; गुरु, स्तन्यवर्धक, प्रभूत मलकर, । रोग—वीर्यक्षीणता, श्लेष्मक्षीणता, वातरक्त, रक्तपित्त, प्रमेह, प्रदरहर । रोम—गण्डुपद कृमिहर । योग—वानरीगुटिकाः—मात्रा १ माशा, वाजीकरणार्थं ।

११

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गोक्षुरु Tribulus Terestris, Linn,

नाम—सं०, गोक्षुरु, त्रिकंटक, श्वद्रंष्ट्रा, स्वादुकंटक, हिं०, मीठा गोखुरु, गु०, बैठा गोखुरु, न्हाना गोखुरु, म०, सराटे-काँटेगोखुरु। **भेद**—मधुरतिक्त, मधुरका प्रयोग। **व्य० अं०**—पंचांग, बीज। **प्र० अ०**-वृक्क, प्रजनन संस्थान। **रसादि**—मधुर रस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। **गुण**—बल्य, बृंहण मूत्रल, दीपन, प्रजास्थापन, हृद्य। **रोग**—प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पूयमेह, क्षीणता, वीर्य-क्षीणता, वातरक्त, वस्तिरोग, वस्तिशोथ, अश्मरी, नाडीदौर्बल्यहर। **योग**—गोक्षुरादि गुग्गुल, दशमूल क्वाथ।

———

तालमूलीद्वयम्

श्वेत तालमूली, मुशली Chlorophytum Arundinaceum, Baker.

नाम—हिं०, सफेद मुसली, गु०, धोली मुसली, म०, पांढरी मुसली।

कृष्णमुशली Curculigo Orchoides, Gaertn.

नाम—हिं०, म०, गु०, काली मुशली, कालीमूसली।
व्य० अं०—कन्द। **प्रभा० अव०**—प्रजनन संस्थान। **रसदोष**—मधुरतिक्त, उष्णवीर्य, मधुर विपाकी, वातपित्तशामक। **गुण रोग**—वृष्य, वाजीकरण, पौष्टिक, गुरु, पिच्छिल, मूत्रल। **रोग**—वीर्यक्षीणता, धातुक्षीणता, दाह, श्रम, वात व्याधि-हर। **भेद**—श्वेत मूसली, कृष्णमूसली, कृष्ण उत्तम है, गुणों में समान। **योग**—मूसल्यादि चूर्ण; मात्रा ३ से ६ माशाः वीर्यक्षीणता में।

———

शतावरी Asparagus Racemosus, Willd.

नाम—शतावरी, भीरु, वरी, सहस्रवीर्या। हिं०, सतावर, म०, गु०, शतावरी। **व्य० अंग०** मूल, पत्र। **प्रभा० अव०**—प्रजननांग, सर्वशरीर। **रसदोष**—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मधुरतिक्तरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वातपित्तहर। गुण— वृष्य, पौष्टिक, बल्य, स्तन्यवर्धक, सर, मेध्य, वातबल्य। रोग—मूल–वीर्यक्षीणता, पित्तवृद्धि, रक्तपित्त, क्षय, वातव्याधियां, उन्माद, गर्भस्राव, रक्तप्रदरहर। पत्र–तिक्त, त्रिदोषघ्न, अर्श नाशक। योग—शतावर्यादि चूर्ण।

———

शाल्मली Bombax Malabaricum, DC.

नाम–सं०, शाल्मली:, रक्तपुष्पा, स्थिरायु, तूलिनी। हिं०, लाल साँवर, सेमल, गु०, शेमलों, सीमलो, म०, लाल सांवर। व्य० अंग०—निर्यास, मूल, पुष्प, कंटक। प्र० अ०–अन्त्र, वीर्योत्पादक अंग। **रसदोष**–मधुर कषायरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वातपित्तहर। **गुण रोग**—(१) बालमूल:—सिम्बलमूसलीति लोके पिच्छिल, वृष्य, ग्राही, वीर्यक्षीणता, अतीसार, प्रवाहिका, रक्तपित्तहर बालशोषहर। (२) कंटक—व्यंग नाशक (३) पुष्प—ग्राही रक्तस्तम्भक, अतीसार, रक्तप्रदरादौ। (४) निर्यास-मोचरस—ग्राही, मधुर कषाय रस, कटुविपाकी, स्निग्ध, प्रवाहिका, अतीसार, दाह, रक्तपित्तहर, रक्तस्तम्भक।

———

सुधामूली Eulopia Compestris, Wall.

नाम—सर्वभाषा—सालममिश्री, सालवपंजा। व्य० अं०—मूल, कन्द। प्र० अ०–सर्वशरीर, वृषण:। **दोष:**—वातपित्तशामक, कफकर। **रसादि:**–मधुर, अनुष्ण, मधुरविपाकी। **गुण:**—वृष्य, वाजीकरण, वातनाड़ीबल्य, ग्राही, बृंहण,। **रोग:**—वीर्यक्षीणता, क्षय, वातरोगहर।

———

वाजीकरण वर्ग

शुक्ररेचक

अग्निजार Ambergris

सर्वभाषा:—अम्बर। व्य० अंग–स्राव,। प्र० अ०—पुरुष प्रजननांग।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दोषः—वातकफहर। रसादि—कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुणः—रसायन, उत्तेजक, शीतप्रशमन, वाजीकरण, हृद्य, अनुलोमन, रुच्य, दीपन, ग्राही। रोग—अपस्मार, पक्षाघातादि वातव्यधियां, हृद्दौर्बल्य, षण्ढता, शीतांगतादिहर। योगः—धात्रीरसायन वृष्य, वाजीकरण, हृद्य।

गन्धमार्जारवीर्य Secretion of testicals of Civet.

नाम—(मालावार में) पुनुगु। सर्वभाषा—जबाद। व्य० अं०—शुक्र गन्थियों का स्राव। प्र० अव०—वातसंस्थान, प्रजननांग। दोष—वात कफ शमन। रसादि—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। मात्रा—१-२ माशा। गुण—बल्य, वाजीकरण, उत्तेजक, कण्डुघ्न। रोग—वातनाड़ी, दौर्बल्य, उन्माद, अपस्मार, पक्षाघात आदि वातिक व्याधियों, शुक्रक्षीणता, अनार्त्तव कास, श्वास, हृदयनिर्बलता, शीतांगता और अतिस्वेद शामक।

गन्धमार्जार वृषण Dried Testicals of Beaver or Caster Fiber.

नाम—हिं०, जुन्देबेदस्तर, गन्धविलाब के अण्डकोष। व्य० अं०—अण्डकोश। प्र० अव०—प्रजननांग। सूचना—यह भी गन्धमार्जारवीर्यवत् गुण कारक है।

गुञ्जा Abrus Precatorius, Linn.

नाम—सं०, रक्तिका; काकणन्ती, उच्चटा, गुंजा, हिं०, घुघुंची, रत्ती, गु०, चणोठी, म०, गुंज। व्य० अं०—बीज, मूल। प्र० अ०—प्रजनन संस्थान। रसदोष—तिक्त कषाय, समशीतोष्ण, (पत्र:-मूल,) मधुरविपाकी, बीज—कटुविपाकी। पत्र मूल—स्वर्य; मधुर, शीतवीर्य। गुण—बीज—वृष्य;

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वाजीकरण केश्य, मादक। रोग — शैथिल्य; इन्द्रलुप्त, कण्डु, कृमिनाशक, मूल—कफ स्रावक, फुफ्फुस रोगों में।

वालुकामत्स्य

नाम—हि०, रेगमाही, गु०, सरड़ो, म०, गलोडी। व्य० अं०—पुरुष प्रजननांग। **दोष**—वातकफशामक। **रसदोष**—मधुर (अव्यक्त) उष्णवीर्य, मधुरविपाकी। **गुण**—रुक्ष, बल्य, वृष्य, वाजीकरण, उत्तेजक। **रोग**—वातव्याधि तथा शीघ्रवीर्यपात हर।

शुक्र स्तम्भक वर्ग

आकारकरभः (Anacyclus-Pyrethrum,)

नाम–सं०, अकल्लकर। हिं०, अकरकरा। गु०, अकलकरो, म०अक्कलकरा। व्य० अं०–मूल, काण्ड (४=८ रत्ती)। प्र० अ०–जिह्वा, शुक्रग्रन्थियाँ। **दोष**—वातकफशमन, पित्तकर,। **रसादिः**–कटुरस, उष्णवीर्य; कटुविपाकी। **गुण**—उत्तेजक; रुक्ष, स्रोतावरोधहर, शुक्रस्तम्भन; रोचक, आर्तव तथा लाला स्रावक। **रोग**—कंठ, स्वर, दन्त; जिह्वा के रोग, अर्दित पक्षाघातादिवातरोग; शोथ प्रतिश्याय, शीघ्रशुक्रपातहर। **योग**—आकारकरभादि वटी—शुक्रस्तम्भन। **सूचना**—कूटाकारकरभ (दूसरी वनस्पति) इसके स्थानपर भूल से व्यवहृत होती है। वह उतनी लाभप्रद नहीं हैं।

जातिफलम् Myristica Malabarica, Lamk.

नाम—जातिफलम्, जातिकोषम्, मालतीफलम्। हिं०, जायफल। गु० देशी जायफल। म०, रान जायफल, बाँडा जायफल। व्य० अंग—फल, तैल। प्र० अ०—प्रजननसंस्थान, वातसंस्थान। **रसादि**—कषायतिक्तकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातश्लेष्महर। **गुण**—दीपन, ग्राही, स्वयं, स्तम्भक,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

उत्तेजक, अनुलोमन। रोग—शीघ्रवीर्यक्षरण, आमातीसार, वमन; पीनस, मुख-वैरस्य, आक्षेप, आमवातहर, कासश्वासहर। योग—जातिफलादि चूर्ण—अतिसार-संग्रहणी।

जातिपत्री

नाम—जातिपत्री। हिं०, जावित्री। गु०, म०, जावन्त्री। व्य० अंग—जातिफलत्वक्। प्रभा० अव०—जातिफलवत्। रसादि—तिक्तकटुमधुररस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर। गुणरोग— रोचक, सुरभि, अनुलोमन, तीक्ष्ण, वमन, श्वास, मुखदौर्गन्ध्य, लालास्राव—शोषक, उत्तेजक है।

धूनराजः (Pistacia Lentiscus, Linn.)

नाम—हिं०, रुमीमस्तगी। गु०, म०, मस्तगी, व्य० अंग—निर्यास १-३ माषा। प्र० अ०—प्रजननांग, यकृत्। दोष—वातकफहर। रसादि—मधुरकषाय, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—स्तम्भक, संकोचक, ग्राही, आर्तव-जनन, कफच्छेदक, यकृदुत्तेजक, दन्त्य। रोग—कास-श्वास, रजःकृच्छ्रता, शुक्रक्षीणता, रक्तस्रावरोधक, दन्तवेष्टशैथिल्यहर।

वातनाडी-मण्डल-प्रभावक वर्ग

वातनाड़ी बल्य (मेध्य)

उस्तखद्दूस (Lavandula-Stoechas, Linn)

नाम—हिं०, उस्तखद्दूस, गु०, लवंडरना फूल। व्य० अङ्ग—पुष्प-पत्र, प्रभा० अं०—वात संस्थान, मस्तिष्क। दोष—वातकफ शामक। रसादि—तिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—मेध्य, हृद्य, यकृदुत्तेजक, शोथघ्न। रोग—कास, श्वास, जलोदर, पक्षाघात, अर्दित, वातनाड़ीशूल, गृध्रसी, उन्माद, अपस्मार शामक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कूष्माण्ड Benicasa Cerifera, Savi.

नाम—कूष्माण्ड, पीतपुष्पं, वृहत्फलम् । हिं०, पेठा,कूम्हाडा, गु०, कोलु भुरु कोलु, म०, कोहला । व्य० अंग— फल । प्रभा०अव० — मस्तिष्क । रसादि—मधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी । दोष—वातपित्त हर, कफवर्धक गुण—वृंहण, वृष्य, मेध्य, गुरु मूत्रल; हृद्य । रोग— मूत्रकृच्छ; रक्तपित्त; क्षतक्षीणता, मानसिक रोग, अपस्मार आदि । पुराण—कूष्माण्ड, मधुराम्ल तथा सक्षार होता है। सर्वदोष हर तथा वस्तिशोधक है। योग—वासाकूमाण्ड-खण्ड रक्तपित्ते-वासा कूष्माण्ड खण्डश्वासे ।

ज्योतिष्मती Celestris Paniculata, willd.

नाम—ज्योतिष्मती, कटभी, कंगुनी, पारावतपदी । हि०, मालकंगनी, गु०, मालकांगणी, म०, मालकांगोणी । व्य० अंग—बीज, तैल। प्रभा०-अव०—मस्तिष्क, आमाशय । रसादि—कटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर, पित्तल । गुण—वामक, तीक्ष्ण, मृदुरेचक, मेधावर्धक । रोग—उद-ररोग, मन्दबुद्धिता, स्मृतिभ्रन्श शामक; दीपन; तैल— का अभ्यंग इन्द्रिय शिथिलतामें, अति उष्ण,वाजीकरण ।

ब्राह्मी Hydrochtyle Asiatica, Linn.

नाम—ब्राह्मी, सोमवल्ली, सरस्वती, मण्डूकपर्णी, हि०, ब्राह्मी । गु०, खड-ब्राह्मी । म०, करिवणा । व्य० अंग—पत्र, पंचांग । प्रभा० अव०—मस्तिष्क । रसदोष—तिक्त कषाय मधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर, विशेषतः कफपित्तहर । गुणरोग-स्वर्य, मेध्य, रसायन, रुक्ष, रक्तप्रसादन, त्वचारोग, मस्तिष्क निर्बलता नाशक है। योग - १. सारस्वतारिष्ट २. ब्राह्मीपाक ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

भल्लातक Semecarpus Anacardium, Linn

नाम—भल्लातक, अरुष्कर, अग्निकः, हिं०, भिलावां, गु० भिलामो, भिलामा, म० बिब्बा। व्य० अंग-फल; । प्र० अव०—वातसंस्थान, अन्त्र-यकृत्। **रसदोष**—मधुरकटुकषायरस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी, वातकफहर। **गुण**— अग्निवर्धक, मेध्य, रसायन, शुक्रल; कृमिघ्न, रक्तवर्धक, यकृदुत्तेजक। **फलमज्जाः**—मधुर पित्तघ्न। **वृन्तः**—पित्तघ्न, केश्य, दीपन। **रोग**—अर्श, संग्रहणी गुल्म, प्रमेह, वातरोगऽ-विबन्धहर। **योग**—अमृतभल्लातकी अवलेह, वातरोगों तथा मधुमेहमें।

वचा Acorus Calamus, Linn

नाम—वचा, षड्ग्रन्था, शतपर्विका, गोलोमी। हिं० बच, घोड़वच, गु० वज, घोड़ावज, म० वेखण्ड। **व्य०अं०**—मूल; । प्र० अ०—मस्तिष्क,स्वर। **रसदोष**—तिक्त कटुरस, उष्णवीय, मधुर विपाकी; वातकफहर, पित्तल। **गुणरोग**—स्वर्य; संज्ञा-वेदना स्थापन; मूत्रल, सर; मेध्य, दीपन; स्वरभेद, उदरशूल, आध्मान विबन्ध,आमदोष, अपस्मार; स्मृतिनाश हर है। **भेद**—१. श्वेत, २. अरुण। महती मात्रा में ५-१५ गुंजामें वामक है।

शंखपुष्पी Evolvulus Alsinoides, Linn.

नाम—शंखपुष्पी, मांगल्यकुसुमा, मेध्या, कम्बुपुष्पी। हिं०, शंखाहुलि, शंखपुष्पी। गु०, कालीशंखावली। म०, सांखवेल, शंखाहुलि। व्य० अ०—पंचांग। प्रभा० अव०—मस्तिष्क। **रसदोष**—तिक्तकटुकषायरस, अनुष्ण, मधुर-विपाकी, त्रिदोष शामक। **गुण**—मेध्य, स्वर्य; सर, रसायन; दीपन, स्मृतिवर्धक। **रोग**—अपस्मार, स्मृतिदौर्बल्य, वाणी तथा स्वर के रोगों में लाभ प्रद, विषहर। **योगः**—कुमारकल्याणघृतः—बालशोषादि में।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वातशैथिल्य हर वर्ग

कोशः Silk-Pod.

नामः—हिं०, अबरेशम, रेशमकाकोया। गु० रेशम ना पोता। व्य० अंग०—कंचुक। प्रभा० अव०,—वातसंस्थान, हृदय। **दोषः**—वातकफशामक। **रसादिः**—मधुर (अव्यक्त), उष्णवीर्य, मधुरविपाकी। **गुणः**—हृदय, मस्तिष्क बल्य, दोष द्रावक, कफस्रावक, आमाशय, बलदायक। **रोगः**—अर्दित, पक्षाघातादि वातरोग, हृदय, आमाशय, मस्तिष्क-वातनाडी शैथिल्य, कास, श्वासहर, (भस्म) रक्त स्कन्दन। **मात्रा**—१-३ माषा।

———

कस्तूरी Moschus Moschiferus.

नाम—कस्तूरी, मृगनाभि, मृगमद। **प्रभाव्य० अव०**—वात संस्थान, शुक्रांग, हृदय। **रसादि**—कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी। **दोष**—वातकफ नाशक। **गुण**—उष्ण, उत्तेजक, शुक्रल, हृदयरसायन, गुरु, शीतप्रशमन। **रोग**—हृदयनिर्बलता, वातक्षीणता, शीतांगता, वातकफज्वर, पक्षाघात, वीर्यनिर्बलता नाशक है। **योग**—कस्तूरीभैरवरस, मात्रा १ रत्ती। कस्तूरीवारुणीसारः-मात्रा ५ से १५ विन्दु।

———

मादक (प्रलाप कारक) वर्ग

धुस्तूरः Dattura Stramonium, Linn.

नाम—धत्तूरः, कनकः, उन्मत्तः (श्वेत कृष्ण भेदेन द्विधा)। हिं०, धतूरा। गु०, धोत्रा। म०, धोत्रा। व्य० अव०—पत्र, बीजक; । प्र० अव०,—मस्तिष्क, कला। **रस**—कषाय मधुर तिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर, पित्तवर्धक। **गुण**—मादक, कफ-शोषक, शोथहर, स्तम्भन, वेदनाहर। **रोग**—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

श्वास, आमवात, सन्धिशोथ, शोथ, यूत्ता-लिद्दा, प्रतिश्याय, कफजरोग, शिरः शूलहर। योग—कनकासव। नारदीय लक्ष्मीविलासरस आदि।

भंगा Cannabis Indica, Lamk.

नाम—भंगा, मातुलानी, विजया, हिं०, भांग, गु०, म०, भांग, गांजा। व्य० अंग०—पत्र, निर्यास, बीज। प्र० अव०—मस्तिष्क, अन्त्र। **रसदोष**—तिक्त कषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वात कफहर, पित्तलम्। **गुणरोग**—शोषक, निद्राजनक, हर्षदा, पाचन, दीपन, मादक, स्तम्भक, वाजीकर, अतिसार, अर्श, शीघ्रशुक्रत्तरण, रक्तप्रदर, विसूचिका, रक्तस्राव, अनिद्राहर, अग्निमान्द्य-नाशक और उत्तेजक है। **योग**—विजयचूर्णः--अतिसारे, मदनान्दनमोदकः--वाजीकरण। **मात्रा**—भांगपत्र, १-२ रत्ती, निर्यास, (चरस) ¼ गुंजा, सस्राव पुष्पमंजरी--गांजा ½--१ गुंजा तक।

वेदनास्थापन

अनिद्राहर

अहिफेन Papaver Somniferum, Linn.

नाम—अहिफेनम्, आफूकम्, खसफलम्। हिं०,अफीम, म०, आफू, गु०, अफीण। व्य० अंग—निर्यास, फलत्वक्, बीज। प्रभा० अव०—वातसंस्थान, अन्त्र।। **रसादि**—तिक्त कषाय रस, उष्णवीर्य, कटु विपाकी। **दोष**—कफ-शामक, वातपित्तवर्धक। **गुण**—रसशोषक, संग्राही, वेदनाशामक, निद्राजनक, स्तम्भक, मादक, रुत्त, सूक्ष्म। **रोग**—अतिसार, विसूचिका, वमन, सन्निपात, प्रलाप, अनिद्रा, आन्तरिक, रक्तस्राव, संग्रहणी, सर्ववेदनायें, गर्भस्राव, रात्रीस्वेद-नाशक। **योग**—१. अहिफेनासव; मात्रा ५ से १५ बिन्दु। २. कपूररस; मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक। ३. निद्रोदयरस; मात्रा १ रत्ती से २ रत्ती तक। अन्य अनेक योग हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देवदारू Pinus Deodara.

नाम—देवदारु, भद्रदारु। स्निग्धदारु तथा काष्ठदारु ये दो भेद हैं। प्रथम उत्तम। व्य० अं०—काष्ठ, तैल। प्रभा० अ०—सर्वशरीर-वृक्क। **रसादि**—तिक्तकटु, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर। **गुण**—स्निग्ध, उष्ण, कृमिघ्न, शोथशामक, मूत्रल, स्वेदल, मेदोघ्न, प्रमेह, त्वचारोग; आमवात, सन्धिशोथ तथा फुफ्फुसशोथ, कफदौर्गन्ध्य हर और श्वास शामक है। तैलः-अभ्यंगार्थ प्रयुक्त होता है। **योग**—देवदार्वाद्यरिष्ट।

पारसीक यवानिका Hyocyamus Niger, Linn.

नाम-हिं०, पारसीक यवानी, मदकारिणी, तुरुष्का, हिं०, खुरासानी अजवायन। गु०, खोरासानी अजमो। म०, खोरासानी ओवा। व्य० अंग—बीज, प्रभा० अव०—मस्तिष्क, वात। **रसदोष**—तिक्त कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर, पित्तलम्। **गुण रोग**—स्वापजनन, संग्राही, मादक, वेदनाशामक, पाचन, उदरकृमिघ्न; अनिद्रा, अतिसार उदरशूल, वमन, उदरकृमि नाशक।

सूची Atropa Belladona, linn.

नाम—सं०, सूची, विषकनक, बेलाडोना। बं०, येवरुज। व्य० अंग—पत्र, सत्व। प्र० अ०—वातसंस्थान। **रसदोष**—तिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर। **गुण**—स्रावशोषक, वेदना तथा वेगहर, शोथशामक, स्तन्यस्वेदस्राव अवरोधक। **रोग**—श्वास, कास, शोथ वेदना शामक है। **योग**—सुरासार: मात्रा: ५ से १५ विन्दु तक। **वक्तव्य**—सूचीसत्व एट्रोपीन कहाता है।

वात संशमनक

(वात क्षोभप्रलापादि शामक)

जटामांसी Nardostachys Jatamansi, DC.

नाम—जटामांसी, मांसी, जटिला, तपस्विनी। हिं०, बालछड़, म०-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गु०, जटामांसी। व्य०अंग-मूल। प्रभा०अव०-वात संस्थान। रसादि-तिक्त कषाय मधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी,। दोष—त्रिदोषहर। गुण-मेध्य, बल्य, वातशूलनिवारक, अन्तर्दाहनाशक,अनुलोमन, संज्ञा-स्थापन। रोग-रक्तपित्त, अपस्मार, स्मृतिनाश, वीसर्प, नाशक।

तगरम् Waleriana Wallichi,, DC.

नाम-तगरम् नतम्, कालानुसार्यं, कुटिलं। हिं० तगर, गु० तगर गंठोडा, म०, तगरमूल। व्य० अग०—मूल। प्रभा० अव०—सर्व शरीर। रसादि—मधुर कटु, तिक्तरस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी, त्रिदोषहर। गुण – स्निग्ध लघु. उष्ण; आक्षेपवेदनाहर, संज्ञास्थापन। रोग—वीसर्प, सन्धिवात, अपस्मार, नेत्ररोग, तथा विषशामक, प्रलाप, सन्निपात, शीतांगताहर।

सर्पगन्धा Rauwolfia Serpentina, B & K.

नाम—सं० सर्पगन्धा (नाकुली) चन्द्रभागा, हिं० चान्दमरवा, धवलवरुआ गु०. हरकाई, चन्द्र, म०, अड़कई। व्य० अंग—मूलकाष्ठ;। प्रभा० अव० वातसंस्थान, मस्तिष्क। रसदोष—तिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफ-शामक। गुण—रुक्ष, निद्राकर, रक्तभाराधिक्यहरा, मेध्या, अपस्मार, उन्माद, रक्तभाराधिक्य, अनिद्रा नाशक है। सूचनाः—रुक्ष होनेसे इसे दूध या बादाम तैलके साथ देना चाहिए। मात्राः–रक्तचापे=२–५गुंजा, उन्मादेः—२–४माषा, अनिद्रा—१–२माषा, योग—चन्द्रावलेह।

वात संशमन (अनुलोमन) वर्ग (ख)

गुग्गुलुः Balsamodendron Mukul, Hook.

नाम–सं०, गुग्गुलः, कौशिकः, पुरः, पलंकष–हिं०, गूगल। गु०, गुगल।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

म०, गुग्गुलु। महिषाक्ष,महानील, कुमुद, पद्म, हिरण्य: ये पाँच भेद हैं। मनुष्यों के लिए हिरण्य तथा महिषाक्ष उत्तम हैं। व्य० अंग—निर्यास। प्रभा०-अव०—वात संस्थान। रसादि—तिक्त कटु कषाय मधुर रस, उष्णवीर्य, कटु-विपाकी। दोष—त्रिदोषहर। गुण—तीक्ष्ण, लघु, सर, वृष्य, दीपन, स्निग्ध, रसायन,। नवीनः-बृंहण, पुराणः-मेदनाशक, स्वर्य। रोग—वातव्याधियाँ, आमवात, वातरक्तादि, अपची, कुष्ठ, रज: कृच्छ्रता, निर्बलता नाशक तथा व्रण-रोपक, भग्नसन्धानकारक है। योग—योगराजगुग्गुलु, कैशोरगुग्गुलु आदि आदि; मात्रा ४ रत्ती से १ माशा तक।

निर्गुण्डी Vitex Nigundo, Linn.

नाम—सं०, निर्गुण्डी, सिन्दुवार, (नीलपुष्पी:—निर्गुण्डी; श्वेतपुष्पी :—सिन्दुवार) हि०, नीलनिर्गुण्डी, गु०, नगद, नगोड, म०, नगड़, निर्गुण्डी। व्य० अं०—पंचांग। प्र० अ०—वात संस्थान। रसदोष—कटुतिक्त कषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर। गुण—कृमिघ्न, स्वेदल रुक्ष, वात-वेदना, शोथ शामक, अनुलोमन, है। रोग—वातव्याधियाँ, सन्धिशोथ, गृध्रसी, ज्वर, गुल्म, और आमदोषघ्न, व्रणरोपण है। योग—निर्गुण्डी तैलः, व्रणरोपक शोधक।

प्रसारिणी Paederia Foetida, Linn.

नाम—सं०, प्रसारिणी, भद्रपर्णी, प्रतानिनी, गन्धप्रसारिणी। हिं०,गन्ध-पसरन। म०, प्रसारण, हिरणवेल। गु० नारी, गंधनानोवालो, प्रसारणीलेला। व्य० अं०—पंचांग। प्र० अ०—वातसंस्थान। रसादि—तिक्तरस, उष्णवी-र्य, कटुविपाकी, त्रिदोषहर। गुण—सर, गुरु, बल्य, वामक तथा रेचक, अनुलो-मन। रोग—आमवात, वातशूल, शोथ, वातरक्त, खंज, पंगु, आदि तथा कफनाशक है। योग—प्रसारिणी तैलादि:-बाह्य प्रयोगार्थ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रास्ना Pluchora-Lanceolata, C. B.

नाम—सं०, रास्ना, सुवहा, एलापर्णी, सुरसा। हि०, पत्ररास्ना, गु०, राशना, म०, कौरसन। व्य० अं०-पत्र। प्र० अ०-वात संस्थान। रसदोष—कटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर। गुण—आमपाचन, वातशामक, वेदनाशोथघ्न; आमवात, शोथ, वातरक्त, वातरोग, ज्वर तथा शीतहर है। योग—रास्नासप्तक क्वाथादि।

वृक्षादनी Vanda Roxburghi, R. Br.

नाम—सं०, वृक्षरुहा, बन्दाक,। हि०, बन्दा, म०, गु०, बान्दा। व्य० अंग—पंचांग। प्र० अ०—मूत्र तथा वातसंस्थान। दोष-त्रिदोषहर (वातकफ) रसादि—तिक्तकषाय मधुर,शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—संग्राही, रुक्ष, मूत्रल, रक्तशोधक, रक्तस्तम्भक, तृषा, दाह, अश्मरीहर। रोग-अश्मरी, शर्करा, वातरक्त, रक्तस्राव, मूत्रकृच्छ्र, शोथहरम्।

आक्षेप शमन वर्ग

ऊदसलीब Peonia Emodi, Wall.

नाम—हिं०, म०, ऊदसालप, ऊदसलीब, गु०, ऊदेसालम। व्य० अं०—मूल। प्रभा० अव०—वातसंस्थान, यकृत्। दोष—वातकफहर। रसादि—तिक्तकटु, उष्णवीर्य। कटुविपाकी। गुण—वातनाडीबल्य, आक्षेपवेदना शमन, पित्तसारक, यकृदुत्तेजक, आर्त्तवजनन, मूत्रल। रोग—आक्षेप, अपस्मार, अपतन्त्रक, अर्दित, कम्पवात, पक्षाघातादि वातिक रोग, जलोदर, यकृच्छोथ, कामला, कष्टार्त्तव, वृक्कशूलादिहर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

गुच्छपत्र, सुदाबः Ruta Graveolens, Linn.

नाम–सर्वभाषा-सताप, सिताव, सुदाब । व्य० अंग—पंचांग, । प्र० अ०–यकृत्, आमाशय, दोषः—वातकफहर। रसादि–कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटु विपाकी । गुणः—आक्षेपहर, अग्निदीपन, अनुलोमन, मूत्रल, गर्भाशय संकोचक, यकृदुत्तेजक । **रोग**–कास-श्वास, अपतन्त्रक, उदरशूल आदि के आक्षेपों का शामक, उदरकृमि, कष्टार्त्तव, रजोरोध, मूत्राघातहर।

———

आक्षेप-कारक

कुपीलु Strychnos-Nux-Vomica, Linn.

नाम—कुपीलुः, कारस्करः, विषमुष्टिः, विषतिन्दुकम् । हिं०, कुचला, गु०, झेरकुचला । म०, काजरा । व्य० अंग - फल । प्र० अ०–वातसंस्थान । **रसादि**—तिक्त रस, शीतवीर्य, कटुविपाकी । दोष—कफपित्तशामक, वातलम् । **गुण**—उत्तेजक, अग्निवर्धक, वाजीकरण, ग्राही, लघु, रुक्ष, दीपन । **रोग**—अग्निमान्द्य, हृदयनिर्बलता, वातव्याधियाँ, जीर्णशिरःशूल, आमवात तथा नपुन्सकता नाशक है। **योग**—विषमुष्टि वटीः–मात्रा २ से ४ रत्तीः। अग्नि तुण्डी वटी।

———

ज्ञानेन्द्रिय प्रभावक वर्ग

नेत्र्य

अपराजिता (Clitoria-Terneata, Linn.)

नाम—सं०, गोकर्ण। हिं०, कोयल । गु०, गरणी । म०, गोकर्णा । भेद, (१) नीलपुष्पी, (२) श्वेतपुष्पी । व्य० अंग—पंचांग । प्रभा० अव०—नेत्र, त्वचा । दोष—त्रिदोषहर । रसादि—तिक्तकटु, शीतवीर्य, कटु-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विपाकी। गुण—चक्षुष्य, मेध्य, ज्वरघ्न, त्वग्रोगहर, शीतप्रशमन। रोग–ज्वर, कास, प्रतिश्याय, आमदोष, शोथादिहर।

कतक

नाम—सं०, पयःप्रसादी, चक्षुष्य। हिं०, म०, निर्मली बीज। गु०, कतकड़ो। व्य० अंग—बीज। प्रभा०अव०–चक्षुष्य, अन्त्र। दोष—कफवात-शामक। रसादि—तिक्त कषाय मधुर रस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—चक्षुष्य, छेदन, ग्राही, विकाशी, विशद मूत्रगतशर्कराहर, वामक, दीपन। रोग—नेत्ररोग, रक्तार्श, अग्निमान्द्य, अतिसारादिहर। मात्रा १-३ माषा। वमनार्थ ६ माषा।

नासा-प्रभावक

अपामार्ग Achyranthes Aspera, Linn

नाम—अपामार्ग, किणही, खरमंजरी, प्रत्यक्पुष्पी। हिं०, चिरचिटा, लटजीरा, म०, अघाड़ा, गु०, अघेड़ो। व्य० अं० – पंचांग। प्रभा० अव०—श्वास तथा मूत्रसंस्थान, यकृत्। रसादि–कटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, कफ-पित्तहर। दोष—कफ वातशामक, कफपित्त शोधक। गुण–शिरविरेचक, कफनिष्कासक, मूत्रल, वामक, सर, रक्तसंग्राहक, तीक्ष्ण, पित्तसारक, यकृदुत्तेजक। रोग—रक्तातीसार, अर्श, शिरोरुजा, कास, जलोदर, वृक्कशोथ, तथा कफ के रोगों में, हिक्का, अपची, आमवातहर। योग—अपामार्गक्षार; मात्रा:–४ रत्ती।

कट्फल Myristica Nagi, Thumb.

नाम—सं०, कट्फल, महावल्कल, सोमवल्क। हिं०, कायफल, गु०' काफल, म०, कायफल। व्य० अंग०—त्वक्। प्रभा० अव०—मुख, श्लेष्म-कला, नासा। रसादि—तिक्त कटु कषाय, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष—वात-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कफनाशक, पित्तलम्। गुण—ग्राही, उष्ण, छिक्काजनक, शोथघ्न, शुक्रशोधक, वेदनाहर। रोग—प्रतिश्याय, शिरोगुरुता, मुखकण्ठ शोथ, शूल, व्रण, अतीसार, रक्तार्श, कास, शिरः शूल, वातिकवेदनायें गृध्रसी आदि तथा रक्तष्ठीवनहर।

क्षवक Centipida Orbicularis, Lour.

नाम–सं०, छिक्किका, तीक्ष्णा, घ्राणदुःखदा, हिं०, नकछिंकनी, गु०, म०, नाकशींकणी। व्य० अ०—पंचांग। प्र० अ०—नासिका, शिर। दोष—वातकफशमन, पित्तवर्धक। रसादि—कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—अग्निदीपन, रक्तशोधक, यकृतप्लीहा, वृद्धिहर, कुष्ठघ्न, शिरोविरेचन, कृमिघ्न। रोग—प्रतिश्याय, पीनस, कफजशिरः शूल, अर्द्धावभेदकहर।

त्वचा प्रभावक वर्ग

वर्ण्य

हरिद्रा Curcuma Longa, Linn.

नाम—सं०, हरिद्रा, निशा, पीता, वरवर्णिनी। हिं०, हलदी। गु०, हलदर। म०, हलद। भेद—१. हरिद्रा। २. आम्रगन्धिहरिद्रा, हिं०—आंबा हल्दी, गु०—आंबा हलदर, म०—आंबे हलदर। ३. अरण्यहरिद्राः—हिं०, सफेद हल्दी। गु०, धौली हलदर, वन हलदर। म०, वोडी हलद, रानहलद। ४. दारुहरिद्रा (यकृत्प्रभावकों में व्याख्यात) प्रथमास्त्रयः समानगुणाः, चतुर्थी च भिन्नगुणा। आमग्रन्धि तु विशेषेण त्वच्या। व्य० अं०—कन्द। प्र० अव०—त्वचा-यकृत्। रसदोष—कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी कफपित्तहर। आ० गं०—हरिद्रा :– मधुरतिक्तरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, पित्त शामक, वातल एवं त्वचारोग, कण्डु शोथ-शामक-व्रणरोपण है। गुण रोग—उष्ण, पाचन, दीपन, यकृदुत्तेजक, रक्तशोधक, वर्ण्य, त्वचारोग (कण्डु आदि),

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कामला, पाण्डु, प्रमेह, रक्तदुष्टि, वातरक्त, शीतपित्तशामक है। योग—हरिद्राखण्ड। दशांगलेप। रसादि लेप।

मदयन्तिका Lowsonia-Alba, Lamk.

नाम—हिं०, मेंहदी। म०, गु०, मेंदी। व्य० अंग—पत्र। प्र० अव०—त्वचा, केश। दोष—पित्तशामक। रसादि—तिक्त कषाय, शीतवीर्य, मधुर विपाकी। गुण—केश्य, वर्ण्य, त्वच्य, मूत्रल, दाहप्रशमन, रक्तशोधक, व्रणशोधक रोपक। रोग—मुखपाक, रक्त तथा त्वचाविकार, कुष्ठ, शिरः शूल, दाहादिहर। पुष्प—मेध्य, निद्राजनन।

त्वच्य

(कण्डु कुष्ठादि रोगहर)

वृक्ष करंज Pongamia Glabra, Vent.

नाम—सं०, नक्तमाल, करंज, चिरविल्व, हिं०, करंज, गु०, कणभी, करंज। म०, करंज। व्य०, अङ्ग—तैल, त्वक्। प्रभा०, अव०—त्वचा। रसादि—तिक्त कटुकषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष—पित्त कफ नाशक। गुण—तीक्ष्ण, कृमिघ्न, त्वक् दोष, प्रमेहहर। रोग—दद्रु आदि त्वचारोग, अर्श, व्रण, कफपित्तरोगहर।

चक्रमर्द Casia Alata, Linn.

नाम—सं०, चक्रमर्दः, दद्रुघ्नः, प्रपुन्नाटः। हिं०, पंवाड चकवड। गु०, कुवाडीयो। म०, टांकला। व्य० अङ्ग—बीज, पत्र। प्र० अ०—त्वचा, वृक्क। रसादि—१. पत्रः—मधुराम्लरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, कफशामक। गुणरोग—१. पत्रः—मूत्रल, विष्टम्भि, वातपित्तवर्धक, सारक, कफज्वर, कृमि,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

त्वचारोग नाशक है। २. बीजः—कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर, कण्डु, कृमि, गुल्म, त्वचारोग, दद्रु आदि नाशक है।

———

तुवरक Hydnocarpus-Kurzuii.

नाम—सं०, तुवरक, कटुकपित्थ, हिं०, चालमोग्रा, म०,-कडुकवीठ, कौटी, गु०, चालमोग्रा। व्य० अंग—तैल, बीज; । प्रभा० अव०—त्वचा। रसदोष—कटुकषायरस, उष्णवीर्य, कटु विपाकी, कफ वातनाशक। गुण-रोग—कृमिघ्न, त्वच्य, कुष्ठ, कृमि, दद्रु, त्वचारोग, मधुमेह आदि नाशक है। अधिक मात्रा में उत्क्लेशक है। तैल का मात्रा-५ से ६० विन्दु तक क्रम वृद्धया। बीज चूर्ण— १-३ माषा।

———

वाकुची Psoralea Corylifolia, Linn.

नाम—सं०, वाकुची, अवल्गुजा, कृष्णफला, सोमराजी। हिं०, बावची, गु०, म०, बावची। व्य० अं०—बीज, तैल। प्र० अ०—त्वचा। रसदोष—फलः- कटुतिक्त रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर। पंचांगः- तिक्त कषाय, शीतवीर्य, सर, रक्तपित्तहर। गुण रोग—कुष्ठघ्न (त्वचा रोगहर) दद्रु, पामा, कण्डु, श्वित्रहर। श्वित्र में तैल का त्वचा में सूचीवेधन भी किया जाता है।

———

स्वेदोपग वर्ग

कत्तृण Andropogon Schoenanthis, Linn.

नाम—सं०, कत्तृण, रोहिषम्, भूतिक, सौगन्धिकम्। हिं०, रुसाखास। म०, ओलाचहा, पातीचा, गु०, लीलीचा। व्य० अं०—पंचांग। प्र० अ०—वात संस्थान। रसादि—कटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। दोष—वात कफ-शामक, पित्तलम्। गुण—स्वेदल, पाचक, आमवातघ्न, मूत्रल, स्तन्य-जनन। रोग—वातकफज्वर, कास, प्रतिश्याय, अरुचि, विसूचिका, उदरशूलहर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वक्तव्य—भूस्तृण (गुह्यबीज) भी इसी प्रकार का तृण विशेष है। यह उष्ण, विदाही, मुखशोधक, बहुमल प्रवर्तक और पित्त तथा रक्त दूषक है।

तुलसी Occimum Sanctum, Linn.

नाम—सं० तुलसी, सुरसा, बहुमञ्जरी, देवदुन्दुभिः। हिं० गु०, तुलसी; तुलश, म० तुलस। व्य० अं०—पंचांग; । प्र० अ०-त्वचा। रसदोष—कटु तिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफनाशक, पित्तल। गुणदोष—उष्ण, स्वेदल, शीतप्रशमन, अनुमोलन, शोथहर, रुचिकारक, जन्तुघ्न, विषमज्वर, पार्श्वशूल, प्रतिश्याय, श्वास, ज्वर, हिक्का नाशक।

नक्तरस Sisymbrium Iris, Linn.

नाम—हिं० खूबकलां गु० खाकसी म० खाकशीर, रानतिखी। व्य०-अं०—बीज। प्र० अ०—त्वचा, फुफ्फुस। दोषः—पित्तकफशामक। रसादिः—मधुरतिक्त, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी। गुणः--स्निग्ध, मूत्रल, स्वेदल, कफस्रावक, कफच्छेदक। रोगः--वातकफज् तथा अन्य पिड़िकायुक्त ज्वर, जीर्ण कास, तृष्णा, छर्दि निग्रहण।

मरुबक Origanum-Marjorana, Linn.

नाम—सं० खरपत्र, प्रस्थपुष्पः। हिं० मरुआ, मरवा, गु० मरवो, म० मरवा। व्य० अं०—पंचांग, तैल। प्रभा० अव०—त्वचा, हृदय। दोषः—वातकफहर, पित्तकर। रसादि—कटुतिक्तरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—अनुलोमन, रुचिकारक, कृमिघ्न, स्वेदल, हृदयोत्तेजक। रोगः—वातकफज-ज्वर, प्रतिश्याय, आध्मान, रजः कृच्छ्रताहर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शिग्रु Moringa Pterigospermum Gaertn.

नाम--सं० शिग्रुः, मुरंगी, शोभांजन, भेदः—श्वेत-नील-रक्त। हिं०, सोंहाजना, गु०, सरगवो, सेकटो म०, शेवगा। व्य० अं०-पंचांग। प्र० अ० महास्रोतस्। रसदोष—मधुरकटु रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफघ्न। गुणरोग—तीक्ष्ण, पाचन, कृमिहर, अनुलोमन, स्वेदोपग, शोथघ्न, विदाही, सर, रक्तपित्त प्रकोपक, आन्तरिक-विद्रधिः, अपची, गुल्म, आध्मान, रजःकृच्छ्रता, यकृत् प्लीहावृद्धि, कष्टार्त्तवहर। वक्तव्य—श्वेतशिग्रु बीजको श्वेतमरिच कहते हैं। यह नेत्र रोग-वर्त्मार्श आदिमें प्रयुक्त होते हैं अतः चक्षुष्य हैं।

स्वेदापनयन वर्ग

उशीर Andropogon Squarrosus, Cooke.

नाम—सं० उशीर, वीरणम्, जलदम्। हिं०, खस। गु०, वालो, पीलो वालो। म०, पिंवला वाला। व्य० अंग—मूल, कन्द। प्रभा० अव० - त्वक् वृक्क। रसादि—तिक्त मधुर रस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। दोष—पित्तकफ, नाशक। गुण—पाचन, शीतल, स्वेदल, मूत्रल, लघु, स्वेदापनयन। रोग—ज्वर, आमातिसार, वमन, तृष्णा, वीसर्प, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, दाह, श्रमहर, तथा रक्त प्रसादन। वक्तव्य—लामज्जक इसीका भेद है। वीरणमूल को उशीर कहते हैं।

शालः Shorea-Robusta, Gaertn.

नाम—सं० अश्वकर्ण, धूपवृक्ष। हिं०,—साल, साखू। गु०, म०, शाल। स्राव—राल। व्य० अंग—त्वचा, स्राव, (राल)। प्र० अ०—त्वचा, रक्तधातु। दोष—त्रिदोषहर। रसादि--कषाय, मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—ग्राही, रक्तस्तम्भन, स्वच्य, रुक्ष वर्ण्य, व्रणशोधक--रोपक, जन्तुघ्न, भग्नसन्धानीय, स्राव-हर। रोग—कर्ण, वाधिर्य, प्रदरादि योनिरोग, विद्रधि, व्रघ्न, व्रणहर, कण्डु, कुष्ठ कृमि, रक्तस्राव, विपादिकादिहर।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

शल्लकी Boswellia-Serrata.

नाम—सं०, सुस्रवा, गजभक्ष्या। हिं०,सलई। गु०,—सालेड़ो, धूपड़ो। म०,—सालई। स्राव—कुन्दुरु: १-३ माषा। व्य० अंग—त्वचा, स्राव। प्र०अ०—त्वचा, रक्तधातु। दोष—त्वचा–पित्तकफशामक, कुन्दुरु–वातकफहर। रसादि—कषायतिक्त, मधुर, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—त्वच्य, तीक्ष्ण, व्रणशोधक, रोपण, शोथहर, ग्राही, रक्तस्तम्भक, अनुलोमन, मूत्रल। रोग—जीर्णव्रण, प्रमेहपिडिका, गंडमाला, मुखरोग, अर्श, अतिसार, रक्तार्श, रक्तप्रदर, ज्वर, अतिस्वेद, जन्तुघ्न।

व्रणरोपण वर्ग

मांसरोहिणी Soymida Febrifuga, Adr. & Juss.

नाम–सं०, रोहिणी, प्रहारवल्ली। हिं०, रोहन। म०, रोहिणी। गु०, रोएय। व्य० अं०–त्वचा। प्र० अ०–अस्थि तथा रक्तधातु। दोष–कफपित्तहर। रसादि—कटुकषाय मधुर, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण—भग्नसन्धानीय, रक्तस्तम्भक, ज्वरघ्न, व्रणरोपण। रोग—अस्थिभग्न, ज्वर, प्रवाहिका, अतीसारादि-नाशक।

केश-त्वचास्थ कृमिघ्न

इंगुदी (Balanites-Roxburghii, Pl. Anch.)

नाम—सं०, तापसद्रुम, अंगारवृक्ष। हिं०, हिंगोट, गु०, हिंगोरियो, इंगोरियो, म०, हिंगण। व्य० अंग—फल, तैल। प्र० अव०—त्वचा। दोष—वातकफ शामक। रसादि—कटुतिक्त, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—दीपन, केश्य, त्वच्य, स्रंसन (रेचन) कृमिघ्न। रोग–श्वित्रादि त्वचारोग, बाह्यकृमि (यूकालिक्षा) तथा इन्द्रलुप्तादि हर, शुक्र-व्रलनाशक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

केश्य

तिल Sesamum-indicum, Linn.

नाम—सं०, तिलकः हिं०, तिल, म०, गु०, तल, तिल, तिली। व्य० अं०—पंचांग, बीज, क्षार तैल। प्रभा० अव०—सर्वशरीर, वातसंस्थान। दोष—वातकफ शामक, पित्तल। संस्कार विशेष से त्रिदोषहर। दोषादि—मधुररस, तिक्तकषायानुरस, उष्णवीर्य, मधुर विपाकी। गुण-मेध्य, केश्य, त्वच्य, बल्य, सन्धानीय, अग्निदीपन, व्रणशोधकरोपक, आर्त्तवजनन, रसायन, स्तन्यवर्धक, कृष्णतिल मूत्रसंग्रहण। रोग-वातविकार, अग्निमान्द्य, संग्रहणी, कष्टार्त्तव, वीर्यक्षीणता, रक्तार्शहर, दुग्धवर्धक। कृष्णतिल-रक्तार्श, रक्तस्राव, रोधक तथा बहुमूत्र हर हैं।

नारिकेलम् Cocos Nucifera, Linn.

नामः—सं०, नारिकेलं, कूर्चशीर्षकः, दृढ़फलः, श्रीफलम्। हिं०, नारियल, गु०, नारिएल, म०, (वृक्ष) माड (फल) नारल। व्य० अं०—फल। प्रभा० अ०—वृक्क, सर्वशरीर। रसदोष—मधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वातपित्तहर। गुण—बल्य, बृंहण, वस्तिशोधक; बाल नारिकेल-विशेषकर पित्त शामक और रक्तप्रसादक। नारिकेल जलः-शुक्रल शीतल, मूत्रल है। रोग—रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, पित्तरोग, परिणामशूलघ्न तथा वमन नाशक। योग—नारिकेल लवणः मात्रा ४ रत्ती से ८ रत्ती तक।

सर्वदेह प्रभावक

ताप (ज्वर) हर

अगस्त्यः Sesbania Grandiflora, Pers.

नाम—सं०, बक, मुनिद्रुम, बक्रपुष्प। हिं०, अगस्ता, अगथा, गु०, अगथियों, म०, अगस्ता। व्य० अं०-पंचांग। प्र० अ०-सर्वदेह, शिरश्च।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

दोष-कफपित्तहर, वातल। रसादि-तिक्त कटुरस, अनुष्ण, कटुविपाकी। गुण-रुक्ष, ज्वरघ्न, कफच्छेदक, शिरोविरेचन, शीत प्रशमन। रोग—प्रतिश्याय, पीनस, चातुर्थिकज्वर, कफजकास शिर शूलहर।

किराततिक्त Swertia Chirata, Ham.

नाम-सं०, किराततिक्तः, भूनिम्बः, ज्वरान्तकः। हिं०, चिरायता, गु०, करियातुं, म०, किराईत। व्य० अंग—पंचांग। प्रभा० अव०—सर्वदेह, अन्त्र। रसादि—तिक्तरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्त शामक। गुण—रुक्ष, सर, कृमिघ्न, पित्तसारक, रक्त तथा दुग्धशोधक। रोग—ज्वर, कामला, पाण्डु, कुष्ठ, रक्तदुष्टि, तृष्णा, दाह, अग्निमान्द्य, अर्श, उदरकृमि नाशक। योग—सुदर्शनचूर्ण: मात्रा ४ माषा से १ तोला तक।

गुडूची Tinospora Coridfolia, Miers.

नाम—गुडूची, अमृता, छिन्नरुहा, चक्रलक्षणिका। हिं०, गिलोय, म०, गुलवेल, गु०, गलो। व्य० अं०—काण्ड, सत्व। प्र० अव०—सर्व शरीर, यकृत्। रसादि—तिक्त कषाय कटु, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी। दोष—त्रिदोषहर। गुण—रसायन, अग्निदीपन, बल्य, संग्राही, लघु, रक्तप्रसादन, पित्तस्रावक। रोग—ज्वर, वमन, त्वक् रोग, रक्तदोष, पाण्डु, कामला, रक्तपित्त, और वातरक्त, यकृत्प्लीहावृद्धिहर है। वक्तव्य — गुडूचीसत्त्व-किंचित् मधुर तथा तिक्तरस, पित्त शामक, वातरक्त, ज्वर, वमन, जीर्णज्वर, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डु नाशक है। योग—अमृतारिष्ट, संशमनी वटी, ज्वरहर।

निम्ब Melia Azadirachta, Linn.

नाम-सं०, निम्बः, पिचुमर्द, अरिष्टः, हिं, नीम, गु०, लीबंड़ो-लीमड़ो, म०, कडूनिम्ब। व्य० अंग०—पंचांग। प्रभा० अव०—त्वक्, यकृत, धातु-रक्त।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रस दोष—तिक्त रस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्त शामक, वातल। गुण—रक्त शोधक, कृमिघ्न, नेत्र्य, त्वचारोगहर- शीतल, कुष्ठघ्न, ज्वरघ्न। रोग—रक्तपित्त कण्डु आदि त्वचारोग, ताप, दाह, ज्वर, नेत्ररोगहर और व्रणशोधक। तैल—त्वचारोगशामक और कृमिहर। पत्र—वातल। फल—भेदन, उष्ण, अर्शोघ्न हैं।

पटोल (तिक्त) Trichosanthes Cucurmerina, Linn.

नाम—सं०, पटोल, कर्कशच्छदः, तिक्तः, पाण्डुफलः, । हिं०, कडवा पड़वल, परवल, गु०, कडवां परवल, कडवीपाडल, म०, कडुपरवल। व्य० अंग—पंचांग। प्र० अव०—अन्त्र, धातु रक्त। रसदोष—तिक्त कटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, पित्तकफहर। फल–मधुर विपाकी, त्रिदोषघ्न। गुणरोग—पत्रः—पित्तघ्न। मूल—सर, रक्तशोधक, भेदन, दीपन, अनुलोमक, ज्वर, दाह, त्वचारोग, पाण्डु, कामला, रक्तपित्त नाशक है। योग –पटोलपत्रादिक्वाथ।

पर्पट Fumeria Parviflora, Lam.

नाम—सं०, पर्पट, वरतिक्त। हिं०, पित्तपापड़ा, गु०, पित्तपापड़ो, खड़सलियो, म०, पित्तपापड़ा, पर्पट, शाहतरा। व्य० अं०—पंचांग। प्रभा० अव०—सर्वशरीर, यकृत्। रस–तिक्त, शीतवीर्य, कटुविपाकी, कफपित्तहर, वातल। गुणरोग—संग्राही, शीतल, सर, रक्तशोधक, कृमिघ्न, मूत्रल, स्वेदल, पैत्तिकज्वर, जीर्णज्वर, ज्वरातीसार, भ्रम, दाह, तृष्णाहर, मूत्रकृच्छ्र, यकृत्, विकार हरम्। सूचना—इसका दूसरा भेद 'क्षेत्रपर्पट' खेतपापड़ा है, गुणों में दोनों समान है।

विष Aconitum Ferox, wall.

नाम—सं०, विष, वत्सनाभ, शृंगी। हिं०, बछनाग, मीठा तेलिया। गु०, वसनाग, शिंगडीयो वसनाग। म०, काला बचनाग। व्य० अं०–मूल। प्रभा०-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अव०—त्वचा, हृदय। रसदोष—मधुरकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफहर, पित्तल। गुणरोग—तीक्ष्ण, दीपन, आर्त्तवजननन, शोथहर, स्वेदल, क्षोभक, मूत्रल, ज्वर, प्रतिश्याय, फुफ्फुसादि शोथमें तथा हृदयकी गतिकी तीव्रता को शान्त करती है। कष्टार्त्तव आमवात शोथादिहर। योग–मृत्युंजय, पंचामृत, कफकेतु आदि अनेक रस।

विषम ज्वरघ्न

नियतकालिक ज्वर प्रतिबन्धक

कंटकी करंज Caesalpinia Bonducella, Flemming.

नाम—सं०, कण्टकी करंज, लता करंज, तीरण, कुबेराक्ष। हिं०, कंजा, करंजुआ। गु०, कांचक, कांचका। म०, सागरगोटा। व्य० अंग०—बीजमज्जा। प्रभा० अव०, त्वचा, तापकेन्द्र। रसादि—तिक्तकषायरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, त्रिदोषहर। गुण—कृमिघ्न, रसायन, वातकफशामक, सर। रोग—विषम ज्वर, उदरकृमि, अर्श, वमन, शोथ, आध्मानहर। योग—करंजादि वटी मात्रा ४ रत्तीः—विषम ज्वरहर।

किंकिणी Cinchona Calisaya, wedd.

नाम–सं०, किंकिणी, रक्तत्वचा, तिक्ता। सर्वभाषा–वृक्ष–सिन्कोना, सत्व–कुनैन, क्विनैन। व्य०अं०–त्वचा, सत्व। प्र०अ०–सर्वशरीर। रसदोष–तिक्तरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी, पित्तकफघ्न। गुण— स्थानीयवेदनाहर, तापहर, अग्निवर्धक, शिरःशूल तथा रजःकृच्छ्रता और विषमज्वरनाशक, गर्भाशयोत्तेजक। योग—घनसत्व; मात्रा १ से ४ रत्ती तक। तरलसार; मात्रा ५ से १५ रत्ती तक। सुरासार; ३० से ६० बिन्दु तक। सत्व [कुनीन] मात्रा १ से ४ रत्ती तक। वृक्ष भेद–अनेक हैं।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रोणपुष्पी Leucas Cephatus, Spreng.

नाम—सं०–द्रोणपुष्पी, फलपुष्पा, दीर्घपत्रा। हिं० गुम्मां गु० कूवो, म० तुम्बां। व्य० अं०—पंचांग;। प्र० अ०—सर्वशरीर। रसदोष—मधुरकटु लवणरस, उष्णवीर्य, मधुर विपाकी, कफहर, वातपित्तकृत्। गुणरोग—तापहर, भेदनी, रुक्षा, स्वेदनी, ज्वर, कामला, अर्श, अग्निमान्द्यहर, विषमज्वरघ्नी।

सप्तपर्ण Alstonia Scholaris, R Br.

नाम–सप्तपर्ण, शारदः, विशाल त्वक्।हिं०, सतौना, छतिवन, गु०, सातवण म०, सातवीण। व्य० अङ्ग—त्वचा, घनसत्त्व;। प्र० अ०-सर्वशरीर, त्वचा। रसदोष—तिक्तकषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, त्रिदोषहर। गुण—तापहर, स्निग्ध, सर, त्वचारोग नाशक, दीपन, रक्तशोधक। रोग—विषम ज्वर, आमवात, त्वचारोग, रक्तविकारहर। योग—सप्तपर्ण वटी, विषम ज्वरे।

दाह (ताप) प्रशमन वर्ग

श्वेतचन्दन Santalum Album, Linn.

नाम—सं० चन्दन (श्वेत) श्रीखण्ड, मलयज, गन्धसारः। हिं०, चन्दन, गु०, सुखड, म०, चन्दन। व्य० अंग—काष्ठः-तैल। प्रभा० अव०—वृक्ष तथा ताप। रसादि—तिक्त कषाय मधुररस, शीतवीर्य, मधुर-विपाकी- कफपित्तशामक। गुण—रक्तप्रसादन, दाह, तापहर, रुक्ष, लघु, मूत्रल, मूत्रमार्ग संशोधन, कृमिघ्न, हृद्य, पूतिहर। रोग—पूयमेह, मूत्रकृच्छ्र, अन्तर्दाह, तृष्णा, विष, वमन, ज्वर शामक, मूत्र कृमिघ्न। योग—चन्दनासव, चन्दनादि वटी, रसादि वटी।

रक्त चन्दन Pterocarpus Santalinus, Linn.

नाम—सं० चन्दन (रक्त) रक्तांग, रक्तचन्दन, रक्तसारं। हिं०, लाल-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चन्दन, गु०, रतांजली, म०, रक्तचन्दन। काष्ठोपयोगी है। रसगुणादि— मधुर तिक्तरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, पित्तकफशामक,। गुणाः—शोथघ्न शीतल, रक्तप्रसादन, चक्षुष्यः। रोगः—रक्तपित्त, दाह-तापादि, पैत्तिकविकार ज्वर, भ्रम, वमन नाशक।

चम्पकद्वयम् Michelia Champaca, Linn.

नाम—सं० चाम्पेय, हेमपुष्पः, हिं०, चम्पा, पीलाचम्पा, गु०, रायचंपो, पीलोचम्पो, म०, सोनचांफा, पिंवला चाफा (श्वेतपुष्प दूसरा भेद है-गुण समान) व्य० अंग—त्वचा, पुष्प। प्र० अव—त्वचा, अन्त्र। दोष—कफ-पित्तशमन,। रसादिः—मधुर तिक्तकषायकटुरस, शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण— दाहप्रशमन, त्वच्य, अनुलोमन, मूत्रल, मूलत्वक्-रेचन, आर्त्तवजनन। रोग— ज्वर, विषमज्वर, दाह, तृषा, आमदोष, उपदंश, त्वचारोग, रक्तविकारहर।

क्षीरचम्पक Plumea-Acutifolia, Poir.

नाम—हिं०, चंपा, गुलेचिन, गु०, खुरचांपा, खैरचांपा, म०, खुरचाम्फा व्य० अं०—पंचांग; तैल। प्र० अव०— अन्त्र, त्वचा। दोषः—वातपित्त शामक, कफवर्धक। रसादिः—तिक्तकटुकषाय, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। गुण—आमपाचक, दाहप्रशमन, मूत्रल, रेचक। पुष्प—चक्षुष्य। मूलः—क्षीर—उष्णवीर्य और रेचक है। रोग—रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, कष्टार्त्तव, ज्वर, शोथ आमवातादिहर।

हंसपदी Adiantum Lunulatum, Burm.

नाम—सं०, हंसपदी, त्रिपादी, कीटमारी। हिं०, म०, गु०, हंसराज, व्य० अंग—पंचांग, सत्व। प्र० अ०—त्वचा, सर्वशरीर। रसदोष-मधुरतिक्त, शीतवीर्य, कटुविपाकी, पित्तशामक। गुणरोग-ग्राही, शीतल, मूत्रल, कफघ्न,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

विष, दाह शामक, व्रणरोपक, रक्तपित्त, दाह, अतिसार, लूताविषनाशक तथा उदर कृमिघ्न है।

भूम्यामलकी Phyllanthus- Niruri, Linn.

नाम—सं०, भूधात्री तामलकी, वहुफला। हिं०, भुई आंवला, गु०, भोंय आंबली। म०, भुई आँवली। **व्य० अंग**—पंचांग। **प्र० अ०**—वृक्क, सर्व-शरीर। **दोष**—त्रिदोषहर (कफपित्त)। **रसादि**—तिक्तकषायमधुर शीतवीर्य, मधुर विपाकी। **गुण**ः—लघु, रक्तप्रसादन, मूत्रल, रोचक, रोपण, यकृदुत्तेजक, रसायन। **रोग**—क्षय, प्रमेह, पाण्डु, कामला, रक्तपित्त, तृषा, दाह हिक्काहर।

शीतप्रशमन

अगुरु Aquilaria Agalocha, Roxb.

नाम—सं०, अगुरु, लोह, राजार्ह। म०, अगुरु, हिं०, गु०, अगर। **व्य० अङ्ग**—काष्ठ। **प्रभा० अव०**—मस्तिष्क, तापकेन्द्र। **रसादि**—कटु-तिक्त कषाय, उष्णवीर्य, कटुविपाकी, वातकफशामक। **गुण**—तीक्ष्ण, सुगन्धि, लघु, पित्तल, मेध्य, पित्तस्रावक, त्वच्य, शीतप्रशमन।। **रोग**—वातकफज श्वास-कास, सन्निपात, शीतवात, कृमि तथा त्वचा रोगहर।

रसायनवर्ग (सर्वधातु पोषक)

अष्ट वर्ग

जीवकर्षभकौ मेदे काकोली ऋद्धि वृद्धिके।
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः॥
अष्टवर्गो हिमः स्वादु बृंहणो शुक्रलो गुरूः।
भग्नसन्धानकृत् काम बलास बल वर्धनः॥

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वातपित्तास्त्र तृड् दाह ज्वर मेह क्षय प्रणुत् ।

प्रतिनिधिः—मेदा जीवक काकोली वृद्धि द्वन्द्वेऽपिचाऽसति ।

वरीविदारी चाश्वगन्धा वाराहीं च क्रमात् क्षिपेत् ॥

(२) मेदाऽभावेऽश्वगन्धा स्यात् महामेदेच सारिवा ।

जीवकर्षभकाऽभावे गुडूची च विदारिका ॥

ऋद्ध्यभावे बला ग्राह्या वृद्ध्यभावे महाबला ।

काकोली युगलाभावे निक्षिपेच्च शतावरीम् ॥

व्य० अङ्ग—कन्द । प्र० अ०—सर्वशरीर, प्रजननांग । दोषः—वातपित्त शामक, कफवर्धक । रसादि—मधुर, शीतवीर्य, मधुरविपाकी । गुणः—बृंहण, बल्य, गुरु, शुक्रल, दाह, तृषाहर । रोग—ज्वर, दाह, क्षय, प्रमेह, कृशता, वीर्य क्षीणताहर ।

सूचनाः—पृथक् पृथक् आठों द्रव्यों-जीवक-ऋषभक, ऋद्धि-वृद्धि, मेदा-महामेदा, काकोली-क्षीरकाकोली के गुणभी उक्तही हैं ।

अश्वगन्धा Withania Somnifera, Dunal.

नाम—सं० अश्वगन्धा, हयगन्धा, वरदा । हिं०, असगन्ध । म०, ढोरगुञ्ज, आसन्ध । गु०, आसन्ध, आसगन्ध । व्य० अंग—मूल । प्र० अ०—वीर्योत्पादक अंग तथा सर्व शरीर, वात संस्थान । रसादि—तिक्त कषायमधुररस, उष्णवीर्य, मधुरविपाकी । दोष—त्रिदोषशामक, विशेषतः वातकफ । गुण—रसायन, बल्य, पौष्टिक, स्तन्यवर्धक, वाजीकरण, वातनाड़ी क्षोभ-शोथहर । रोग—क्षत, क्षय, वीर्यक्षीणता, दुर्बलता, बालशोष, मानसिकरोग, निद्रानाश, तथा वातव्याधि शामक । योग—अश्वगन्धारिष्ट, अ० घृत, अ० चूर्ण ।

आमलकी Phyllanthus Embellica, Linn.

नाम—सं०, आमलकी, धात्रीफल, वयस्था । हिं०, आमला । गु०, म०, आंबला, आंवला । व्य० अं०,—फल । प्र०, अव०—सर्व शरीर । रसादि—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लवण अतिरिक्त सर्वरस, विशेषत: अम्लरस, मधुर-अनुरस, त्रिदोष शामक। गुण—वृष्य, रसायन, चक्षुष्य, लघु, रुक्ष, केश्य, सर। व्याधि—पित्तरोग, रक्तपित्त, वीर्य क्षीणता, पलित, वमन, विबन्ध, क्षीणता, भ्रमनाशक, गुल्म, हृदय रोगहर। योग—१ च्यवनप्राश, मात्रा १ तोला, क्षयहर, पौष्टिक। २ त्रिफला: हरीतकी, विभीतक, आमलकी, समान भाग-गुण—प्रमेह, कफपित्त, विषमज्वर, विबन्धनाशक, चक्षुष्य और रसायन।

आम्र mangifera-Indica, Linn.

नाम– सं०, सहकार, रसाल। हिं०, आम। गु०, आम्बो, म०, आम्बा। व्य० अं०—पंचांग। प्रभा० अ०—सर्वधातु, अन्त्र। दोष—(पक्वफल), वातपित्त शामक, कफवर्धक। (पत्रत्वचा-अपक्वफल) वातकफशामक। रसादि—पत्र अपक्वफल, बीजमज्जा—कषायाम्ल, उष्णवीर्य, कटुविपाकी पक्वफल-मधुर कषायानुरस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी। त्वचा –शीतवीर्य, कटुविपाकी। गुण–पक्वफल-वृष्य, बृंहण अनुलोमन। पत्रादि—संग्राही, रक्तस्तम्भक, प्रमेह, बहुमूत्रहर। रोग–क्षय, शोथ, संग्रहणी, अतिसार, प्रदर, प्रमेह, मधुमेहादिहर।

क्षीरिणी Mimusops Hexendra, Roxb.

नाम—सं०, राजादन, फलाध्यक्ष। हिं०, खिरनी। गु०, राय, रायण। म०, राजण, खेर्नी। व्य० अंग—फल, पत्र, त्वक्। व्य० अंग०—सर्वशरीर। दोष—त्रिदोषहर। रसादि—मधुराम्ल कषाय, शीतवीर्य, कटुविपाकी, पक्वफल—मधुरविपाकी। गुण—स्निग्ध, वृष्य, मांसल, त्वचा—ग्राही, विष्टम्भि। रोग—रक्तपित्त, मूर्च्छा, क्षय, दाह, तृष्णाशामक।

द्राक्षा Vitis Venifera, Linn.

नाम-सं०, द्राक्षा, गोस्तनी, मृद्वीका। हिं०, मुनक्का, दाख, गु०, दराख

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

किशमिश, म०, द्राक्ष। व्य० अंग—फल। प्र० अ०—सर्वशरीर। रसदोष-पक्वः—मधुरकषायरस शीतवीर्य, मधुर विपाकी, वातपित्तहर। आमः—अम्ल कषाय, रक्तपित्तप्रकोपक। गुण—मेध्य, स्वर्य, सर, मूत्रल, बृंहण, रुचिप्रद, कोष्ठवायु, क्षय, निर्बलता, ज्वर, दाह, तृष्णा, वातरक्त, मूत्रकृच्छ्र अम्लपित्त, नाशक है विशेषकर पाचक और पौष्टिक है। योग—१. द्राक्षासव। २. द्राक्षारिष्ट ३. एलाद्रिवटी। ४. द्राक्षादि चूर्ण।

———

दुग्ध

नामः—हि०, म०, गु०, दूध। प्र० अ०—सर्वशरीर। रसादि—मधुर, शीत, मधुरविपाकी। गुण—जीवनीय, श्रमहर, बल्य, बृंहण, वृष्य, मेध्यादि, रोग—प्रायः सबको सात्म्य, सर्वरोगों में प्रयुक्त। दोष—वातपित्त शामक, कफकारक।

———

घृतम्

नाम—हिं०, गु०, घी। म०, तूप, घी। प्रभा० अव०—सर्वशरीर, मस्तिष्क। दोष—वातपित्त शामक कफकर। रसादि—मधुर, शीत-वीर्य, मधुरविपाकी। गुण—धातुवर्धक, शुक्रल, परममेध्य, वयः स्थापन। रोग—अपस्मार, स्मृतिभ्रंश शुक्रदौर्बल्य, नेत्रादि रोगहर।

———

बलाचतुष्टयम्

नाम—सं०—१.बला, २. नागबला, ३. अतिबला ४. महाबला। नाम—सं०, बलामहाबला—हिं०,वरियारी,खरैंटी, सहदेवी। गु०,बल,बलदाणावल, चिकणी। अतिबला हि०, कंघी गु०, कांसकी, खपाट, डाब्ली; म०, मुद्रा, करन्डी। नाग-बला—हिं०, नागबला, गंगेरन। गु०, काटालो बल। म०, गुलसकरी। व्य० अंग-बीज-मूल-त्वक्। प्रभा० अव०—प्रजनन अंग। सर्वशरीर। रसदोष—मधुर (कषायरस) शीतवीर्य, लघुविपाकी; पित्त वातहर। गुणदोष—शीत,

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वृष्य, संग्राही, पौष्टिक, प्रजास्थापन, मूत्रल, स्निग्ध, वातपैत्तिक रोग, रक्तपित्त, तृषादाह, वीर्यक्षीणता, रक्तप्रदर, प्रमेह, राजयक्ष्मा, गर्भशोषहर। नागबला विशेषतः भग्नसन्धानकारक, अस्थिक्षय, क्षत, शोषहर है।

मधु-माक्षिकम् Honey.

नाम—हिं०, शहद, गु०, म०, मध। **प्रभा० अव०**—सर्वशरीर। **दोष**—त्रिदोषहर। **रसादि**-मधुर कषाय रस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। **गुण**—योगवाही, लघु, रुक्ष, सन्धानीय, चक्षुष्य। **नवीन**—मधु बल्य, बृंहण। **पुराण**—लेखन, मेदोहर। **रोग**—तृषा; मुखशोष, क्षय, स्थौल्य, मेदहर। अनुपानों के रूपमें अतिउत्तम। योगवाही होने से विविध औषधियों के साथ मिलाने से उनका गुण बढ़ा देता है।

वातामम् Prunus Amygdalus, Baillen.

नाम—**सं०**—वातादः, वातवैरिः, नेत्रोपमफलः। हिं०, बादाम, म०, गु०, बदाम। **व्य० अंग**—बीज तथा तैल। **प्र० अव०**—अन्त्र, सर्वशरीर। **दोष**—वातशामक, कफपित्तवर्धक। **रसादि**—मधुर, उष्णवीर्य, मधुर विपाकी। (तिक्त रस वाला विष है)। **गुण**—बल्य, बृंहण, सर, गुरु, वृष्य, मांसवर्धक। **तैल**—मृदुरेचक भी हैं। **रोग**—पक्षाघातादि वातव्याधियाँ, क्षत, क्षय, कृशताशामक। **सूचना**—यदि बादाम को पीसकर ठंढाई या शर्बत बनाकर सेवन किया जाए तो यह पित्तशामक और मूत्रल हो जाता है।

विदारी कन्द Ipomea Digitata, Linn.

नाम—**सं०**, (१) विदारीकन्द, कन्दवल्ली, और (२) क्षीरविदारी, शुक्लकन्दा, यह दो भेद हैं। द्वितीय उत्तम है। हिं०, विलाईकन्द, विदारीकन्द, म०, भुंई कोहला, गु०, भोंय कोहलुं, विदारीकन्द। **व्य० अंग**—कन्द। **प्रभा० अव०**—प्रजननांग, सर्वशरीर। **रसदोष**—मधुररस, शीतवीर्य, मधुरविपाकी, वात-

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पित्तघ्न। गुण—वृष्य, मूत्रल, स्वर्य, स्तन्यवर्धक, पौष्टिक, वातबल्य। रोग—शोष, क्षय, वातव्याधि, रक्तपित्त, दाह, वीर्यक्षीणता नाशक है।

वाराहीकन्द Tacca Aspera, Roxb.

नाम-सं०, गृष्टिः, चार्माराज्ञुः। हि०, गेंठी, वाराहीकन्द, सुअरकन्द, म०, डूकरकन्द, देवकान्दा, गु०, डुक्करकन्द। व्य० अं०—कन्द। प्रभा० अव०—नर प्रजननांग, सर्वदेह। रसदोष—मधुरतिक्तकटुरस, उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—रसायन, रक्तप्रसादन, वृष्य, अग्निदीपन। रोग—प्रमेह, वीर्यक्षीणता, उपदंश, कुष्ठ, कृमिहर।

वृद्धदारुकम् Argyria Speciosa, Sweet.

नाम-सं०, छागलान्त्री। हिं०, समुन्दरशोष, वरधारा, गु०, वरधारो, समंदरशोष, म०, समुद्रशोक। व्य०अंग०—बीज, पत्र, मूल। प्र० अव०—नरप्रजनांग सर्वदेह। दोष—वातकफ शामक। रसादि—कटु तिक्त कषाय (मधुर अनुरस), उष्णवीर्य, कटुविपाकी। गुण—सर, बल्य, रसायन, स्निग्ध, वृष्य, आमदोषपाचक, व्रणशोथहर। रोग—आमवात, वातरक्त, शुक्रदौर्बल्य, श्वेतप्रदर, प्रमेह हर। बीज या मूल—अधिक मात्रा में कुछ मादक है। पत्र—व्रण शोथ शामक तथा पाचक हैं।

कच्छपकपाल Back-Bone of Turtoise.

नाम—हिं०, कछुवे की खोपड़ी, गु०, काचवो नी हड्डी। व्य० अं०-कपाल-(पृष्ट)। प्र० अव०-अस्थि, सर्वदेह। दोष—वातपित्तशामक, मांस-कफकर। रसादि—मधुर, शीतशीर्य, मधुरविपाकी। गुणादि—स्निग्ध, बल्य, अस्थिवर्धक, क्षय, शोष, रक्तस्राव, उरःक्षत, कास श्वास, अस्थिमार्दवता हर है।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

अथ मिश्रको नाम दशम आदर्शः

इस प्रकरण में औषधियों को रोगों के अनुसार तथा गुण-कर्मानुसार (Accoading to Physiological and Pharmacological actions) वर्गीकृत किया गया है। जिससे छात्रों को स्मरण में सुविधा हो।

द्रव्यों का रोगानुसार वर्गीकरण

(ये औषधियां इन रोगों की शामक हैं।)

ज्वर—विष, त्रायमाणा अतिविषा गुडुची पर्पट सप्तपर्ण करंज कालमेघ स्योनाक पटोल किराततिक्त।

अतीसार—मोचरस कुटज विल्वमज्जा पाठा मुस्तक शुंठी धान्यक अहिफेन।

ज्वरातीसार—अतिविषा मुस्तक इन्द्रयव चित्रक पटोल पिप्पली।

अर्श, रक्तार्श—कुटज नागकेसर रसांजन कृष्णतिल देवदाली वातकफार्श-भल्लातक चित्रक हिंगु त्रिकटु हरीतकी दन्ती सेहुण्डः।

संग्रहणी—मोचरस चित्रक शुण्ठी पिप्पली भल्लातक अजमोदा जीरक हपुषादि।

अग्निमान्द्य—त्रिकट चतुर्जातक हरिद्रा जीरक चित्रक अजमोद।

विसूचिका—हिंगु कपूर पुदिन धान्यक लशुन अर्क लवंग अहिफेन।

कृमिरोग—पलाशबीज पारसीकयवानी काम्पिल्लक, विडंग, शिग्रु, शान्तनं (सेन्टोनीन) अर्कक्षीर।

तृष्णादाह—पर्पट मधुरनिम्बु दाड़िम उशीर कमल धान्यक।

पाण्डु-कामला—कटुकी रसांजन अभया दन्ती कालमेघ हारिद्रा शरपुंखा।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रक्तपित्त-नासारक्तस्राव—उशीर कूष्माण्ड दूर्वा नीलोत्पल वासा मोचरस लाक्षा लोध्र ।

क्षय-क्षय कास—वासा लाक्षा कर्कटी-शृंगी सोम धन्वयास मधुयष्टि कंटकारी ।

रसायन—शतावरी विदारीकन्द आमलकी वंशलोचन अश्वगन्धा गुडूची पिप्पली वृद्धादारुक ।

कास—कासमर्द यष्टिमधु कोलबदरम् धन्वयास यवासा अपामार्ग तालीसपत्र शृंगी श्लेष्मातक बिभीतक तवक्षीर ।

श्वास—वासा कुष्ठ पूष्करमूल शठी सोम पिप्पली लवंग कंटकारी धत्तूरबीज तथा कासोक्त औषधियां ।

हिक्का—कृष्णमरिचधूम्र मयूरपुच्छभस्म वादाम तैल तथा श्वास शामक औषधियां, पिप्पली, कुलिञ्जन ।

स्वरभेद—नागबेलपत्र वचा शुण्ठी महाभरीवचा एला मधुयष्टि खदिरसत्त्व बिभीतक आकारकरभ ।

वमन—एला लाजा बदरफलं निम्बु कपूर धान्यक अब्धिनारिकेल ।

मूर्च्छाहर—लशुन कट्फल नस्य अपामार्ग छिक्किका पलाण्डु ।

उन्माद—शंखपुष्पी ब्राह्मी सर्पगन्धा वचा गौरसर्षप ।

अपस्मार—जटामांसी अश्वगन्धा कूष्माण्ड पंचगव्य ।

वात-व्याधि—रास्ना दशमूल एरण्ड जीवनीयगण लशुन गुग्गुलु कस्तूरी निर्गुण्डी ।

वातरक्त—गुडूची गुग्गुलु गोक्षुरु सुरंजा सारिवा, रक्तशोधक तथा मूत्रलद्रव्य ।

आमवात—स्नोनाक एरण्ड पुनर्नवा गुडुची प्रसारिणी शुण्ठी रास्ना ।

उदरशूल—हिंगु यवानी लवण जीरक कपूर शुण्ठी त्रिवृत् दन्ती पुदिन पारसी-कयवानी इन्द्रायण ।

उदावर्त्त-आनाह—हरीतकी त्रिवृत् आरग्वध हिंगु कपूर ।

आध्मान—एरण्ड हिंगुपत्री, रेचक व अनुलोमन द्रव्य ।

गुल्म—अर्क, आनाह नाशक, अग्निदीपन तथा रेचकद्रव्य ।

हृदयरोग—अर्जुन कस्तूरी हृत्पत्री विषमुष्टि कपूर ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

मूत्रकृच्छ्र—गोक्षुरु पुनर्नवा काकमाचिका कंकोल पंचतृणमूल ।
अश्मरि-शर्करा—उशीर चन्दन पाषाणभेद वरुण ।

मूत्राघात—सर्व अनुलोमन द्रव्य, पलाशपुष्प कंकोल दशमूल ।
प्रमेह—त्रिफला देवदारु हरिद्रा लोध्र गोक्षुरु शतावरी बला ।
मधुमेह—आम्र-जम्बु अस्थि बीज कुंकुम मधुनाशिनी भल्लातक ।
उदररोग—दन्ती त्रिवृत् इन्द्रायण एरण्ड स्नुही मूत्रद्रव्य ।

यकृतत्प्लीहोदर—कटुकी शरपुंखा हपुषा कुमारी रोहीतक यवतिक्ता कालमेघ
शोथ-विद्रधि—निर्गुण्डी धत्तूर तिल रास्ना शिरीष पाषाणभेद एरंड अर्क-पत्र । अन्तः विद्रधि— वरुण ।

गण्डमाला—कांचनारगुग्गुलु सारिवा मुण्डी तथा अन्य रक्त शोधक औषधियाँ ।
व्रण--(शोधक-रोपक) जातिः निम्ब उदुम्बर निर्गुण्डी समुद्र-फेन ।
भगन्दर—गुग्गुलुः द्वीपान्तरवचा शिलाजतु ।

कुष्ठ—(त्वचा रोग) खादिर निम्ब चक्रमर्द वाकुची वृक्षकरंज तुवरक हरिद्रा ।
शीतपित्त—कृष्णमरिच सारिवादि रक्तशोधक तथा त्रिवृत् आदि रेचक द्रव्य गैरिक, गोदन्ती ।

अम्लपित्त—वचा लवण मुलैठी शतपुष्पा शतपत्री आदि ।
वीसर्प—शिरीष मुलैठी आमलकी उशीर उत्पल अनन्ता चन्दन देवदारु किरात ।
इन्द्रलुप्त—धत्तूर निम्बबीज भृंगराज करंजबीजमजा ।

गुदभ्रंश—दाड़िमफलत्वक् बब्बूल चांगेरी लोध्र माचिका ।
मुखशोथ—खदिर शुण्ठी लवंग इरिमेद वचा कट्फल ।

प्रतिश्याय-पीनस—तुलसी रोहिष आर्द्रक यष्टिमधु वचा चित्रक हरीतकी कृष्ण-मरिच, वनफशा ।

शिरःशूल-शिरोगुरुता—कट्फलनस्य, अपामार्गनस्य, धत्तूर, हिज्जलं, पारसीकयवानिका, विषमुष्टि ।

प्रदर (रक्तः श्वेत)—पद्मकाष्ठ लोध्र मोचरस कांचनार असननिर्यास लाक्षा धातकी पूग नागकेसर कदली अशोक स्फुटिका, गैरिक, शंखजीरक ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

रजःकृच्छ्रता—कार्पास चतुर्बीज कालाजाजी पिशाचकार्पासी वंशः गर्जरबीजानि मिश्रेया, अन्नामय (अर्गट)।

प्रसूत ज्वर—देवदारु दशमूल शुंठी जीरक किराततिक्त।

गर्भपात-स्राव-निवारक—पद्मकाष्ठ वटशुंगा उशीर कमल।

सोमरोग—प्रमेहवत्।

बहुमूत्र—कृष्णतिल उदुम्बरफल वटफलादि।

आन्त्रिक ज्वर—(मन्थर ज्वर) द्राक्षा पर्पट उशीर मुस्तक पटोलतिक्त गुडूची।

वात-कफ-ज्वर—शटी पुष्करमूल भारंगी कंटकारी शालपर्णी पृश्निपर्णी शृंगी पिप्पली गोजिह्वा कुष्ठ।

सन्निपात—(कर्कोटक, न्यूमोनिया) शठी कुष्ठ पुष्करमूल कस्तूरी मधुयष्टि द्राक्षा शृंगी अपामार्ग शुंठी।

विषम ज्वर—कटुकी अतिविषा त्रायमाणा सप्तपर्ण वत्सनाभ दमनक लताकरंज धत्तूरबीज सिन्कोना।

प्रवाहिका—कुटज पाठा एरण्डतैल मुस्तक पिप्पली, ईषद्गोल मलंगबीज।

पाषाणगर्दभ—अरण्यजीरक (कालोजीरी) शृँग धत्तूर शिरीष अर्कमूल।

नेत्ररोग—त्रिफला, रसाञ्जन, लोध्र, खाखसफलत्वक् कतक।

रक्तभाराधिक्य—सर्पगन्धा, दशमूल, सोमलता सुवर्ण।

अनिद्रा—अहिफेन, भंगा, अश्वगन्धा, सर्पगन्धा।

विबन्ध—त्रिवृत, ऐन्द्री, एरण्डतैल, स्नुहीदुग्ध, आरग्वध।

पूयमेह—कंकोल, चन्दन, देवदारु, गोक्षुरु, हेमक्षीरी।

दन्तोष्ठरोग—वकुल, इरिमेद, खदिर लवंगतैल, कपूर,।

मस्तिष्करोग—अपस्मार-उन्माद, मेध्य वचा शंखपुष्पी ब्राह्मी सर्पगन्धा, सुवर्ण, पंचगव्य।

अनिद्राहर—अनिद्रा, अश्वगन्धा वेदनास्थापक सर्पगन्धा, भांग।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्यों का कर्मानुसार वर्गीकरण "क" भाग.

(अन्तः परिमार्जन में प्रयुक्त)

पाचक संस्थान (महास्रोतस्) प्रभावक

Classification according to Pharmacological Actions.

Affecting Digestive System, Alimentary Canal.

१. दन्त्य Dentifrice.:—

(A) शोधकः— (Dental-Disinfectant.)	करञ्ज, तुम्बुरु, निम्ब, बब्बूल, विट्खदिर।
(B) दृढतादायकः— (Dental Astringent.)	त्रिफला, वकुल, मायाफल, आकारकरभः।
२. लालास्रावक (Sialagogues)	आकारकरभ, राजिका, तुम्बुरु, निम्ब, मरिच, अम्ल, कटु तिक्तरसीय द्रव्य।
३. लालास्रावशमनः (Anti-Sialagogues)	धत्तूर, सूची, अहिफेन, पूग, कषाय, रसवाले द्रव्य।
४. स्वर्य (कंठ्य) (Ciliary Excitants)	मधुक, आर्द्रक, शुंठी, वचा, कुलिंजन, कंटकारी पिप्पली, ताम्बूल, द्राक्षा, आलु-बोखारा।
५. सुगन्धित, दुर्गन्धहर (Aromatics)	एला, लवंग, कंकोल, ताम्बूल, कपूर, आकारकरभ।
६. तृष्णानिग्रहणम्ः स्नेहनम्ः (Demulscents)	द्राक्षा, आलुबोखारा, आमलकी, ईसबगोल, परुषक, विहीदाना, दाडिम, मधु।
७. वैशद्यकारक	ताम्बूल, पूग, जम्बीरतृण, गन्धतृण, निम्बु, वचा, कुलिंजन।

आमाशय प्रभावक (Stomach):—

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

८. रोचक, रुचिकरम् (Gustatory Stimulants) दाडिम, नागरंगं, अम्लिका, निम्बु, एला, आम्र, परुषक, वृक्षाम्लादि ।

९. दीपन (Stomachic) त्रिकटु, शतपुष्पा, जीरक, चित्रक, किराततिक्तादि कटुतिक्त रसीय द्रव्य ।

१०. अग्निसादक (Anti-Stomachic) अहिफेन, चाय, सूचि, अपामार्गबीज, अतिमधुर गुरु तथा कषाय द्रव्य ।

११. पाचन (Digestives) नागकेसर, मूलक, मुस्तक, धान्यक, लवंग, शुन्ठी ।

१२. हृद्यं सौमनस्यजननम् (Exhilarants) रोचकवत् ।

१३. तृप्तिघ्न, अरुचिहरम् चित्रक, विडंग, गुडची, मूर्वा, मुस्तक, अजमोदा, यवानी आदि पाचक, दीपन, रोचक, द्रव्य ।

१४. अरतिकरम् (Nauseants) दुर्गन्धित, तथा सडे, वामक-रेचकद्रव्य

१५. विदाही उष्ण, तीक्ष्ण तथा अम्लविपाकी द्रव्य राजिका, मरिच, माष, चणकादि

१६. विदाह शामक (अम्लताहर) (Ant-acid.) आमलकी, हरीतकी, अहिफेन, गुडूची, गोदन्ती, खटिकादि ।

१७. अनुलोमनम् (Carminatives) सुगन्धित तथा रोचक द्रव्य ।

१८. वमनोपगम् (Aid to Emetics) मधुयष्टि सैन्धव, नीप, शणपुष्पी, अपामार्ग, मधु ।

१९. वामक, छर्दनीयम् (Emetics) मदनफल, अरिष्टक, धामार्गव, तुत्थ, हृत्पत्री, निम्ब, देवदाली, कटुतुम्बी, ईश्वरी ।

२०. वमन शामक छर्दिनिग्रहणीयम्, (Anti-Emetics) कपूर, आम्र जम्बु, पल्लव, उशीर, राजबदर (उन्नाव:) दाडिम, निम्बु, मयूर-पुच्छ, लाजा ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

आमाशय-अन्त्र-प्रभावक

(Affecting Stomach and Intestines.)

२१.	उभयतोभागहर (वामक विरेचक)	देवदाली, कासमर्द, कोशातकी, इक्ष्वाकु, जीमूतक, अरिष्टक।
२२.	अनुलोमनम् (सर) Carminatives	कटु तथा सुगन्धित द्रव्य, कर्पूर, हिंगु, धान्यक, नाडीहिंगु, शतपुष्पा, यवानी, मरुवक आदि
२३.	शूलप्रशमन-Sedatives Anti (Spasmodic,)	चव्य, पंचकोल, अजमोदा, चन्द्रशूर, हरमल, कर्पूरादि।
२४.	विष्टम्भि	कदम्ब, पनस, लकुच, सर्षपशाकादि।

अन्त्रप्रभावक

(Affecting Intestines)

अधोभाग हराणि (Purgatives)

२५.	विरेचनोपग, (रेचन में सहायक) स्नेहनम्	द्राक्षा, काश्मरीफल, परुषक, आमलक, (Demulscents) कर्कन्धु पीलु आदि।
२६.	सरम्, मृदुरेचक (Laxatives)	हरीतकी, यासशर्करा, फल्गु (अंजीर) ईसबगोल, गन्धक, मुलैठी मलंगबीज।
२७.	स्रंसन (विरेचक) (Anthracene)	आरग्वध, एरंडतैल, सनाय, मार्कण्डिका कुमारी सत्व एलीयकम्।
२८.	भेदनम् (Cathartics, Hydrogogue Purgatives)	कटुकी, इन्द्रायण, त्रिवृत्, स्वर्णक्षीरी, कम्पिल्लक, कृष्णबीज।
२९.	विरेचनम् (Drastic-Purgatives)	जयपाल, दन्ती, स्नुही, कंकुष्ठ।
३०.	पुरीषजननम्	यव, माष, तण्डुलीयकम्, पत्रशाकादि।
३१.	पुरीषविरजनीयम्	कमल, जम्बू, शालः, शल्लकी आदि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

३२. पुरीषसंग्रहणीयम् (Constipatings) (ग्राही, संग्राही) लोध्र, घातकी मायाफल, पूग कुटज ।

३३. पाचकग्राही उष्णवीर्य, कटुद्रव्य शुंठी, जातीफल, कृष्णजीरकादि ।

३४. स्तम्भन (शोषक) (Astringents) कषायरसीय शीतवीर्यद्रव्य, अहिफेन, मोचरस, कपित्थ, आर्वतकी, बबूल आदि ।

३५. आस्थानोपग रास्ना देवदारू, वचा पिप्पली, कुष्ठ, मुधुयष्टी

३७. अनुवासनोपगम् देवदारु, रास्ना, मदनफल, शतपुष्पा, पुनर्नवा, गोक्षरू आदि ।

३८. कृमिप्रशमनम्-कृमिशातनम् (AnthelMintics)—

(अ) कृमिशतानम्, कृमिघ्न विडंग, शिग्रु, पलाशबीज, दमनकम् (अफसन्तीन)।

(१) गण्डुपद कृमि (Round-worm) पलाशबीज, वन यवानिका, शान्तनम् (सेन्टोनीन)

(२) स्फीत कृमि (Tapeworm) बिडंग, दाडिमफलत्वक्, पूग ।

(३) तन्तुकृमि (चुरुवे) (Thread worm) एंलुआ, किराततिक्त निम्बादि तिक्तद्रव्यों की वस्ति ।

(४) वडिश या अंकुशकृमि (Hook worm) यवानीसत्व ।

(आ) कृमिहरम् (Vermifuge) कम्पिल्लक, इन्द्रयव ।

यकृत् प्रभावक
(Affecting the liver Function)

३९. पित्तसारक (Cholagogues) लोबान, गिरिपर्पट, सुरंजान, दारुहरिद्रा, कालमेघ, कुटकी, दमनक, काकमाची, कासनी, अपामार्ग, नृसार, रेवन्दचीनी । सप्तचक्रा-कुमारी, एलीयक, स्वर्जिकाक्षार ।

४०. पित्ताश्मरीभेदन गोरोचन ।

४०. A. मधुरक शमन (मधुमेहहर) अहिफेन, हरिद्रा, बिम्बी, आम्र, जम्बू

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(Anti-Diabetics) फलास्थि, केशर, त्रिफला, यव, चणक, क्षुद्रधान्य, मधुनाशनी, शिलाजतु, बंगप्रवाल।

४१. अर्शोघ्न (रक्तार्श) कुटज, इन्द्रयव, मूलक, रसांजन, कृष्णतिल, गन्धक, नागकेशर, यवासा, पंचक्षीरीवृक्ष, चांगेरी, लोणिका, रक्तवोल, (खूनखारावा) तृणकान्त,

(२) वातार्श सूरण, अपामार्ग, भल्लातक, हरीतकी, चित्रक, विल्व, निम्ब, महानिम्ब, वृन्ताक।

४३. प्लीहा प्रभावक द्रव्य (Affecting Spleen) रोहीतक, कुमारी, इन्द्रायण, अर्क, किराततिक्त, हपुषा, झाबुक, लोह।

हृदय तथा रक्तवहसंस्थान प्रभावक

(Affecting Heart and Blood Circulatory System.)

४४. हृदय-रसायन (Cardiac Tonics) अर्जुन, हृत्पत्री, कुटकी, करवीरमूल, कपूर, वन-पलाण्डु, तरुणी, सितिम्बिका, कोश।

४५. हृदयोत्तेजक (Carbiac Stimulants.) तम्बाकू, सोम, बुन्दः (काफी) कस्तूरी, शुद्धवत्स-नाभ, पारसीकयवानी।

४६. हृदयावसादक (Cardiac-Depresants) अशुद्धवत्सनाभ, अहिफेन, कुपीलु, तिक्तवनवाताम-जटामांसी।

४७. रक्तभारवर्धक हृत्पत्री, मद्य, बुन्दः सोम, अन्नामयं (अर्गट)

४८. रक्तभारह्रासक मादक, तथा स्वेदल द्रव्य सर्पगन्धा, अश्वगंधा, ज्वरहर द्रव्य।

४९. रक्तवाहिनी संकोचक (Vaso Constrictors) सोम, स्थानीय रूप में कषायस्कन्ध, स्फीटेका, अपामार्ग।

५०. रक्तवाहिनी प्रसारक Vaso-Dilators मधु, कपूर, सुगन्धितद्रव्य, जयपाल, उष्ण, द्रव्य, मरिचादि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

५१. रक्त संग्राहक Haemostatics — लाक्षा, रक्तबोल, गोदन्ती, तृणकांत, नागकेसर, गैरिक, पतंग, कुकुन्दर, दूर्वा।

५२. रक्तस्कन्दन (Styptics) — मायाफल, अपामार्ग, कोशेयभस्म तथा ऊर्णभस्म।

रक्तधातु प्रभावक

५३. शोणितास्थापन (Haematinics) — लोह, ताम्र, गैरिक, सोमल, गुग्गुलु, भल्लातक आदि।

५४. रक्त प्रसादन (रक्त शोधक) (Alteratives) — सारिवा, द्वीपान्तरवचा (चोपचीनी) मुंडी, मजिष्ठा, उशवा, पद्म आदि।

५५. रक्त दूषक — राजिका, सर्षपादिशाक, लवण, क्षार।

रसवहसंस्थान तथा रसधातु प्रभावक

५६. गण्डमाला नाशक—कांचनार, पातालगरुड़ी, गुग्गुलु, सारिवा, गुडूची।
सूचना—शोथशामक आगे वर्णित है।

श्वास संस्थान प्रभावक

(Affecting Respiratory System)

५७. कासश्वासवेगहरम् (Respiratory Anti-Spasmodics — द्राक्षा, वासा, सोम, कंटकारी, धन्वयास, अगस्त्य, कासमर्द, वंशलोचन, विभीतक, अहिफेन, हपुषा, धत्तूर, पारसीकयवानी, वनपलाण्डु।

५८. कफघ्न (छेदन) (Apophlegmatics) — मरिच, शटी, कंटकारी. शृंगी, हिंगु, कुन्दरू, रूमीमस्तगी, पिप्पली।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

५९. कफनिष्कासक (Expectorants) वासा, गोजिह्वा, श्लेष्मातक, यष्टीमधु तालीशपत्र, जूफा, रेशाखतमी वनपलाण्डु, बनफशा ।

६०. श्वसन केन्द्रोत्तेजक (Respiratory Stimulants) बुन्दः (काफी) त्रिप्रमुष्टि, सोम, कर्पूर, सूचा ।

६१. श्वसनकेन्द्र अवसादक (Respiratory Depressants) अहिफेन, अशुद्ध वत्सनाभादि ।

६२. हिक्का निग्रहणम् शठी, बदरबीज, कंटकारीद्वयम्, मयूरपुच्छ, हरिद्रा, पिप्पली, कृष्णमरिच ।

६३ श्लेष्मपूतिहर (Respiratory Disinfectants) कर्पूर, लोबान, लवंग, तैलपर्णी (युकेलिप्टस) सरल ।

———

वृक्क तथा मूत्र संस्थान प्रभावक (मूत्रवह स्रोतस् प्रभावक)
(Affecting Kidneys and Urinary System)

६४. मूत्रल (मूत्र विरेचनीयम्) (Diuretics) गोक्षुरू, पुनर्नवा कंकोल, श्वेतचन्दन, पाषाणभेद, पचतृणमूल, कूष्माण्ड, कर्कटी, बुन्दः नारिकेलफलजल ।

६५. मूत्र विरजनीयम् पद्म, शतपत्री, प्रियंगु, पुन्डरीकादि ।

६६. अश्मरी-शर्करा (Anti-Lithics or Lithotropics) पाषाणभेद, कुलत्थ, वरुण, गोक्षुरू, गुन्द्रः कर्कटी, पंचतृणमूल, बदरपाषाण, मूलक क्षारादि ।

६७. मूत्र संग्रहणीय (Anti-Diuretics) कृष्णतिल, अपक्व उदुम्बर फलादि, पंचक्षीरी-वृक्षों के अपक्व फल, अहिफेन, असन, आम्र, जम्बूमज्जा, श्वेत चन्दन, कंकोल ।

६८. मूत्र शोधन (Urinary Disinfectants) श्वेतचन्दन, कंकोल, श्रीवास, टंकण, बोल ।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

प्रजनन संस्थान प्रभावक

(Affecting Generative Organs)

(अ) पुंप्रजनन (शुक्रवहस्रोतस्) अंगप्रभावक :—(Affecting-male Reproductary organs)

६९. (१) शुक्रल (शुक्र प्रजनन) अश्वगंधा, शतावरी, गोक्षुरू, मुशलीद्वयम्, बलामूल, कपिकच्छु, घृत, दुग्ध ।

७०. (२) शुक्रस्तुतिकर (कामोत्तेजक) (वाजीकरण), आकारकरभ, मृगमद, (Aphrodiasac) कर्पूर, मद्य, भंगा, धतूरबीज, रेगमाही, गंधमार्जारवीर्य ।

७१. (३) शुक्रस्तम्भक (Retentives) जातिफल, अहिफेन, कर्पूर, रेगमाही ।

७२. (४) शुक्र शोधक (Seman Purifier) कट्फल, समुद्रफेन, ईक्षुरक, एलवालुक, कुष्ठादि ।

७३. (५) शुक्रनाशक (Anaphrodiasac) धान्यक, क्षार, लवण, अतसी, राजिकादि ।

नारी प्रजनन संस्थान प्रभावक

(Affecting Female Reproductary Organs)

७४. (६) प्रजास्थापन (गर्भस्थापक) लक्ष्मणा, दूर्वा, बला यष्टीमधु, (Impregnative Agents) पद्मबीज, पद्मकाष्ठ, प्रियंगु, शाली, गोघृत, वट, उत्पल, केशर ।

७५. (७) गर्भरोधक (Anti-Impregnatives) गुञ्जा, पाठा, टंकण ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

७६. (८) गर्भाशय रसायन (Uterine Tonics) अशोक, लोध्र, कार्पास, उलटलकम्बल।

७७. (९) गर्भाशयशामक (Uterine Depressants) तिल्वक, खाखससत्व (अहिफेन) सूची।

७८. (१०) गर्भपातक या स्रावक (Abortifacients) देवदाली, गाजरबीज, अर्क, स्नुही, वंश, शरण।

७९. गर्भाशय शोधन (Ecbolics) सर्पगन्धा, उलटकम्बल, (पिशाचकार्पासी) मिश्रेया (सुवा) कार्पासमूल, रेणुका, हरमल, संताप, अर्भकम् (अर्गट) तिक्ता (कुनैन)

८०. रजःस्रावक (आर्तवजनन) (Emmenagogues) उष्ण, सर्षप, एलीयकम् (कुमारीसत्व) हिंगु, विषमुष्टी, तथा गर्भाशय संकोचक द्रव्य।

८१. आर्तवशमन वा रजःस्रावहर (Anti-Emmenagogues) नागकेसर, पूग, जपा, शाल्मलीपुष्प, मोचरस, कदली, लोध्र।

८२. स्तन्य जनन (दुग्धवर्धक) (Galactogogues, Lactogogues) शाली, षष्ठिक, दर्भ, कुश, विदारी, शतपुष्पा, माष, कार्पासवीज, दुग्ध, जीवनीयगण, जीवन्ती।

८३. स्तन्य शोषक (Anti-Galactogogues) धत्तूरा, ताम्बूल, सूची, मल्लिका।

८४. स्तन्य शोधन (Milk-Purifier) पाठा, शुंठी, मूर्वा, गुडूची, सारिवा, निम्ब, रसाञ्जन, वचा, हरिद्रा।

८५. अपरापातक कटुतुम्वी, सर्पनिर्मोक, कृतवेधन, शालसर्षप।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वात संस्थान (संज्ञावह स्रोतस्) प्रभावक,

(Affecting Nervous System)

८६. संज्ञास्थापन (Conscious Promotors) वचा, जटामांसी, कट्फल, हिंगु, नख, नखो, ब्राह्मी ।

८७. संज्ञानाशन Sedatives. (संज्ञावहनाड़ीयों के शामक) जटामांसी, तगर ।

८८. मेध्य (Nervine-Tonics) ब्राह्मी, वचा, शंखपुष्पी, ज्योतिष्मती, कूष्माण्ड, मण्डूक, पर्णी, घृत, केशर, उस्तरखद्दूस ।

८९. मोहजनक (मादक) (Narcotics) मद्य, अहिफेन, धत्तूर, भंगा, वृद्धदारुकमूल ।

९०. प्रलापक, (Deliriants) धतूरा, भंगा ।

९१. स्वापजनन(Hypnotics) अहिफेन, विजया, सर्पगंधा, अश्वगंधा, तगर, जटामांसी, पारसीकयवानी ।

९२. हर्षजनन-सौमनस्यजनन (Exhilarants) मद्य, विजया, भांग ।

९३. वेदनास्थापन (अगमर्दप्रशमन) अहिफेन, कट्फल, शाल, विदारीगंधा, (Analgesics) पारसीकयवानी, कपूर, धत्तूर, गुग्गुलु, रास्ना, सुरंजान, यवानी ।

९४. आक्षेपजनक (उत्तेजक)कुपील, धत्तूरा, विजया, गुंजा, तम्बाकू।

९५. अवसादक या क्षोभशामक (Nervine-Depressants) जटामांसी-तगर, अम्बर, अश्वगंधा, मुक्ता, प्रवाल दशमूलादि ।

ज्ञानेन्द्रिय प्रभावक

(Affecting Sensory Organs)

९६. चक्षुष्य (नेत्र्य) त्रिफला, कपूर, लोध्र, रसांजन, मधुयष्टी, घृत, कतक, चक्षुष्या, (चाक्सू) ममीरा ।

९७. ताराविकासी (Mydriatics) सूची, धत्तूर ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

९८. तारासंकोची (Myotics) अहिफेन ।

नासा प्रभावक

९९. शिरोविरेचन (नस्य) छवक, अपामार्ग, कट्फल, विडंग, शिग्रु, (Errhines, Sternutatory) मरिचादि ।

१००. अस्वादोत्तेजक (Gustatory-Stimulants) सुगन्धित, कटु, तिक्त, पदार्थ, आकारकरभ, कृष्णमरिच' बीजपूरक, केशर ।

१०१. शिरोविरेचनोपग तुम्बुरु, अजमोदा, ज्योतिष्मती, लसुन ।

त्वचा-प्रभावक

(Affecting the Skin and its appendages)

१०२. वर्ण्य (Cosmotics) चन्दन, केशर, पद्मक, उशीर, मंजिष्ठा, सारिवा, लोध्रादि ।

१०३. स्नेहन, मार्दवकरम् (Emollients) घृत, तेल, वसा, मज्जा, मधूच्छिष्टादिक ।

१०४. रुक्षणम् यव, भृष्टान्न, कट्फलादि चूर्ण ।

१०५. स्वेदल (स्वेदजनन) (Sudorofices Diaphoretics) तुलसी, कपूर, मरिच, वत्सनाभ, मुस्तक ।

१०६. स्वेदोपग पुनर्नवा, शिग्रु, निर्गुंडी, अर्क, कुलत्थ, माष ।

१०७. स्वेदापनयन सूची, पारसीकयवानी, उशीर, धत्तूर, कुपीलु, (Anhydrotics-Anti-Sudorofices) तिक्ता (कुनीन) ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१०८. रोमसंजननम् — रसांजन, हस्तिदन्त, निम्ब, धत्तूर ।

१०९. रोमशातनम् (Depilatory) — क्षार, हरिताल, शंखचूर्ण ।

११०. केश्यम् — त्रिफला, नारिकेल, तिलतैल, गुंजा, नीलिनी, मदयन्तिका, भृंगराज ।

१११. कण्डुघ्न (Anti-Prurites) — नक्तमाल, निम्ब, दारुहरिद्रा, चन्दन, नलद, अरण्यहरिद्रा, वाकुची, जलनिम्ब, आम्रगंधिहरिद्रा, हरिद्रा, आरग्वध ।

११२. उदर्दकोठप्रशमन — खदिर, सप्तपर्ण, अरिमेद, प्रियाल, अर्जुन, असन, गैरिक, कृष्णमरिच ।

११३. कुष्ठघ्न (Anti-Leprotics) — खदिर, भल्लातक, त्रिफला, आरग्वध, निम्ब, सोमराजी, वाकुची, जातिप्रवाल, तुवरक, चक्रमर्द, काकोदुम्बरत्वक्, मूल ।

शोथहर—(Anti-Phlogistics)

११४, शोणितोक्लेदक, श्वयथुकरण (Rubefacients, Counter-Irritants) — राजिका, सर्षप, अग्निमंथ, पाटला अजगंधादि ।

११५. स्फोटजनन (Vesicants) — भल्लातक, चित्रक, शण, राजिका, पीलुत्वक्, वरुणत्वक् ।

११६. पूतिस्फोटकारक (Pustulants) — क्षार-चित्रकादि ।

११७. दाहक (Caustics) — क्षार, अम्ल, उष्णता ।

सर्वदेह प्रभावक

(Affecting Metabolism.)

११८. रसायन (Presevatives) — आमलकी, भल्लातक, अष्टवर्ग, वलाचतुष्टय, हरीतकी, अश्वगंधा, विडंग, पिप्पली, निगुंडी, आदि, आदि ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

११९. बल्य (Tonics, Analeptics)	विदारी, वाताद, लघुपंचमूल, मुशलीद्वयम्, गोत्तुरु, कपिकच्छू, शतावरी, पक्वाम्र, मांस, दुग्ध, विषमुष्टि, मृगमद, तगर, लोह, स्वर्णवंग।
१२०. ओजवर्धक	दुग्ध, घृत, फल।
१२१. ओजह्रासक	मद्य, रुत्तान्न, पूग, कोद्रवादि।
१२२. जीवनीय, वयः स्थापन (Vitalisors.)	जीवनीयगण, दुग्ध, अमृता, मांस, मधुररस वाले पदार्थ, घृत, मधुकम्।
१२३. बृहंण (मांसलम्) (Nutrients)	माष, अश्वगंधा, अष्टवर्ग, त्तीरिणी, मृद्वीका, वाताद, दधि, अत्तोट, मांस, कदली।
१२४. लेखन (कर्षण-लाघवकर) (Attenuatives)	उपवास, चित्रक, गोमूत्र, पुराण- मधु, पुराण गुग्गुलु, प्रियंगू, वचा, दारूहरिद्रा, यव, वंश, श्यामाक, शिलाजतु, कृष्णमरिच, चणक।
१२५. स्नेहनम् (वसा उत्पादक)	मेदवर्धक, घृत, बादाम, गोधूम।
१२६. श्रमहरम् (दाहहर) (Refrigerants, Refreshing)	द्राक्षा, खजूर, दाडिम, फल्गू, परुषक, ईक्षुरस, नारंगम्, कमल, चन्दन, उत्पल, उशीर, प्रियंगु आदि।
१२७. अभिष्यन्दि	मन्दक दधि।
१२८. सूक्ष्म (Having the power of penetration)	निम्बतैल, उष्ण तीक्ष्ण द्रव्य, सैन्धव, मद्य, मधु, गुग्गुलु, श्रीवास।
१२९. व्यवायी	विष, भंगा, अहिफेनादि।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१३०. विकासी	कोद्रवान्न, अपक्व, पूगफल ।
१३१. प्रमाथी	काली मरिच, त्वक; वचा ।
१३२. अगद (विषघ्न) (Anti-dotes)	शिरीष, अपराजिता, निर्विषी, तण्डुलीयक, कासमर्द, पातालगरुडी ।
१३३. ज्वरहर (Febrifuge) (क) (Anti-pyretics)	तापशामक, सहदेवी, वत्सनाभ सारिवा, पाठा, परुषक; अभया, पटोल, आमलकी, पर्पठ, जलनिम्ब, किराततिक्तादि, और मूत्रलं तथा स्वेदल द्रव्य ।
(ख) आम पाचन	मूर्वा, गुडुची, मुस्तक, पारिजातक, हरिद्रा, शुण्ठी, चिरायता, त्रायमाणा कुटकी, कारवेल्लकादि ।
(ग) नियतकालिक ज्वरहर (Anti-Periodics)	करंज, सप्तपर्ण, तुलसी, द्रोणपुष्पी, त्रायमाणा, करवीर, तिक्ता, शंखविष, ताम्रादि ।
१३४, शीत प्रशमन (Stimulants)	अगुरू, कस्तूरी, दरियाईनारियल ।
१३५. योगवाहित्व	मधु, पारद

दोष प्रभावक

(Affecting Tridoshas)

१३६. वात प्रकोपक	कटु तिक्त, कषायरस, शीतवीर्य शुष्क द्रव्य शाल, मुदग, मसूर, आढकी, हरितक, क्षुद्रधान्य, बाजरा, मक्का, कलाय, अतिव्यवाय, उपवास, क्षय, रात्रिजागरण, अतिशीत, रुक्ष, क्षोभादि पदार्थ ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१३७. वातावजयन (प्रशमन)	देवदारू, कुष्ठ, हरिद्रा, वरुण, पुनर्नवा, बला, अतिबला, दशमूल, गुडूची, एरण्ड, जटामांसी, अर्क, अलर्क, शतावरी, अश्वगंधा, मूर्वादि, तगर, मधुर, अम्ल, लवणरस, स्निग्धोष्णद्रव्य।
१३८. पित्त प्रकोपक	कटु, अम्ल, लवणरस, उष्ण, तीक्ष्ण विदाही, लघु, तिलतैल, सर्षप, अतसी, मत्स्य, दधि, अजा, आविकमांस,सुरादि।
१३९. पित्तावजयन (शामक)	मधुर, तिक्त, कषाय, शीत द्रव्य, उशीर, सुगंधवाला, किराततिक्त, बृहती, शतावरी, पटोल, चन्दन, गुडूची, कमल, पर्पट, लाक्षा, शर्करा, पद्मोत्पल, कदली, जीवनीयगण।
१४०. कफ प्रकोपक	मधुर, अम्ल, लवण, शीत, स्निग्ध, गुरु, पिच्छिल, अभिष्यन्दिपदार्थ, माष, महामाष, गोघृत, दधि, दुग्धविकार, आनूपौदकमांस, बिस, मृणाल, कशेरू, शृंगाटक, मधुरफलादि।
१४१. कफावजयन (शामक)	रास्ना, ऊषण, पंचकोल, ताम्बूल,पिप्पलीमूल, तुलसी, मूर्वा, आर्द्रक, शिग्रु, विभीतक, चिरविल्व, इंगुदी, वल्लीपंचमूल, कंटकी पंचमूल, मेषशृंगी, हिंगु, पुराणघृत, अर्कमूलादि।

(ख) बहि: परिमार्जजन (Used Externaly) द्वारा प्रयुक्त औषधियों के कर्म

१४२ विम्लापन (Resolvents)	अलशी, उष्णता, सेक, स्वेदादि, कुन्दरू, उषक।
१४३ व्रणशोथपाचक	तिल, शिग्रु, राजिका, यवादि, सर्षप, शण मूलक।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

१४४ व्रणभेदक(दारण)(Escharotics) चित्रक, कपोतविष्ठा, साबुन, करंज, क्षार, दन्ति ।

१४५ व्रणशोधक (Detergents) जाति, निम्ब, करंज, उदुम्बर, त्रिफलादि ।

१४६ व्रणरोपक (Healers) गुग्गुलु, चोपचीनी, उदुम्बर, मांसरोहणी, मालती, राल ।

१४७ व्रण प्रपीडन (Squeezers) शाल्मली, पिच्छा, यव, गोधूम, माषादि ।

१४८ उपशोषण (Desicents) कुटजत्वक्, तुत्थादि ।

१४९ दुर्गन्धहर Deodorants)गुग्गुलु, श्रीवासः, वचा,शल्लकी,लोबानादि ।

१५० पूयवर्धक नवधान्य, दुग्धं, दधि, गुड़विकार, माष, हरितक शाक, अम्ल, लवणरस ।

१५१ पूयशामक (कोथप्रशमन) (Anti-Septics):—

(सामान्य-General) गुग्गुलु, अगरू, सर्षप, निम्बपत्र, जटिला, अर्कमूल, टंकण, पारद, रसोन, ताम्र, तुत्थ, काशोशादि ।

(विशिष्ट) (Specifics) (क) आन्त्रिकः —कर्पूर, तक्र, पारद ।

(ख) मूत्रगत, (Urinary) चन्दन, कंकोल, श्रीवास ।

(ग) फुफ्फुसीय (Pulmonary) लोबान, सरल, रुमीमस्तगी,तेलपर्णी ।

१५२ कृमिघ्न (पराश्रयीहर) पारद, धत्तूर, निम्ब, गंधक, चन्दन तेल, (Parasiticides) श्रीवास, कट्फल ।

१५३ संक्रमण नाशक राल, श्रीवास, लोबान, गुग्गुलु, वचा, (Disinfectants) सिद्धार्थक ।

१५४ उत्सादन (व्रणमांसवर्धक) अपामार्ग, अश्वगंधा, मांसरोहणी आदि ।

१५५ अवसादन (लेखन) (Corrosives) कासीस, सैन्धव, किण्व, तुत्थादि ।

१५६ संकोचक (Astringents) मायाफल, बबूलादि कषाय रसवाले पदार्थ, तुत्थ, स्फटिकादि ।

१५७ सन्धानीयम् (Fracture Healers) अस्थिसंहार, कच्छपपृष्ट, मांसरोहणी,मधुक ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

द्रव्य-अनुक्रमणिका

अगुरु	१८६	अरण्यजीरक	१२६
अकीक	४८	अर्गट (अर्भक)	१५८
अगस्त्य	१८३	अर्जुन	१३४
अग्निजार	४८.१६३	अर्क	१२१
अग्निमन्थ	१२६	अशोक	१५७
अजगन्धा	११८	अष्टवर्ग	१८६
अञ्जनपंचक	३८	अश्वगन्धा	१६०
अंकोल	१०४	अश्वत्थ	१४६
अतिबला	१६२	असन	१४०
अतिविषा	६५	अस्थिसंहार	१४०
अतसी	१०८	अहिफेन	६२,६७,१७०
अनन्ता	१३६	आकारकरभ	१६५
अन्नामय	१५८	आत्मगुप्ता	१६१
अपराजिता	१७५	आमलकी	१६०
अपामार्ग	१७६	आम्र	१६१
अबरेशम	१६६	आम्रगन्धिहरिद्रा	१७७
अब्धिनारिकेल	१०५	आरग्वध	१०६
अभ्रक	१८	आवर्त्तकी (नी)	११५
अम्लिका	६२	आर्द्रक	११४
अम्लपर्णी (रेवन्दचीनी)	१२६	इंगुदी	१८२
अमरवल्ली	१२१	इक्षुः	१४२
अयस्	३३	इक्षुरक	१४४
अरण्यहरिद्रा	१७७	इन्द्रयव	११५
अरिष्टक	१०४	इरिमेद	८६

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

इन्द्र वारुणी	११२	कम्पिल्लक	११६
ईश्वरी	६५	कदम्ब	११५
ईषद्गोलम् (वृत्तम्)	१०८	करंज	१८६
उटंगणबीज	१६१	कपूर	६६,१३४
उदीच्यम्	१०५	कर्कटी	१४२
उदुम्बर	१४६	कर्कटश्रृंगी	१५३
उन्नाब	१५०	कलिहारी	१५६
उपकुञ्चिका	१५६	कंकुष्ठ	११२
उलटकम्बल	१६०	कंकोल	१४४
उशवा	१३७	कसेरुकम्	१५६
उशीर	१८१	करमर्दक	६२
उस्तखद्दूस	१६६	करीर	१२२
ऊदसलीव	१७४	करवीर	१३७
एरण्ड	११०	कल्वंजिका	१५६
एरण्डकर्कटी	१००	कंटकारी द्वयम्	१५१
ऐन्द्री	११२	कंटकीकरञ्ज	१८६
कच्छपकपाल	१६४	कस्तूरी	१६६
कतक	१७६	काकोदुम्बर (फल्गु)	१०८
कत्तृण	१७६	कान्तपाषाण	३७
कदली	१५७	कासीस	३८
कट्फल	१७६	कालादाना	११०
कटुतुम्बी	१०५	काकमाची	१२३
कटुकीद्वयम्	१२२	कारवेल्लक	१२३
कपर्दिका	२४	काशनी	१२८
कपोतपदी (कलंबा)	६५	काञ्चनार	१३२
कपित्थ	११५	कासमर्द	१३२
कपिकच्छु	१६१	काश	१४३
कमल	१५५	कार्पासी	१५६

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

कालमेघ	१२२	खटिका	२२
काँफी	१३५	खदिर	१३८
कांस्य	४१	खर्पर	३६
किंकिणी	१८६	खूबकलां	१८०
किराततिक्त	१८४	गजपिप्पली	६८
कीटमारी	११६	गन्धक	१७
कुपीलु	६३,१७५	गन्ध मार्जार वीर्य	१६४
कुनैन	१८६	,, ,, वृषण	१६४
कुटज	११५	गन्धप्रसारिणी	१७३
कुमारी	१२८	गाम्भारी	१३०
कुंकुम	१३५	गिरिपर्पट	१२६
कुमारीलता	१३७	गिरिसिन्दूर	३६
कुसुम्भ	१४०	गुग्गुलु	६५,१७२
कुरन्टक	१४७	गुंजा	६४,१६४
कुश	१४२	गुडूची	१८४
कुष्ठ	१५२	गुच्छपत्र	१७५
कुबेराक्ष	१८६	गुणाः	८१
कूष्माण्ड	१६७	गैरिक	४०
कृष्णाञ्जन	३८	गोजिह्वा	१४८
कृष्णबीज	११०	गोक्षुरु	१६२
केतकी	१३५	गोरोचना	१२६
कोलकन्द	१३६	गोमेद	४६
कोकिलाक्ष	१४४	घृतम्	१६२
कोश	१६६	चक्रमर्द	१७८
क्षवक	१७७	चन्दनद्वयम्	१८७
क्षीरचम्पक	१८८	चम्पकद्वयम्	१८८
क्षीरिणी	१६१	चपल	४०
क्षेत्रपर्पट	१८५	चन्द्रशूर	१६०

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

चव्य	६६	ताम्रपर्पटी	५३
चांगेरी	६२	तालीशपत्र	१४६
चित्रक	६३, ६६	तालमूली द्वयम्	१६२
चुक्रा	६२	ताम्बूल	६०
चोपचीनी	१३८	तिल	१८३
चूर्ण (सुधा)	२५	तिलपुष्पी	१३६
जयपाल	६३,११३	तुख्मेमलंगा	१०६
जम्बु	१४७	तुत्थ	३५
जम्बीर	६३	तुलसी	१८०
जपा	१५८	तुवरक	१७६
जटामांसी	१७१	तुरंजबीन	१४८
जहरमोहरा	४८	तैलपर्णी	१५४
जल ब्राह्मी	१३८	त्वक्	६६
जातिफल	१६५	त्रायमाणा	१२६
जातिपत्री	१६६	त्रिवृत्	११०
जीवन्ती	१५६	त्रिभुवन कीर्तिरस	५५
जीरक द्वयम्	६७	दन्तीद्वयम्	११३
ज्योतिष्मती	१६७	दमनक	११६
छिक्किका	१७७	द्रव्य लक्षण	७७
डिजीटेलिस	१३७	दाडिम	६३
तगर	१७२	दारुहद्रिद्रा	१२३
तण्डुलीयक	१०३	दारुसिता	६६
तरुणी	१३६	द्राक्षा	१६१
तमालपत्र	६७	द्वीपान्तरवचा	१३८
तवक्षीर	१४६	दुग्ध	१६२
तक्र	६७	दुग्धपाषाण	२५
ताम्र	३०	दुरालभा	१४८
तार्क्ष्य	४५	दूर्वाद्वयम्	१४३

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

देवदारु	१७१	परुषक	९४
देवदाली	१०६	पत्थरबेर	४७
द्रोणपुष्पी	१८७	पलाण्डु	१०१
धत्तूरा	६४, ६८, १६९	पर्णबीज	१४१
धन्वयास	१४८	पद्मकाष्ठ	१५६
धातकी	११६	पद्म	१५५
धामार्गव	१०६	पलाश	११९
धान्यक	९९	पर्पट	१८५
धूनराज	१६६	पारद	१२
धूम्रपत्रा	११९	पाठा	१०७
नक्तरस	१८०	पारिभद्र	१२०
नवसागर (नृसार)	२६	पारिजात	१२४
नवरत्न	४३	पातालगरुडी	१३३
नाग	३२	पारिश	१४६
नागाश्म	४८	पाषाणभेद	१४५
नागबला	१९२	पाटला	१३१
नागवल्ली	९०	पारसीक यवानिका	१७१
नागसिन्दूर	३६	पिच्छिला	१२४
नागकेसर	१०७	पित्तलम्	४१
नागदमनक	११९	पिप्पली	९७
नारिकेल	१८३	पिप्पलीमूल	९८
नाडीहिंगु	१०२	पिशाचकार्पासी	१६०
निम्ब	१८४	पीतमूला	१२७
निम्बुकम्	९३	पुष्पाञ्जन	३८
निर्गुण्डी	१७३	पुष्पराज (पुखराज)	४४
निर्विषी (षा)	१३०	पुदिनम्	१०५
नीलम	४५	पुनर्नवाद्वयम्	१४३, १४४
पटोल	१८५	पुष्करमूल	१५२

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

पूग	६१	भूम्यामलकी	१८६
प्रभाव	८८	भूस्तृण	१७६
प्रवाल	४६	भृंगराज	१२४
प्रसारिणी	१७३	मदनफल	१०४
पृश्निपर्णी	१३१	मधूक	११७
प्लक्ष	१४३	मधुर कर्कटी	१२०
प्रियंगु	१५७	मनः शिला	२१
पंचामृत पर्पटी	५४	मण्डूर	३४
फेनाश्म (सोमल)	२२	मरिचम्	६१
बकुल	६०	महाभरीवचा (चोपचीनी)	६१
बला	१६२	मयूरशिखा	११७
बनफशा	१५०	मरुवक	१८०
बलाचतुष्टय	१६२	मधु	१६३
बब्बूल	११६	महाबला	१६२
बाकुची	१७६	मधुयष्टी	१४६
ब्राह्मी	१६७	मण्डूकपर्णी	१६७
बिभीतक	१११	मद्यन्तिका	१७८
बिम्बी	१०६	महानिम्ब	१२७
बिल्व	१३१	मलंगबीज	१०६
बिहीदाना, वेदाणा	१२४	मंजिष्ठा	१३८
बिड्लवण	२७	माक्षीक	३५
बीजक	१४७	माणक-कन्द	१३३
बुन्दः	१३५	मामज्जक मामेजबो	१२५
बेलाडोना	१७१	माचिका	११७
बोल (हीराबोल)	११४	मायाफल	११७
भंगा	६४, १७०	माषपर्णी	११८
भल्लातक	१६८	माष	१०३
भारंगी	१५२	मानपरिभाषा	१

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

माणिक्य	४३	रस	१२, ८४
मातुलुंग	६३	रसपुष्प	५०
मार्कण्डिका	१११	रस पर्पटी	५२
मांसरोहिणी	१८२	रससिन्दूर	५७
मिश्रेया	१०१	रसाञ्जन	३८, १२३
मुद्गपर्णी	११८	रसोन	१०२
मुक्ताशुक्ति	२४	राजकर्कटी	१२०
मुण्डितिका	१३६	राजबदर	१५०
मुस्तक	१०७	राजादन	१६१
मूलक	१००	राजिका	६८
मूसलीद्वयम्	१६२	राजावर्त	४७
मेथिका	१६०	रास्ना	१७४
मेषश्रृंगी	१४७	रोहीतक	१२५
मोचरस	१६३	रोहिणी	१८२
मौक्तिक	४४	रोमकम्	२८
मृगश्रृंग	२४	लज्जालु	१४१
मृद्दारश्रृंग	३६	लताकस्तूरी	१००
यवक्षार	२५	लवणपंचक	२७
यवतिक्ता	१२२	लताकरंज	१८६
यवानिका	६६	लयंग	१५२
यवासा	१४८	लाक्षा	१४१
यशद	३३	लांगली	१५६
यास शर्करा	१४८	लोकनाथरस	६०
युकेलिप्टस्	१५४	लोध्र	१५८
योगराज गुग्गुलु	५५	लोबान	१५४
रक्तचन्दन	१८७	लोणिका	१०३
रक्तबोल	१४१	लोह	३३
रजतम्	२६	वचा	१६८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

वट	१४६	शल्लकी	१८२
वत्सनाभ	६२, ६६, १८५	शटीद्वयम्	१५३
वनपुष्पक	१५०	शतपुष्पा	१०१
वनपलाण्डु	१३६	शतपत्री	१३६
वनवृन्ताक	१२६	शरपुंखा	१२६
वंग	३१	शान्तनम् सेन्टोनीन	१२०
वंश रोचना	१५३	शालपर्णी	१३२
वराटिका	२४	शाल्मली	१६३
वरुण	१४५	शिग्रु	१८१
वर्तलोह	४१	शिलाजतु	३६
वासा	१५०	शिलाबदर	४७
वाराही	१६४	शिरीष	१३४
वास्तूक	१०६	शुक्ति	२४
वाताम (वाताद)	१६३	शुंठी	११४
विदारी	१६३	शैलेयम्	१४६
विजया	७०,१७०	शोभाञ्जन	१८१
विषमुष्टि	६३,६७,१७५	श्यामालता	१३६
विपाक	६७	श्योनाक	१३२
विद्रुम	४६	श्यामबीज	११०
विडंग	१२०	श्लेष्मातक	१५१
वीर्य	८५	श्वेतचन्दन	१८७
वैडूर्य	४५	श्रृंगी	१५३
वैक्रान्त	४७	शंख	२३
वृक्षाम्ल	६४	शंखपुष्पी	१६८
वृक्षकरंज	१७६	सताप	१७५
वृक्षादनी	१७४	सप्तपर्ण	१८७
वृद्धदारुक	६६,१६४	सप्तला	१२५
शतावरी	१६२	सप्तचक्रा	१२५

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

सरल	१५५	सोम	१५४
समुद्रफेन	२५	सौभाग्य	२६
सर्षप	६६	सोरक	२७
सर्पगन्धा	१७२	स्रोतोञ्जन	३८
समीरपन्नग	६०	सौवर्चल-लवण	२७
सारिवा	१३६	संगेयशंव (साराश्म)	४८
सामुद्रलवण	२७	स्फुटिका (त्रुटि)	२२
सालममिश्री	१६३	स्नुही, (सेहुण्ड)	६५,११३
सितिम्बिका	१३६	स्वर्निकाक्षार	२६
सिनकोना	१८६	हपुषा	१२६
सिल्हकः	१४५	हरमल	१६०
सिन्दूर	३६	हरिताल	२०
सुवर्ण	२८	हरीतकी	११२
सुवर्णवंग	५६	हरिद्रा	१७७
सुवर्णपत्री	१११	हंसपदी	१८८
सुरञ्जान	१२६	हिज्जलम्	१०३
सुधानिधिरस	५०	हिंगु	६५,१०२
सुधामूली	१६३	हिंगुपत्री	१०२
सूरण	१२७	हिंगुल	१८
सूतशेखर	५४	ह्रावेर	१०५
सूची	५६,१७१	हीरक	४३
सैरेयकः	१४७	हृत्पत्री	१३७
सैन्धव	२७	हेमगर्भपोट्टलीरस	५६

———

000058

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

STATE FACULTY OF AYURVEDIC MEDICINE

द्रव्यगुणो रसशास्त्रं च १९४९

SECTION 1

१. (अ) वीर्यविपाकप्रभावाणां सप्रकारं व्याख्यानं कृत्वा, ते प्रतिद्रव्यं कथं विज्ञेयास्तल्लिखन्तु ।

(ब) रसविपाकयोः दोषप्रकोपप्रशमने को नियमः, कश्चतत्रापवादः । तत्सोदाहरणं लिखतु ।

२. किं नाम द्रव्यकर्म । अनुलोमन, पित्तघ्न, हिक्काघ्न, मूत्रविरजनीय, गर्भास्थापन, वाजीकरण, संग्राहि,—एतानि कर्माणि देहे कुत्र कथं भवन्ति तथाच प्रत्येककर्मकर्तृणां त्रयाणां द्रव्याणां, नामानि लेख्यानि ।

३. यथाशक्यं सचित्रकम् केषांचित्पंचानां टिप्पणी कुरुत :—

दोलायन्त्रम्, पातालयन्त्रम्, उर्ध्वपातनयन्त्रम्, सामान्यमूषा, अमृतीकरणं, सत्वपातनं, रससिंदुरं च ।

४. कासीस-बंग-शंख-खर्पर-माक्षिकाणां शोधनमारणे गुणकर्माणि च वर्णयत ।

५. अधो लिखितानां केषांचित्सप्तानां केषु रोगेषु कथं प्रामुख्येन प्रयोगो भवतिः—

शिलाजतुः, सौवीरांजनम् कस्तूरिका, वसा, समुद्रफेनः, कहेरुबा, प्रवालः, नृसारः, रसमाणिक्यम्, वह्निजारश्च ।

SECTION II

६. विडंग-वासा-पिप्पली-पर्पटक-गुडूची-मुस्तक-धान्यक-कुटजेषु कानि शुष्काणि कानिच आर्द्राणि कानिच नवीनानिग्राह्याणि इति सकारणं लिखत ।

७. बचा, महानिंब, पटोलपत्र, आरग्वध, गुग्गुल, अपामार्ग द्रव्याणां गुणाः लेख्याः ।

८. अम्ल तिक्तरसयोः अत्युपयोगेन केके रोगाः समुद्भवन्ति ।

९. चौलमोगरा, बलाडोना, उलटकंबल, अर्गट इत्येतानिद्रव्याणि कस्मिन् कस्मिन् रोगे उपयुज्यन्ते मात्राप्रमाणसहितं लिखत ।

१०. शुक्रल, मांसवर्धक मेध्य नेत्र्य वयःस्थापन, रक्तपित्तहराणांच पंचपंच द्रव्याणां नामानि गीर्वाणवाण्यां स्वप्रांतीयभाषायां च लेख्यानि ।

———

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

STATE FACULTY OF AYURVADIC MEDICINE

द्रव्यगुणो रसशास्त्रं च (1950)

SECTION I

१. शाण-कर्ष-पल-प्रस्थयोःवर्त्तमानदेशीयमानेन सह तुलनां कुरुत । द्रव्याणां व्यवहार्यांगानि च कानि ।

२. गन्धमार्जार, गोरोचन, मधु, अम्बर, इत्येतेषां गुणान् विलिख्य तेषां आमयिकः प्रयोगः लेख्यः ।

३. अवलेह खण्डपाकयोः को भेदः ? स्नेहपाके द्रव्याणां प्रमाणां किम् ? घृत-तैल-पाक-लक्षणेषु अस्ति कश्चिद्भेदः ? तल्लिख्यताम् ।

४. अभ्रकस्यः कतिभेदाः ? ग्राह्याभ्रकस्य लक्षणानि कानि ? तस्य भस्मनश्च का परीक्षा ? ताम्रभस्मनः अमृतीकरणं किमर्थं विधियते । अमृती-भूतस्य च का परीक्षा ?

५. मुक्ता, हिंगुल, खटिका, नृसार, विस्मथ, गोदन्तीनां विशिष्टान् गुणान् मात्रां च लिखत ।

SECTION II

६. निम्नलिखितेषु रोगेषु उपयुक्तानि चत्वारि-चत्वारि द्रव्याणि अथवा योगान् मात्रासहितान् लिखन्तु :—

रक्तप्रदरे । बालकानाम् श्वासरोगे । कफप्रधाने कासे । विबन्धे, मूत्रकृच्छ्रे । अग्निमान्द्ये । प्रवाहिकायाम् ।

७. (i) 'डिजिटेलिस' इत्यस्य कस्मिन् शरीरावयवे का का क्रिया ? (ii) किम् रसाञ्जनम् ? (iii) कस्मिन रोगे प्रयुज्यते वाकुची ? (iv) का परीक्षा कम्पिल्लकस्य ? (v) लज्जालुः कस्मिन् रोगे केन प्रकारेण कां क्रियाम् करोति (vi) कायफल—दन्ती—यूकेलिप्टस—एषाम् किम् अङ्गम् उपयुज्यते ? (vii) अजमोदा-जीरक-अनयोः भेदान्, तेषाम् रसान् च लिखन्तु । (viii) मेधावर्धनानि त्रीणि द्रव्याणि निर्दिशत । (ix) भृङ्गराज-कुमारी-अनयोः योगान्, विशेषोपयोगसहितान् लिखत । (x) 'शरपुङ्ख' इति नामकरणे को हेतुः ?

८. एषाम् द्रव्याणाम् कस्य-कस्य अङ्गस्य केषु-केषु रोगेषु प्रयोगः भवतिः—

कुटज । हरिद्रा । जटामांसी । कालमेघ । पारिजात । कुबेराक्ष । भल्लातक । हिङ्ग ।

९. (क) एषाम् उत्पत्तिस्थानम् लिखन्तुः—सोनामखी । केशर । पुष्पकरमूल ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

(ख) एषाम् स्वभाषायाम् संस्कृते च पर्यायान् लिखित:—

इक्षुरक । बरुण । अपामार्ग । स्नुही ।

(ग) एषाम् अतिमात्रसेवनेह का हांनि:—

अहिफेन । भल्लातक । दन्ती ।

(घ) एषाम् कः अवयव: औषधरूपेण प्रयुज्यते:—

सुवर्णक्षीरी । पलाशः । सर्जः ।

१०. एषु इच्छानुसारम् सप्तानाम् द्रव्याणाम् रसान्-गुणान्-कर्माणि-प्रधानम् उपयोगम् च लिखत:—

कटुरोहिणी । सरिवा । पुनर्नवा । श्वेत चन्दन । लशुन । जम्बू । वचा । कपिकच्छू । विडङ्ग । अहिफेन ।

हिन्दी विश्वविद्यालय, प्रयाग

वैद्य विशारद (१९५७)

रसशास्त्र और रसायन वाजीकरण—४

१—रसशास्त्र में द्रव्यों का शोधन क्यों किया जाता है। और चिकित्सा में इस शोधन का क्या प्रभाव पड़ता है। अपने वक्तव्य को गन्धकशोधन में घटा कर दिखाइए। १६

२—कच्छपयन्त्र का सचित्र वर्णन करके उसका प्रयोजन लिखिए। पुटों का प्रयोजन तथा गजपुट का वर्णन करके लोह का निरुत्थीकरण लिखिए। १६

३—सुवर्ण माक्षिक, रजतमाक्षिक, विमल-इन तीनों का परिचय देकर गोदन्ती और वंग का शोधन मारण लिखिए। १६

४—क्या बच्चों को रसायन या वाजीकरण का सेवन कराना चाहिए। युक्तिसहित लिखिए। सोमल का प्रयोग किन किन रोगों में किया जा सकता है। १६

५—मल्ल (सोमल) विषका शोधन लिख कर उसके विष लक्षण और चिकित्सा लिखिए। सोमल का प्रयोग किन किन रोगों में किया जा सकता है। १६

६—संग्रहणी, पाण्डु, जीर्णज्वर, हृदय, दौर्बल्य तथा श्वास में किन किन भस्मों का तथा रसों का उपयोग करेंगे। प्रत्येक रोग के लिए तीन पदार्थों के ही नाम लिखिए।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Phone 42898 Garm:-"FIRST"

CHARAK'S FOUR SPECIALITIES

1. DEEPEN Tablets:-For Diaorrhoea, Dysentary, & family of diseaeses.

2. GARJANASAV (Liquid). An Expectorant for Whooping cough, Bronchitis, and consequent Diarrhoea.

3. FRUITLAX (Jelly) A Palatable Nutritional Laxative; for Chronic Constipation and slugishness of bowells for all ages and all seasons.

4. PAVAN PILLS: A carminative for Tympanitis, Flatulance, Distention and digestive disorders.

Now prescribed by prominent Doctros.

CHARAKA BHANDAR

49. High'es Road. Bombay. 7.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

National Ayurvedic Library
Punjabi Bagh, New Delhi-26
Call No.........................
Book No.........................
112557

तार का पता "आयुर्वेद" फोन नं० 29396 42357

वैद्यों तथा औषध निर्माताओं !

गुणकारी औषधियाँ विशुद्ध तथा ताजे द्रव्य डालने से ही बनती है। यह आपसे छिपा नहीं है।

अतः विश्वस्त-विशुद्ध-ताजी गुणप्रद वनौषध, खनिज और प्राणिजद्रव्यों—

अंबर, कस्तूरी, गोरोचन, मुक्ता, शंख, मुक्ताशुक्ति, प्रवाल, कपर्द, शुद्धशिलाजतु, माक्षीक, खर्पर, कान्तलोह, शिलाजतुपत्थर, सोमकल्प, अष्टवर्ग, उलटकम्बल, वाकेरी दशमूल इत्यादिक

मिलने का प्रामाणिक स्थानः—

थोक तथा रिटेल के प्रसिद्ध व्यापारीः—

शाह जादवजी लल्लूभाई एण्ड कम्पनी

२४५, कालबादेवी रोड, बम्बई–२.

सूचनाः—विशेष जानकारी के लिए हमारी साप्ताहिक रिपोर्ट मँगवाएँ।

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

Dear Vaidyas & Pharmacists !

FOR YOU—

We manfacturə all varieties of Ayurvedic medicines, Rasayanas,Bhasmas, Gutikas, Pills, powders, Oils-from carefully selected raw matrials, accordiug to scientific farmule.

AT YOUR SERVICE—

If you desire to Manufacture any ayurvedic medicine according to your own special Formula our factory and our experienced technicians are at your service. We will execute the work to your satisfaction at most reasonable

For Particularas:—

Pleases write to or Phone to,

PEARL PHARMACEUTICLS,

3rd. Victoria Crdoss Lane.

BOMBAY. 27.

Phone: 40183.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फोन नं० 67931-32. चेम्बूर, 34234 बम्बई,

साण्डू

अनुभव सिध्द औषधियाँ

प्रेग - युटेरो

गर्भिणी-गर्भ-रक्षक..

बाळंत काढा नं.१,२ और ३

सूतिका के लिये..

बाळकडू

नन्हे बच्चों के लिये.

बालामृत

व्हिटॅमिनयुक्त बच्चोंका टॉनिक..

कुमारी आसव नं. ३

बच्चों का लिव्हर टॉनिक..

ब्राह्मी तेल के कल्पक और संशोधक

दत्तात्रेय कृष्ण साण्डू ब्रदर्स

चेम्बूर प्रायव्हेट लि. चेम्बूर – बम्बई ३८

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

लेखक की अन्य रचनाएँ

(१) द्रव्य-गुण-आदर्श

निघण्टु अथवा द्रव्य गुण शास्त्र पर आधुनिक आयुर्वेदीय कालेजों के पाठ्य-क्रम के अनुसार लिखा गया सर्वांग सम्पूर्ण ग्रन्थ। इसमें छात्रों तथा वैद्यों के लिए अनेक उपयोगी चार्ट्स (विवरण) दिए गए है। उदाहरणार्थ १. कर्मानुसार, रोगानुसार तथा आधुनिक वनस्पति विज्ञानानुसार औषधियों को वर्गीकरण, हिन्दी, मराठी, गुजराती, तामिल, तेलगू, मलयालम तथा कन्नड़, बंगलादि के प्रमाणिक नामों के साथ। २. चिकित्सासूत्र (सिद्धान्तों) के साथ वनस्पतियों तथा औषधियों का रोगों की विभिन्न अवस्थाओं में प्रयोग चिकित्सा के लिए विशेष उपयोगी है। आयुर्वेद क्षेत्र में अपने प्रकार का यह प्रथम ही ग्रन्थ है। इसका प्रकाशन शीघ्र ही "किताब महल, इलाहाबाद कर रहा है।

(२) आयुर्वेद का इतिहास

दूसरा परिवर्धित तथा परिमार्जित संस्करण

आयुर्वेद का इतिहास भी आयुर्वेदिक कालेजों के पाठ्य क्रमों में सम्मिलित है। संक्षेप में आयुर्वेद के प्रारम्भ ब्रह्मा-से लेकर आज तक के आयुर्वेद का ऐतिहासिक, सांस्कृतिक तथा साहित्यक दृष्टि से विवेचनात्मक वर्णन, छात्रों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर किया गया है। आयुर्वेद के साथ-साथ संस्कृत साहित्य के प्रायः सभी अचार्यों, तथा प्राचीनैतिहासिक पुरुषों यथा चाणक्य, चन्द्रगुप्तादि का भी कालक्रम इस ग्रन्थ में आ गया है। नया संस्करण प्रकाशित हो रहा है।

(३) **Introduction to Ayurveda,** Price Rs. /2-

आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धान्तों की अंग्रेजी में सुन्दर व्याख्या इस लघु पुस्तिका में की गई है

प्राप्तिस्थल—आयुर्वेद निकेतन, १२१, सुपारीबागरोड, परेल बम्बई—१२.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection

In Public Domain. Digitization by eGangotri and Sarayu Trust

फोन नं० 60026
60027

विगत ४७ वर्षों से आयुर्वेद की
विशुद्ध, सच्ची, प्रामाणिक, तथा शास्त्रोक्त
औषधियों के निर्माण द्वारा
सेवा करने वाली

झंडू

समस्त भारत तथा विदेशों में भी
प्रामाणिक औषधि निर्माता
के रूप में सुप्रसिद्ध है

आयुर्वेदिक–एलोपैथिक–बायोलोजिकल

—:o:—

तीनों प्रकार की शास्त्रोक्त प्रामाणिक
औषधियों के लिए

"झंडु"

को ही स्मरण कीजिए।

झंडु फार्मेस्युटिकल वर्क्स लिमिटेड, गोखले रोड (साउथ)
पोस्ट बॉक्स न० ७०१५, बम्बई, २८.

Bharatiya Vidya Bhavan, New Delhi Collection